॥श्रीलक्ष्मायनमोनमः॥अथदशमस्कंधपूर्वार्धलिख्यते॥ ॥छंदत्रिभंगी॥ जयधर्मसुनंदन॥काल
निकंदन॥सुरवरवंदन॥तनुंधारी॥जयजनमनरंजन॥भवदुखभंजन॥कलिबलगंजन॥अवता
रि॥१॥जयअसगजगअघहर॥धर्मधुरंधर॥श्रितजनशंकर॥जगताता॥जयनरवरनागर॥करुणा
सागर॥निशिदिनजागर॥सुभदाता॥२॥जयअजतअमायक॥निजपददायक॥निरजरनायक
विख्याता॥जयअजअविनाशी॥अक्षरवासी॥जससुखराशी॥साक्षाता॥३॥जयवृषकुलजा
ता॥सुरतिहिमाता॥सुरनरत्राता॥सुखदाता॥जयनरवपुधर्त्ता॥भूभरहर्त्ता॥मंगलकरता॥वृष
पाता॥४॥जयअगमअगोचर॥गोवर्धनधर॥दासअभयवर॥अघहर्त्ता॥जयअजअवतारी
नरतनुंधारी॥कुंजविहारी॥सुभकर्त्ता॥५॥जयमन्मथमोहन॥सुनिगमदोहन॥निजपदरोह
न॥नाथविभो॥जयसबसुखकंदं॥तवपदवंदं॥भूमानंदं॥पाहिप्रभो॥६॥दोहा॥श्रीहरिधर्मअवता
रमें॥करीवृषरक्षणकाज॥देहधरेंगेंसोभये॥निष्कलंकमहाराज॥१॥याकेचरनसरोजको॥से
वनकुंमकरंद॥मधुकररुपीहोतहे॥परमहंसकेवृंद॥२॥छंदहरिगीता॥गुरवासकरिकेप्रकाशि

दिने॥चितमनबुधिजगदिशने॥गिरवाणग्रंथभाषालिये॥ममदिनआगपाइशने॥घनश्यामचरी
त्रसमुद्रमें॥ममनरहिमुदपावही॥गुरचरनधरिइष्टदेवके॥जशानंदभूमागावही॥दोहा॥नि
जमृत्युहरिसैसुनिके॥भयऊतकसकराल॥प्रथमअध्यायमेंकहने॥देवकीकेषटबाल॥१॥चौपा
ई॥परिक्षितपुछतशुकजीताई॥रविशशिवंशानवमस्कंधमांई॥किनदोवंशमिभयेनृपजोउ॥तीन
अद्भुतचरित्रकीनसोउ॥२॥मुनिश्रेष्ठसुकतुमसुनिकिना॥जदुनृपधर्मिकेचरित्रप्रवीना॥जदुवं
शमेंबलजूतजन्मेऊं॥कियेजचरितकहोममतेऊ॥३॥जन्मिमथुराबदेव्रजमांइ॥इतनेचरितकी
नेनवमताइ॥तोमिजदुमेंजन्मिकेजेहा॥कियेचरितसकलकहोतेहा॥सबजनकेपालककहेएऊ॥
जसुकेआत्माहरिघनतेऊ॥४॥मुक्तमुमुक्षुविषइजगमांइ॥हरीजशसुनिकोतृप्तिनपाइ॥त्र
घमासागिमुक्तहेजेऊ॥निरंतरजशगातहेतेऊ॥५॥मुमुक्षुकुंओषधरुपएऊ॥जन्ममृत्युदुख
मिटनतेऊ॥विषइकेमनश्रोत्रहिताइ॥सुंदरअरुपरमसुखदाइ॥हरिकीचरितसुनितृप्तनहोइ॥
आत्मघातिकसाइबिनकोइ॥६॥सोरठा॥हरिममोरकुलदेव॥तिनकिकथासुनंनजोगपही॥मो

रपितामहजेव ॥ युधिष्ठिरादिकेनोका ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ तासेंकुरुमैंमसिंधुजेहा ॥ गोवछपदजलव
तुंतरेहा ॥ देवजितजतिरथिभिष्मादिहा ॥ बडेमघररुपसैन्यमेंतेहा ॥ ८ ॥ कुरुपांडुदोवंत्राको
जोउं ॥ विजरुपजोममत्राशिरसोउं ॥ अश्वत्थामाडारतजेऊं ॥ ब्रह्मास्त्रतनुंजारततेऊं ॥ ९ ॥ जुत
शममममात्राशलोआई ॥ किनप्रवेशअसगदरमांई ॥ करग्रहीचक्रहीहरिमजेऊं ॥ किनरक्षायोग
कलाकंतेऊं ॥ १० ॥ अखिलजीवकेअंतरहितेहा ॥ निजजनकुंदेतमुक्तिएहा ॥ कालरुपेवाहीर
करिवासा ॥ विमुखजनकोकरतहीनासा ॥ मायासेंनरजनानजोउं ॥ शुकक्हेचरितयाकेसोउ
११ ॥ दोहा ॥ शुकत्रिकालकितानहो ॥ नवमस्कंधमेंकिन ॥ परस्त्रुतरोहीणिकेविषे ॥ वसुदेवत
पजादिन ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ बलगदसारणदुर्मदजोउं ॥ विपुलअरुध्रुवषदनामसोउं ॥ किर्तिमान
सुखेणभद्रसेना ॥ मृदुसंमर्दनअरुभद्रकीना ॥ संकरषणहिसातसुतजेहा ॥ वसुदेवकिनेदेव
किमेहा ॥ १३ ॥ देवकिगर्भेबलकुंआयें ॥ दुजेदेहविनसंतोपाये ॥ कंसुवसुदेवगेहकुंसागी ॥ व्र
जमेंजाइरहेप्रभुभागी ॥ १४ ॥ निजजातिजादवसंगराऊं ॥ कहांरहेप्रभुकहोस्थलतेऊं ॥ ब्रजकुंमेंव

मकेकृपाकिना ॥ मथुरांकोहतकहोप्रवीना ॥ १५ ॥ निजमातकोभ्रातानेऊं ॥ हननजोगपनहीकुं
हनिनेऊं ॥ नरतनुंधरीजदुकुलतमथुराई ॥ कितनेवर्षहुंतामिरहाई ॥ १६ ॥ कहोइनकुंकितनिंद्ये
नारी ॥ इतनेप्रद्युम्नकहोहमारी ॥ याविनअोरहरिचरितजोउं ॥ श्रद्धान्वतममकहोशुकसोउ ॥ १७ ॥
सोरठा ॥ भुखतृषसेंपिडाई ॥ क्युंसकेनोगेयुंकहोगि ॥ उत्तरकहुंसबुताई ॥ तवमुखकथाअमृत
पिवे ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ जलकोत्यागकियोहमजोउ ॥ दुखदभुखपितनहीतोउं ॥ सूतपुराणीशोन
कताई ॥ सोसबकथाकहतहीगाई ॥ १९ ॥ हेभृगुसुतव्याससुतजेऊं ॥ निकप्रद्युम्ननृपकोसुनीनेऊं
परिक्षितकुंशुकवखानीराऊं ॥ हरिमचरितकीनआरंभितेऊं ॥ २० ॥ भक्तसिरोमणिशुकजीजोउ
कहीकलिमलहरचरित्रसोउं ॥ नृपतयुधिष्ठिरधनिश्चेकारी ॥ जासेंहरिमकथामेंतिहारी ॥ अच
लप्रितिभयेतोतोरी ॥ राजऋषीमेंश्रेष्टतुमहोरी ॥ २१ ॥ हरिमकथाकोप्रश्नमहीजोउ ॥ सुधकरेत्रिपु
रुषकुंसोउ ॥ कहेपुछेअरुसुनेताई ॥ पदजलगंगत्रिलोकिमाई ॥ २२ ॥ पैलेनृपसेंकहतराऊं ॥ हरि
अवतारनिमित्तहेतेऊं ॥ मदोन्मत्तनृपकोमिराजाई ॥ देसकुंकिसेनाबहुआई ॥ २३ ॥ त्रातत्रातमह

स्वसहस्रगहा ॥ ताकेभारपिडाइभुतेहा ॥ अजजकेद्वारगोजाइ पुकारी ॥ सजजनेनगौकोरूपधारी ॥
२४ ॥ दोहा ॥ दुखकहतअतिरोवतहिजो ॥ ब्रत्यादिगरवदिजाइ ॥ निजदुखसबहीकहनातसो ॥ अ
नतकेआगेंगाइ ॥ ३५ ॥ चोपाइ ॥ पुनिअजभुमिकोदुखउरधारी ॥ भुशिवइंद्रादिदेवजेहारी ॥ क्षिर
सिंधुकेउततरततरजाई ॥ देवनदेवजगनाथकहाइ ॥ ३६ ॥ धर्मकेरक्षकपुरुषजेऊ ॥ स्तवनकरतवा
सदेवकीतेऊ ॥ पुरुषसूक्तकोमंत्रउचारी ॥ देवसवेअजजतत्रिपुरारी ॥ २७ ॥ नभमिगुप्तबोले
वचजेहा ॥ अजनेसकंनेसमाधिमितेहा ॥ इंद्रादिसेंबोलेअजएऊं ॥ वासदेववचकऊंसनुतेऊ ॥
सनिकेतरतकरोसुंदेवा ॥ विलंबनांहिकरोतनसेवा ॥ २८ ॥ अपुनिअरजसेंपैलेएऊं ॥ धरातापधरे
मनमेंतेऊं ॥ तुमसवनितअंशनाहतआई ॥ जन्मधरोजदुकुलमेंजाइ ॥ २९ ॥ जासुंइन्द्राकेईस्वरगऊ ॥
निजकात्स्याक्रिऊंसेंजेऊं ॥ भारहरतभुतलरहेजबही ॥ तासुंसहायकरोतुमतबही ॥ ३० ॥ वसु
देवघरुंजन्मेंगिजाई ॥ पुरुषोत्तमसाक्षात्तकहाई ॥ भुतलजन्मोसबदेवदारा ॥ प्रभुकोप्रियेकरो
ततकारा ॥ ३१ ॥ सोरठा ॥ हरिकलामुखहजार ॥ सकरषणाख्यकाशतनु ॥ प्रथमधरहिअवतार ॥ ॥२॥

प्रियकरनइछिप्रभुको ॥ ३२ ॥ चोपाई ॥ वासदेवकिसमर्थमाया ॥ जिनुंनेजककुंमोहपमाया ॥
याकुंप्रभुनेआगपादिना ॥ जसोदामिजन्मेंगिप्रविना ॥ ३३ ॥ देवकिगर्भनिकासीएहा ॥ रोहि
णिउदरमीधरेगितेहा ॥ शुककहेमशिचिपतिअजजेकुं ॥ सबदेवकुंआगपाकरितेऊं ॥ भुमिकुं
शांतिगाथसेंकिना ॥ पुनिससलोकमिगयेप्रविना ॥ ३४ ॥ सबजादवकोनृपसुरसेना ॥ पे
लेमथुरामेंवासकिना ॥ माथुरसुरसेननामदेशा ॥ भोगततिनकुंहोइनरेसा ॥ ३५ ॥ याकारण
जादवकुलमांई ॥ नृपभयोताकीगादिकहाई ॥ तामेंजनअघहरहरिजेऊं ॥ निससमिपरहत
हेतेऊं ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ कवऊंकसोमथुरांविषे ॥ सुरजसुतवसुदेव ॥ परनिदेवकिजतर
थपरवैगिचलततखेव ॥ ३७ ॥ चोपाइ ॥ उग्रसेनसुतकंसहीजेहा ॥ निजभगिनिप्रियकरइछे
हा ॥ हेमसमाजरथसतसतजेऊं ॥ ताविचरथदेवकीकोतेऊं ॥ हेयकिरसियांग्रहीकंसजोउ
हांकतभगनिप्रियकरसोजं ॥ ३८ ॥ पुत्रिपरदयावंतदेवकजेसा ॥ हेममालजुतदेतहीतेहा ॥ चा
रसोगजपनरसोघोरा ॥ अवारउातरथदेतबहोरा ॥ वसनभूषनऊंसेंसंगारी ॥ दोसतदोसीदे

तकुमारी ॥ ३९ ॥ वरबकु गेहपवावततजवही ॥ मंगललियेबजावततबही ॥ शंख मृदंगनगारांजेकुं
तूरीऊतवाततहेतेकुं ॥ ४० ॥ मृगामिरथहाकुतकेसजाई ॥ नक्षत्रांनि बोलततदिगआई ॥ हेमुखदेव
किकोजोई ॥ अष्टमोगर्भहूनेगितोइ ॥ ४१ ॥ नभवांनिस्कंनिपापिणकु ॥ खलभोजकुलदूषणरूपतेकु ॥ कर
ग्रहिखडगकेत्रापुनिजेकुं ॥ भगनिहननभयेततपरतेकुं ॥ ४२ ॥ सोरठा ॥ निरखजनंदितकर्म ॥ कु
रकंसकुंत्रगमभेद ॥ करिवस्कदेवकीमर्म ॥ समक्तावतबडभागिसो ॥ ४३ ॥ चोपाई ॥ वस्कदेवकहेहे
कंसस्करा ॥ तोरगुनबखानतप्रचुरा ॥ भोजकुलजसकरतमहोई ॥ व्याहमेंनहीहनोभगनीसोइ ॥ ४४
कहोगिमरनसेंडरिहनुताई ॥ जन्मभेलिमृतकपजेभाई ॥ अबकअरुत्रातवर्षकेअंता ॥ निश्चेमृत्यु
पातहेजंता ॥ ४५ ॥ सुनरपगाधरिओरउपावे ॥ सुंओरपाइतनुंबहावे ॥ खडमांकहिआगेत्रणसा
ई ॥ प्रथमखरिथिसागततनाई ॥ ४६ ॥ सुंकर्ममगामेंजीवजेकुं ॥ ओरतनुपाईअसततजहीतेकुं ॥ सुंजा
ग्रतहिअवस्थामांई ॥ देखेजोनरपस्करवकहाई ॥ स्कंनेउइंद्रादिकरूपजेकुं ॥ मानमिपासबेगयोतेकुं
४७ ॥ सोमनसेंचिंततनिवजोउं ॥ देख्योस्करवस्कंनेरूपसोउ ॥ देखतस्वप्नमिआश्चर्येरा ॥ तबमानत ॥४॥

हेमेंहौतेहा ॥ ४८ ॥ जाग्रतअवस्थाकोजोरेकुं ॥ नेहिक्षणभुलिजातहितेकुं ॥ पुनिजाग्रतमेंदेखेस्कं
नेकुं ॥ त्रियादिककोरूपजोतेकुं ॥ तिनकेमनोरथकरकेयाकी ॥ बुधिअवराइजातहेताकी ॥ ५० ॥
सोरूपचिंतनकरीनरजेकुं ॥ असदेहविसरिजातहितेकुं ॥ जोजोरूपकुंचीततणकुं ॥ सोनिजरूपमान
तहेतेकुं ॥ सुंअसजिवकर्मवशासोई ॥ ओरतनुपाईअसततजेसोई ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ प्रभुकिमायानेरवे
बकुतनुंरूपपंचभूत ॥ तामेंदेहमरणसमे ॥ कर्मकेफलदअसुत ॥ ५२ ॥ चोपाई ॥ प्रभुकर्मफलके
अनुंसारा ॥ त्रेस्कंमनविकारआगारा ॥ यहमनदेवमनुषतनुंपाई ॥ दोउंप्रवेशाकरततामांई ॥ ५३
आत्माक्रिजऊतमनजोतनुपाई ॥ तामेंजन्मतहेजीवआई ॥ मनकर्त्ताहेजन्मेजाइ ॥ अकर्त्ताजीवकुंकछु
नांइ ॥ ५४ ॥ तबकछुमेंअसजीवहेजोउं ॥ तनुनिजआकारमानतसोउं ॥ याकारनततनुंभेलेतणकुं ॥ त्रि
वअकर्त्ताजिन्मततेकुं ॥ ५५ ॥ वलभनृपतनुंरक्षाकाजा ॥ भगनिकुंहननतहेहमराजा ॥ तबमेंकहुंस्कंनुं
कंसतोई ॥ रविशशितलभातनमेंदोइ ॥ ५६ ॥ सुंकंपततवायुकुंपाइ ॥ सुंनिजअविद्यारचितनुंपाई ॥
तामेंपुरुषरागऊतजेकुं ॥ प्रवेशाकरिअतिबंधाततेकुं ॥ निजरागेतनुंआतहीजोउं ॥ तिनलिंगपाप

करोमनकोउ ॥५७॥ स्यामकहेभेदकहतएऊं ॥ कंसकूं कुंवसुदेवहीनेऊं ॥ याविधन्यायानेहीनरजोउं
निजकल्याणहिइछतसोउ ॥५८॥ कौप्राणिकोद्रोहनकरही ॥ जिनद्रोहकरेतासंभयपरही ॥ यालो
कमीपरसेंभयहोइ ॥ परलोकमीजमसेंपातसोइ ॥५९॥ सोरठा ॥ नवछोरिभग्नीएऊं ॥ बालरूदिनरा
रूनारिहि ॥ आहउछवमिजेऊं ॥ दिनस्यालतूमनहीहनकूं ॥६०॥ चोपाई ॥ श्रुककहेवसुदेवकहीदो
उ ॥ सामभेदसेंचुकायेसोउं ॥ नरभक्षकदैससंगीएऊं ॥ वधसेंनिवृतिपातननतेऊं ॥६१॥ कंसकोवधरू
पअग्रग्रहजानी ॥ वसुदेवमनमिविचारआनि ॥ देवकिसकलअर्पिमेंताई ॥ मृत्युसेंअवलेऊंबचाइ ॥६२
बुधिवंतकिबुधिबलचलेजाई ॥ तातुमृत्युदेनोहवाई ॥ मुंकरतेमारेगेजबही ॥ मोयअपराधनलागेत
बही ॥६३॥ याकुंसतहोवेगेजोउं ॥ मृत्युकंसकुंदेकेसोउं ॥ कपणछोराइसुतदेवेजबही ॥ अन्यायहो
यगोकछूमेंतबही ॥६४॥ सुतजन्मेपेहलेनृपजेऊं ॥ मरजावेतबदोषानतेऊं ॥ सुतजन्मेकंसनमरेजबही
ममसुतसेमृत्युहोयगोत्बही ॥६५॥ विधाताकिगतीहेजोउं ॥ उलटपलटहोजातहिसोउ ॥ अवमृत्यु
सेंजोबचजाई ॥ पिछेमरेममअपराधनाइ ॥६६॥ वनवृक्षजारतअग्नीजोउं ॥ दिगकेतजीउरकेसुंसोउ ॥ ॥५॥

ग्राममेंग्रहजरातहीजैसें ॥ समिपकेतजीउरकूंकेतैसें ॥६७॥ आसअग्निदारूकुंहेजेऊं ॥ योगवियो
गमेंनिमितलेवें ॥ कर्मकेफलप्रदईशकहाई ॥ जिवतनुंयोगवियोगअसमाई ॥ जिवतनुंयोगवियोग
हिजेहा ॥ इशविचारमेंआतननेहा ॥६८॥ दोहा ॥ श्रुकजीकहेवसुदेवजो ॥ जोसुंबुधिचलिताइ ॥ तो
तुंपापिकंसकूंकुं ॥ बहुमानदिनबुलाइ ॥६९॥ चोपाई ॥ बखानकेकुरनिलजकुंएऊ ॥ विश्वासदिन
फुलाईमुखेकूं ॥ अतिडरदुखहृसिमुखएहा ॥ वसुदेवबोलतकछूवचेहा ॥ कंसनभवांनिकसीतूम
ताई ॥ देवकिसेंतूमकुंभयनांई ॥ इनकेसुतसेंभयहेतोई ॥ उतपनहोयजोदेवेसोइ ॥७०॥ श्रुककहेवसु
देववचमांई ॥ कंसजाननतजोसारहीताई ॥ निजभग्नीकेवधसेंएऊं ॥ निवृतिपायेकंसतेऊं ॥७१॥ वसु
देवनृपकुंबखानिएऊं ॥ प्रसनहोइगयेनिजगेऊं ॥ वामनअरूइंद्रादिकदेवा ॥ अदितिसेंभयेतप
नतेवा ॥७२॥ ताकोअवतारदेवकिजोउं ॥ प्रतिवर्षमिएकएकसोउ ॥ अष्टसुतकुंप्रसवतएऊं ॥ ए
कसुताऊंकुंपुनितेऊं ॥७३॥ प्रथमसुतकिरतीमंतताई ॥ कष्टकरिवसुदेवदेतजाई ॥ कुरबोयनोता
सेंएऊं ॥ अतिडरपातवसुदेवतेऊं ॥७४॥ कालकंसकुंसुतकुंदिना ॥ त्रांकोमेटतश्रुकप्रवीना ॥ साधु

भा॰द॰पू॰ कयासहनननहिकरही ॥ सुतसेवलानेसुखपरहरही ॥ ७५ ॥ प्रभुसत्यहेयुंजानततेकुं ॥ पदारथकछुइख अ॰१
॥६॥ ततनेकुं ॥ हमसुतदेवेकंसकुंजाई ॥ ममलज्जासेंसोहनेनाई ॥ ७६ ॥ असइछावसुदेवकुंनांइ ॥ कंसलो
भिअरुनिलजकहाई ॥ नकरेऐसेसेकर्मनकोउ ॥ सबपापकुंकरहीसोउ ॥ ७७ ॥ देवकिसुतदियेसुकुंते
कुं ॥ चितमेंधारेहरिकुंजेकुं ॥ नहीसागेएसोकछुनांई ॥ निजतनुकुंभीदेतवहाई ॥ ७८ ॥ सोरठा ॥ शुकक
हेप्रसनहोई ॥ कंसवसुदेवकुंदेखी ॥ सुखदुखमेंसमसोई ॥ समसमेंस्थितिवसुदेवकी ॥ ७९ ॥ चोपाई
हसकेवसुदेवसेंयुंकिना ॥ असस्रुतपिछेलेकुंप्रवीना ॥ इनसेंभयहमारेनांइ ॥ अष्टमगर्भहीतोरकहा
ई ॥ ८० ॥ तासेंनिश्चेमृत्युहमारा ॥ शुककहीकंनिवसुदेवउदारा ॥ सुतकुंकुंलेगयेनिजगेकुं ॥ असत
अजितमनकोवचजेकुं ॥ वसुदेवनहीवखानततेकुं ॥ कंसहिंगतबनारदआयेकुं ॥ ८१ ॥ व्रजमेंनंदा
दिगोपजोउं ॥ जसोदाआदिदारासोउं ॥ वसुदेवआदिजादवजेता ॥ देवकीआदिकदारातेता ॥ ८२
वसुदेवनंदकुलमेंएकुं ॥ मनुषजितनेसबदेवतेकुं ॥ ज्ञातिसुरूदबंधुतबजेता ॥ रहेंअनुंसरिदेवही
तेता ॥ ८३ ॥ भुभाररूपदैसहेजोउं ॥ बधउपायनारदकिनसोउं ॥ युंकहीनारदगयेउजबही ॥ कंसजा ॥६॥

नतसबजदुदेवनबही ॥ ८४ ॥ देवकिसुतविष्णुभयेजानी ॥ मोयमारेगेयुंउरमानी ॥ वसुदेवदेवकीके
पगमांई ॥ बेडिंडारतरुंधतघरुंलाई ॥ ८५ ॥ देवकीकेसुतभयेजोजोउं ॥ विष्णुजानिहनततबसोउं ॥ उदर
भरपापीनृपजेकुं ॥ माततातसुरूदकुंतेकुं ॥ बंधुआदिकुंहनहीएकुं ॥ ऐसेलोभिभूपरहेकुं ॥ ८६ ॥ दो
हा ॥ बेनबनेविकुंडारत ॥ बेडिमेंजोलाई ॥ भुमिपरपापीनृपङ्कको ॥ यामिआश्चर्यनाई ॥ ८७ ॥ चोपा
ई ॥ पैलेविष्णुनेहनेजोउं ॥ अबदेवमेंउपजेहमसोउ ॥ कालनेमिहमहेयुंजानी ॥ जदुसेंवैरकरतअ
भिमानी ॥ ८८ ॥ जदुभोजअंधककुलजोउं ॥ तिनकोपतिउग्रसेनसोउं ॥ निजताततकुंकंसजेकुं ॥ प
करडारेबेडिमेंतेकुं ॥ सुरसेननामदेशहीजेता ॥ महाबलिकंसभोगततेता ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीम
तभागवत ॥ दशमस्कंधमिजेकुं ॥ इहअवतारप्राक्रम ॥ भूमानंदकहेकुं ॥ ९० ॥ इतिश्रीसहजानं
दस्वामिशिष्यभूमानंदसुतभाषायांप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ दोहा ॥ कंसहननदेवकीकुंके ॥ उदरमें
हरिआई ॥ ब्रह्मादिकस्तुतिकीये ॥ इजेअध्यायमांई ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहीचाणुरप्रलंबाई ॥ व
कत्रणावृतमुष्टिकाई ॥ अरिष्टअघासुरद्विविदजेकुं ॥ धेनुककेशिपूतनातेकुं ॥ २ ॥ चाणभूमासुरअ

क्ररराजा॥मागधकोआश्रयक्रूनसाजा॥अतिबलियोकंसपिउननाई॥जादवकुरुदेशगयेपलाइ॥
३॥पंचालकैकयशाल्वतांई॥विदर्भविदेहनिषधमांई॥कोशलआदिदेशसबजोतें॥तामेंभागीर
हेजडसोतें॥४॥अक्रुरआदिजादवजेकुं॥कंसकुंसेवतमथुरामेंकुं॥देवकीजिकुंकेपटबाला॥हन
तउग्रसेनसुतकराला॥५॥सातमेगर्भविष्णुकेधामा॥अनंतअक्षरब्रह्मकहिनामा॥बलजन्मेंगेसो
हरखाई॥कंसहनेगेसोकबुराई॥६॥सबजनअंतरजामिजोतें॥सबजादवकेनाथहीसोतें॥जडकुं
कंसडरसेंभयजानी॥मायाकुंआग्यादेतगुमानी॥७॥सोरठा॥हेमायाव्रजमांइ॥गोपगोपिसोभाजहत
रोहिणिरहहीतांई॥नंदघरुवसुदेवनारी॥८॥चोपाई॥औरनारिवसुदेवकीजोतें॥कंसडरसेंछुपी
रहेसोतें॥देवकीकेउदरमेंजेकुं॥शेषरूपममधामहेंतेकुं॥९॥तासेंगर्भनिकासिएकुं॥रोहीणिउद
रमेंधरदेकुं॥इतनोतुमकरोगेंजबही॥ममअंशासंकर्षणजनततबही॥१०॥होयगीहमदेवकीसु
तजोइ॥जशोदासुताहोकसुंतोइ॥सकलमनुष्यपुजेगीताइ॥निवेदधुपदिपबलिदानलाई॥११॥सु
तआदिकपदारथजेता॥जनइछोनवरदेतहीतेता॥देविभूपरमनुष्यहेंजोतें॥नामथानबहुकरेगीसोउ॥१२॥ ॥७॥

दुर्गाविजयाभद्रकाली॥वैष्णवीचंडिकाकुमुदाली॥कृष्णाकन्मकामाधवीजेकुं॥नारायणीईशानि
हितेकुं॥१३॥शारदाअंबिकाअरुमाया॥याविधुतोरेनामकहाया॥देवकिगर्भनिकासिएहा॥रो
हिणिउदरधरोगेतेहा॥१४॥याकारणभुमिपरतांई॥संकर्षणअसनामकहाई॥त्रितिउपजायेगेज
नमांई॥रामकहेंगेसबजनताई॥बहुबलवंतहोवेगीजबही॥बलयाकुंकहहीजनतबही॥१५॥दो
हा॥युंप्रभुमायाकुंकहे॥अंगीकारकिनएकुं॥प्रभुहीनमनप्रकमाकरी॥भूमीआईकिनेतेकुं॥१६॥
चोपाई॥योगमायानेगर्भएकुं॥रोहिणिमेंपठवायेतेकुं॥देवकीगर्भस्रविगयेहा॥पुरवासियोका
रततेहा॥१७॥भक्तअभयकरअंतरजामी॥प्रद्युमनादिकअंशभक्तस्वामी॥वसुदेवकुंकेमनमेंआ
इ॥करतप्रवेशाहरिसुखदाइ॥१८॥वसुदेवहरिरूपधारिएकुं॥सूर्यसमुंसोहतहेतेकुं॥सबजनमिदि
नजितहितांइ॥ऐसेसंप्रतापवंतसुहाई॥१९॥प्रभुजगमंगलरूपहेजेहा॥प्रद्युमनादिजिनअंशतेहा
सोअंशअक्षरहेसबजाके॥अंतरजामिसबजनताके॥२०॥वसुदेवनेगर्भधरेतें॥देवकीमनसें
धारततेंतें॥जगमणिदिशाचंदकुंजेसें॥प्रभुकुंधारतदेवकितेसें॥२१॥सबजगनिवासवासुदेवाई

भा·द·पू· तिनकेनिवासदेवकीमांई॥ तोभिदेविसोहतनांई॥ अग्निशिखाज्युंरुधिघटमांई॥२२॥ सोरठा॥ रुंधिकं अ·२
॥८॥ सघरुताई॥ सोहतनहिमरस्वतीजस॥ ज्ञानसेंजगकिमाइ॥ सोहतनहीतेसेंदेवी॥२३॥ चोपाई॥ काय
मायासेंजितालनांई॥ सोरहेजाकेउदरमांई॥ निजकांतिसेंभवनसोहावे॥ पवित्रहासमुखमेंहीफावे॥२४
असभगिनिकुंदेखकेएकुं॥ कंसकहीममप्राणहरनेकुं॥ हरिगर्भमेंनिश्चेतेकुं॥ देविकुंऐसीआगेनथे
कुं॥२५॥ अबविष्णुहननेकोउपाइ॥ किसविधहेकरेहमनाई॥ देवकार्यकरनेआयेकुं॥ निश्चेमोयूह
नेगेनेकुं॥२६॥ निजभग्नीअरुत्रियाएकुं॥ गर्भवंतिकोवधहेजेकुं॥ जशकीरतिधनआयुषतेकुं॥ दि
नदिनघ्नतिनाशाकरएकुं॥२७॥ अतिनिरदइज्युंचरनेजोउ॥ जिवतमरणसमनिश्चेसोउ॥ मरणेपिछे
जनसबताई॥ शापदेतहीगारिसुंगाई॥ अतीपापिअरुदेहाभिमानी॥ भोगतनरकुंअरुचकुरखानी
२८॥ देवकीवधरूपपापसेंएकुं॥ आपनिचूत्निपायेवृपलेकुं॥ मितिशास्त्रकेजाननहारा॥ वैरसेंहरी
सबंधिप्यारा॥२९॥ विष्णुजन्ममगदेखतजोउं॥ बेठतसोवतगरतसोउ॥ जिमतफिरतभूपरकंस
जबही॥ चिंतनकरिजोतहरिजगसबही॥३०॥ दोहा॥ अजशिवकृपीनारदादिक॥ इंद्रादिकसबदे ॥८॥

व॥ वंधगेहमेंआयके॥ स्तवनकरततखेव॥३१॥ चोपाई॥ इच्छितफरखदहरिदिगएकुं॥ सुंदरवच
बोलिसबनेकुं॥ क्षिरसिंधुतटनभवचुजोकिना॥ सोवसुदेवगेहजन्मलिना॥३२॥ सत्यसंकल्पति
हारोस्वामी॥ जिवपावेतोपअंतरजामी॥ तिनकोश्रेष्टकारणहीजोउं॥ धर्मएकांतित्तुममेंसोउ॥३३॥
सत्यमूर्ति तिनकालमितीउं॥ उत्पतिमेंउपजेनएकुं॥ स्थितिमेंव्यभिचारनहीपावे॥ प्रलेकालमेंकब
कुंनआवे॥३४॥ सत्युअसतपंचभूतहीजोउं॥ तिनकेसत्यदिव्यत्तुमसोउ॥ सत्यहेजीवरूइश्वरदोउ॥
ताहीउत्पत्तिकरतुमहोउ॥ जिवइश्वरदोउमसकहाई॥ अंतरजामीरहेतामांइ॥ प्रलेमेंजीवइश्वरदोउ॥
मायामेंलिनहोतहीसोउ॥३६॥ तामेभित्तुमसत्यहोजेहा॥ सुंदरवानिचरनातलेहा॥ सत्यमूर्तितोयन
मोनमामि॥ तोरशरणपायेमेंस्वामी॥३७॥ सोरठा॥ विराटदेहअसकीन॥ आदिवृक्षसबपेलेभये
मूलप्रकृतीभूचिन॥ जासेंउत्पनभइएकुं॥३८॥ चोपाई॥ फलसुखदुखरूपदोफलजामांइ॥ तिनगुनजाके
मूलकहांई॥ धर्मअर्थकाममोक्षजोउं॥ चक्रुंरसहेजारमेंसोउ॥३९॥ पंचज्ञानइंद्रिकहांई॥ पंचविषेको
ज्ञानजामांई॥ जन्मिबधिरहीपरिणामपाई॥ घटरहिमरहीघटउरमिकहाई॥४०॥ त्वकमांसरुधिरनाडीयुं

मेदा ॥ मज्जाअस्थिधातुसातभेदा ॥ छालरगही रालिकऊंजोतुं ॥ भूजलतेजअनिलनभसोउ ॥ मनबुद्धि
अहंकारअष्टेऊ ॥ नवद्वारछिद्रदेहेतेऊं ॥ ४१ ॥ प्राणअपानव्यानसमाना ॥ उदाननागकूर्मकृकलाना ॥
देवदत्तधनंजयपवनतेऊ ॥ जिवईश्वरपक्षितेऊं ॥ ४२ ॥ विराटवरणनकिनोरहा ॥ यहविधिजानोजिवको
देहा ॥ जिवकोदेहविराटमेंरहही ॥ जिवईशपक्षिभेलेकरहही ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ जिवईशजलविराटद्रुम ॥ ती
नकारणतुमजोउ ॥ प्रकृतीपुरुषकारतुमरूं ॥ उत्पनहोतहीसोउ ॥ ४४ ॥ चोपाई ॥ पूर्वपुरुषरूपथितिकेजो
उं ॥ विराटकिकरतहोतुमसोउ ॥ तवमायासेंज्ञानहीजेऊं ॥ जिवकोअवराईगयेउनेऊं ॥ ४५ ॥ सोवरु
रूपेदेखततोइ ॥ विराटकरतापेओरकोई ॥ तोरेज्ञानवंतजनजोउं ॥ तोरेदेखतसबकरतासोउ ॥ ४६ ॥
जिवईश्वरकेअंतरजामी ॥ ज्ञानघनमूर्तिहोतुमस्वामी ॥ स्थावरजंगमपालनकाजा ॥ वराहआदिरू
पधरहीराजा ॥ ४७ ॥ रूधसत्वगुणऊनरूपरहा ॥ काऊकेरूतहोतननेहा ॥ धर्मसर्गजूतसंतहीजोउं ॥
तिनकुंस्खवकरतुमसोउं ॥ अधर्मसर्गजूतखलकहाई ॥ फिरफिरनाशकरततुमताई ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥ म
वतीवईशाकेधाम ॥ वासुदेवतुममेंजोउं ॥ समाधिसेंआराम ॥ चितप्रवेशकराइकिन ॥ ४९ ॥ चोपाई ॥ ॥९॥

सोतवचरणनावमेंगारी ॥ गोवछपदसिभरेज्युंवारी ॥ तेहीसमभवसागरकीपारा ॥ पावतहेतवभक्तउ
दारा ॥ ५० ॥ तोरेचरणनावहेजोउं ॥ नारदसनकादिकवडसोउ ॥ इनुंनेभवसिंधुतरनेऊं ॥ सेवुहेतव
चरणतेऊं ॥ उजेकुंसेवनजोग्यतेहा ॥ प्रतीपादनकरगयेरहा ॥ ५१ ॥ प्रभुअतीदुखसेंतरातनजोउं ॥ भ
यकरसंसारसागरसोउं ॥ तिनकुंभक्तपुर्वकेजेऊं ॥ तवपदनावमेंतेरिगयेऊं ॥ ५२ ॥ जासेंतरेनावजोते
ऊं ॥ तजीजगमेंतवधामगयेऊं ॥ तवपगमहात्मजनातजोउं ॥ भक्तिमगवरताइकेसोउ ॥ ५३ ॥ सबज
नकेतवजनहितकारी ॥ जिवदियुंकल्याणमगनिर्धारी ॥ तोरधाममेंगयेउरहा ॥ संतअनुग्रहकर
तुमतेहा ॥ ५४ ॥ संतनेकल्याणमगकुहेऊं ॥ ताहीमेजिवरहेजोजेऊं ॥ सोजीवकेउपरतुमस्वामी ॥ अ
नुग्रहकरहीअंतरजामी ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ पेलेकहेतवभक्तही ॥ तेहिविनओरजोउं ॥ मूक्तपणाकेमा
निजे ॥ आत्मज्ञानिसोउ ॥ ५६ ॥ चोपाई ॥ तिनकुंतुममेंभक्तीनाइ ॥ उष्टबुधिवंतसोईकहाई ॥ इनुंने
बहुजन्ममेंकिना ॥ तपजोगादीकष्टहोइदिना ॥ ५७ ॥ तिनसेंआत्मस्वरुपकुंपाई ॥ पुनिदेहमानीहोतगी
राइ ॥ तोरचरणभक्तिहिनजोउं ॥ आत्मनिष्ठासेंगिरेसोउ ॥ ५८ ॥ आत्मनोष्टभक्तनवजेता ॥ तुममेंहे

भा·द·पू· ॥१०॥

तवंतअतिनेता ॥ सोकेवलज्ञाननिष्पन्नाई ॥ गिरतनआत्मनिष्टाकनाई ॥ ५९ ॥ आत्मज्ञांनिभक्तलव
ताकी ॥ देहआत्मबुधिकुंसेंयाकी ॥ रक्षात्मकरतहोजोउं ॥ युकारणतवभक्तसोउं ॥ ६० ॥ विघनका
रिदेहहईद्गिताई ॥ पालनहारकामादिकहाई ॥ अधर्मकुंकोसर्गसवएकुं ॥ विनाप्रयासजोततजननेकुं ॥
६१ ॥ युंनिजभक्तकेरक्षकजोउं ॥ जक्तस्थितिलियेतूमसोउ ॥ कधसतोगुणमयहेजेकुं ॥ कर्मकेफलदमनू
ष्यकुंतेकुं ॥ ६२ ॥ विष्णुरूपतूमधरतहोजबही ॥ चकुंआश्रमकेजननभितवही ॥ सोरूपसेंयुजततोयएकुं
वेदक्रियाजोगतपरूंतेकुं ॥ ६३ ॥ सोरठा ॥ कधसतोगुणजेकुं ॥ देअसप्रसक्षरूपमि ॥ प्रगटनहोत
हितेकुं ॥ जिवकुंज्ञांननहोवनही ॥ ६४ ॥ चोपाई ॥ साक्षाततवरूपज्ञांनजोउ ॥ परोक्षअज्ञानमेटेसोउ
जासेंबकुप्रकारकेदेवा ॥ असतउपासनारूपहीभेवा ॥ सोभेदकीनिवरतीकरणकुं ॥ प्रगटरूपतोहा
रोहीजेकुं ॥ ६५ ॥ गुणकोकार्यअवस्थातीना ॥ जाग्रतस्वप्नरूषुप्तिकिना ॥ ताहीप्रकाशकचाररूदे
वा ॥ युहोनतउनमानज्ञानभेवा ॥ ६६ ॥ तूमप्रगटविनज्ञानजोउं ॥ साक्षाततवहोतनसोउ ॥ गुणअरू
गुणकोकार्यजेकुं ॥ रूपअवस्थाजिवजूतनेकुं ॥ सवप्रकाशकहेप्रह्मकोउ ॥ युंतवउनमानकरतसोउ ॥१०॥

६७ ॥ दोहा ॥ मनवचसेंजनमानही ॥ करनजोगपमगतोर ॥ साक्षितूमहोसवजीवके ॥ प्रसक्षरूपकिशो
र ॥ ६८ ॥ चोपाई ॥ तोरनामअरूरूपकोजेकुं ॥ जन्मकर्मगुणकुंसेंनेकुं ॥ निरूपणकरनजोगपहमनांइ ॥
तवगुणकर्मअनंतकहाई ॥ ६९ ॥ तासेंनामरुजन्मअनंता ॥ मूर्त्तिधरहीतिनकोनअंता ॥ हमसेंनिरू
पणकेसेंहोई ॥ सहस्रमुखसेंशेषनसोई ॥ ७० ॥ जैसेअनंततत्कअपारा ॥ तवएकांतिकभक्तउदारा ॥
उपासनमगकुंमेंतोइ ॥ देखहिमहीमाजानहीसोइ ॥ अबरिषधुप्रल्हादजेकुं ॥ साक्षाततुमकुंदेखत
सोउं ॥ ७१ ॥ तवपदमेंचितप्रोवतजोउं ॥ धर्मअर्थकामनिमितसोउ ॥ क्रियाकरतजोतिनमेंगकुं ॥ ना
मरुपरूंनेगावेतेकुं ॥ आपस्मरेओरकुंस्मराइ ॥ छुटसंसृतिमोक्षसोपाइ ॥ ७२ ॥ सोरठा ॥ विराटरूप
तुमजोउं ॥ तवपदआश्रितप्रभुमिकुंको ॥ भारमिटिगयोसोउ ॥ तोरजन्मसेंरूभमयो ॥ ७३ ॥ चोपाई ॥ तो
रपदअंकितप्रभुमिएहा ॥ हमदेखेगेवकुरूभतेहा ॥ तोरअनुग्रहजूतहीजोकुं ॥ स्वर्गदेखेगिहमरू
भसोउ ॥ ७४ ॥ अजजन्मातवजन्महेजेकुं ॥ क्रिडाविननहिकावेतेकुं ॥ कर्मकुंकेवशजिवक्रिन्याइ ॥ तेरो
जन्महेयुंनकहाइ ॥ ७५ ॥ निसमुक्तनचमायाजेहा ॥ तवआश्रयहिकरकेतेहा ॥ उत्पतिप्रलयस्थी

तिन्नोतं॥ जिवकेविषेकरतहेसोउ॥ १६॥ मछकछवराहनृसिंहेहेकुं॥ हयहंसद्विजनृपदेवुदेकुं॥ इतने
मिक्किनअवतारजोउ॥ तेसेंजोप्रभूहोतुमसोउ॥ १७॥ हमअरुतिनुंलोककीजेहा॥ पेलेरक्षाकरी
तुमतेहा॥ अवतुमरक्षाकरोहमारी॥ भूमिकोदेकुंभारउतारी॥ १८॥ पुनिब्रह्मादिदेवहेजोतं॥ दे
वकीप्रसेबोलतसोउ॥ मातहमारीदुधिकेकाजा॥ पुरुषप्रकृतिपरमाहाराजा॥ तवकुक्षिकुंपाये
उएकुं॥ निजअंशसंकर्षणकुंतनेकुं॥ १९॥ कंससेंभयमितोअवतोई॥ सबजनडुरक्षकप्रकृततवहोई
प्रकटहेब्रह्मादिदेवजोतं॥ दिव्यरूपवासुदेवकेसोउं॥ स्तवनकरिकेदेवसबएकुं॥ अजशिवजुत
हिस्वर्गगयेकुं॥ ८०॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमीजेकुं॥ भूमानंदकुंनेकिये॥ ब्रह्मा
स्तवनकियेकुं॥ ८१॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥
दोहा॥ प्रभुप्रगटेनिजरूपसो॥ स्तवनकरतमाबाप॥ वसुदेवगोकुलमिधरे॥ तिसरोअध्याआ
प॥ १॥ चोपाई॥ सबगुणसंपनसमयएकुं॥ परमशोभायमानहीतेकुं॥ अश्विनिआदिशांतनामां
ई॥ नक्षित्रसकयादिग्रहाई॥ २॥ शांततारागनतरोहिणीजोतं॥ नक्षत्रबुधअष्टमीसोउं॥ आधिरती ॥ ११॥

यांभयेउजबही॥ देवकिमेंप्रभुप्रगटेतबही॥ ३॥ यहसमेदशदिशानिरमलहोई॥ निरमलताराजु
तनभसोई॥ बकुउलवकृतपुरगांमजेकुं॥ व्रजखानिकृतभुमिसबतेकुं॥ ४॥ निरमलजलजुतन
दियुंजेती॥ फुलेकंजजुतजलहदतेती॥ पंखीभमरबोलहीगुंजमांई॥ सोगुंजकृतवनपंक्तिसु
हाई॥ ५॥ मंदसुगंधकृतवायुजेकुं॥ अतिपवित्रचलतहेतेकुं॥ द्विजहोमकेशांतअग्निजोउं॥
येहसमेप्रज्वलितभयेसोउ॥ ६॥ साधुअरुअसुरकेद्रोहिजेकुं॥ असमनप्रसनभयेसंवितेकुं देव
अजन्माजन्मेगेंजबही॥ देवदुंदुभिवाजततबही॥ ७॥ सोरठा॥ किन्नरगंधर्वगात॥ सिधचारण
स्तुतिकरे॥ नृत्यकरतसाक्षात॥ अपसराविद्याधरिकृत॥ ८॥ चोपाई॥ मुनिअरुदेवहर्षजुतहो
ई॥ सुमनकिवृष्टिकरतहेसोई॥ मंदमंदगरजीमेघआई॥ तेहिसमेसागरकिमाई॥ ९॥ प्रभुप्रग
टहोनइछेजबही॥ घनसेंघोरअर्थनिशितबही॥ अदितिरूपजोदेवकीमाई॥ अंतरजामीप्रगटे
आई॥ सोलकलाशशिपुर्वमिजेमें॥ सबआश्चर्यजुतप्रभूतेसें॥ १०॥ दिव्यअरुअतिआश्चर्य
कारी॥ बालरूपवासुदेवधारी॥ कमलनेनचतुर्भुजजोतं॥ शंखगदाचक्रधरसोउ॥ ११॥ श्रीवछ

चिन वक्षस्थलमांई ॥ कौस्तुभकुं देत कंवकहाई ॥ पितवसनघनसमवर्णामजोऊं ॥ वसुदेवदेखतलकन
सोऊं ॥ १२ ॥ कंधवैदुर्यमणिजुतजेकुं ॥ मुकुटकुंडलकांतिजुततेकुं ॥ अगणितशिरपरकेशसहाई
कटिमेखलाकरितपरआइ ॥ बाजुबंधकंगनकरमांई ॥ हरिसुतहेरिआश्चर्यपाई ॥ १३ ॥ फुलेनेनउ
छवजुतएकु ॥ हृदयावतारआनंदमेंकु ॥ मनसेंदेतद्विजकुंगाई ॥ दशहजारवसुदेवमूर्दपाई ॥ १४ ॥
करजोरिनिजअंगनमांई ॥ कंधबुधिवसुदेवकहाई ॥ निजतेजसेंपुरुषोत्तमएकु ॥ सूतिकागेहप्रका
शतनेकुं ॥ १५ ॥ हृदमहेअसमहिमाजानी ॥ निरभयस्तुतिकरतमूर्दआनि ॥ वसुदेवकहेजानेतोई
अनंतप्रधानकुंकीजोई ॥ कारणमूलप्रकृतिहेसोई ॥ तिनसेंपरहमजांनेतोई ॥ १६ ॥ दोहा ॥ के
वलज्ञानानंदमय ॥ मुरतीहोतुमजोउं ॥ जिवईश्वरकीबुधिकुंके ॥ दृष्टापुरुषहीसोउ ॥ १७ ॥ चोपा
ई ॥ प्रकृतिसेंपरपुरुषहेजोऊं ॥ पैलेनिजमायासेंसोऊं ॥ तिनगुणरूपविराटरचिएकुं ॥ तामिनही
प्रवेशाकरितेकुं ॥ १८ ॥ जनुंप्रवेशाकियोतुमजेसें ॥ भासतहोविराटमेंतेसें ॥ प्रवेशाकियेपेलेतुम
जेहुं ॥ आधारकारणपणेथेकुं ॥ १९ ॥ पुनिविरारमेंप्रवेशापैले ॥ कंधनिरलेपहोइतुमखेले ॥ यह ॥१३॥

कारणतुमविराटमांई ॥ जनुंप्रवेशाकियोकबुनांई ॥ २० ॥ मायाकेविकारहेजोउ ॥ महतत्वादिकभि
नभिनसोउ ॥ सबकेभिनभिनरूपहेजेकुं ॥ ब्रह्मांडरचनासमृथनतेकुं ॥ २१ ॥ निजनिजवीकारजु
तमिलिएहा ॥ विराटदेहउपजाइतेहा ॥ तामेंप्रवेशाकिनजनुजेसें ॥ देखातहेसबतत्वतेसें ॥ २२
कारणआधारपणेथेकुं ॥ विराटउपजापैलेएकुं ॥ याकारनवीरारमेंजेहा ॥ प्रवेशानहीसंभवही
तेहा ॥ २३ ॥ आधारकारणविराटकेकुं ॥ तामेंप्रवेशाकरकेजेकुं ॥ प्रकृतिपरेपुरुषतुमजोउं ॥ कंध
कारणअक्षरपुनिसोउ ॥ २४ ॥ बुधिसेंउनमानहोतहीजांई ॥ स्थुलरूपअैसेंतत्वकहांई ॥ तत्वजु
ततुमवरतहीजबही ॥ तोभितत्वकृतग्रहणतवही ॥ तेरोनहिहोतहेजोउं ॥ परसूक्ष्मअंतरजान
सोउ ॥ २५ ॥ परमस सवस्तुतुमजोई ॥ मायातत्वआवृतनतोई ॥ सबतत्वआधारतुमजोउं ॥ तत्व
क्रियाप्रवरतकसोउं ॥ २६ ॥ भुमिजलतेजअनिलचकुंएकु ॥ ताकोआधारनभजुंतेकु ॥ सुंतत्वअ
हविराटकेजोउ ॥ आधारकोयाप्रवरतकसोउं ॥ तवप्रवेशाविराटमिनांही ॥ देवकीगर्भमेंकबुंकहा
हि ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ प्रकृतिपरतुमजोउं ॥ अनंतब्रह्मांडकुंके ॥ आधारतुमसोउ ॥ अक्षरब्रह्मजा

भा·द·पू· निमें ॥२८॥ चौपाई ॥ मायादितत्वप्रेरकतोई ॥ तबहरूप गुणसबतत्वसोई ॥ ताकोकारजविराटदेकुं ॥ अ·३
॥१३॥ तुमविनसमस्कहेनरजेकुं ॥ सोईअज्ञानिपुरुषकहाई ॥ इनकोविचारकबुससनोई ॥२९॥ मायाही
देखातहेजोउ ॥ ताकेदेखनहारतुमसोउ ॥ प्रेरकतुमविनतत्वहीतकुं ॥ उसतीकरनेसमर्थनतेकुं ॥३०॥
तत्वकुंकरताकहहीजेता ॥ अज्ञानिहेजनसबतेता ॥ प्रभूसमर्थनिवृतिप्रियजोउ ॥ निरगुणनिरवी
कारातुमसोउ ॥३१॥ जगउसतीस्थितिलयजेकुं ॥ तुममेंकहतहीज्ञानीतेकुं ॥ निवृतकुंकर्त्तापणजो
उ ॥ करतानिरविकारहिसोउ ॥ तुमतोईश्वरब्रह्मकहाई ॥ तोरविषेअसविरोधनाई ॥३२॥ तिनगुन
केअभिमानिजेहा ॥ ब्रह्माविष्णुशिवजोतेहा ॥ जगउसतिस्थितिलयरतकुं ॥ अनीरुधआदिकरूपसे
जेकुं ॥ अज्ञादिकेआधारतुमकुं ॥ याकारनकरतातुमतेकुं ॥३३॥ युंकर्त्तापणतुममेंकहाई ॥ चाक
रकोहतनपकिम्याई ॥ अकर्त्तारूनिरविकारदोउ ॥ समर्थतुमकुंघटहिसोउ ॥३४॥ असविधवा
सुदेवतुमजेकुं ॥ स्थितिलियेविष्णुहोतहीतेकुं ॥ योगमायासेश्वेतभयेकुं ॥ सतोगुणकृतहोतही
जेकुं ॥३५॥ उसतिलियेरजोगुणधारी ॥ रक्तवरणब्रह्मारूपकारी ॥ प्रलयेकरतशिवतुमहोई ॥ ॥१३॥

तमगुणकृतश्यामवरणसोई ॥३६॥ ब्रह्मादिकेप्रेरकजेकुं ॥ लोककिरक्षालियेममगेकुं ॥ अव
तरितुमहुनोगेजोउ ॥ राजानामअसुरसबसोउ ॥३७॥ ताकिकोटिजूथपालनहारा ॥ मागध
शिशुपालादिअपारा ॥ इनुनेसैनचलायेजेती ॥ भुकेभाररूपसबतेती ॥३८॥ दोहा ॥ कंसअ
साधुखलहेजो ॥ ममगेहजन्मजेकुं ॥ तबहोयगोयुजानके ॥ षटबंधुतबहनेकुं ॥३९॥ चौपाई ॥
इनकेचाकरकहेगिजाइ ॥ अबआवेगेआयुधधाई ॥ प्रकृकहीवसुदेवसुतताकुं ॥ कारागृहे
पुनिदेवकीजेकुं ॥४०॥ वासुदेवरूपनिजसुतजोई ॥ हसतमुखिडरिकंससेसोई ॥ स्तवनकरतदे
वकीकहिएहा ॥ प्रभुतवरूपकुंवेदसवेहा ॥४१॥ कहहिइंद्रिअंतःकरणोई ॥ जानतनहिजसतुम
कहाई ॥ सबकारणब्रह्मज्योतीरूपा ॥ निरगुणनिरविकारीअनुपा ॥४२॥ सतामात्रनिरविशेष
जाइ ॥ सबआधारप्रकाशकहाई ॥ सबजिवकेइंद्रिकेजोउ ॥ प्रकाशकविष्णुहोतुमसोउ ॥४३॥ बी
रात्रब्रह्माकिवयजेहा ॥ द्विपार्धपुरणहोयतेहा ॥ महाप्रलयमेंस्थिरचरजेकुं ॥ लोकसबेनाशपाइ
तेकुं ॥४४॥ नभआदिपंचमहाभूतजोउ ॥ पंचमात्रमेंलिनहोतसोउ ॥ कालवेगकशिविराटदेकुं ॥

लिनहोवतमायामेंनेकुं ॥ मायासेंपरपूरुषजोउं ॥ ईश्वरकहतहेतूमहोसोउ ॥४५॥ सोरठा ॥ महाप्रलयका
रकाल ॥ तवप्रकृतिकोविलासही ॥ कालकरतहप्रचाल ॥ विष्णुकुंनामप्रमातही ॥४६॥ चौपाई ॥ नि
मेषआदिवरषअंतजाई ॥ बहुवर्षेद्वीपार्धकहाई ॥ सोईकालचेष्टाहेजाकी ॥ सर्वनियंतानिरभय
ताकि ॥ तोरशरणकुंअबमेंपाई ॥ प्रकृतिपरेकतूमकहाई ॥४७॥ मृत्युसर्पकुंसेंभयपाई ॥ निजक
र्मेसबलोकमिताई ॥ निरभयस्थानकपावतनांई ॥ निजसतकर्मकेफलकुंपाई ॥४८॥ तासेंतोरचर
णपाइएकुं ॥ निरभयहोईसोवततेकुं ॥ तोरचरणकुंपायेनाई ॥ मृत्युकोभयहनकुंनांई ॥४९॥ घोर
कंससेंहमडरपाई ॥ रक्षाकरोककुंशिरनाई ॥ तिहारासेवकहेजेकुं ॥ तिनकोत्रासहननतूमतेकुं ॥५०॥
ध्यानसेंपावनजोग्यजोउं ॥ वासुदेवस्वरूपतवसोउं ॥ चरमचक्षुवंततननजेकुं ॥ तिनकुंप्रगटनहीक
रोएकुं ॥५१॥ मधुसूदनपापिकंसजोउं ॥ मोमितवतन्मजानोनसोउ ॥ अधिरबुधिवंतमेजेकुं ॥ तूम
लियेकंससेंडरूमेकुं ॥५२॥ सबअंतरजामितूमजोउं ॥ शंखचक्रशोभाकृतसोउ ॥ चकुंभुजदिव्यरू
पचासुदेवा ॥ अहह्यतूमकरोततखेवा ॥५३॥ दोहा ॥ रात्रिप्रलयमेंप्रभुतूम ॥ विश्वरखहीतनुं ॥१४॥

मांई ॥ प्रथमपुरुषअवतारमें ॥ अवकाशजूतरहाई ॥५४॥ चौपाई ॥ सोतूममोरगर्भमिंआई ॥ सब
जनहांसिकरेंगेंधाई ॥ कंसनिवचबोलेदेवकीताई ॥ प्रभुकहहीआख्यानलाई ॥५५॥ प्रथमजन्मकुंमें
तवजेहा ॥ स्वयंभुमनवंतरथेंतेहा ॥ पृश्निनामतववसुदेवजोउं ॥ निःपापसूतपाप्रजापतिसोउ ॥५६॥
प्रजासर्जनप्रेरेजबही ॥ ब्रह्मानेतवदोनुंतबही ॥ इंद्रियसबकरिनिग्रममेंजोउं ॥ उत्तमतपहिकरतूमदोउ ॥
५७॥ वृष्टिवायुस्तिनधुपघामा ॥ सबसेंडुखसहतनिष्कामा ॥ प्राणायामकरीकेजोउं ॥ मनकेसबमल
मेटेसोउ ॥५८॥ सूकेपातअरुअनिलअहारा ॥ मोसेंफलइछतउदारा ॥ शांतचित्तकरिकेतूमदोउं
ममआराधनकरतहीसोउं ॥५९॥ दुष्करतिव्रतपकियेजबही ॥ बारहजारदेववरषतबही ॥ तवश्र
द्धायुतभक्तिजेकुं ॥ करिकेमोयआराधेतेकुं ॥६०॥ सोमेंचतुरभुजरूपधारी ॥ तूमपरप्रसनताभइह
मारी ॥ वरदेवमेंवडहमजोउं ॥ इछितमनोरथतिहारसोउ ॥६१॥ पुरनकरनइछाउरलाई ॥ चकुंभु
जधरिदिनदर्शनआई ॥ तुमकुंकहेवरमागोजबही ॥ ममजेसोसूतमागेतबही ॥६२॥ नांहिभोगेवि
षयतूमदोउ ॥ सूतबिनमायामोहितजोउं ॥ साक्षातहमपरमेश्वरतांई ॥ मोक्षतजीसूतमागेआई ॥६३

कृतरूपवरदेगयेहमतबही॥ इछितमनोरथपाइतबही॥ ग्रहस्थआश्रमतुमपुनिकिना॥ त्रिलगदा
रगुणकृतममबीना॥ लोकमेंनहोदेखिअसकोउ॥ पृस्निगर्भतवकृतहमसोउं॥ ६४॥ दुसरोजन्मतुम
जबधारा॥ कश्यपअदितिभयेउदारा॥ तबतबकृतउपेंद्रकहाई॥ वामनतनुधरवामनजाइ॥ ६५॥ सो
तुमतिसरोजन्महियाई॥ वसुदेवदेवकीनामकहाई॥ तुममेंतिसरीवेरमेंजोउ॥ चतुर्भुजमुरतीप्रगटेपोउ
मानामोरवचनमसएकुं॥ मिथ्यानहीजानोतुमतेकुं॥ ६६॥ सोरठा॥ चतुर्भुजदरशानदिन॥ पुर्वजन्मस्मृ
तिलिये॥ दिव्यरूपदेरवायबिन॥ मनुष्यरूपेज्ञानहोतन॥ ६७॥ चोपाई॥ मातातवइछासेंजेकुं॥ बालकहो
वेगेहमतेकुं॥ ब्रह्मभावेकृतभावलाई॥ वेरवेरचिंतनकरितुरमाई॥ मोमेंस्नेहकरितुमदोउ॥ ममधा
मपावेगेसोउं॥ ६८॥ प्रभुकहेयोगमायासेकुं॥ मनुष्यबालकप्रभुभयेतेकुं॥ प्रभुकहीकंसकेडरतोहो
इ॥ गोकुलमेंपचवायोमोई॥ जसोमतिसुतामायामेरी॥ तिनकुंतुमलायोघरकेरि॥ ६९॥ प्रथमप्रेरेव
सुदेवजेकुं॥ सुतउठाइघरुसेंचलेतेकुं॥ अजन्मायोगमायाजबही॥ जसोदासेंउत्पनभइतबही॥ ७०॥
मायानेहरिलिनेउजेती॥ इंद्रिकिज्ञानचरतीतेति॥ ऐसेंद्वारपालरहेहोइ॥ पुरजननिद्रासेंरहेसोइ॥ ७१॥

वसुदेवमाइसोकुलजतजोउं॥ लोहखिलायेदिनेउसोउ॥ अतिदुखसेंखूलेनहिजेकुं॥ ऐसेसबदर
वाजातेकुं॥ ७२॥ सुतजुतवसुदेवआयेजबही॥ रविनितिमरजूखुलगयेतबही॥ मंदगरजतवरष
तघनआई॥ शेषफणसेंढुंधततलधाई॥ ७३॥ वेरवेरवरषतघनजोउं॥ वरषपुरवहतवेगजुतसोउ
वडेतरंगरुफिणजामाई॥ चहुंअमरीदेतभयउपजाइ॥ ७४॥ जमुनाजीवसुदेवकुंएकुं॥ मगदेतराम
कुंसिंधुतेकुं॥ पुनिवसुदेवगयेव्रजताइ॥ मायासुवारेजनजामांइ॥ ७५॥ गोपकुंकुंदेखिकेएकुं॥ नि
जसुतजसोदाहिगधरेकुं॥ जससुताजोगमायाताइ॥ लायेसोनिजगेहउमाइ॥ ७६॥ धरिदेवकीकिस
आमांई॥ वेडियुंधरिपगमेंवंधाई॥ अववराइरहेपुरवकीमाई॥ पुनिजसोदाजीव्रजमांइ॥ ७७॥ योगा
मायाहरेस्मृतिजेकु॥ कछुजन्मेयुंजानततेकुं॥ बालजन्मकेभ्रमकृतजेहा॥ पुत्ररूपुत्रिनजानेतेहा॥ ७८
दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेकुं॥ द्वादसकुंकोहिजन्मजो॥ भूमानंदकहेकुं॥ ७९॥ इती
श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांतृतीयोध्यायः॥ ३॥ दोहा॥ चंदिकिंवचसुनिकं
सही॥ भयसेंव्याकुलहोई॥ वालहनहिडरमंत्रिसें॥ चौथेमेंहेसोइ॥ १॥ चोपाई॥ प्रभुकहेपुरगेहके

भा॰द॰पू॰ जोउं॥ अवराईगयेद्वारतबसोउ॥ रोवतबालकनिकेजेहा॥ खडेभयेग्रहरक्षकतेहा॥२॥ गयेकंसदिग अ॰४
॥१६॥ शिघ्रचलाई॥ देवकीसुतजन्मदिनसुनाई॥ गर्भअष्टमेकोमगएऊं॥ देखरहेउदवेगजुततेऊं॥३॥ सु
निअसगाथाविह्वलहोई॥ मोरकालहैकहीकेसोई॥ उठपलंगसेमगमेंएऊ॥ गिरतखडतछुटेकेशाते
ऊं॥४॥ आयेसुतिकाग्रहमेंधाई॥ पतिव्रतादिनदेवकीताई॥ कहेतवसुतकीवहुहीएहा॥ त्रीयान
हिमारनजोग्यतेहा॥५॥ दैवेस्त्रसोताकुंभाई॥ अग्निकीउपमाहेजाई॥ बहुबालमोरमारेतेऊ॥ असए
कपुत्रिमोकुंदेऊं॥६॥ दिनसुछोटिबोनमेंतोरी॥ हनाइगयेपुत्रसबमोरी॥ मंदभाग्यमेरोहेभाई॥ अंतम
मसुतादेकऊंताइ॥७॥ सोरठा॥ खुककहेयुंकहीएऊं॥ निजसुताकुंछतियामें॥ लगाइदिनसुंतेऊं॥
करतरुदनदेवकीदेवी॥८॥ चौपाई॥ युंजांचेतोभिखलएऊं॥ हरिदेवकीकुंखोंचलियेऊं॥ स्वार्थसेंतो
रेसगयपणजोउं॥ तूरतभईवैनसुतासोउ॥९॥ ताकुंचरनपकरकेएऊं॥ वहिनिलापरपटकततेऊं॥ सो
कन्याहथसेंनिकसेऊं॥ देविभइगइनभमेंतेऊं॥१०॥ विद्युकिछोटिबेनकहाई॥ धररहीआयुधअष्ट
भुजमांई॥ धनुषत्रिशुलसरढालजेऊं॥ शंखचक्रअसिगदाधरेऊं॥११॥ दिव्यफुलहारवसनधर ॥१६॥

जोउं॥ चंदनरलकेभूषणसोउं॥ सिधरुचारणगंधर्वनागा॥ किनरअप्सराहिकृतरागा॥ बलिदानसब
करमेंधारी॥ स्तवनकरतपुजतदिगवारी॥१२॥ देविकहेमंदमुरखकंसा॥ मोयमारिनरहेतववंसा॥ प्रभू
पुरवकेशत्रुजोतेरा॥ मारेगेताकुंअसफेरा॥१३॥ जहांतहांउत्पन्नभयेऊं॥ मतमारेदिनबालकजेऊं॥ इ
तनेवचकंसकुंकहीएऊं॥ बहुथलमेंबहुनामभयेऊं॥१४॥ देविकेवचसुनिकंसजेहा॥ नभवानीकुं
भईकचुंतेहा॥ युंउरमेंअतिविस्मयपाई॥ वसुदेवदेवकीनजीकजाइ॥ बेड़िसेंनिकासिकेताई॥ बोल
तदीससदिनताबाई॥१५॥ बैनबनेविसुनुंवचएऊं॥ जोराक्षसनिजसुतहनेतेऊं॥ सुअतिपापीहोमेंजो
उं॥ बहुतोरेसुतमारेसोउ॥१६॥ दोहा॥ खलअरुकरुणारहीतमें॥ ज्ञातिसुसगातजेऊं॥ कोनलो
कमेंजायेगी॥ ब्रह्मघातिसममेऊं॥१७॥ चौपाई॥ अबमेंजिवतेमुवोकहाई॥ बैनयामेममसुलनाई
केवलमनुषकुखोलेजोउं॥ युंनहिदेवभिबोलतसोउ॥ दैवबचनकोविश्वासलाई॥ तवपुत्रमेंमारेउ
ताई॥१८॥ बडभाग्यवंतहोतुमदोउं॥ कियेकर्मभोगतसुतसोउ॥ इनकोशोककछुनकरना॥ भलेलेनरदे
शिरपरमरना॥ याकारनसबजीवहेजोउं॥ दैवआधिनपरतंत्रसोउं॥१९॥ भुकेविकारघटादिकजेता

भा.द.पू. भुमेंउपजेनाञ्राहितेता॥ त्युंजीवकितनुंजन्मिमरजावे॥ तनुंसंगजिवविकारनपावे॥२०॥ त्युंघराद्हिोइ अ.७
॥१७॥ नानापाई॥ भुणकरूपरहेजिवकिमाइ॥ युंजथार्थज्ञानेनजेकुं॥ देहअभिमांनिहोतहीतेकुं॥२१॥ तनुआ
त्मबुधिअहममकारी॥ तिनसेंजन्ममरहीवेरवारी॥ युंनहिसमझतहेजनजोउ॥ जन्ममृत्युनहीछुटतसो
उ॥२२॥ ज्ञानदृष्टिसेंदेखोजबही॥ तवकछुतमेंनहीमारेतबही॥ मृत्युकबकुंनपावेएकुं॥ आत्मस्वरूपेनि
स्हेतेकुं॥२३॥ देहदृष्टिसेंदेखोजबही॥ तवकछुतहमनेमारेतवही॥ तोभिश्रोककुनहीकरनोवाइ॥ क्यिक
मभोगततीवआइ॥२४॥ आत्माकुंनहीदेखतजोउ॥ जाकुंदेहकुंमानतकोउ॥ मोकुंमारगयोकोउआ
इ॥ मेंमारतहोताकुंजाई॥ युंबुधतनहाकुंजनएकुं॥ मरणजन्मपातअहतेकुं॥२५॥ सोरठा॥ तुमतोसा
धुदीउ॥ दिनकेउपरदयाकुहो॥ दुष्टएकंमारजोउं॥ क्षमाकरोयुंकहीकहे॥२६॥ चोपाई॥ आप्नुतव
कदेवकोन्नाको॥ पदपकरतदोकोसेइकाको॥ कमावचसेविश्वासपाइ॥ खोलतबेडियुंकहरदजुनाई॥
भाई २७॥ अतितप्योनिजबंधकहीजोउ॥ देवरोषतजतदेविसोउ॥ घरुंजांनेकिआग्पादिना॥ हम्सिवोलेवसु
देवप्रविना॥२८॥ कंसतुमवातकहतहीजेसें॥ अहंबुधिभइअज्ञांनकुंसें॥ अहंबुधिसेभेदपरेकुं॥ मे ॥१७॥

हो अरुदजोहेतेकुं॥२९॥ जोकहरखभयद्वेषजोउं॥ लोभमोहमदकृतजोसोउ॥ भेददृष्टिवंतपुरु
षएकुं॥ हनेहनानेमानततेकुं॥ कालरूपइयाकुंजानतनांई॥ जिवकुंसेंजीवहनानतांही॥३०॥ श्रुक
कहेप्रसनहोइकेदोउ॥ स्कधभाववोलिपवावतसोउ॥ तवसोकंसगयोनिजगेकुं॥ चितगयेपुनीर
तियांएकुं॥३१॥ दोहा॥ कंससबमंत्रिटेरके॥ मायानेकहीजोउं॥ नितशत्रुउत्पनभये॥ कहीसुंना
येसोउ॥३२॥ चोपाई॥ सुंनिसबदेवकेशत्रुएकुं॥ अतिसुरवहरषाकृततेकुं॥ देसबवोलत
कंसताई॥ भोजकुलकोतूंइंदकहाइ॥३३॥ तवशत्रुउत्पनभयेजबही॥ पुरगांमव्रजकेबालकतब
ही॥ दशदिनसेंअधिकन्युनजोउ॥ निश्चेअबमारहमसोउं॥३४॥ कहोगीसहायकरेमिदेवा॥ सं
नोकंसकृपाकोभेवा॥ कुधमेंअतिडरपावहीएकु॥ क्याअवजोरकरेगेतेकुं॥३५॥ तोरधनुष
शात्रुसेंहिएकुं॥ उद्वेगकतरहेमनतेकुं॥ तोरेबाणसमुहसेंजोउं॥ हनातजीवनदुछतसोउ॥३६॥
रणकोसागकरिकेदेवा॥ जातपलायनकरितसेवा॥ कितनेकशास्त्रतजिकरजोरी॥ छुटेकछवी
रकेशसवदोरी॥ तुमआगेआईबोलतएकुं॥ डरतकुंडरतकुंकहीकेतेकुं॥३७॥ विसरगयेशास्त्र

अस्वजाई ॥ रथविनभयसेंव्याकुलताई ॥ देहकृतदारसेंज्ञाकूरहही ॥ तृटेधनुषरणविमुखकर
॥१८॥ हि ॥ ऊर्धनहीकरेअमरजोजोऊ ॥ तिनकुंनहिमारततुमसोऊ ॥ ३८ ॥ सोरठा ॥ निर्भयदेवनमेंसुर ॥
जुधविनुंवकुंवोलेहेजो ॥ देवसवहेविनतुर ॥ क्याहोवनहारिहेइनसें ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ तोरेउरसेवी
घ्रुहीजोऊ ॥ सवकेनरमेछपिरहेसोऊ ॥ इलाचृतकेवनमेंजाई ॥ छुपिरहेत्रिवक्याकरेआई ॥ ४० ॥
अल्पप्राक्रमइंद्रकहाई ॥ तपस्विअजक्याकरहीभाई ॥ देवअधमसवकूरोगीजवही ॥ नहिंहेजीतन
समर्थतवही ॥ ४१ ॥ तोभिअपनेशत्रुहेराउं ॥ उपेक्षाकेजोग्यनतेऊं ॥ देवनकेमूलकाटनकाजा ॥ ह
मकुंआग्यादेकुंराजा ॥ ४२ ॥ राकुअंगमेंरोगहीजेकुं ॥ उपेक्षसवअंगव्यापितेकुं ॥ पुनिसोरोगमेट
नकुंकोऊ ॥ समर्थनहिहोतनरसोऊ ॥ ४२ ॥ सागीइंद्रिसमुहकुंजेसें ॥ निमकुंमेंनहिरारवितेसें ॥ विस
यमेंआनुरक्तहोयजवही ॥ वसकरनेसमर्थनहीतवही ॥ ४३ ॥ सुंनिरवलशत्रुकुंज्ञानी ॥ उपेक्षाकर
देवेप्रानी ॥ सोवदकेसमर्थहोयजवही ॥ पुनिजिसीनहीजावेतवही ॥ ४४ ॥ देवकुंकोमूलविष्णुक
हाइ ॥ सनातनधर्ममिविष्णुरहाई ॥ धर्मकोमुलवेदगोद्विजा ॥ तपदक्षिणाऊतयागकिजा ॥ ४५ ॥ दो ॥१८॥

हा ॥ यज्ञकरतवेदपढतही ॥ ऐसेद्विजजोहोई ॥ तिनकुंहनेगेसवविध ॥ तपस्विकुंभिसोई ॥ ४६ ॥ चौ
पाई ॥ दुधरुदधिघृतदेवनहारी ॥ ऐसिगौदेवेंगेउमारी ॥ गौद्विजवेदतपसतजोऊ ॥ समदमअरुदानी
तीक्षासोऊं ॥ ४७ ॥ यज्ञदयासवविष्णुकिरहा ॥ सुरतियुंहेहनेंगेतेहा ॥ सवसुरकेपतिविष्णुकहाई
असुरकेद्वेषीहेसोभाई ॥ सवजनअंतरजामिजोऊ ॥ यहविष्णुमुलदेवकोसोऊ ॥ अजइंद्रादिदेवकू
धिजेकुं ॥ इनवधसेंविष्णुवधतेकुं ॥ ४८ ॥ शुककहीदुष्टमतिकंसजोऊ ॥ दुष्टमंत्रिसंगविचारीसोउ ॥ व्रा
ह्मणकिहिंसाहेतेकुं ॥ ताकुंनिजहितमाननतेकुं ॥ ४९ ॥ कालपासवंधअसुरकंसा ॥ साधुलोकहीक
रनेहिंसा ॥ सवदिशुमेंप्रेरनताइ ॥ देसइछितरुपधारतजाई ॥ हिंसाकरनमेंराजीतेकुं ॥ ताकुंप्रेरिकंस
गयेगेहकुं ॥ ५० ॥ रजोगुणीप्रकृतीहेजाइ ॥ तमोगुणसेंमुटचितकहाई ॥ दिगमृत्युपायेहेजेकुं ॥ देससंत
द्रोहकरततेकुं ॥ ५१ ॥ सतपुरुषकोद्रोहहीजोऊ ॥ लक्ष्मीआयुषजसाकीर्तिसोऊ ॥ धर्मअरुधर्मकीफ
लनेकुं ॥ स्वर्गलोककेवैभवतेकुं ॥ औरपुन्यमात्रजोहोई ॥ सवकुंनाशकरिदेतसोई ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ इती
श्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमीजेकुं ॥ श्रीकृष्णकोजन्मजो ॥ भूमानंदकहेहेकुं ॥ ५३ ॥ इतिश्रीमद्भागवते

इस्वामिश्रीप्रभूमानंदरूतभाषायांचतुर्थोध्यायः ।। ४ ।। दोहा ।। जन्मउत्सववकरिकृतको ।। नंदमथु
राजाई ।। वसुदेवकूंमिलेहिसो ।। पंचमअध्यामांई ।। १ ।। चोपाई ।। शुककहेनंदनिजसुतपाई ।। आनंद
जुतभयेगरमांई ।। स्नानकरिउदारचितराऊं ।। वसनभूषणधरिसुधभयेऊं ।। २ ।। जोतिषपाविप्राह्म
णजेता ।। स्वस्तिवाचकिनटेरितेता ।। जन्मसमयकोकर्मकहिजेऊं ।। कराइत्रास्त्रविधिसेंतेऊं ।। ३ ।। देव
पित्रकोपुजनकराई ।। पुरभूषनकृतद्विजकूंताई ।। गोदोयलाखदेतमुदपाई ।। तिलकेपर्वतसातबना
ई ।। बहुरत्नडारितिनमांई ।। दानकरततरकसीपरछाई ।। ४ ।। भुमिआदिकपदारथजेऊं ।। कालसेंसु
धहोतहेतेऊं ।। देहादिककीसुधिहेजेहा ।। स्नानसौचकरीहोवततेहा ।। ५ ।। संस्कारकरिगर्भकिजोउं
तपकरिइंद्रियादिसुधिसोउ ।। मखसेंब्राह्मणकिशुधिहोही ।। धनकीसुधिहेदानसेंसोही ।। ६ ।। सं
तोषकरिमनकूंकीकीना ।। स्वरूपविचारसेंजिवकीचिना ।। स्वस्तिवाचकविप्रभयेऊं ।। पुराणवाचत
सुतसबेऊं ।। ७ ।। सोरठा ।। बंदिजनहिजनागात ।। मागधकहतवंशावली ।। मंगलवचसाक्षात ।। गा
यकगांनकरततबही ।। ८ ।। चोपाई ।। भेरनगारांवाजततबही ।। व्रजनारिसुधकिनेउसबही ।। सुगं ।।१९।।

जतपंतध्या
टिबकडि

धिजलसिंचतलाई ।। द्वारआंगणघरकिवीचमांई ।। ९ ।। चित्रविचित्रध्वजकेमांई ।। छोटध्वजपंक्तिकूं
सेंसुहाई ।। वस्त्रपत्रकेतोरणजोउं ।। तिनसेंशोभहीव्रजसबसोउं ।। १० ।। गोवत्सबेलसबेव्रजमांई ।।
हरदितेललेपनकिनताई ।। गेरूरंगमुरपित्तकिमाला ।। पटकंचनस्त्रजधरविशाला ।। ११ ।। अमूल्य
वस्त्रघरेणांजामा ।। पेरिपगीयांशिरकंवदामा ।। भेटसामग्रीकरमेंधारी ।। गोपआतनंदजीकिद्वारी
१२ ।। जशोमतिजांयेसुतसुनितेऊं ।। हरखपाइगोपिनितदेऊं ।। संगारेवस्त्रभूषणधारी ।। अंजनअं
खियांकूंमेंडारी ।। १३ ।। नविनकुंकुमकेकणजोउं ।। मुखपंकजपरसोभतसोउं ।। बडनितंबकुचचलत
हिजाइ ।। भेटधरिकरनंदघरुआई ।। १४ ।। दोहा ।। छुधमणीकुंडलकानमें ।। गलेकुसुमलांधार ।। वि
चित्रवस्त्रपेरिके ।। वेणिफुलअरुहार ।। १५ ।। चोपाई ।। कंचनकेकंकणकरमांई ।। चलकुंडलकुचहारसु
हाइ ।। नंदघरुगोपिआवतधाइ ।। मगमेंशोभावरनीनजाइ ।। १६ ।। हसमकुंसुकहेसबआइ ।। बकुका
लसुसमकुंपाहीं ।। युंआशिषदेईगोपीराऊं ।। हरदिपीतितेलजललेतेऊं ।। एककुतेकुंसिंचतधाई ।।
मंगलगावतमहामुदपाई ।। १७ ।। जगपतिप्रनंतहृदमजबही ।। नंदव्रजकूंमेंप्रायेतवही ।। बडउ

भा॰द॰पू॰ छवभई नंदघरु ताई ॥ बहु विधि बाजा बाजत मांई ॥ १८ ॥ गोप हरख करत दधि दुध ल्याई ॥ घृत जल छिर अ॰५
॥२०॥ कि मांहो मांइ ॥ लेपत मांखण मुख पर धाई ॥ रमत परस्पर महा मुद पाई ॥ १९ ॥ उदार मन करि नंदजी जे
कुं ॥ करत मागध वंदि कुं तेहुं ॥ और विद्या सें जिवत ताई ॥ पट भुषण गौ देत मुद पाइ ॥ २० ॥ विप्रकुं आर प्रद्युम्नी
धन लियेए हुं ॥ पुत्र कि वृधि लिये पुनि तेहुं ॥ जो जो वस्तु इच्छत ताई ॥ देत उदार चित नंदजी जाइ ॥ २१ ॥
सोरठा ॥ रोहिणि अति बड भाग ॥ नंदने आनंद दिने ॥ वसन भूषन अनुराग ॥ मालादिक व भुषण धरी
२२ ॥ चोपाई ॥ विचरत गुछव में सो आई ॥ जे में सब जन देखत ताइ ॥ जो दिन सें प्रभु रहे आइ ॥ समृधि
करत ब्रज भये तब ताई ॥ २३ ॥ प्रभु के निवास कुं सें एहुं ॥ ता सें गुण पाये ब्रजजने हुं ॥ सो गुण सें लक्ष्मी को
जेहा ॥ क्रिडा स्थान होत हे तेहा ॥ २४ ॥ पुनि गोकुल कि रक्षा काजा ॥ नंदजी छोडि गोप समाजा ॥ कंस ही
कर देवन मथुरां ई ॥ गये नंद कर दिन नृप तांई ॥ २५ ॥ निज सखा नंद आये सुनि कंनी ॥ वसुदेव आत तता
रे पुनि ॥ वसुदेव कुं देखि नंदे हुं ॥ अंग देह प्राण ही पाइ तेहुं ॥ २६ ॥ प्रसन होई उवतत त काला ॥ प्रेम सें
विह्वल भये विशाला ॥ अति वल्लभ वसुदेव कुं एहु ॥ भुज में भीडि के भटत तेहुं ॥ २७ ॥ नंदने सनमा ॥२०॥

न कि ने जब ही ॥ सुखि होइ बैठे वसुदेव तब ही ॥ निज सुत बलदेव मे एहुं ॥ अति आतुर ह्व बुधि
जुत ते हुं ॥ सुखिया हो तुम पुछि ते हा ॥ पुनि नंदजी सें बोलत एहा ॥ २८ ॥ वृध रुतो रष्टा भये नांइ ॥
आशा छोर दिये थे ताइ ॥ अब तब पुत्र भयो सुनि एहुं ॥ परमानंद मम उर भये हुं ॥ २९ ॥ जन्म कुं कि पंक्ती
में आई ॥ जन्म धरि वर्त्तत हो भाई ॥ तब मम भेट न भये हे जोउ ॥ नये जन्म तुल्य जानि सोउ ॥ अति वल्लभ
को दरशन तेहुं ॥ दुर्लभ हे संसार में तेहुं ॥ ३० ॥ बहु कर्म के आधिन जेहु ॥ ऐसे हे निज संबंधि तेहुं ॥
तिन को एक थल निवास जोउ ॥ सदा होत नहीं भेले सोउ ॥ नदि पुर ने ताने उजें से ॥ तृण काष्ट भेलि होत
नाते में ॥ ३१ ॥ अब निज संबंधि सें विराई ॥ रहत तुम वृंदावन मांई ॥ सो वन गोकुं हे हितकारी ॥ रोग र
हित हे कि नहीं भारी ॥ बहु तृण जल वेलि जा मांई ॥ ऐसो वन अब हे कि नांइ ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ मम सुत
बल सो तुम कुं ॥ मानत हे निज तात ॥ जशोमती तुम रखवात ही ॥ सो सुखि हे कत मात ॥ ३३ ॥ चोपाई
निज बंधु अर्थ कीये जोउ ॥ अर्थ धर्म काम घटित सोउ ॥ आप सरखी रही सगा दुख पावे ॥ तिन को ध
न सुख लियुं न कावे ॥ ३४ ॥ नंद कहे देवकि तन नारी ॥ तिन के बहु सुत कंस ने मारी ॥ सुत से छोटि कन्या

जेहा॥ गईनभमिवड्आश्चर्यतेहा॥२५॥ सबजनभाग्यकेवरनरहाई॥ सुतआदिसुखभाग्यहेभाई॥
जनकुंसागकरनभाग्यजबही॥ पुत्रादिककुंपातमनतबही॥२६॥ सुतआदिकोसंयोगजोतें॥ जन
कुंभाग्यकरतहेसोउ॥ सुखदुखदायकभाग्यकुंजेऊं॥ जानतहेपुरुषजोतेऊं॥ कबहुंनरसुंवालन
एहा॥ तुमसुतशोककरोनहीतेहा॥२७॥ सुनीवचनवसुदेवदुखसागी॥ नंदसेंबोलतहोदुरागी
वर्षकोकरतमनृपकुंदिना॥ हमसेंभेटनभयेप्रविना॥ बहुदिनतोरनरेनोआई॥ उसातहोतहेगो
कुलमांई॥२८॥ शुककहेवसुदेवनेजबही॥ प्रेरेगोपनंदादितबही॥ तासेंआगपामागीएहा॥ चे
लजोरगाडिचलेतेहा॥२९॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेऊं॥ नंदबसुदेवसंग
म॥ भुमानंदकहेऊं॥३०॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांपंचमोऽध्याय:
५ ॥दोहा॥ शुककही नंदचलमगताई॥ विचारिवसुदेववचनमांई॥ मिथ्यानहिहोवेगेएऊं॥ उ
सातकिंशाकाकतनेऊं॥१॥ प्रभुकेशरणेजायकेएहा॥ स्तुतिकरतमगचलतहितेहा॥ कंसकुंने
पठवायेजेऊं॥ घोरअसुबालकमारतनेऊं॥ पुरगामब्रजमेंथेंजेता॥ ढुंढिमारनवालहितेता॥२॥ ॥२१॥
वसुदेववचसेंनंदजि ब्रजमगमेचलआई मृतपूतनाकुंदेखत षटकेअध्यायमाई॥१॥चोपाई॥

जदुपतिकेजराकीजेऊं॥ सुंननकिरतनआदिकनेऊं॥ निजकर्मकरतजोस्थलनगाई॥ यहथलपूत
नाकरिबलआई॥४॥ हरिकथाकिरतनजहांहोई॥ तहांराक्षसिचलचुलेनसोई॥ नभमेंचलकेपुत
नाआई॥ राकसमेनंदगोकुलमांई॥५॥ अतिसुंदरनारिकिन्हाई॥ कपटकुंसेंनिजदेहबनाई॥ निशं
कहोइपरघरमिएऊं॥ आपइछासेंपेवितेऊं॥६॥सोरठा॥ पतिकुंदेखनकाज॥ करमेंकमलधरी
रूपअती॥ मानतगोपिसमाज॥ लक्ष्मिमुरतीमानआई॥७॥चोपाई॥ मल्लिकाफुलगुथेवेणीमांई॥
बडनितंबकुचस्तनहेजाई॥ छीटउदरसुंदरपटधारी॥ चंचलभूषनकानमेंभारी॥८॥ जसकांतिकरिके
शासुहाई॥ हास्यसहितसुंदरमुखजाई॥ कटाक्षकृतदेखिकेएहा॥ ब्रजजनकेमनहरतहितेहा॥९॥
बालकढुंढुंग्रहकिन्हाई॥ पिडनहारीब्रजकुंमेंआई॥ छोटबालकुंढुंढतएऊं॥ इछाइछासेंगइनंदगे
हुं॥१०॥ असाधुकुंकेकालरूपजोतें॥ बालरूपमकुंदेखतसोउ॥ बहुतेजरूपमकुंनेनेऊं॥ बालनादस
सेंदांकेतेऊ॥११॥ छारछुपायेअग्निजेसें॥ पोढेपलंगमेंचुपकरतेसें॥ सबजनअंतरजामिजोउ॥ म
रणिरूपग्रहतूस्पहेसोउ॥१२॥ बालपिसकपुतनाकुंजानी॥ लोचनमिचतसारंगपानी॥ सबपापीकुं

मारनहारा॥ तिनकुंमानिछोरकुमारा॥१३॥ निजगोदमेंलेलनगाई॥ रूतेनागकुंअज्ञन्याई॥ माता
कछुंनहीरोकतसोइ॥ तिनकोउतरदेोमेंतोइ॥१४॥ दोहा॥ ग्राकलादकुंकेमांनसें॥ ज्युंदांकेतरवार
स्युंतिरेखेचितज्ञतहेसो॥ चरित्रसकंदरकार॥१५॥ चोपाई॥ ततकालघरुमिल्याआगइतबही॥ देखिज
शोदारोहिणीतबही॥ पुतनाकुंकिकांतिसेंदोउ॥ मोहपाईनहिरोकतसोउ॥१६॥ पुनिबाललेतगो
दखाई॥ अतिफेरनिजस्तनमिलगाई॥ छोवनहारतुरतमरजाई॥ हमकुंकुंधवरावतताई॥१७॥
हरिकरमेंपकरिस्तनजेऊं॥ रोषेजुतपीउतअतितेऊं॥ प्राणसहीतपानकीनेजबही॥ जिवमर्मस्थ
लपिडाइतबही॥१८॥ छोडछोडपोकारीएहा॥ लोचनफाडिकरपगतेहा॥ वेरवेरपटकतभूलाई
स्वेदजुतभइसबअंगमांइ॥१९॥ रोवतअतिवडस्वानिकासी॥ तिनकेवेगसेंभुगिरिराजी॥ चला
यमानहोतेहेएहा॥ ताराजुतस्वर्गचुलीतेहा॥२०॥ सबदिशुंपातालकेमांइ॥ परेप्रछंदाग्रतहीताई
वज्रपातकिशंकालाइ॥ सबजनगिरतभूलजाई॥२१॥ सोरठा॥ युंपिडाइस्तनमांई॥ मरतराक्ष
सकोरुपभइ॥ मुखवतघोरोकराई॥ करपगरूशिरकेशाबडे॥२२॥ चोपाई॥ तिनकुंपसारीगिरेव्रजमां ॥२२॥

ई॥ हुंडुहनेवज्रासकरन्याई॥ सोदेहपरकोग्राममेंजेऊं॥ कारचुरणकरडारततेऊं॥२३॥ वडआस्थर्यरु
पकेमांइ॥ हलडांडिसमदाढरहांई॥ गिरिशिखरतुल्यस्तनहिदोउ॥ गिरिगुफासमनासिकाजोउं
२४॥ लालरुखिरवरेशिरपरकेशा॥ अतिभयकररूपकरेवेशा॥ जलविनकुपसमअंखियुंउडी॥
नदितटसमगुल्हअंगरहीछुडी॥२५॥ श्रोवरकिबडपात्रसमेऊं॥ हस्तपाबसाथलहेतेऊं॥ जल
विननदिहृदसतुल्यजोउ॥ अतिडरोउदरहेसोउ॥२६॥ भयंकरदेखकलेवरएऊं॥ गोपगोपिडरपा
येतेऊं॥ पुर्वपुतनाझांसेंजेहा॥ भेदगईकानउरशिरतेहा॥२७॥ पुनिपुतनाकेउरपरजोउ॥ खेलत
निरभयहरहसहीसोउ॥ ताकुंगोपिउंतुरतउठाइ॥ बोलतनिजउरमेंभरमाइ॥ किनकोबालकहांसेंआ
ये॥ युंकहीजशोमतिकिलगलाये॥२८॥ दोहा॥ रोहिणीजशोदाजुतसब॥ गोपिगोपुछफेर॥ रक्षा
करतहीबालकी॥ उरमिआनंददेर॥२९॥ चोपाई॥ गोमुत्रगोरजपुनिलाई॥ गोछांणसेंदेतनवराई
पुनिप्रभूकेबारअंगमांइ॥ रक्षाकिनकेशाबादिगाइ॥३०॥ करपगधोईआचमनकिना॥ निजअं
गअरुकरमेंप्रविना॥ पृथककिजन्यासकरिताऊं॥ हरिअंगकरमेंकिनेतेऊं॥३१॥ अजनामभग

भा॰द॰पू॰ वानहेजोउ॥ तवपगरक्षाकरऊंसोउं॥ मणिमानप्रभुहेसोफेरी॥ रक्षाकरोतवजानुंकेरी॥ ३२॥ यज्ञना अ॰६
॥२३॥ मसाथलकिजोउं॥ कटिरक्षाकरअच्युतसोउ॥ हयग्रिवउदररक्षातेऊं॥ रुदयकीकरोकेशवतेऊं
३३॥ इशानामप्रभुवक्षस्थलकी॥ कंठमेंप्रभुइननामधरकी॥ तोरभुजरक्षाविष्णुजेऊं॥ उरुक्रमप्रमु
खकीकरोतेऊं॥ ३४॥ तवशिररक्षाईश्वरजेहा॥ हरिचक्रजुतआगेतेहा॥ पुनिहरीगदाधारीकरमाइ
नवरक्षाकरोपिछेआई॥ ३५॥ जमणेपडखेधनुषधारी॥ मधुसूदनकररक्षातिहारी॥ असिधरअ
जननामभगवाना॥ डाबेपुडखेरक्षाजाना॥ ३६॥ शंखधरउरुगायहेजोउ॥ चक्रखुणरक्षाकरऊंसोउ॥
तोरेउपरउपेंद्रनामा॥ निचेहितारक्षपुरणकामा॥ ३७॥ पुरुषकरऊंमेंहलधारी॥ चकुंओररक्षाक
रोतिहारी॥ रुषीकेशइंद्रिकुंकीजोउं॥ प्राणकुंकिनारायणसोउं॥ ३८॥ सोरठा॥ श्वेतद्वीपपतिचीत
केरिरक्षाकरऊंतोर॥ योगेश्वरनाममित॥ तोरमनकिरक्षाकरऊं॥ ३९॥ चोपाई॥ पृश्निगर्भबुधिकुं
किजेहा॥ परप्रभुअहंकारकीतेहा॥ क्रिडाकरतेहोतुमजबही॥ गोविंदरक्षाकरऊंतबही॥ ४०॥
सूतेकिमाधवनामजेऊं॥ चलतेवैकुंठनामीतेऊं॥ बेठेबालककीरक्षाजोउ॥ करऊंलक्ष्मिपतीप्रभु ॥२३॥

कोउं॥ जिमतेयज्ञपुरुषहेजेऊं॥ ग्रहकुंभयंकरपाहीतेऊं॥ ४१॥ डाकिनीयातुधानीयुंजेती॥ कु
ष्मांडबालग्रहजेती॥ प्रेतभुतयक्षपिशाचजोउ॥ राक्षसरेवतिकोटरासोउ॥ ४२॥ जेष्टाअलक्ष्मी
पुतनाजेऊं॥ मात्रिकाआदिकसबीतेऊं॥ पुनिउन्मादगणरोगजेता॥ देहइंद्रिप्राणकेतेता॥ द्रोह
हेसबलोकविख्याता॥ स्वप्नमिदर्शतबडउत्पाता॥ ४३॥ द्धबालककेग्रहसबएता॥ डाकिनीआ
दितबडरखदतेता॥ विष्णुनामसेडरिकेरऊं॥ नाशहोइजाऊंसबतेऊं॥ ४४॥ दोहा॥ विनयज्ञ
तहोइगोपिका॥ असविधरक्षणकिन॥ पुनिजशोमतीधवरायही॥ निजसूतपोदाइदिन॥ ४५॥
चोपाई॥ तबनंदआदिगोपहीजेना॥ मथुरासेंव्रजआयेतेना॥ अतिभयकरपुतनातनुजोउ॥
देखिविस्मयपायेजसोउ॥ ४६॥ पुनिपरस्परबोलततेहा॥ मथुरामिवसूदेवनेजेहा॥ किनेउत्पात
देखेएहा॥ रुषीअरुयोगेश्वरधरीदेहा॥ ४७॥ गोपादिव्रजवासीजेऊं॥ काटिकुठारसेंपुतनादेऊं॥
व्रजसेंसबअंगदुरलेजाई॥ लकराडारीजारततांई॥ ४८॥ हरिस्तनपानकरिभोरोऊं॥ तासेंपापरहि
तभयेतेऊं॥ सोदेहसेंगंधउठतजेऊं॥ अगरुचंदनकेतूल्यतेऊं॥ ४९॥ बालकमारनहारीएहा॥ कु

धिरअहारिपुतनानेहा॥ इननइआसनपानकराई॥ सतपुरुषकिगती सोपाई॥५०॥ श्रद्धाअतभक्तिसेंज
नजोउं॥ प्यारुपदारथदेवेकोउं॥ सदगतिपावेक्याबकुंसोउं॥ हितअतमातकीअहाककुंतोउ॥५१॥ सो
रठा॥ एकांतजिनकेउर॥ रहतसदानिवासकरी॥ लोकपालअजसकर॥ नमनकरतजोचरनको॥५२॥ चौ
पाई॥ सोपगसेंपुतनाकोदेहा॥ रगरिस्तनपानकरततेहा॥ यातुधानिहेतोभितकुं॥ जशोदासुंवेकुंव
पायेकुं॥५३॥ वछगोपरुपभयेथेंजबही॥ गोगोपिकेस्तनपीवततबही॥ जशोमतिसुंवेकुंवपाई॥
यामेंकछुहिआश्चर्यनांइ॥५४॥ कैवल्यमोक्षआदिकजेहा॥ सबऐश्वर्यदायकतेहा॥ गोगोपिकोस्त
नेदुधजेकु॥ पुत्रस्नेहकरिपानकियेकुं॥५५॥ अज्ञांनकुंसेंउपजतजोउं॥ जन्ममृत्युनहिपावतसोउं॥ गो
गोपिसुंनिरंतरएकुं॥ पुत्रभावसेंदेखततेकुं॥५६॥ पुनिनंदआदिगोपसबजोउं॥ अगरुचंदनसमगंध
सोउ॥ पुतनाकुंकेधुमकोतेकुं॥ अगंधकुंसंघिकहेएकुं॥ क्याहेकहांसंआतहीभाई॥ युंबोलतआयेव्र
जमांई॥५७॥ पुनिव्रजमेथेगोपसोआइ॥ सबगाथाकरदेतसंनाई॥ पुतनामुइबालकुजोलरहेकुं॥ सुं
निअतिविस्मेअतभयेतेकुं॥५८॥ उदारबुधिवंतनरजोउं॥ मरकिआयेसुंमाननसोउं॥ निजसुतकुं ॥२४॥

लिनगोदउवाई॥ शिरकुंसुंघतमहामूदपाई॥५९॥ पुतनाकिमुक्तिरुपहेजेकुं॥ श्रीहरुष्णकोचरीत्रएकुं॥
श्रद्धाकरीकेसुनेनरजोउ॥ प्रभुमेंप्रितिपावहीसोउ॥६०॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमि
जेकुं॥ पुतनाकुंकोमोक्षजो॥ भूमानंदकहेकुं॥६१॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभुमानंदकृतभाषा
यांषष्ठोध्यायः॥६॥ दोहा॥ शाकटअसुरमारतनभमें॥ तृणावर्तभुमिताई॥ मुखमेविश्वदेखायगि॥
मातकुंकीअध्याय॥१॥ चोपाई॥ परिक्षितशुककुंपुछतएकुं॥ निजजनसंकटहरप्रभुजेकुं॥ जोजो
अवतारधरिकेकीना॥ चरित्रसोसोसबेप्रवीना॥२॥ मोरेकानकुंकुसुखदाता॥ मनकुंप्रीतिप्रदसाक्षा
ता॥ चरित्रसंनहारकिजेहा॥ मनकिग्लानिमिटततेहा॥३॥ प्रभूविनओरपदारथमांई॥ तृष्णाकुंकुं
देतमिटाई॥ सोनरकेअंतःकरणजोउं॥ थोरकालमेंसुधहोतसोउ॥४॥ हरिमेंभक्तिपावतएकुं॥ हरिज
नमेंसखापणुंतेकुं॥ सोइचरित्रकहोतुममोई॥ करोअनुग्रहममपरसोइ॥५॥ मायासेमनुषदेहपाई॥
करतचरित्रमनुषकिन्याइ॥ इनकोबालचरितओरजोउं॥ अतिअदभुतकहोममसोउ॥६॥ सोरठा॥ सु
ककहेकशुकबाल॥ कुंकुंस्नानविधिकरनो॥ तामिअभिषेककाल॥ जन्मनक्षित्रआईतब॥१॥ चोपाई

तामेंउछवआयेभारी॥जामेंएकविभईव्रजनारी॥जन्मोंमतिगितवाजांवनाई॥वेदमंत्रस्वस्तिवचकराई॥८
सुंदरस्कृतअभिषेककीनोंउं॥स्नानसहीतकराइकेसोउं॥अंनवसनफुलहारसभधेनुं॥तासेंपुजनविप्र
कोकेनुं॥९॥सोद्विजस्वस्तिवाचकिनजवही॥नेनमेंनिंदपायेप्रभुतवही॥गाडानिचेपारणामांई॥घि
रेरहीपोसावततांई॥१०॥विधिसेंस्नानकरावतजवही॥मनउछवक्रुतजन्मोमतिनवही॥उछवमेंआये
व्रजवासी॥पुजततांकुंक्रुतकुलासी॥११॥निजस्कृतकुंकोरुदनजोंउं॥जन्मोदानेनहीसुनेसोउ॥स्तन
पानकरनेकेकाजा॥नितपदउंचेपरस्कृतराजा॥१२॥गाडानिचेपारणामांई॥तामिहृदमबालकिमाई
छोटेकोमलचरणहिहोउं॥आंवपत्रसमछोटेसोउ॥१३॥तिनुंनेहनेगाडखुंतेकुं॥गिरेउअबलाहो
यकितेकुं॥वकुरसभांउभरेतेजेता॥कुटिगयेसकरमेंतेता॥१४॥चक्रुआंरवडुंबंटछोतेकुं॥सुंसुंकाग
माक्रुलभयेकुं॥उछवमेंएकटिभईजोउ॥जन्मोदादिव्रजनारिसोउ॥पुनिानंदादीगोपथेंजेता॥अदभू
तदेरवअकुलाइतेता॥१५॥दोहा॥एकडतेकुंकहतसो॥क्युंआपेगिरेएकुं॥अनिष्ठेव्रह्दिजतभये
गोपगोपिसबतेकुं॥१६॥चोपाई॥तासंवोलेरमतहिबाला॥रोवतहृदमनेपगउछाला॥सकटगिरे

उपगसेंहनाई॥यामेंसंशयकरनोनांई॥१७॥गोपकहेछोटबालकएकुं॥क्याजानेयाबातमेंतेकुं॥बाल
वचकिविश्वासनलाये॥छोरबालजोत्राकरउडाये॥प्रमाणरहीतबलहरिकोजोउं॥गोपसबजानिसकृ
तनसोउं॥१८॥बालग्रहकिआश्रांकाआई॥रोवतस्कृतलेगोदमेंमांई॥बालग्रहकेनाश्रालियुंएकुं॥वे
दमंत्रकरिद्विजसेंतेकुं॥स्वस्तिवाचनस्कृतकोकराई॥पुनिस्तनपानकरावतमाई॥१९॥वलिहगोपने
सकटएहा॥पुर्वस्माईकिनेउतेहा॥ग्रहनिमितद्विजनेहोमकिना॥दधिअक्षततलकुशलिप्तविना॥
२०॥ग्रहकीपुजाकरकेपुनिएकुं॥प्रभुकुंआशिषदेतहितेकुं॥परकेगुणमेंदोषहेजोउं॥याकोनाम
असूयासोउं॥२१॥मिथ्याभाषणअनृतएकुं॥कपटेधर्मकरेदंभेकुं॥परउतकर्षसहननतेकुं॥इर्षा
याकोनामकहेकुं॥२२॥इतनेअवगुणरहीतएहा॥सत्यबानिबोलतहितेह॥इनकेआशिरवादही
जेता॥निष्फलनांहिहोतहेतेता॥२३॥सोरठा॥युंविचारिकेनंद॥निजस्कृतकुंगोदलिये॥सामक्रु
गयक्रुछंद॥मंत्रकुंसेंसंस्कारकरि॥२४॥चोपाई॥सोजलमेंसधअोषधिजारी॥करतअभिषेकक्रुही
जसभकारी॥स्वस्तिवचनकराइकेएकुं॥अगनिहोमकरातपुनिएकुं॥२५॥सावधानहोइनंदजोउं॥

सुतसाकरक्रततबअंनसेंसोतुं॥ विप्रकुंजिमावतएकुं॥ निरविघनस्कतकिसुधिलियेकुं॥२६॥ पुनअ
हकुलकंचनकिमाला॥ तिनक्रतगायुंदेनविशाला॥ पुनिहलधमकुंब्राह्मणएकुं॥ स्कभअशिषवादेत
हितेकुं॥२७॥ मंत्रज्ञानसमरथक्रततेजोउ॥ ऐसेद्विजदिनआशिषसोतें॥ बकुजीबस्कलखिशेयुंजोकी
ना॥ निष्फलकबकुंनहीतपबिना॥२८॥ कोमलपदसेआगेतेकुं॥ सकरचरित्रकहेसबनेकुं॥ एकसमेनि
जस्कतकुंमाता॥ गोदमिखिलावतसाक्षाता॥२९॥ गिरिशिखरतुल्यस्कतकोदेहा॥ नुगानकुंसमृथनही
नेहा॥ हलधमभारसेंविशपाई॥ गोदसेंभुपरधरकेताई॥३०॥ उसातकिशंकाउरलाई॥ विश्वमुध्यानकरत
मुरछाई॥ प्रभुकिमायासेंमोहपाई॥ गेहकाजकरतपुनिजाई॥३१॥ दोहा॥ तवतृणावर्त्तदैत्यजो॥ कं
सपठायेजेकुं॥ वायुचक्ररूपहोइके॥ हरतहलधमकुंतेकुं॥३२॥ चोपाई॥ वायुचक्ररूपहोइजबही॥ सब
गोकुलरजछायेतबही॥ सबजननेत्रचोरतएकुं॥ अतिबडभयंकरशब्दनेकुं॥ सबदिशकुंगरजावत
तेकुं॥ शोघरदिशजगोकुलमेंएकुं॥३३॥ रजसेंघोरअंधारभयेकुं॥ तबजशोमतिनिजस्कतसमरेकुं॥
आपबेगायेथेब्यलजाई॥ तेहिथलस्कतकुंदेखतनांई॥३४॥ तृणावर्त्तउडायेजेहा॥ कंकरकुंसेंहना ॥२६॥

येतेहा॥ मोदसहितमनुष्यसबएहा॥ नहिंदेखतनिजपरकेदेकुं॥३५॥ कछिनवायुमेंदृष्टिजेहा॥ धु
लिअरुकंकरकिभइतेहा॥ तबजशोमतिस्कतमगानजानि॥ संभारतशोकअतिडरआनि॥३६॥
अतिकरुणक्रतरोवततेहा॥ गिरेधरापरताकोदेहा॥ मृतवछकिमातागोजेसें॥ जशोमतिव्याकुलभ
इतेसें॥३७॥ धुलिकंकरकिदृष्टिजबही॥ विरामपाईवायुक्रतलबही॥ जशोमतिकोरुदनस्कनीआ
इ॥ तेहिथलगोपिकासबधाइ॥३८॥ नंदस्त्रिकेस्कतकुंनहीपाई॥ तपेबुधिसेंनेननिरखाई॥ याविध
गोपिकासबजोतुं॥ अतिसेंरुदनकरतहेसोई॥३९॥ सोरठा॥ तृणावर्त्तवायुरूप॥ हलधमकुंहरकेन
भगई॥ मंदवेगभयेभुप॥ अतिप्रयासकरिथकतही॥४०॥ चोपाई॥ भारअतितववायकेएकुं॥ चल
नसमर्थनहितपरितेकुं॥ हलधमकेतनुभारसेंएहा॥ शिलानुवाईयुंजानततेहा॥ प्रभुनेपकरेकंठमेंता
ई॥ करछोरावनसमर्थनाई॥४१॥ चेष्टारहितनेत्रभइबारा॥ विछिकीनअतिशब्दउचारा॥ प्राणरही
तबाप्लकक्रतएकुं॥ गिरेशिलापरव्रजमेंतेकुं॥४२॥ करचरणादिकअवयवजेता॥ विखुरगयेटुंक
टुकभईतेता॥ त्रिपुरास्करशिवमरसेंजेसें॥ रोवतगोपिदेखतनेसें॥४३॥ तृणावर्त्तकुंकेकंवमोइ॥

करसेंपककिरहेलपटाई ॥ कुछ्यालरहेहरुमसबअंगा ॥ देखतगोपिनुंजनुतउमंगा ॥ ४४ ॥ जसोमतिकुंदेखत
जाई ॥ विस्मितहोइरहेमनमांई ॥ नरकुंखावनहारोजोउं ॥ हरिगयोआकाशमेंसोउं ॥ ४५ ॥ मृत्युमुखसें
छुटेजांनी ॥ गोपगोपिनुरसमंगआनि ॥ श्रीहरुमकुंमिलकेएऊं ॥ पुरणमनोरथसबहीभयेऊं ॥ ४६ ॥ गो
पपरस्परकरतहिगाथा ॥ अदभुतआश्चर्यदेखिसाथा ॥ राक्षसनेमारेथेतेऊं ॥ कोकपुन्यसेंआयेतेऊं
४७ ॥ औरगोपकहेयामांई ॥ आश्चर्यकछुमतकरोभाई ॥ अतिपापिखलदैसहेएहा ॥ निजपापसेंम
रगयोतेहा ॥ साधुगुणकृतश्रीहरुमथेऊं ॥ समपणेकरिभयछुटेतेऊं ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ तपअरुप्रभुको
पुजन ॥ वापिकुपसरजोकिन ॥ अग्निहोत्रादिपंचमख ॥ कियेदानकछुदिन ॥ ४९ ॥ चोपाई ॥ सबपा
तिसकृहदपगुजोउं ॥ यहआदिपुन्यअपनोसोउ ॥ जासेंमरकेंपीछेआये ॥ अपनेघरमेंमोदबढाये
५० ॥ नंदजिरहतबडेवनमांई ॥ वकुंउसासपरतहैआई ॥ ताकुंदेखिविस्मितएऊं ॥ वसुदेवबचनऊ
माननतेऊं ॥ ५१ ॥ एकसमेजसोदामाता ॥ गोदमेंलईहरुमसाक्षाता ॥ दुधकरतनिजस्तनहीजोउं ॥ सें
हकरिधवरावतसोउं ॥ ५२ ॥ स्तनपानकरित्रपतभइजबही ॥ हसतमंदमंदमुखतबही ॥ सोमुखऊं ॥२७॥

कुंलडावतहिमाता ॥ करतबगासोप्रभुसाक्षाता ॥ ५३ ॥ मुखमेंविश्वचराचरजोउं ॥ जसोमतिनेदेखेउं
सोउं ॥ भुमिनभतारास्वर्गदिशाही ॥ रविचंद्रादिअग्निवायुदरियाही ॥ ५४ ॥ द्विपगिरिनदिवनजिवस
बतेऊं ॥ स्थिरचरदेखतमुखमितेऊं ॥ मृगबालसमअंखीयांजाकी ॥ हरिमुखदेखकंपततनुताकी
मिलनेत्रमिचिमाताएऊं ॥ असंतविस्मेपाइतेऊं ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमी
जेऊं ॥ तृणावर्त्तकोमोक्षजो ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ५६ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभा
षायांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ दोहा ॥ नामकर्मबालकीडन ॥ मृतभक्षणजोकिन ॥ विश्वरूपदेखायेउं ॥
अष्टमोऽध्यायचिन ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहेसबजादवकेऊं ॥ पुरोहीतगर्गतपस्वितेऊं ॥ वसुदेव
नेपठवायेजबही ॥ नंदकेव्रजमेंआयेतबही ॥ २ ॥ देखगर्गकुंदोकरजोरी ॥ नंदउठायेसनमुखदोरी ॥
प्रथमकिननमस्कारधाई ॥ पुनिपुजतप्रभुकिबुधिलाई ॥ ३ ॥ भोजनादिकमितमानिकिना ॥ बेठेस
खियागर्गप्रविना ॥ बोलतनंदवचनमुदराई ॥ क्याकरूमेंपुरणतुमभाइ ॥ ४ ॥ गृहाश्रमिदिनचितन
रताई ॥ कल्याणलियेविचरहीआई ॥ स्वार्थलियेत्मसमवउजोउं ॥ नहिविचरतजानेहमसोउ ॥ ५

इद्रिसबजानतनहितेकुं॥ तिनकालकोज्ञानजोतेकुं॥ चंदसूर्यादिग्रहहकिगाथा॥ अश्विनिआदिनक्षत्र
साथा॥६॥इतनेकोप्रतिपादकजोउं॥ जोतिषशास्त्रकिनेतुमसोउ॥ जासेंजिवकुंसुखदुखजेतेहा॥ हो
नहारज्ञानेजनतेहा॥७॥ दोहा॥ गर्गतुमबडलक॥ वेदकेज्ञाननहारमि॥ संस्काररूपअभिषेक॥ क
रकुंनाममोरसुतको॥८॥ चोपाई॥ कहोगेतुमकुलगुरुहीजोउं॥ नामादिसंस्कारकरेसोउं॥ सबज
नकेगुरुब्राह्मणजेकुं॥ जन्मेकरिकेकिनेउतेकुं॥९॥ गर्गाचार्यबोलेउबानी॥ जदुकेगुरुमेंजगसब
जानी॥ मेंसंस्कारकरेगेजबही॥ कंसदेवकीसुतमानितबही॥१०॥ तबवसुदेवकीमित्रीजेकुं॥ पाप
कंसजानतहेतेकुं॥ देवकिकीकन्यानेकिना॥ तबअरिष्टतउतभयेमतिहीना॥११॥ सुनीवचनउरविचा
रतणकुं॥ अष्टमगर्भस्त्रिहोतनतेकुं॥ युंशंकातउरमेंकंसलाई॥ तबपुत्रकुंहनेजोआई॥ बडअन्यायहो
ततबणहा॥ नहीसंस्कारकरेहमतेहा॥१२॥ नंदकहेएकांतमिजाई॥ जोस्थलगोपसबजानेनांई॥ सोस्थ
लमेंममसुतकेजोउं॥ स्वस्तिवाचनप्रथमसोउ॥१३॥ द्विजातिसंस्कारहेजेता॥ करनजोग्यकरोतुमतेता॥
शुककहेनंदनेकिनीजेहा॥ प्रारथनासुनिगर्गनेतेहा॥ आपकुंकरनइच्छाथिजोउं॥ प्रसनभयेसुनीवच ॥२८॥

सोउ॥ गोबेवकुएकांतमेंजाई॥ बालकेनामकरतमुदपाई॥१४॥ दोहा॥ रोहिणिकोयहपुत्रजो॥ नि
जगुणकुंसेंतेकुं॥ निजसबंधिकुंरमाउत॥ रामकहेगेएकुं॥१५॥ चोपाई॥ बहुबलसेंबलदेवहीनामा
कंसभयसेंतजीनिजगामा॥ भागगयेप्रथकजउजेता॥ संकर्षणभयेटेरीतेता॥१६॥ नंदतिहारोपुत्र
हिएहा॥ जुगजुगप्रतिधरतहेदेहा॥ ताकेतिनवर्णकहुंतेकुं॥ श्वेतवर्णसतयुगमेंएकुं॥१७॥ त्रेतामी
रक्तवोनहीधारी॥ द्वापरमेंपितवर्णसुभकारी॥ कलिमेंशामवरणकुंपाये॥ याकारणअबकृष्णक
हाये॥१८॥ हेनंदजीतवसुतजोएकुं॥ पेलेवसुदेवकेसुतथेकुं॥ इनकेस्वरूपकुंजाननहारा॥ वासुदेव
कहहिमुनिउदारा॥१९॥ तवसुतकेगुणकर्महिजोउं॥ तिनकेजोरूपनामरूपसोउं॥ मेंतोजानतहोसब
सोई॥ औरनहीजानेजनकोई॥२०॥ गोपरुगोकुलकुंमुददाता॥ तबकल्याणकारिसाक्षाता॥ अस
बालसेंव्रजवासीजेहा॥ सबदुखसेंछुटेगेनेहा॥२१॥ आगेभूपरनृपनरहेकुं॥ चोरनेपिडेउसाधुतेकुं
तबतवपुत्रएथुरुपहोई॥ रक्षाकरतसाधुकिसोई॥ तबसाधुवृधिपाइकेएकुं॥ चोरकुंजीतिलेतहीने
कुं॥२२॥ सोरठा॥ जोनरतवसुतमांई॥ प्रितीकरेगेबडभागी॥ सोमनृपकुंआई॥ शत्रुपराभवनहीकरहीं॥२३॥

भा॰द॰पू॰ ॥२९॥

चोपाई॥ विघ्नुपक्षहेस्करकुंजेसे॥ ताकुंजितेनअसुरतेसें॥ यहकारणनंदतवसुतजोउं॥ गुणकिरती अ॰८
सोभाकृतसोउ॥२४॥ महीमासेंनारायणतूल्या॥ इनकिरक्षाकरोअमूल्या॥ युंकककहेनंदकुंयुंकीना
निजगेहगयेगर्गप्रवीना॥२५॥ पुनिनंदअतीआनंदपाई॥ पुरणमनोरथभयेउरमांई॥ पुनीथोरका
लेबलहरिदोउं॥ करकृतजानुंसेंचलेसोउं॥२६॥ चरणकृगलकुंतोनिजबही॥ व्रजकिचमेंचलतहेत
बही॥ निजकटियुगमेंभूषणजोउं॥ तिनकेशब्दसेंशोभतसोउ॥२७॥ घुघरीयुंकेशब्दसुनीदोउं॥ ह
रखपाइनिजमनमेंसोउ॥ व्रजवासिचलनेजनजेऊं॥ तिनकेपीछेदोरततेऊं॥२८॥ अनानेसेंयउकि
माई॥ तेसोनिजउरमेंउरपाई॥ रोहिणिजशोमतिकीहिगधाई॥ वादरहतहेदोनूंभाई॥२९॥ दोहा॥ व्र
जकोकिचअरुचंदन॥ अंगमेंलगिरहेऊं॥ तासेंसुंदरसुतनीज॥ छातीमेंभीडततेऊं॥३०॥ चोपाई
दयाकरिकेमातादोउ॥ स्रवतस्तनधवरावतसोउं॥ मंदमंदहासिमुखमांई॥ सूक्ष्मदंतकीपंक्तिसु
हाई॥ असेसोमूखहरिकोसाक्षाता॥ देखअतिमूदपायेउमाता॥३१॥ जीयाकुंदेखनजोगपुजबही॥ बा
ललीलाकरतभयेतबही॥ छोटछोटव्रजमेंवछजोउं॥ ताकेपुंछपकरहीदोउं॥३२॥ वछनेइतउतता ॥२९॥

नेजबही॥ व्रजविनतारहेदेखितबही॥ ग्रहकेकाजविसारिगहा॥ हसतअतिमुदपायेतेहा॥३३॥
अतिचपलकिडतसुतदोउं॥ ताकुंरोहिणिजशोदाजोउं॥ श्रिंगावंतगोबेलहेजेऊं॥ डाढवंतकुंकरस
र्पतेऊं॥३४॥ अग्निजलतरवारूकहाई॥ पंखिअरुकांटासेंताइ॥ रक्षाकरतहिमाताधाई॥ गेहका
जनहीहोवतजबही॥ मनमेंउदवेगपावततबही॥३५॥ थोरकालकरिव्रजमेंतऊ॥ रखडेहोइकेचलन
लगेऊं॥ पुनिप्रभुबलअरुगोपसहिता॥ रमेव्रजनारीकुंमुदकिता॥३६॥ हृदमकीकुमारवयकोजोउं
चपलपणदेखगोपिउंसोउ॥ सबमिलिजशोमतिकिदोगजाई॥ युंबोलूतहीताकुंसुनाइ॥३७॥ तव
सुतगोदोनसमयनहोई॥ वछकुंखोलिदेतहीसोई॥ रिसकरीकेलरियेहमजबही॥ हसिदेतहेमुख
सेंतबही॥३८॥ आपेचोरिकरकेपावे॥ हमदेवेसोकबऊंनखावे॥ तामेंसाडहोतहेजेऊं॥ औरतजी
केपावेउतेऊं॥३९॥ दोहा॥ चोरिकरनउपाय॥ निजबुधिकुंसेंकल्पिके॥ दधिदुधचोरिखाय॥ अ
धिकमरकटकुंदेवे॥४०॥ चोपाई॥ मरकटभिनहिपावतजबही॥ दधिदुधभाजनफोरततबही॥ जि
नकेघरमेकछुनहोई॥ तापरकोपकरिकेसोइ॥४१॥ जलाइदोगेमेंअसगेऊं॥ युंकहीलरकनऊं॥

कुंतेऊं॥चोरिकेअरु रुपियांमारी॥गोवराईजानहीत्रिघचारी॥४२॥तवस्कतचोरितपायवकुंकरही॥
कहूंमेंसबही कांनतुमधरही॥इनकोकरनहीयोचेजवही॥जंचेत्रिकभांडऊंमेंतवही॥४३॥इधिडु
धमांखगाहोनेहीजोनें॥जानलेतहेसबकुंसोउ॥त्रिकेहाथनपोकेयाको॥पिचनुतुखलधरकेताको
४४॥रचितपायनपोचेजोउं॥याविधत्रिकुंउचजोकोउं॥तामेंभांडधरेहेंजेऊं॥तामेंछिद्रकरतहेंतेऊं॥
ऐसेसेरुत्कीजानतगहा॥भांडफूटनैजावेतेहा॥४५॥अंधारघरमेंवस्तुजेती॥मणिभूखणादिकाशहीं
तेती॥गेहमिकाजकरेहमजबही॥तवस्कतबिगाडकरेउतवही॥४६॥दोहा॥हेजनेगामतितवस्कत
यह॥येवतपरघरुमांई॥तेहिसमयकोउआयही॥चोरचोरकहीताई॥४७॥चोपाई॥तिनकुंकहेचो
रतुमजेऊं॥गेहधनिजोहमहेतेऊं॥युंबोलतवचनवच्छदेखाई॥लेपिसंदरकियेगेहमांई॥४८॥मल्ल
मुनिदेतुतामेंआई॥ऐसेसेचोरकरमउपजाई॥नवस्कततोरसमीपेआई॥गादरहेहेसाधुमाई॥४९॥
युककहेभयजतनेचुदोउ॥असजोभाकतहरिमुखसोउं॥ताकुंदेखनइछाधारी॥कहतकर्मगोपी
युविस्तारी॥संनिजजोमतीहरिमुखसेऊं॥हमकुंलरित्राकेनहीतेऊं॥५०॥ताकसमेचलरुगोपवा ॥२०॥

ला॥करतहहमजतखेलविनगाला॥कहतसवेजनगोमतिरिगजाई॥श्रिहरहमनेमृतिकाजोपाई॥५१
निजस्कतकोहितइछतमाला॥हमकुंकरपकरीसाक्षाला॥तिरस्कारकिनमातनेजबही॥भयसेंच
पलनेनभयेतबही॥५२॥स्कतकुंकहेचपलदेहधारी॥मृतकपुंखाइएकांतमिगारी॥तवमित्रलरका
सचएऊं॥कहतहेबलदेवजतेनऊं॥५३॥हमकहेमृतमेंनहीखाई॥जगकहतहेसबतुमताई॥
सचहोवेतबममसुखएऊं॥नजीकहेदेखोतुमतेऊं॥५४॥मातकहेसाचेहोतबही॥देखाअंगोमुख
उघारीतबही॥लिलासेंप्रभुनरदेहधारी॥तेस्युर्यजतअनंतअपारी॥मुखउघारीमातकुंएऊं॥दे
खातनिजजनदुखहरतेऊं॥५५॥हमसुखमेंजजोमतिजेहा॥स्थिरचरविश्वदेखतहीनेहा॥वायु
विजचंदतारागजेाव॥तेहिजतअंतरिक्षहिसोउं॥५६॥दशादिशापर्वतद्विपरुजेता॥भुगोलखगोल
समुद्रतेता॥शिशुमारचक्रअनलजलजेऊं॥नभअरुइंद्रिकेदेवतेऊं॥मनइंद्रिमात्रापंचजोउं॥त्रि
गुणदेखतमुखमेंसोउं॥प्रकृतिकोपतिपुरुपहेजेऊं॥तिनकोनामभिजीवहेसोउं॥५७॥गुणक्षो
भकसोकालकहाई॥स्वभावसबपरिणामपमाई॥विश्वकितुसतिकर्मकरही॥मायादिककरितनुभे

भा॰द॰पू॰ दृपरही ॥५९॥ विचित्रजेकुविश्वकहाई ॥ देखिएककालेमुखमांई ॥ निजदेहजुतव्रजसबजोउं ॥ देखिकं अ॰८
॥२१॥ ब्राकापायेसोउ ॥६०॥ यहमोकुंक्यास्वप्नआई ॥ किभगवानकिमायादेखाई ॥ किमोरबुधिमेंमोहएकुं
सुतऐश्वर्यस्वभाविते कुं ॥६१॥ ममसुतऐश्वर्यविननांई ॥ युंनिश्चेकरिकहेमनमांई ॥ चितमनवचने
करिकेजोउ ॥ साक्षाततर्कमिंआतनसोउं ॥६२॥ यहप्रकारकोविश्वएकुं ॥ जिनकुंआश्रारेरहहीते
कुं ॥ त्रिभुंनेदेखाइविश्वएरा ॥ सोनहिंआततर्कमीमेरा ॥ यहपरब्रह्मरूपपदजोउं ॥ साक्षातमेरोसु
तहीसोउ ॥६३॥ सोरठा ॥ मैंअरुअससपतिमोर ॥ अससमसुतगोपीसबमम ॥ गोपरुसबगोधे
ममहेमेनंदकीनारी ॥६४॥ चोपाई ॥ ऐसीमोरकुमतिभयेजेहा ॥ जिनकिमायाकुंसेंएहा ॥ ऐसेप्र
भुमोरपुत्रभयेकुं ॥ सोममगतिहोनमुमेंतेकुं ॥६५॥ युंनिजस्वरूपज्ञानभयेकुं ॥ जसोमतिकुंजानीह
रितेकुं ॥ सुतस्नेहरूपविष्णुकिमाया ॥ अजइच्छानेविस्तारपमाया ॥६६॥ मायासेंततकालमोरेकुं ॥ प्र
भुपलाकिस्मृतिहेरजेकुं ॥ तबजननिनिजगोदबेठाइ ॥ अतिहेनरुदामेंनमाइ ॥ येलेसुंजानतहेएहा
सुंजानतजसोमतिरुतेहा ॥६७॥ रुगयजुरसामवेदतिनतेकुं ॥ जोगरुसांख्यउपनिषदतेकुं ॥ पंच ॥२१॥

रात्रादिगातजसराजाई ॥ तिनकुंनितसुतमानतमाई ॥६८॥ परिक्षितकहेनंदजीजोउं ॥ बकुंफलजुत
सुहुतकियेसोउं ॥ बडभागीजसोदाजिजेहा ॥ क्याबकुंसुकृतकिलेउतेहा ॥ जिनकोस्तनपानुहरी
नेकीना ॥ यहगाथाकहोशुकप्रविना ॥६९॥ प्रसनहोइजन्मेजसगेकुं ॥ ऐसेवसुदेवदेवकीतेकुं ॥ हु
दमकेबालचरित्रजेहा ॥ निजमाबापनपायेतेहा ॥७०॥ अतिवरुबालचरित्रहिजोउ ॥ लोककोपा
पहरतहीसोउ ॥ अबलुंकवीवकुंगितप्रबंधा ॥ करकेगातहेछोरिधंधा ॥७१॥ दोहा ॥ शुकपरी
क्षितकुंकहतहीं ॥ अष्टवसुमेंश्रेष्ट ॥ द्रोणवसुधरापत्निजुत ॥ अजआज्ञाजोश्रेष्ट ॥७२॥ चोपाई ॥
अजआगपाकरेगेएकुं ॥ ब्रह्माकुंसेंबोलततेकुं ॥ तबआगपाकरीकेहमदोउ ॥ भूतलजन्मधरेगेजोउं
॥७३॥ वडदेवजगकेइश्वरहरिमांई ॥ भक्तिहमारेहोसुखदाइ ॥ जोभक्तिसेंमनुष्यजेकुं ॥ विनाप्रयासे
भवसिंधुतरेकुं ॥७४॥ तबब्रह्मानेकहीइनताइ ॥ होनुकुंभक्तिहोहरिमांई ॥ समर्थवकुंजसबाजुतद्रोण
जोउं ॥ व्रजमिजनमभयेनंदसोउ ॥७५॥ धराजसोदानामहीधारी ॥ व्रजमेंभयेनंदजिकिनारी ॥ सबगो
पगोपिमध्येदोउं ॥ निजसुतपुरुषोत्तममेंसोउ ॥ अतिभक्तिपावततेहएकुं ॥ तिनसुहृदसबगोपभितेकुं ॥७६॥

अजअगपासतकरनकाजा॥ रामजतव्रजमेंरहीराजा॥ निजबाललिलाकुंसेंरहुं॥ मानततातगोप
गोपिकेंडुं॥ हेतकरातनिजमूरतीमांई॥ श्रीहृदयव्रजकुंमेंआई॥१९॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥
दशमस्कंधमितेहुं॥ विश्वरूपदेखायेसो॥ भूमानंदकरेहुं॥१८॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभू
मानंदकृतभाषायांअष्टमोध्यायः॥८॥ दोहा॥ इधवुफानोदेखके॥ मातगयेघरमांई॥ फेरिगो
लितवदामसें॥ बांधेनवञधाई॥१॥ चोपाई॥ शुकऋहेएकदिनजशोदाजी॥ औरकामकरनेकेंका
जी॥ दासियुंसबपठवायेतबही॥ दधिकुंमंथतआपेतबही॥२॥ सुतकेबालचरित्रहितेते॥ आगेगा
नकियेसबतेते॥ दधिमंथनकेकालेसबही॥ संभारकेसबगावततबही॥३॥ स्थूलकटिपरमेखला
धारी॥ हिरागलवसनऊनसारी॥ सुतमेंस्नेहसेंस्तनजोदोउं॥ वरषतइधअरुकंपतसोउ॥४॥ तांन
तनेवुंकरसेंजबही॥ चलतकंकणकुंडलतबही॥ मुखपरसेवाजतसुहाई॥ कुचरमालतिफूलचरसा
ई॥५॥ दधिमंथतजननीदिगआइ॥ स्तनपानकीइछाहरिलाई॥ पकरिखायेकुकरमांई॥ रुंधतेमातकुं
हितदेखाई॥६॥ तबसुतकुंनिजगोदबेठाई॥ स्नेहसेंस्रवनेस्तनपाई॥ हसहरिमुखहेरतजबही॥ चु

लिपरदुधउछरेतबही॥७॥ सोरठा॥ दुधदेखहीततकाल॥ अतृप्तसुतकुंभूतलधरी॥ रोवतत
जिनिजबाल॥ दोरिगयेमाताजबही॥८॥ चोपाई॥ रिषकुंमेंजाबसोबकुंपाई॥ दांतविचेअेकार
ततांई॥ जूवजलजलोचनकुंमेंनाई॥ फोरकेगोलिपथ्थरलगाई॥९॥ पुनिघरकुंमेंपेठेधाई॥ गयेदि
नकेमांखनकुंखाई॥ तबतातुइधउताराविमाता॥ दधिमंथनथलआईख्याता॥१०॥ फूटेलगोलिदे
खकेएहुं॥ निजसुतकोइदतजानीहसेहुं॥ ताटेउलुखलउंधोडारी॥ शिकिसेंमांखनलेनउतारी॥११॥
चोरिमेंचंचुलनेनसोई॥ मरकटकुंडारतहीसोई॥ जशोमतिसुतनेदेखजबही॥ धिरेहोइआतपिछेत
बही॥१२॥ लकरिझलदेखकेंडरपाये॥ उलुखलकुंसेंउतरिपलाये॥ वेगसहीनसुखश्वासभराई॥
तिनकेपीछेमाताधाई॥ निजसुतकुंकुंपावतनांई॥ तपपेरितयोगिमनतांही॥१३॥ जननिकेदुर
गयेशिरकेंशा॥ तासेंफूलवरसतभूपेसा॥ चलतनितंबगतिमंदगहा॥ सुतकुंपकरीलेतहीनेहा॥१४
अंजनजलजलोचनजोदोउं॥ निजपाणिसेंचोलतसोउं॥ करिअपराधरोवतअतिएहुं॥ भयजलतमा
नकुंदेखतेनेहुं॥ हृदयकेकरपकरिकेएहुं॥ भयदेखाइलरतहेतेहुं॥१५॥ सुतडरेगेयुंमनमेंजानी

लकरीकेंकरियेनंदरानी॥दाम्निबांधनइछनगहा॥कृतकिमहिमानजानततेहा॥१६॥भितरबाही
रइनकुंनांइ॥पुरबअपरभिनांहिकहांइ॥पुर्बअपरबहिभितरराऊं॥जगकेजगहोतजामेंतेऊं॥१७
इंद्रिज्ञानपावतनजाई॥अव्यक्तनरतनुज्ञानततांई॥मातायाकूलबालसूंमांनि॥उखुरवलबांधनदा
मसेंतांई॥१८॥दोहा॥किनअपराधकृतनेजब॥बांधतदामसुलाई॥दोअंगूलतनुनहोतही॥और
सांधतहीतांई॥१९॥चोपाई॥दोअंगूलतनुनसोभयेजबही॥औरलाइसांधेनुनहीतबही॥जोजोदा
मांसांधतलाइ॥सबहीदोअंगलसुनरहाइ॥२०॥निजघरुमेंदामनथेजेते॥जसोमतिसांधेसुनहीते
ते॥हसतगोपीसबदेखिताइ॥हंसजसोदाविस्मेपाइ॥२१॥छुटकेशखेदकृतअंगा॥निजमाताको
श्रमदेखंगा॥कृपाकरिबंधनमेंआये॥निजभक्तकोवशतादेखाये॥२२॥शिवब्रह्मातनविश्वजेऊ
जिनकेवशासबरहेतउनेऊं॥शिवब्रह्मालक्ष्मिजीजेहा॥असप्रसादनपायेतेहा॥जसोमतिपायेप्र
सादतेऊं॥मुक्तिदायकप्रभूसेंतेऊं॥२३॥देहअभिमानीतपसिकहांई॥असप्रसादहरिदेतनतांइ॥
भक्तिवंतकुंदेवनजोउं॥आत्मज्ञानिकुंनहिसोउ॥२४॥ग्रहकामकरनलगिमातजबही॥हरिदेख

तदोनुवृक्षतबही॥कुबेरकेकृतगुह्यकदोउं॥पेलेनारदशापसेंसोउ॥नलकुवरमणिग्रिवहीजेऊं॥
वृक्षभयेमदकुंसेंतेऊं॥२५॥दोहा॥इतिश्रीमतभागवत॥दशमस्कंधमिजेऊं॥गोपिकुंप्रसंनभये
भुमानंदकहेऊं॥२६॥इतिश्रीमहतानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांनवमोध्यायः॥९॥
दोहा॥रिगातयमलाअर्जुन॥गिरायेभूपरदोउ॥निकसिदेवस्तवनकिये॥दशमोअध्यासोउ॥१
चोपाई॥परिक्षितकहिनारदनेजोउं॥शापदिनुकहोकारणसोउ॥निचकर्मनलकुवरकीजेऊं॥जा
तेरिषिनारदकुंभयेऊं॥२॥शुकतिकहेकृतकुबेरकेऊं॥रुद्रकेअनुचरथेतेऊं॥वारुणीमदिरापी
नेजबही॥मदघुरणितलोचनभयेतबही॥३॥गानअप्सराकृतसोदोउ॥केलाशकेउपवनमिसोउ
अतिसुंदरफूलकृतवनमांइ॥विचरतत्रियाकेसंगजाइ॥४॥तामहीमंदाकीनिजोगंगा॥फुलेकंज
जामेबहुरंगा॥तामेंप्रवेशकरकेदोउ॥क्रिडाकरतकृचतीसंगसोउ॥५॥देवऋषीसमर्थनारदजेऊ॥
इशइछाकरआयेतेऊं॥देखिदोनुदेवकुंएहा॥मतहेसुउरमाननतेहा॥६॥देखनारदकुंदेविसबेऊं॥
नग्नहीशापडरांकालाइनेऊं॥तुरतवसनपेरतसबधाइ॥नग्नगुह्यकवांदेतआइ॥७॥चोपाई॥देखी

भा.द.पू. नारदनांई॥ मदिराअरुश्रीमदअंध॥ जानिहिनितमनमांई॥ अनुग्रहश्रापदेवेंगी॥८॥ चोपाई॥ नार अ.१०
॥३४॥ दविचारतयुंउरमांई॥ प्रियविषयभोगतनरतांई॥ बुधिकोहंतारजोयुगजोउं॥ श्रीमदसेंककहोनहीसो
उ॥ जातिकुलविद्यामदजेऊं॥ श्रीमदजेसोनहीहेतेऊं॥९॥ त्रियामदिराजुगदुंजोउ॥ श्रीमदमेरहतहे
सोउ॥ द्याहिनअजितमनजेता॥ श्रीमदसेंपशुहननहीतेता॥ नाशवंतनितनुकुंएऊं॥ अजरअ
मरमानिकेतेऊं॥१०॥ नरदेवसुदेवनामिदेहा॥ किडाविष्टभस्महोतनतेहा॥ इनकिअर्थजिवद्रोहकरही
जिवद्रोहसेंनरकमिपरही॥ सोनिजस्वारथजांनतनांही॥ युंनारदजीकहेमनमांही॥११॥ मातताअ
नदाताजेऊं॥ मातामहककहेमोरएऊं॥ कर्जवंतअकनृपकहेमेरा॥ श्वानअग्निकहीहेहमकेरा॥१२॥
इतनेंधनिहेतनुकेजेऊं॥ उपजेखपेमायामितेऊं॥ असदेहकुंजिवसमजांनि॥ मुरखिनजंतनहन
हिजांनी॥१३॥ असतश्रीमदसेंअंधजाई॥ दरिद्रतिनकोअंजनकहाई॥ आपकुंकिउपमासेंजोवे
दरिद्रिओरकुंदेखतसोउ॥१४॥ दोहा॥ कांटलगेपगजाहीके॥ तिनकिपीडापाई॥ निजसमजान
ओरजीवही॥ सोदुखईछतनांई॥१५॥ चोपाई॥ कांटनलगेउपगमेंजाइ॥ सोपरपिडाहिजानतनांई ॥३४॥

दरिद्रमदअहंकारिनहोई॥ कष्टपातइशाइछासेंसोई॥१६॥ तिनकुंहोतपरमतपएऊं॥ निस्पृहधामें
डुबलदेऊं॥ अनकिइछाकुंसेयाकी॥ इंद्रियुंक्षिणहोतहेताकी॥१७॥ हिंसासोपुनिकरतनांई॥ समद
र्शीसंतमिलतहितांई॥ सोसंततृष्णारेतमिटाइ॥ ततकालसोकृधहोजाइ॥१८॥ समचितवालेसाधुजे
हा॥ हरिचरणकुंइछतएहा॥ अैसेसंतकुंगिनततनजेऊं॥ धनकोगर्वहोतजाइतेऊं॥ असतपुरुषसं
गिअसततेऊं॥ करतउपेक्षासाधुकिएऊं॥१९॥ स्त्रैणअजितमनहेअसदोउ॥ वारुणीश्रीमदसेंअं
धसोउं॥ अज्ञानसेंमदइनकोजेऊं॥ हरेंगेहमनारदकहीतेऊं॥२०॥ कुबेरसुतअज्ञानिएहा॥ नग्ननिज
तनुंनजानततेहा॥ स्थावरहोवनलायकदोउं॥ होपुनिअैसेकरहीनसोउ॥ ममप्रसादकुंमेंवृक्षमांई॥
रहकुंस्मृतिज्ञानजोताइ॥२१॥ सोरठा॥ ममअनुग्रहकुंएऊं॥ प्रभुकोदरशनपाइपुनी॥ देवचर्णजात
तेऊं॥ देवरहिपुनिभक्तीपावें॥२२॥ चोपाई॥ प्रभुककहेनारदकहीएऊं॥ वडिआश्रमकुंमेंगयेऊं॥
नलकुंवरमणीग्रिवथेजोउं॥ यमलाअर्जुनहोरहेसोउं॥२३॥ भक्तश्रेष्टनारदकीबानी॥ सतकरनइछा
उरआनी॥ धिरेरहीहरिआयेएऊं॥ जेहिथलयमलाअर्जुनेऊं॥२४॥ नारदअरुकुबेरसुतदोउ॥ अ

तिष्टियमीय हे तिनुं सोउं ॥ नारद ने किने थे जेउं ॥ सिध करेंगे वच हम ने कुं ॥२५॥ दोनुं वृक्ष बिच निकसे ज
वही ॥ त्रांसो भयो उखुरखल तवही ॥ उखुरखल कुं तानत करि जोरा ॥ दोनुं वृक्ष कुं के मूल तोरा ॥२६॥ कंपी
वृद्ध छोर डारि दिपाता ॥ प्रभु के पाछे कंमसें साक्षाता ॥ अति बड अग्नि सकरी के सोउ ॥ गिरे ऊभूमि के पर दोउ ॥
२७॥ सब दिशा कुं प्रकाशत जेऊं ॥ निकसे देव मद रही तते कुं ॥ अग्नि सके वृक्ष में जेसें ॥ रहहि मुरती मा
नजो तेसें ॥२८॥ कर जोरि चरण शिरनाई ॥ नलकुवर बोलत प्रभु तांई ॥ हृदम योगेश्वर तूम जोउ ॥ बडमही
मा तव बाण्न हो कुं ॥२९॥ आदि पुरुष पुरुषोत्तम जेहा ॥ प्रकृति सें पर तूम हो तेहा ॥ व्यक्त विराट कुं कुं क
ह्हीं ॥ अव्यक्त सूत्र आत्मा लहही ॥३०॥ अव्याहृत सब विश्वही जेकुं ॥ तोर रुप है युं जानत तेकुं ॥ तोर स्व
रुप की ज्ञान न हारा ॥ ब्राह्मण जान नही मति उदारा ॥३१॥ दोहा ॥ विराट विन सब जीव कुं के ॥ देह इंद्रि रुप प्रा
ण ॥ अंतःकरण के प्रेरक ॥ तूम राक हो जाण ॥३२॥ चोपाई ॥ विष्णु ईश्वर काल स्वरुप ॥ अविनाशि तूम
राक अनूप ॥ रज तम सत्व गुण रूपी जेहा ॥ प्रकृति सोउ तव शक्ति हि तेहा ॥३३॥ सब खेत्र विकार जान जोउ ॥
प्रकृति अधिपति पुरुष सोउ ॥ सोभि तोरे अंश कहाई ॥ प्रकृति पुरुष में उसन जाई ॥ महतत्व विभूति तो ॥२५॥

रतो उं ॥ या कारण सब रुप तूम सोउं ॥३४॥ प्रकृति सें भये महतत्व कुं ॥ अहंकार अरु तीन गून तेकुं ॥ गुण
को कार्य इंद्रि अपारा ॥ पंचमात्र पंचभूत उदारा ॥३५॥ ग्रहण किये में आनत सब सोउ ॥ इन में है तूम आतन
जोउं ॥ माया महतत्वादिक तेकुं ॥ उ सन नां ही भये थे तेकुं ॥३६॥ तिनके पैले थे तूम अेहा ॥ अव तूसन तू
मनांहि भये हा ॥ अेसे तूम सब सिध कहाई ॥ गुण आवरित जन जो जग मांई ॥ तूमकुं जान न जो गपही नांई ॥ प
र गुण अैश्वर्य संपन ताई ॥३७॥ वसुदेव सुत सब कर्त्ता जोउं ॥ प्रकाश सब गुण तूम सोउ ॥ सो गुण से नि
ज महिमा छाई ॥ राखत हो ब्रह्म न मही ताई ॥३८॥ सब जन वृधि कल्याण की काजा ॥ निज अंश संकर्षण
जुत राजा ॥ प्रगटे हो प्रभु तूम अब आई ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष कहाई ॥३९॥ सोरठा ॥ परम कल्याण रु
प ॥ वासुदेव शांत मुरती हि ॥ जदुके पती हो अनुप ॥ नमस्कार हम करत तव ॥४०॥ चोपाई ॥ प्रभु तव
सेवक शिव जी जोउं ॥ तिनके किंकर हे हम दोउ ॥ मोर लोक मी जाने कि तेहा ॥ आगया मागुं दे कुं ते हा ॥४१॥
तव दरशन भये उ मम ते कुं ॥ नारद के अनुग्रह से तेकुं ॥ नलकुवर मागत वर ताकुं ॥ स्वभाव अनम्र होतन
तेकुं ॥ तव गुण किरतन करो मम वानी ॥ कान कथा सुनन कुं हित आनि ॥४२॥ तोर सेवा कर कुं कर दोउं ॥ ज

गलचरणसमरोमनसोउ ।। तोरनिवासरूपनकूकहाई ।। मेरोमस्तकनमकूंनाई ।। तवमुरतिउरसंतहेजे
ना ।। मोरहदरसनकरकूंतेना ।। ४३ ।। शुककहेनलकुवरनेकिना ।। उलुखलबंधप्रभुनेसनलिना ।। ह
सिबोलेहरिमुनिइनताइ ।। अतिकरुणाकृतनारदकहाइ ।। ४४ ।। श्रापदियेइनुंनेजोउ ।। धनमदअंधमी
रायेसोउ ।। धननासरूपअनुग्रहकिना ।। सोभिहमनेपेखेतुंचिना ।। ४५ ।। रवीदरसनसेंनरकेजेसें ।।
नेत्रकुंबंधहोतनतेसें ।। मोमेंमनकुंरखतहीजोउ ।। सरवदुरवमेंसमचितरखेसोउ ।। असेंसंतनकेदर
सनकरही ।। सोनरसबबंधनपरहरही ।। ४६ ।। दोहा ।। नलकुवरमणिग्रिवतुम ।। ममआश्रयजुत
जोउं ।। निजस्थानकमेंजाउही ।। ममआग्यासेंदोउ ।। ४७ ।। चोपाई ।। जनमसुमुकुंमेरनहारा ।। मोभिभा
वतवभयोअपारा ।। शुककहेयुंहरिआग्यादिना ।। करिप्रक्रमानमनप्रवीना ।। उलुखलमेंबंधहरिसें
सोउ ।। आग्यामागउतरगयेदोउं ।। ४८ ।। दोहा ।। इतिश्रीमतभागवत ।। दसमस्कंधमीजेकूं ।। नारदनेश्रा
पदिनतो ।। भूमानंदकहेकूं ।। ४९ ।। इतिश्रीमदज्ञानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांदसमोऽध्या
यः ।। १० ।। दोहा ।। बालसहितवछचारत ।। वृंदावनमेंजाई ।। वछवकासुरकुंहने ।। अपारकिअधाई ।। १ ।। ३६ ।।

चोपाई ।। शुककहेनंदादिगोपजेकूं ।। गिरतवृक्षसुनिशब्दतेकूं ।। वन्नगिरेयुंउरभयलाई ।। शंकाजुतआ
येसबधाइ ।। २ ।। तेहीथलवृक्षगिरेभूताइ ।। देखविचारतसबमनमांई ।। गिरेउताकोकारणतोउं ।। भ्रमत
सबेनहिजानिसोउं ।। ३ ।। दामउलुखलरहेबंधाइ ।। देखेबालकतांनलताई ।। गोपसबेबोलतपुनितेकूं ।। की
नकोबालककहासंकएकूं ।। युंसबअतिआश्चर्यपाइ ।। उसातनानिरहेमुरझाइ ।। ४ ।। उत्तकेछोरेबालक
जेता ।। भ्रमतगोपसेंबोलततेता ।। वंकोउलुखलवृक्षदोमाइ ।। अटकरहेतानतहरिनाइ ।। ५ ।। दोउम
धनिकसिहमगऊं ।। वृक्षगिरेदेखेहमनेकूं ।। वृक्षसेंनिकसेपुरुषदोउ ।। सोभिहमनेदेखेजुजोउ ।। ६ ।।
बालवचनकुंमांननताइ ।। तर्कवंततोगोपकहाइ ।। औरबालबउवृक्षकुंजेकूं ।। दिनेगिराइघरेक्युंतेकूं ।।
कितनेगोपसंशयजुततोउं ।। होइरहेनिजचितमेंसोउं ।। ७ ।। सोरठा ।। उलुखलतानतशाम ।। बांधेनि
जसुतकुंदेखि ।। पुनिनंदजीसोदाम ।। हसतमुखसेंरवोलदियें ।। ८ ।। चोपाई ।। सबगोपिकरतालिवजाई
करतअतिउछाहजुतताई ।। सोहदमपाकतबालजेसें ।। गोपियुंआगेंनाचततेसें ।। ९ ।। गोपिवत्रादारुना
रिमुंहोई ।। गांनकरतउंचेस्वरसोइ ।। कबुगोपिआग्याकरेतबही ।। पितयाउकमापउगानतबही ।। १० ।। न

हिसमरथ्यसुंउनाइएकं ॥ पितितपनातनितननकुंतेऊं ॥ कबुनित्तहस्ततबधारिएहा ॥ नहिदेवेयुंकहततही
तेहा ॥ ११ ॥ निजमहीमाकुंजाननजाई ॥ भक्तवत्सलपणंदेखावननाई ॥ कृष्णबालचरित्रकरिजेसें ॥ बजकुंह
र्षपमातहीनेसें ॥ १२ ॥ तोरियमलाअरजुनदोउं ॥ कृष्णरमततजमूनातटसोउ ॥ रोहिणिकहीकृष्णआओ
गेऊं ॥ जन्मनक्षित्रहेआवतेऊं ॥ १३ ॥ पटभूषणधरियविप्रसोई ॥ गोदानदेऊंहीजकुंजोई ॥ तोरेतुम्हसवरका
सवएकं ॥ तिनमातानचुरायेतेऊं ॥ पटभूषणजूतमोहतएहा ॥ नाइपटभूषणधरोतुमेहा ॥ १४ ॥ बलहरी
क्रिडाक्रुहोई ॥ रोहिणिटेरआयेनसोइ ॥ कृतपरआनतिदयाजूतएकं ॥ जसोमतिकुंपठवायेतेऊं ॥ १५
॥ दोहा ॥ सबवतउधस्कृतमेंदसें ॥ जसोदाजिसोआई ॥ जिमनसमयगयोरमतही ॥ बलजूतलिनबो
लाई ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ कृष्णकृष्णहेकमलनेनोई ॥ स्तनपानकरऊंरमतबहाई ॥ भुखसेंक्रिगयेजागेरा
क्रिडाकरिथकगयेरहोधिरा ॥ १७ ॥ हेबलकुलकुंआनंददाई ॥ चलोघरुंतुमजूतछोटभाई ॥ भोरतीमे
भुखेभयेदोउ ॥ जिमनजोगपआवहोतुमसोउ ॥ १८ ॥ जिमनेचेवेनंदजीजेऊं ॥ तुमदोउकोमगदेखरहेऊं
चलोहमारोप्रियतुमकरऊं ॥ आोरलरकेमबजाउघरऊं ॥ १९ ॥ शुककहीजसोमतिनेयुंकीना ॥ कृतमें ॥ ३१ ॥

स्नेहकृतबुधिसुविना ॥ ब्रह्मादिकेशिरोमणिजोउं ॥ कृष्णकुंनिजकृतमानिसोउं ॥ २० ॥ बलजूतकरमें
पकरिएहा ॥ जन्मउछवकिनआईगेहा ॥ पुनिनंदवृधगोपजेऊं ॥ वरउत्पातहुदवनतेऊं ॥ २१ ॥ देखि
केसबएकगहोइ ॥ ब्रजकोहितविचारतसोई ॥ सबगोपमेंउपनंदनामा ॥ वयकरिबडेज्ञानगुणधामा
२२ ॥ देव्राकाउआरुकारजजोउं ॥ तिनकोहितलुजानततसोउं ॥ रामकृष्णकोप्रियकरएऊं ॥ गोपसेंबो
लतउपनंदतेऊं ॥ यहस्थलउत्पातआइदेरा ॥ नाशकरनकुंबालककेरा ॥ २३ ॥ सोरठा ॥ गोकुलकेहितका
ज ॥ अपनेउवनोयहस्थलकं ॥ उत्पातकऊंआज ॥ बालमाररक्षसिऊंसें ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ कृष्णवचेहरी
अनुग्रहजानो ॥ गडियांउपरिगिरेनवाचो ॥ तरणावर्त्तवायुरुपआई ॥ देसकृष्णलेगयोनभताइ ॥ २५
गिरेउशीलाकेपरआइ ॥ ब्रह्मादिकनेलिनेबचाई ॥ यमलाअर्जुनसेंकृष्णएऊं ॥ अखुलनेउगारेउतेऊं
औरबालवृक्षनिचेआई ॥ मरतनरक्षाकिनहरिताई ॥ २६ ॥ जांलुंबरउत्पातनोआइ ॥ ब्रजकोपराभव
किनेनाई ॥ तांलुंअपनेबालजुबाई ॥ चाकरजूतऔरस्थलचलजाइ ॥ २७ ॥ वृंदावनहेएकअनूपा ॥ प
शुऊंकुंहेअतिसुखरुपा ॥ औरनवबनहेजाकेमांइ ॥ सेवनजोगपगोपगोपीगाइ ॥ गिरितृणवेलित

भा॰द॰पू॰ पवित्र जेहा॥ वृंदावनमें है सब नेहा॥२८॥ ताकर जो नरि चलो अवधाई॥ गो सब आगें देकुं चलाई॥ सब तूम कुं ऋ॰११
॥३८॥ कुं गमे अ सगाथा॥ चिले वन हि करो चलो साथा॥२९॥ अरुक कही नृप नंद कि वच जेहा॥ राक बुधि वंत गोप
कने हा॥ निक निक सब बोल के एकुं॥ निज निज गरियां जो तरि नेकुं॥३०॥ वृध बाल कुं अरु त्री या जेती॥ गे
ह की जो सामग्री लेती॥ गरियां के परधारी जो तं॥ धनुष बाण ग्रहण करि सो तु॥३१॥ निज गोधन करी आगे
एकुं॥ चकुं ओर ग्रिं गावत जावत नेकुं॥ तूरि कुं को बजा वृ निकामी॥ पुरोहित जन तनि कसे ब्रज वासी॥३२॥ कु
चकुं कुमन विनकी कांति॥ कुमगों कंध धरे बहु भांति॥ सुंदर पट धरी रथ्य पस्वारी॥ लिलाह्म मक्ति गानत चा
री॥३३॥ हरि बलजू लरो हिणी जबो दाई॥ एक गरियां पर बैठे जाई॥ हम चरित कं नन उरमांइ॥ उत्ता हत
दोर है सहाई॥३४॥ सब काले सब धदवनमांई॥ कि नोषवे त्रा गोप सब जाई॥ निज निज गरियां छोरके जे
कुं॥ अर्धचंद जि मिस्चेत्र जसो उ॥३५॥ दोहा॥ वृंदावन गोवरधन ही॥ यमुनां के तट जे कुं॥ देखि बलस्त्री
कृष्ण जो॥ प्रिति जुत भये ते कुं॥३६॥ चोपाई॥ बाल चरित्र करि के जेहा॥ नोतरि बांनि बोलि के तेहा॥ ब्रजवा
सि कुं प्रिति उपजाइ॥ वछ चारत भये दौ भाई॥३७॥ बहु विध क्रिडा सामग्री धारी॥ हरि बलगोप बाल के हारी ॥३८॥

त्रज समिपे वृछ कुं एकुं॥ चरात क्रिडा करत है ते कुं॥३८॥ कबु आंबल बिलां फल लाई॥ मारत एक एक कुं
धाई॥ कबु वेणु बजात कबु एहा॥ पदलां फरफूल मारत तेहा॥३९॥ कि चु अरु आक के फल लाई॥
खेलन गो अरु बेल बनाइ॥ बेल के शाब्द करि गंभिरा॥ चरत बेल सुं दोनुं विरा॥४०॥ पंखि शब्द करत है
जेसें॥ बोलत शाब्द निकासी तेसें॥ मनुष्य के लरकन की माई॥ विचरत बन कुं में सो उभाइ॥४१॥ एक स
मे जमुनां तर जाइ॥ तूम्ब बाल संग वछ चराई॥ तिन कुं मारन इच्छा धारी॥ दैस आये बछ रूप कारी॥४२॥
सोरठा॥ बछकुं के जूथ मांई॥ दैस मिलि गये आई के॥ बलसी हृ दम देखाई॥ अजान सुं दि गगये धिर
४२॥ चोपाई॥ पुछ कृत पिछले पग दोउ॥ पक रि ग्रिर पर भमात सोउ॥ भ्रमत जि च विनर है उसोई॥ प
भु पटकत को पिपर सोई॥४३॥ बडो देह बछा सुर जेकु॥ कोंगं भेले गिरत ते कुं॥ मृत बछा सुर देखि बाला
वकुसारुं कि ये हृदम बिशाला॥ पुंबरवान त बाल कजबही॥ देव सुमन ध रिकरत हित वही॥४४॥ बछा
सुर वध सुं निज्र जमांई॥ सब गोपी का विस्मय पाई॥ अखिल लोक पाल करए क जे कुं॥ मोरजि मन जे गोप
अंन ते कुं॥४५॥ संग लइ बछ पाल कहोई॥ बछ चारे बन में विरहोइ॥ निज निज बछ समु इ कुं जे कुं॥ ज

लपानेकुंगोपसबनेकुं॥४६॥ जलदिगनिजनिजबछलेजाई॥ पिवतगोपबछकूंकुंपाई॥ पुनिजलके
तटजंतुजेकुं॥बडोदेखडरपायेतेकुं॥४७॥वज्रकटेगिरिशिखरतैसें॥बकरूपबडोभयेजतैसें॥ति
स्विचांचबलिष्टबकरणकुं॥गिलतहरिकुंदिगआइतेकुं॥४८॥बलआदिबालकसबजेहा॥बक
गिलिहलधरकुंदेखितेहा॥प्राणविनइंद्रिअचेतनजैसें॥होइरहेबालकसबतैसें॥४९॥ दोहा॥ताशु
मुखवालतजब॥हलधरअनलकिमाइ॥ब्रह्माकुंकेतातजो॥नंदकेकनकहाइ॥५०॥ चोपाइ॥ताकुं
बकासुरमूखसेंजेकुं॥ततकालथुंकिडारतनेकुं॥चांचलगेविनक्षसकुंजोइ॥चांचहननआतुर
सजतसोइ॥५१॥तबसंतपतिश्रीहलधरजोनें॥आतबककीचांचपकरसोनें॥देखतरहेथेसबहीबा
ला॥देवकुंमुदपमातविशाला॥बककुंफोरिडारतनएकुं॥विरणघासकिताल्हिसुंनेकुं॥५२॥तबही
स्वर्गवासिसुरजेना॥नंदनवनमलिकाकेतेना॥फूलबरसातस्कतिजतगएकुं॥शंखनगारेबजातनेकुं
तिनकुंदेखिबालकजेता॥विस्मितहोइरहेसबतेता॥५४॥बलआदिसबेगोपकुमारा॥बकमुखसें
निकसेप्रभुप्यारा॥ताहिमिलतछतियामिलगाइ॥आतिप्रितिजतसकसबपाइ॥५५॥निजथा

नपायेप्राणजैसें॥तिनकुंपाईसुखिइंद्रितैसें॥निजबछभेलेकरिब्रजजाई॥गोपगोपिदिगकहीस
बगाई॥५६॥सुनिसबविस्मेपायेएकुं॥आतिप्रितिआदरकरतनेकुं॥आतित्रदमाजरलनेनसेंजेहा
हरखसुंहरिकुंहेरततेहा॥मरकेपीछेआयेजैसे॥हलधरकुंदेखतसबतैसे॥५७॥ सोरठा॥गोपगोपिने
बात॥करतआश्चर्यखेदजुत॥बालककुंसाक्षात॥बडुमृत्युआवतभयेउ॥५८॥ चोपाइ॥जोहल
धरकुंमारनेआये॥सोनिजपापसेंमृत्युपाये॥औरकुंभयकोयेपेलेकुं॥दुखकुंपायेउदुष्टनेकुं॥५९
आतीभयंकरमुखजोअसुरा॥हरिकुंहननइछाकरीउरा॥जिततनहीहरिकुंदिगआइ॥मरतअ
ग्निमेंपतंगमाइ॥६०॥नलवेताकीबानीजेहा॥कबकुंअसमसनहोतहीतेहा॥समरथगर्गनेकिने
वचजोउं॥आपनेदेखेहगसेंसोउ॥६१॥श्रुककहेनंदादिकगोपा॥रामहलधरकीकथाअनोपा॥
हर्षसेंगातरमतहीसंगा॥भवदुखपालनकरतनमंगा॥६२॥कुमारवयकेवीहारजेकुं॥धुलकेगद
घरसेतुबंधेकुं॥येकतमरकटकुकिन्याई॥कुमारलिलाकरिब्रजमांइ॥गोपगोपिकुंआनंददाई॥कु
मारवयसागतदोभाई॥६३॥ दोहा॥इतिश्रीमतभागवत॥दशमस्कंधमीजेकुं॥वछबकासुरकुं

इने॥ भूमानंद कहे हैं॥ ३४॥ इति श्री महजानंद स्वामि शिष्य भूमानंद कृत भाषायां एकादशोऽध्यायः
११ ॥ दोहा॥ गोपवत्स कुं गिलगयो॥ सर्पवपु अघ धार॥ कंवकु में वदि हरि हने॥ सो अघ धाहे वार॥ १
चोपाई॥ शुक कहे हरि वनमें जाई॥ प्रथम जिमन धारत मन माई॥ प्रातःकाल में उठ के एकु॥ जवा गोमती
शिगमा गीअनते कु॥ २॥ निज तुल्य वत्स चारन हारा॥ मृगसिंग बजाई रेरत सारा॥ निज वत्स जूथ आगे क
री एकु॥ निकसे व्रज से पैले ते कु॥ ३॥ शृंगि कोशु मनोहर संनी॥ लरका हजारुं निकसे पुनी॥ शिक
विलकरी सिंगी वेणु धारी॥ निज निज के वत्स अधिक हजारी॥ ४॥ सोहे हुनूत निज वत्स कुं एकु॥ आगु क
रि निकसे व्रज से ते कु॥ सो बालक निज निज वत्स जाई॥ हरि के असंख्य से दिन मिलाई॥ ५॥ चोरत क्रीडा
करत वन माई॥ निज निज मात संगारे ताई॥ काच चणो वो मणी के जेहा॥ कंचन के भूषण जूत नेहा॥ ६
तो मिष फल कुं पल्लव फुल लाई॥ मोर पिछ गेरु राम रजाई॥ इतने से संगारत एहा॥ गुच्छ फुल हार कुं से नि
ज देहा॥ ७॥ प्रभु कुं नत बाल परस्पर जोउ॥ चोरि खेलत एक एक सोउ॥ शिकलि शृंग बेसुरि कुं जेहा॥ फें
कदेत जाने त बेतेहा॥ ८॥ सोरठा॥ चोरत जानि न जोउ॥ यह थल खडे बाल हसही॥ दुरजाई देत सोउ॥ ॥४७॥

पिछे पदार्थ जिनको॥ ९॥ चोपाई॥ वन शोभा देखन कुं जवही॥ श्री कृष्ण दुर जावत तवही॥ तब लर
का दोडि के एकु॥ सपर्श करी हरि म कुं ने कु॥ पैले में छोये में कहही॥ खेल करत आनंद नरलहही॥ १०
कितने क वेणु शृंग बजाई॥ कितने मधुकर के सम गाई॥ कोउ कोकिल सुं बोलि बाला॥ पंखी छांय में दो
रत पाला॥ ११॥ चलत हंस सुं चाल निकासी॥ कोउ बक सुं बेवत बक पासी॥ कितने नाचत मोर की न्याई॥
कोउ द्रुम की सब डालि ताई॥ १२॥ बैठे वानर पुच्छ लटकाई॥ पकरि तान त बाल कजाई॥ पुच्छ पकर वान
र संगे कु॥ चरत फार के उपर ते कु॥ १३॥ आंखी पांपण दंत देखाई॥ करत ही चाला मरकट न्याई॥ गेकूत
सब डालि पर गहा॥ रमत ही वानर संगे तेहा॥ १४॥ देडक संगे कुदत कोउ॥ नदि प्रवाह में नावत सोउ॥
निज प्रतिबिंब देखी जल माई॥ हासी करत ताकी मुद पाई॥ १५॥ प्रतिछंदा कुं संन के कोई॥ गारि देवत स
न मुख होई॥ शुक कहे दरपुन्य कि न जे कुं॥ हरि संग रमत बाल कन ते कुं॥ नारद आदि संत कुं जोउ॥ ब्रह्म
सुख के दाता सोउ॥ १६॥ दास पणा कुं पाये जे कुं॥ तिन कुं परम दैवत रूप ते कुं॥ आसुरी माया कुं कुं जेता
आवरे अरु विमुख जन ने ता॥ मनुष्य जो नंद जी को एकु॥ वे रोहे युं जानन ते कुं॥ १७॥ बहु जन्म के तप ज

तजोउं॥ अघ्रांगयोगेवत्रामनसोउं॥ ऐसेजोजोगिहेजेहा॥ हृदमचरणरजपालननेहा॥१८॥ ऐसें
प्रभुपुगरुपधारी॥ व्रजजनकेहगहिगरहेवारी॥ ऐसेंव्रजजनकेभाग्पजोउं॥ हमसेंचर्णनक्युंहा
तसोउं॥१९॥ एकवक्रीउनबालककोएकुं॥ देखिनत्राकेअघासुरतेकुं॥ आयेअतिवडोरुपधारी
जिनस्कंदेवउरेअमृतअहारी॥ जिवनकीइछाजीयेगहा॥ क्युंमरेगेयुंदेखरहेहा॥२०॥ दोहा॥ व
कासुरपुतनाकुंको॥ बंधुकंसपठवाई॥ हृदमजनबालकदेरवके॥ विचारतउरमांइ॥२१॥ चौपाई
ममभग्नीअरुभ्राताजेकु॥ अससहदमनेमारेउतेकुं॥ इनकेबदलेहरिवलसोउं॥ गोपवछजनहनेगी
सोउं॥२२॥ हृदमसहीतबालकहेजेता॥ ममसुहृदकीतिलांजलितेता॥ करेगेहममारिकेजवही॥ व्र
जजनमृतसमहोयेगीतवही॥२३॥ देहधारिनंदादिकजोउं॥ तिनकेपुत्रप्राणहीसोउं॥ याकारनत
रुकनकुंमारी॥ एकरुदकुंपीउदोजनवारी॥ व्रजजनकेप्राणजायगीजवही॥ देहरहेक्याचिंसातवही
२४॥ युंनीश्चेकरिखलअघएकुं॥ अजगरदेहधारकेतेकुं॥ बालगिलनअत्रातुरधारी॥ सोवतमग
मेंमुखपसारी॥२५॥ लंबायेजोजनबउएकुं॥ बडपर्वततुल्यस्थूलहीतेकुं॥ गिरिगुहातुल्यमुखउधारी

ऐसेंवपुअतिआश्चर्यकारी॥२६॥ निचलोहोठधरापरधारी॥ उपरिहोठबदरमेंकारी॥ पर्वतगू
हातुल्यहेदोउं॥ मुखकुंकेउगलोफासोउ॥२७॥ गिरिशिखरजनुदाहुंएकहाई॥ रहेअंधारुंमुखमें
छाई॥ बउमारगतुल्यजिभाजाके॥ कठिनपवनजनुश्वासताके॥२८॥ अखीयामेंहृदमपर्गजोउ॥
दावानलकितुल्यहेसोउं॥ ऐसेंअघासुरकुंवाला॥ वृंदावनवीचमाहीविशाला॥२९॥ युंताकुंअज
गरकूंगहा॥ पर्वतहेयुंधारतनेहा॥ सोरठा॥ हेमित्रदेखोतुम॥ आगेरहेअसगीरिवड॥ सर्पगिरिरुप
जम॥ धारकेएकइरहेहेकीनहीं॥३०॥ चौपाई॥ अपनेकुंगिलनजियेएकुं॥ सर्पनेमुखवुघारेयुंतेकुं॥
युंभासतहीमोरउरमांई॥ कहोमित्रोसाहेकीनांई॥३१॥ एकंनिबोलेओरबालतेकु॥ युंहेतुमकेहत
होतेकुं॥ रविकिरणकरिलालहेजोउं॥ बदरोउपलेहोवयुंतेकुं॥३२॥ सोबदरेकोप्रतीबीवआई॥
परतभूमिपररक्तहेताई॥ सोसर्पकेनिचहोठजेसें॥ भासहीतोभिनहीहेतेसें॥३३॥ ओरबालककेहे
एकनकुंभाई॥ डाइजमणीगुहागिरिमांई॥ सर्पगलोफाकुंकीन्याई॥ भासतहेदेखोसबआई॥३४॥ उं
चगिरिशिखरपंक्तीजेहा॥ सर्पदाढयुंभासहीनेहा॥ चोडेलंबेमगजोगहा॥ सर्पजिभायुंभासहीनेहा॥३५॥

गिरिशिखरविचअंधारेजेकुं ॥ सर्पमुखकेमध्यजुंतेकुं ॥ रवकुरीउरमकबोरवाता ॥ सर्पश्वासजुंआ
तमाक्षाता ॥ दवमेंजरलतजीवगंधजोतें ॥ सर्पउदरमांसगंधजुसोतुं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ हेमित्रोअसगि
रिहे ॥ सोजोसर्पहीहोई ॥ यामेंअपनेजायगें ॥ गिलेगेंजवसोइ ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ तबक्षणमेंश्रीकृष्ण
ताई ॥ मारडारेगिबककीमाई ॥ नांहीडरेचलकुंसबधाई ॥ पैठेदेखोअससर्पमांई ॥ २८ ॥ सुंविचारक
रिकेसबराकुं ॥ कंदरहरिमुखहेरकेतकुं ॥ राकराककेकरपकरीवाला ॥ अघमूखमेंपैठेततकाला ॥
२९ ॥ शुककहेअसकरनजानीजेकुं ॥ बोलतपरस्परबालकतेकुं ॥ अैहिसर्पपर्वतकीमाई ॥ मिथ्या
आपकुंआतजनाई ॥ ४० ॥ सुंबालवचसकेभगवाना ॥ गिरिनहीअसकरहेहरिजाना ॥ सबजनअंतर
जामिहोई ॥ हनेगिगोपकुंजांनिसोई ॥ ४१ ॥ तबबालकवछसहीतधाई ॥ पैठेअघकेउदरमांई ॥ तबसं
भारतअसकरजेकुं ॥ निजकरुदमारेथेतेकुं ॥ ४२ ॥ कृष्णमूखमेंआयेनजबही ॥ गोपवछकुंनगीलेज
बही ॥ अखिलजीवकुंकुंअभयदाता ॥ श्रीकृष्णदेखतसाक्षाता ॥ ४३ ॥ निजकरमेंकंगयेउजबही ॥
दयाकरिपिछायेहरितबही ॥ गोपकेथारधकमेराकुं ॥ विस्मयपायेकृष्णतेकुं ॥ ४४ ॥ अतिदिनसोइगो

पकराई ॥ हरिबिनस्वामिजाकोनांई ॥ मसुरुपअघकिजवराजेह ॥ तिनकेथासरूपगोपतेहा ॥ ४५
कृष्णकहेक्याकरूमनमांई ॥ जाहिसेंखलअघजिवेनांई ॥ संतबालकअरुवछहीजोतें ॥ इनकोनाश
नहोवेसोतुं ॥ ४६ ॥ दोउबातसिधहोहिजैसें ॥ कृष्णबिचारकरकेतैसें ॥ कार्यकीकलीजांनीकेराकुं ॥
अघकेमूखमेंपैठेतेकुं ॥ ४७ ॥ अघमुखमेंप्रभूपैठेजबही ॥ बदरमेंछुपिरहेथेतबही ॥ इंद्रआदिकदेव
भयपाई ॥ हाहाशब्दकरतमुरझाई ॥ रक्षअहारीअघबंधुजेता ॥ कंसादिकहरषायेतेता ॥ ४८ ॥ सोर
ठा ॥ देवकिनहाहाकार ॥ शब्दसनिकेअविनाशी ॥ अघदृढछतजोवार ॥ चुरणकरनिजआदिकुं ॥ ४९
चौपाई ॥ तबअघकंठकेगलाबीचजाइ ॥ रुंधेप्राणमृगादृधीपाई ॥ जाकीअंखियांनिकसेंबारी ॥ ब्र
ह्मतडतनपावपछारी ॥ ५० ॥ अतिबडतनभीरहेरुधाइ ॥ प्राणवायुपुरणभयेमांइ ॥ अघशिरको
रिनिकसेबारा ॥ वछगोपकेजिवयहवारा ॥ ५१ ॥ अघप्राणसंगनिकसेराकुं ॥ मृतगोपवछकुंहरितै
कुं ॥ अमृतभरेदृगसेंजिवाइ ॥ गोपसहीतनिकसतमूखताइ ॥ ५२ ॥ अघकेबडेदेहसेंजोत ॥ अद्भु
तबडतेजनिकसेसोत ॥ दशादिशाकुंप्रकाशातजेकुं ॥ हरिनिकसनमगदेखरहेकुं ॥ ५३ ॥ नभमेंजोतीर

हेतजाई॥ सर्पसें हरिनिकसेतबताई॥ इंद्रादिककुंदेखततेऊं॥ प्रवेशकरिगयेप्रभुमिराऊं॥ ५४॥ निज
कार्यकरहृद्यमकुंजानी॥ देवपुजततमृदंगतनफुलआनी॥ नृतकरिपुजेअप्सराजेहा॥ गांधर्वबहुविध
गितसुंतेहा॥ ५५॥ मेघपुजततवाजांवेजाई॥ स्तोत्रबहुविधब्राह्मणगाई॥ सिधचारणपुजतहेजेहा
जयजयशब्दकरिकेतेहा॥ ५६॥ दोहा॥ स्तोत्रवाजीतरगीतसो॥ जयजयआदिकजेऊं॥ उत्सवमंग
लकिवाहूही॥ अजसस्लोकसंनिऊं॥ ५७॥ चोपाई॥ तेहिवीरततकालहिआये॥ हरिमहीमादे
खविस्मयपाये॥ एकेचरमअजगरकोजोउ॥ बडेगुफासुंहोतहेसोउं॥ बहुतकालसुंकिरनका
जा॥ वृंदावनमेंहीतहीराजा॥ ५८॥ अघवधरूपहरिचरित्रजेऊं॥ कुमारवयमेंकिनेतेऊं॥ पोगंडमी
देखबालसबेऊं॥ अबहनेसुविस्मयपायेऊं॥ ५९॥ व्रजमेंआइकहतसबबाला॥ आजसर्पहरी
हनेकराला॥ तासेंहमकुंदिनछोराइ॥ सर्पहुकुंभिभयोमोक्षदाइ॥ ६०॥ मनुष्यबालमायावशजाके
जेजनआदिखुस्अंतजावताके॥ ईश्वरकेभिकरताजेऊं॥ परमपुरुषहृद्यमहेतेऊं॥ ६१॥ तिनकुंहनन
अघआयेजोउं॥ परशिपापविनभयेसोउं॥ असतपुरुषकुंदुर्लभजेऊं॥ सारुप्यमुक्तीपायेतेऊं॥ ६२ ॥४३॥

परशिअघासुरमुक्तीपाई॥ यामेंकछुआश्चर्यनांई॥ श्रीहृद्यमकिप्रतिमाजेहा॥ मनकुंसेंकल्पिकर
नितेहा॥ एकवेरअंतरधारिजबही॥ ब्रह्मगतिकुंदेवततबही॥ ६३॥ नितनिजसुखकेअनुभवकुंसें॥
मिटेमायानिजस्वरूपजेसें॥ दिव्यमुरतीश्रीहृद्यमजेऊं॥ जसअंतरमेंआयेतेऊं॥ भागवतीगतीदेवताई
यामेंक्याआश्चर्यकहाई॥ ६४॥ सूतशोनकसेंकहततेहा॥ परिक्षितसुंनेशुकसेंजेहा॥ सुंनिनिजर
क्षकहरिकेजेऊं॥ चरित्रआश्चर्यकारीतेऊं॥ ६५॥ मुरतिमेंचितरहेवशहोइ॥ परिक्षितपुछतशुकसे
सोई॥ कालांतरकिनचरीत्रजोउं॥ ततकालकीनसुंभयेक्युंसोउ॥ ६६॥ कुमारवयमेंअघवधकीना
पोगंडवयमिबालनेचिना॥ पंचवर्षकीगाथाजेहा॥ षटमेवर्षकहीव्रजमांतेहा॥ ६७॥ सोरठा॥ तिन
कोकारणजेऊं॥ कहोशुकसुंननइछाही॥ हृद्यमकीमायातेऊं॥ दुजानहीकछुहमजानी॥ ६८॥ चोपाई॥
क्षत्रिहमहेतोभिजोउ॥ बडभागीअसलोकमेंहोउं॥ कथहरिचरित्रअमृतजेऊं॥ नवनुतनमेंफिरफि
रपितेतेऊं॥ ६९॥ सूतशौनककुंकहीगाथेहा॥ परिक्षीतपुछतशुककुंतेहा॥ नृपनेहरीसंभारीदिना
शुककीइंद्रियसुंहोगयेलिना॥ ७०॥ अतिकष्टकरिधरिरहिराऊं॥ निकसेसमाधिसेंशुकतेऊं॥ उतमभ

नृपपरिक्षितताई ॥ बोलतअतिउरमेंहरखाई ॥ ११ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेकुं ॥
अघासुरकीमोक्षही ॥ भूमानंदकहेहेकुं ॥ १२ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृतभाषायांद्वा
दशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ दोहा ॥ वछगोपअजनेहरे ॥ तबहरिसबरूपहोई ॥ एकवर्षक्रीडाकिये ॥ तेरकी
अघासोई ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहेनिक्षृपधर्मकीनराकुं ॥ भक्तसिरोमणिहोतुमतेकुं ॥ कथाअनंतहो
फिरफिरजेहा ॥ निसहीनविनरखतनुमतेहा ॥ २ ॥ सारग्रहीसंतनकुंकोजोउ ॥ सहजअैसेंस्वभावसोउ ॥
हरिकथालियेकररखेराकुं ॥ चितवाणिश्रवणकुंतेकुं ॥ ३ ॥ प्रतिक्षणनविनजुंअनंतजाई ॥ स्त्रैणनर
नारिकिवतीयांमाई ॥ सावधानहोइअबतुंनृपतोइ ॥ गुह्यगाथामिककुंमेंसोइ ॥ वल्लभशिष्यकुंगुरुहीजेकुं
गुह्यबातभिकहतहेतेकुं ॥ ४ ॥ कृष्णवछअरुबालकताई ॥ मृत्युरूपअघमुखमेंलिनबचाई ॥ पुनीयमुना
केतटपरलाई ॥ बोलतकृष्णवचगोपताइ ॥ ५ ॥ हेमित्रोयमुनांतटराकुं ॥ अतिसुंदरक्रीडाकिजेकुं ॥ सा
मग्रिसबहेजामांइ ॥ कोमलस्वछचेलुसहाइ ॥ ६ ॥ फुलेकमलसुगंधलियुंआये ॥ भ्रमराअरुपक्षिमृ
दपाये ॥ जलमेंशाखुकरतहेजेहा ॥ परतप्रछंदाडुममेंतेहा ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ अैसेतटमेबेठ ॥ अपनेजी

मोबेलाबिती ॥ भुखसेंजरहीपेठ ॥ वछजलपांनकरीसबही ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ नजिकघासचरेगेउधिरा
युंबालकुंकहीबलवीरा ॥ याविधहरिवचअंनिकेजेकुं ॥ सबवछकुंजलपाइतेकुं ॥ ९ ॥ वछरुंधिनिला
खउमांइ ॥ शिकलियुंधरेअबनिताइ ॥ अतिमुदअनहरिसंगएहा ॥ भोजनकरतबालसबतेहा ॥ १० ॥
कृष्णकीचहुंओरबेठनआई ॥ बहुबालकहीमंडलबनाई ॥ प्रभुकोसनमुखहेसुखजाके ॥ प्रफुलीतह
गहेसबताके ॥ ११ ॥ हरिकिचहुंओरसोहतजैसे ॥ कुंजदलविचकर्णिकातैसें ॥ भाजनकरतफुलको
कोउं ॥ कमलपानकेपात्रहीजोउं ॥ १२ ॥ कोउफारकेपानहीलाइ ॥ नविनकुंपलकेकोउबनाइ ॥ किन
नेकफलकेपात्रमांइ ॥ शिकामेंकोजेवतपाइ ॥ १३ ॥ कोउपथरकेभाजनकीना ॥ वृक्षछालकोउलाये
किना ॥ तामेंजिमतबालकएकुं ॥ जिमनलायेजोअंननेकुं ॥ १४ ॥ नितनितअंनमेस्वादहिजेकुं ॥ एक
डजेकुंचखाततेकुं ॥ हसतहसावतकरिकेचाला ॥ जिमतकृष्णकेसंगेबाला ॥ १५ ॥ दोहा ॥ वसनउ
दरकेबिचमें ॥ वेणुंधरेहरिजेकुं ॥ मृगशिंगीअरुचलकरीजो ॥ धरेकाखमेंतेकुं ॥ १६ ॥ चोपाई ॥ दधिभा
तकोगोलोजोउं ॥ धरिरहेडाबाकरमेंसोउं ॥ जिमनजोगअथानाहीतेना ॥ अंगुलियुंविचधरिरहेतेना ॥ १७ ॥

भा.द.पू. चहुंओरमित्रविचहरिगारा॥ करतमसकरीहसतउदारा॥ बालकसुंक्रिडाकरेराऊं॥ यहूकेजीमनहार अ.१३
॥४५॥ हितेऊं॥१८॥ स्वर्गवासिइंद्रादिकजेहा॥ देखतत्रिमेमनुषविचतेहा॥ हृदयमेंमनधारिकुंमारा॥ जिमत
सबवछचारनहारा॥१९॥ घासलोभकरिकेवछजेऊं॥ वनमेंदुरगयेचलितेऊं॥ तबवछकुंनदेखिबाला
भयकरित्राग्रापाईततकाला॥२०॥ देखिभयजुतगोपकुंस्वामी॥ वछकुंनदेखीअंतरजामी॥ इनकोभय
मिटावनकाजा॥ बालकुंसेंबोलतव्रजराजा॥२१॥ नांहीदुरगेतुमतिमकुंभाई॥ हमलावेगेंवछकुंजाई॥ यु
बोलिप्रभूबालकतांई॥ अंन्नकोलियोलैकरमांई॥२२॥ सोरठा॥ ढुंढतनिजवछाई॥ गिरिअरुगिरिकीगु
फाऊंमें॥ कुंजविकटथलमांई॥ हृदयफिरतवछकेलीयुं॥२३॥ चोपाई॥ शुककहेअवकाव्रजजनराऊं॥
देखिआयेततकालतेऊं॥ मायासेंबालकहरितेऊं॥ तिनकोजोमहीमासोऊं॥२४॥ देखतकुंप्रभुकेव
छतेऊं॥ यमुनांतटसेंबालकनेऊं॥ हरणकरिओरवोरपमाई॥ पुनिअजअंतरध्यानहीजाई॥२५॥ जो
अजपेलरहीनभमांई॥ अघकिमुक्तीकिनेहरिताई॥ देखिमहीमाहृदयकोतेऊं॥ विस्मेहोइरहेथेतेऊं
२६॥ पुनिहरिवनमेंवछनपाई॥ तबयमुनाकेतटपरआई॥ लरकनकुंनदेखेउजवही॥ ढुंढतचहुंओरव ॥४५॥

नमेंतबही॥२७॥ सबकेअंतरजामिजोऊं॥ वनमेंगोपरूवछकुंसोऊं॥ हृदयमेनेनहीदेखेउजवही॥ अज
हतजानेततकालतबही॥२८॥ पुनिवछगोपमातकुंराऊं॥ हर्षकरनपुनिअजकुंतेऊं॥ वछगोपकेरू
पथेंजेते॥ निजमुरलीकुंकरनहितेते॥ सबजगकरताईस्वरजोऊं॥ छोटबरगोपवछभईसोऊं॥२९॥ छंद
हरिगीत॥ करचरनमुखआदिकअवयव॥ दृगानजसतसहरिभये॥ जसवेणुश्रींकविशालकदी
पानजसकरमेंग्रये॥ जसआभूषणपरनामगुणरूप॥ स्वभाववयआकारही॥ जसरमनहसलस्वभा
वबोली॥ तसरूपइस्वरधारही॥३०॥ दोहा॥ सबविइप्रभुमयजनकहे॥ युंश्रुतिकहेजोऊं॥ तिनकुंसतक
रनेहरी॥ सबरूपहोभहीसोऊं॥३१॥ चोपाई॥ युंसबरूपेभयेहरितेहा॥ निजरूपगोपनिजरूपवछेहा
करिएकगोंखेलरवेऊं॥ निजरूपविहारकुंसेंतेऊं॥ संध्याकालेव्रजकुंमांई॥ करतप्रवेशसबरूपीआ
ई॥३२॥ जसगोपकेवछथेंजेता॥ पृथकथलमेंपेवेउतेता॥ जोगोपकेबालरूपराऊं॥ तसघरमेंप्रवेश
किनतेऊं॥३३॥ गोपरूपहरिनेवेणुबजाई॥ शब्दसुनिसबगोपक्रिमाई॥ ग्रवततकालनिजनिजस्वता
ई॥ करपकरीलेतगोदउगाई॥३४॥ मिलिहैतजकतस्तनपयजेहा॥ स्रवतअमृततुल्यअतिसनेहा

परब्रह्मकुंनिजसुतमानी ॥ धवरावतअतिदयावरआनी ॥ ३५ ॥ जोतोकालकिकीडाहोई ॥ सबक
रिपाईसायंकालसोइ ॥ निकेनिजचरित्रकरिताहा ॥ दर्षदेतनिजमातहीतेहा ॥ ३६ ॥ पुनिलरकनकुंजन
निजेकुं ॥ तेललगाईनवरावततेकुं ॥ चंदनकरिभुषणपटधारी ॥ रक्षातिलककेङ्गारकेभारी ॥ बहुवि
धभोजनजिमाइमाता ॥ लाडलडावतहीसुतकुंख्याता ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ पुनिवनसेंचरिआवत ॥ वेगसही
तवछदेखवहीं ॥ हुंकारबोलिधावत ॥ सुनिवछनिजरिगआये ॥ ३८ ॥ चोपाई ॥ वछकुंचावतफिरफिरत
कुं ॥ स्रवतपयधवरावतहितेकुं ॥ मातपयुंगोगोपिकोजेहा ॥ पैलंसुंहीनहरिमेतेहा ॥ अहेअतिने
होवततांई ॥ गोगोपिकुंहरिसुतमांई ॥ ३९ ॥ बालपणोब्रह्मकोहिजोतं ॥ गोगोपिमेंपुर्वज्युंसोतं ॥ अ
समसुतननीमेंसुतयाको ॥ अैसेमोहबिनसुतहीताको ॥ ४० ॥ ब्रजजनकुंनिजनिजसुतमांई ॥ अहेहवे
लिबदिवर्षएकाई ॥ पैलेजन्मोमतिसुतमेंथेकुं ॥ हेतकुंकोअधिकताइजेकुं ॥ तैसेंनिजनिजसुतकेमा
ई ॥ अहेअतिनेहोहीनहीतांइ ॥ ४१ ॥ एहीप्रकारेहरुपहीतोतं ॥ वछगोपकोमिसकरिसोतं ॥ आपेआ
पकुंपालतएकुं ॥ वछकेचारनहोइतेकुं ॥ वनअरुब्रजमिखेलतसोई ॥ एकवर्षसबरुपहरिहोइ ॥ ४२

पंचअरुखटरतियांजबही ॥ वर्षमेंबुनरहेथेतबही ॥ एकदिनब्रह्मरामजनजाई ॥ वछचारनवनकुं
केमांई ॥ ४३ ॥ गोवरधनशिखरपरधेनु ॥ ब्रजरिगवछकुंदेखिनेनु ॥ अहेहवत्रावछकुंमेंहोई ॥ देहभांन
गयेसुधिसोई ॥ ४२ ॥ होदोषगकरीदोरतएहा ॥ गोपनपोचतपिछेतेहा ॥ कोरसंगेनिजहोकमिलाई ॥
दुर्गममारगकुंमेंधाई ॥ पुछमुखउंचेकरकेएकुं ॥ दुधस्रवतस्तनकुंसेंतेकुं ॥ ४४ ॥ करिहुंकारवेगजुत
धाई ॥ गायुंसबनिजवछदिगआई ॥ घासचरतबरवछकुंएकुं ॥ छोरेकुंतजीधवरायेकुं ॥ मानुमिलि
जायेगेअंगा ॥ चाटततैसेंजुतउमंगा ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ युंगोरीकुतगोपने ॥ किनेउअतिप्रयास ॥ तो
भिरोकेनांहिरहे ॥ पायेलाजउदास ॥ ४६ ॥ चोपाई ॥ क्रोधरुकलेशाकबीनमगमांई ॥ तेहिजूतगोप
उतरिगिरिताई ॥ देखतनिजनिजसुतकुंतेहा ॥ दुबीगयेप्रेमरसमेएहा ॥ ४७ ॥ दुखक्रोधलातकुंसें
पिछाई ॥ आयेथेसुतकुंमारनधाई ॥ देखीक्रोधचोनरहेहोई ॥ सुतपरअहेजुतभयेसोई ॥ ४८ ॥ अैसे
सेंगोपनिजसुतउवाई ॥ छतियांसेंभिडिकेताई ॥ सुंघतशिरनिजनाकसेंएकुं ॥ परमआनंदपायेते
कुं ॥ ४९ ॥ मिलिबालकुंअतिसुखीएहा ॥ दुधगोपतेछिथलसेंजेहा ॥ कष्टजूतपिछेफिरेतेकुं ॥ सु

भा.द.पू. तस्मरतनेननिरभरेऊं ॥५०॥ बलदेवखिब्रजजनकोजोऊं ॥ प्रेमअतिवडवालमेंसोऊं ॥ सोईप्रेमकोका अ.१३
॥४७॥ रणजेऊं ॥ जानततनांहिविचारततेऊं ॥५१॥ ब्रजजनकुंश्रीकृष्णमिजैसें ॥ पेलेप्रेमभयेथेतैसें ॥ निजनि
जबालमिबदरहितेऊं ॥ अदभुतजेसोक्याहेएऊं ॥ मोकुंभिअसबालकेमांइ ॥ प्रेमहोतसोक्याकहाइ ॥
५२ ॥ सोरठा ॥ जानेबलनेएऊं ॥ यहमायाक्यांसेंआये ॥ किनकीहेपुनितेऊं ॥ देवअसुरअरुमनुष्य
की ॥५३॥ चोपाई ॥ दुसरेकिअसमायानांही ॥ मोहउपजातहीममतरमांही ॥ यहकारणहेकृष्ण
किएहा ॥ युंविचारेउरमेतेहा ॥५४॥ पुनिसबगोपवछकुंएऊं ॥ ज्ञानदृगनसेंदेखतनेऊं ॥ कृष्णएकव
ऊरुपकुंजानी ॥ बलबोलतप्रभुसंगबानी ॥५५॥ वछऋषीकेअंससहेजेहा ॥ गोपदेवकेअंशनाहीतेहा ॥
पेलेमेंजानततहेजेऊं ॥ देवऋषीकेअंशनहीएऊं ॥५६॥ गोपअरुवछकेभेददीउ ॥ सबकेरुपेहोतम
सोउं ॥ निजमुरतीवऊरुपक्युंकीना ॥ यहबतीयांमोयकहोप्रवीना ॥५७॥ कृष्णकिनेसंक्षेपेतेहा
वछहरणादिबतियांजेहा ॥ तबबलदेवनेजानिएऊं ॥ वर्षेभिपुरणहोरहेतेऊं ॥५८॥ तबत्रुटिकाल
अजकोबिता ॥ पुनितेहिथलआयेजगपिता ॥ वर्षलुंखेलतपुर्वमाइ ॥ सबरुपदेखतहरिकुंआइ ॥५९॥ ॥४७॥

दोहा ॥ ब्रह्माविचारतउरमें ॥ गोकुलकेवछबाल ॥ मायापलंगसूवायेमें ॥ नांहिउठेसोहाल ॥६०
चोपाई ॥ ममममायानेमोहयमाया ॥ यहविनकुसराक्यांसेंआया ॥ मायामेंसूवरायेजेता ॥ विदमुसं
गरमतहेतेता ॥६१॥ ब्रह्मारोसेभेदकिमांई ॥ बकुवेरविचारतहेताई ॥ कुनससइनमेंकुनहिकुरा ॥ जा
ननसमर्थभयेनपुरा ॥६२॥ अखिलजगकुंमोहकरजोउं ॥ आपेमोहरहीतहरीसोउं ॥ तिनकुंमोह
उपजावतजेऊं ॥ मोहपायेनिजमायासेऊं ॥६३॥ अतिअंधारिरतियांमांई ॥ धुवरअंधारुजुलिन
पाई ॥ सूरजकेप्रकाशमेंजैसें ॥ पतंगकोतेजलिनहितेसें ॥६४॥ बडेपुरुषमेमायाजोउं ॥ प्रेरनहा
रेउपुरुषकोउ ॥ तिनकीजोमायाहेतेहा ॥ बुडनरकुंनहिपोकेतेहा ॥६५॥ बुडनरमेंजोमायाकरही
करनहारकीसांमृथहरही ॥ सुंहकृष्णमेंकरिअजमाया ॥ निजमायामिसोमोहपाया ॥६६॥ ब्रह्मादे
खरहेक्षणमांई ॥ वछगोपादिजोउकहाई ॥ सोघनश्यांमरहेसबहोई ॥ पितहिरागलपटधरसोई ॥
६७॥ चऊबाऊमेंधररहेएऊं ॥ कमलगदाशंखचक्रतेऊं ॥ अमूल्यमोतिकेउरहारा ॥ किरिटकुंड
लवनमालधारा ॥६८॥ श्रीवछजूतबाजूकरमांई ॥ रत्नजडितशंखवलकिम्माइ ॥ कडांरहेकरमेंसक

होई॥ पगमेंऋांझरकडोंहीताई॥ करिमेखलारहेतधारी॥ वेदविदिसेंसोहतभारी॥६९॥ सोरठा॥ बकुन
जन्मकेपुन्य॥ ऋक्रहरिजनकुंनेनेतेकुं॥ कोमलतुलसीचून्म॥ हारनविनपैरायेते॥७०॥ चोपाई॥ चंद
किरणजुंउज्वलहासी॥ दृगकोणलालरहेप्रकाशी॥ नोजनजनकुंदेखततेहा॥ करतमनोरथपूरण
एहा॥७१॥ अजऋादित्रणअंतहीजोउ॥ मुरतिमानचराचरसोउ॥ रूपअरूगीतऋादिसिएहा॥
पुजासामग्रीलेकेतेहा॥७२॥ प्रतिएकमुरतीदिगसबतेकुं॥ पृथकपृथकपुजततहेएकुं॥ अणीमादी
कसीधिसबजोउ॥ मायादिकविभूतीजसोउ॥ महतत्वादिचोविशजेहा॥ प्रतिमुरतीकुंघेरिरहेहा॥७३॥
हरिमहीमाजानिकेजाको॥ मिटगयोस्वतंत्रपणोयाको॥ ऐसेंकालकर्मसंस्कार॥ स्वभावकामति
नगुणहिगार॥७४॥ गोपवछकुंकीमुरतीजेकुं॥ सतज्ञानऋानंदरूपेकुं॥ उपनिषदकेज्ञाननहार
ऐसेंज्ञानिपुरुषउदार॥ सोभिइनकोमहात्म्यजेतो॥ जाननकुंसमर्थनहीनेतो॥७५॥ दोहा॥ अज
देखतवछगोपही॥ ब्रह्मरूपेयहवेर॥ जसकांतिसेंजऋसबे॥ प्रकाशजूतभइहेर॥७६॥ चोपाई॥ अ
तिआश्चर्यदेखअजएकुं॥ पायेसमाधिकुंकुंतेकुं॥ सबमूरतिकेनेजसेसोइ॥ स्तब्धइंद्रिजूतरहेहोई॥ ॥४८॥

प्रगटदेविकिआगेजैसें॥ पथरमुरतीजुंदोरहितेसें॥७७॥ ब्रह्मकुंकोऐश्वर्यजेकुं॥ निजदेखायोदेख
ततेकुं॥ तर्कमिनातमायापरजोउ॥ नेतिनेतिकहीतजतहिसोउ॥ अमवस्तजोहेकछुताई॥ निरो
धकरितउपनिषदगाई॥७८॥ सोऐश्वर्यअजकुंदेखाये॥ वेदवाणिकेइशमुरझाये॥ पुनीअजदेखन
समर्थनांई॥ तबहरिजानिअजरहेमुझाई॥ तबमायारूपपडदोजोउ॥ शरतहरिअजकेपरसोउ॥
७९॥ निकसेसमाधिसेंपुनिएकुं॥ मरकेजीवेज्युंमानततेकुं॥ खुलेदृगकरिकष्टसेंजबही॥ निजज्
तविश्वकुंदेखेनबही॥८०॥ पुनिअजनेचऋंओरदृगफेरी॥ वृंदावनकुंदेखेंउहेरी॥ सबजनऋा
जिविकारूपजेहा॥ वृक्षकुंसेंव्यापकवनतेहा॥८१॥ सोरठा॥ स्वभाविकवेरिजेकुं॥ सिंहमृगआ
दिपशुजो॥ जिमिमित्रसबतेकुं॥ भेलेरहतरहेवनमे॥८२॥ चोपाई॥ ब्रह्मनिवासकुंसेंजामांई॥ क्रो
धलोभादिकरहतनोइ॥ सोवनमेंश्रीब्रह्मजेकुं॥ टुंढतगोपरुवछकुंतेकुं॥८३॥ नंदजीकेसुतएक
हिएहा॥ करमेंकोलियोधारितेहा॥ अद्वितियमायापरजोउ॥ अगाधज्ञानअनंतपुनिसोउ॥८४॥
ऐसेंब्रह्मकुंअजएकुं॥ वृंदावनमेंदेखततेकुं॥ हंसकुंसेंउतरिततकाला॥ करनदंडवतमतिविशाला

भा॰द॰पू॰ कंचनलकरीतूल्पनिजजेहा।।चतुरमुकटकेअग्रसेंगहा।।८५।।अगलचरनपरशिरवेरवेरा।।नमस्का अ॰१४
।।४९।। रकरतहेहेरा।।आनंदवारीअंखिमेंलाई।।करतअभिषेकचरनमेंताई।।८६।।प्रथमदेखतहरि
महीमाजेकुं।।फिरफिरसंभारीकेनेकुं।।हृदयचरनमेंगिरतजाई।।उठउठकेवकुंबेरलाई।।८७।।पुनीउ
ठेअजधिरजधारी।।लोचतनिजदृगमेंसंचारी।।त्रिरनाइहरिमुरवहेरिएकुं।।नम्रभावेकरजोरितेकुं
थरथरकंपतगदगदगिरा।।स्तुतिकरतहरिकीहोइधीरा।।८८।।दोहा।।इतिश्रीमतभागवत।।दश
मस्कंधमीजेकुं।।ब्रह्माहरेजोवछरू।।भूमानंदकहेकुं।।८९।।इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमान
दकृतभाषायांत्रयोदशोऽध्यायः।।१३।।दोहा।।पेलेअद्भुतदेखीजो।।जाननसमर्थनांइ।।स्तवनकी
नअजआईजो।।चौरकुंकेअध्याई।।१।।चोपाई।।स्तुतिकरनेजोगपहोस्वामि।।घनतनत्रागिरनोय
नमामी।।बिजरीसुंपितपटरहेधारी।।गुंजाकेगुच्छकानमीजारी।।२।।मोरपिच्छमुकटवनमाला।।
शिगिलकरीवेणुधरविशाला।।सुंदरमुखकोलियोकरमांई।।इतनेचिन्हसेंरहेसुहाई।।कोमलच
रनकमलतवस्वामी।।नंदजीकेसुतलोयनमामी।।३।।हेदेवनिजमायासेंएकुं।।जगकरहरपाल ।।४९।।

नलियुंदेकुं।।धरितुमपंचमात्राकरितेकुं।।जककीउसतिकालेजेकुं।।मोयअनुग्रहजासेंभयेकुं।।
असततुमविराटरूपधरेकुं।।तिनकोजोमहिमाहेताई।।कधमनहमभिजानतनांई।।तवनिजसुख
सेंसुखितुमजोउं।।विराटतनुकेकारणसोउं।।५।।प्रगटप्रभूतवमहीमाजेकुं।।मेंनहीजाननसमर्थ
तेकुं।।नृपनिषदनेकिनेजोउं।।आत्मज्ञानपावमोसोउं।।तामेंप्रयासहोतहीजेकुं।।तिनकुंत्याग
करिसंततलेकुं।।६।।निजश्रवणसेंसुनितवगाथा।।ताकुंवर्णाश्रमिनरसाथा।।तनुमनवचसेंसस
करिजोउं।।जिवतहेजैसेंनरसोउ।।त्रिलोकमांइअजीततुमजेकुं।।तुमकुंजितिलितहेतेकुं।।७।।
सोरठा।।तारमेंसुंधरणोंजात।।तैसेतवभक्तिमेंसुं।।फरतहेसाक्षात।।अर्थधर्मकाममोक्षदी।।८
चोपाई।।यातवभक्तिलजीनरजेकुं।।केवलब्रह्मज्ञानलियेकुं।।करतकलेशसोपावततेकुं।।तामे
सेंकलुफलनहीलेकुं।।तालकेछोतरखांडजेसें।।पातकलेशआतंदुलविनतेसें।।९।।प्रभुतुममेंअ
रपणकीनजेहा।।सबइंद्रिकिक्रियानेहा।।ऐसेसजोगिअसलोकमांई।।पेलेवहुभयेथेतांइ।।१०।।तु
ममेंअरपणकरिकेंतेकुं।।वर्णाश्रमकेकर्महीतेकुं।।इनुनेप्राप्तभयेतवगाथा।।तिनकोश्रवणकरी

भा॰द॰पू॰ जनसाथा ॥२१॥ तासेंभक्तितिहारीपाई ॥ भक्तिसेंमहिमाजानिजाई ॥ विनप्रयासहोतहेएउं ॥ ब्रह्म अ॰१७
॥५०॥ रूपजोगिजोतेकुं ॥ २२ ॥ भक्तिसेंब्रह्मरूपकुंपाई ॥ निरमलमनइंद्रिवशआइ ॥ निरगुणब्रह्मतिहारो
जेकुं ॥ महिमाजाननजोग्यहीतेकुं ॥ २३ ॥ निरविकारिहेब्रह्मएउं ॥ निजसेंनिजज्ञानहोवेकुं ॥ निराकार
तेजोमयतेकुं ॥ युंज्ञानतमहिमाहीजेकुं ॥ मायिकपदारथतेसेंजोनें ॥ इंद्रिगोचरहोतनहीसोनें ॥ २४
जगमंगललियुंधरिअवतारा ॥ अनंतदिव्यगुणकिआगारा ॥ पगरप्रभुकेगुणहेजोन ॥ प्रमाणकु
रनसमर्थनकोइं ॥ २५ ॥ अतिन्यायानेजोनरतेकुं ॥ बहुंकालेरजकेकणएउं ॥ नभमेंहिमकेकणहे
जेता ॥ स्वर्गमेंताराकिरणतेता ॥ ताकिभिगणनाकरेजेकुं ॥ तवगुणगननसमर्थनतेकुं ॥ २६ ॥ मो
परकृपाप्रभूतवजेहा ॥ कबहोयगायुंदेखरहेहा ॥ प्रारब्धकोफलभोगतजेकुं ॥ तनुंमनवचसेंनमी
तिवेकुं ॥ सोनरअक्षरकुंमेंजाई ॥ भजेप्रभुकुंमहामुदपाइ ॥ २७ ॥ इतनोस्तवनकरिअजएउं ॥ नि
जअपराधप्रभुदिगतेकुं ॥ कहहीक्षमाकरावनकाजा ॥ इष्टपर्युममदेखोराजा ॥ २८ ॥ दोहा ॥ स
बकेआदिरुअनंतहो ॥ परमात्मासाक्षात ॥ मायाविकुंमोहकत्तम ॥ तोरविषेजोतात ॥ २९ ॥ चोपाई ॥५०॥

ममभायाविस्तारपमाई ॥ तवऐश्वर्यजाननचाई ॥ युंकरनेहमसमर्थनांई ॥ तवआगेअतितुछकहाई
अग्निसेंभयेतिरवारजेहा ॥ अग्नितेजहरनचहेतेहा ॥ २० ॥ रजोगुणसेंजुसनमेंहोई ॥ तवमहीमान
हिजानुंसोई ॥ तुमविनइजोइशमानजाइ ॥ जगकरताकुंकोमदपाइ ॥ तासेंअंधभयेहगजाके ॥ क्षमा
करोअपराधहीताके ॥ अजकोस्वामिमेंहोजेसें ॥ अजममदासहीमांनोजेसें ॥ २१ ॥ प्रकृतीमहत
तअहंकारा ॥ नभवायुअग्निजलभुमिसारा ॥ अष्टआवरणविटिअंडजेकुं ॥ तामेंसातवेंततनुमें
कुं ॥ २२ ॥ सोहमकयातवमहीमाकेसो ॥ अष्टआवरणकृतअंडहेसो ॥ सुंजालिकेछीद्रकेमांई ॥ उडत
हेअणुंजसतसमाई ॥ तोरेरोमछिद्रमेंएकुं ॥ उडतहेअगणीतअंडजेकुं ॥ २३ ॥ उदरमेंपगबालने
मारा ॥ मातापराधलियुंनधारा ॥ स्थुलसूक्ष्मतककहेजेतं ॥ तवउदरसेंबाहीरननेतं ॥ सुमोयत
वउदरमेंजानी ॥ ममअपराधक्षमायुंमानि ॥ २४ ॥ त्रिलोकप्रलयकेजलमांइ ॥ नारायणकवत
शेषताइ ॥ तिनकिनाभिनालसेंजेकुं ॥ ब्रह्माउत्पनहोतहीतेकुं ॥ असगाथानिश्चेकुरनांइ ॥ याका
रणतवसुतकहाई ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ तूंमनारायणसुत ॥ मेरेक्यायुंकहोजब ॥ तिनकेउत्तरजत ॥

भा॰द॰पू॰ बतियांकहुंकैनकुंस्वामी॥२६॥चोपाई॥तुमेहिहोनारायणस्वामि॥सबनियंताअंतरजामी॥नर अ॰१४
॥५१॥ कुंसेंभयेसोजलमांई॥अतेसेंनारायणकहाई॥२७॥सोभितवमुरतिहेतोहे॥सतपुनहितवमायामो
हे॥ जगतउत्पतिकिलीयेएहुं॥प्रगटकियेमायासेंतेहुं॥२८॥जलमेंविराटरूपतवजेहा॥जोमसहेत
बक्युंतेहा॥नालवर्षकुंजनालमीताई॥तुंदेखवक्युंदेखतनांई॥२९॥पुनिमोरेरूदयकीमांई॥हमने
मोक्युंदेखेनांई॥तबवचसेंतपकिनेजबही॥अछीरितसेंदेखेउतबही॥यहकारणविराटरूपतेहुं
तवयोगमायामयहीतेहुं॥३०॥जिवकीमायामेंदनहारा॥असल्अवतारमेजकसारा॥देखायेनी
जउदरमांई॥मातकुंसोमायावीननांई॥३१॥तवउदरमेंतुमजलजेहा॥सबजगमातनेदेखीतेहा
उदरबाहीरविष्वहेजेहुं॥तबमायाविनहीतननेहुं॥३२॥अबतुमविनओरसबदेखाई॥सोभिमाया
विनकछुनांई॥आगेतोतुमएकहीथेहुं॥पुनिचहुंभुजवछगोपभयेहुं॥३३॥ब्रह्माजूततलसबे
आई॥करतउपासनसबशिरनाई॥चहुंभुजरूपभयेथेउजेते॥ब्रह्मादरूपभयेतुमतेते॥३४॥अ
नंतएकअद्वितीयजोउं॥ब्रह्मरहेहोशेषतुमसोउं॥सबदेखाईमंकेलिलिना॥सोभितोरमायाह ॥५१॥

मचिना॥३५॥तोरस्वरूपनजानेजोउं॥तिनकुंदिव्यसुरतितुमसोउं॥जनातहोमनुष्यतनुंधारी॥
स्वतंत्रतुममायाविस्तारी॥३६॥जकुकिउत्पतिकरनेकाजा॥ब्रह्मारूपभासतहोराजा॥पालन
लियेविष्णुरूपजेहुं॥संहारकरनशिवरूपतेहुं॥३७॥स्वरूपज्ञानलवत्रिनकुंनांई॥अजशिववि
ष्णुजनाततांई॥तिनरूपहोइतुमकरततेहा॥युंनहीजानेयज्ञहीजेहा॥३८॥दोहा॥अजन्माप्रभु
तुमहीजो॥देवऋषीमनुषमांइ॥पशुअरुजलजंतुमेपुनी॥जन्मतहोप्रभुजाई॥३९॥चोपाई॥
सोअवतारतिहारातेहुं॥असतपुरुषकोदुरमदंतेहुं॥उतारनपृगटतहोप्यारा॥साधुजनको
करनउधारा॥४०॥जोगेश्वरतवलिलाजेहा॥त्रिलोकमिनरजानेनतेहा॥कुनथलमेंकुनकाले
करही॥कुनप्रकारेकितनीकवुरही॥४१॥ज्ञानसकतनहीकोउतनुंधारी॥कीउतनुममायाविस्ता
रि॥प्रभुअसअखिलतकहेतेहुं॥असतअरुस्वप्नतुल्यतेहुं॥नेजहिनतिनतापसेंजरही॥
मायासेंउपजतअरुमरही॥४२॥अक्षरब्रह्मरूपतुममीतेहुं॥सत्सजेसेंभासतहितेहुं॥निस
ज्ञानस्वरूपतनुंतेरि॥अनंततुमतवसताहिरेरी॥तोमेंसतसुंभासहीएहुं॥असतहेजोजक्त

भा.द.पू. हितेकुं॥४३॥ तुमएकपुराणपुरुषजोतं॥ समआत्मास्वप्रकाशसोतं॥ सबकारणनिमअक्षरतु अ.१४
॥५२॥ महो॥ निरंतरसरूवरूपनिरंजनहो॥४४॥ अद्वैतपुराणअमृतरूपा॥ उपाधिसेंमुक्तहोअनुपा॥
सकलजिवकेजीवरूपजेहा॥ सबकेआधारहीतुमतेहा॥४५॥ सोरठा॥ रविसमगुरुसेंजेकुं॥ उप
निषदरूपहगपाई॥ तुमकुंदेखततेकुं॥ संसारसागरतरतही॥४६॥ चोपाइ॥ सबजगकेआत्मातु
मतोई॥ आत्मापणेनजानेजोई॥ तिनकुंतबअज्ञानसेंएकुं॥ तुममेंसबभासतजगतेकुं॥४७॥
पुनितवरूपज्ञानहोइजबही॥ तुममेंजगकुनभासततबही॥ ज्युंदोरिमेंसर्पदेखाई॥ ज्ञानसेंज्युंमि
थ्याहोजाई॥४८॥ अखंडज्ञानिमायापारा॥ केवलआत्मातुमेंउदारा॥ ससरूज्ञानरूपतुमजोतं
युंविचारकियेतेंसोउ॥४९॥ संसारसबंधनहीतेकुं॥ पुनिमोक्षहोवतजोतेकुं॥ तोरविषेअज्ञानक
हाई॥ ज्युंरविमेंदिनरजनिनांई॥५०॥ सबकेआत्माहोतुमजोतं॥ तुमकुंमनुष्यमानतकोउ॥ तुम
विनडजोआत्मातांई॥ कल्याणकारीमानिजाई॥५१॥ पुनिबाहीरगुरुकुंपुछेकुं॥ शास्त्रसेंढुंढनआ
त्मातेकुं॥ अज्ञानिजनकुंकोतेहा॥ बडोअज्ञानपनोहैतेहा॥५२॥ विवेकवंतजनहेजोकोउ॥ सो ॥५२॥

रखहिज्ञानविचारिसोउ॥ आत्माविनओरवस्तुजेती॥ सागकरिकेसबजोतेती॥५३॥ तनुमेंअंत
रजामितोई॥ तुमकुंकुंढुंढतहेसोई॥ इनकुंतोरयुगररूपमांई॥ मनुष्यभावहोहितबनाइ॥५४॥
इनकेअंतरमेंतुमजोतं॥ रहतहोतोभिपातनसोउ॥ दोरिमेंअहीभ्रांतिजैसें॥ टारेबिनरक्षपातनतैं
सें॥ तुममेंमनुषभावमिटेजबही॥ अंतरमेंतोइपावेतबही॥५५॥ दोहा॥ तबमहीमाविवेकीकुं
ज्ञाननकुबीननजेकुं॥ तोरचरनप्रसादसें॥ अनुग्रहीतनरतेकुं॥५६॥ चोपाई॥ सांख्यज्ञानजाने
विनएकुं॥ तबमहीमासबज्ञाननतेकुं॥ तबपगसेवाकरहीजोउ॥ अंतरमेंतोयपावहीसोउ॥
यहविनइजोज्ञानिहीकोई॥ बाकुंकालढुंढिपातननोई॥५७॥ तबपगहुपालेशापायेकुं॥ सहजे
महीमाजानेतेकुं॥ तेहीकारणअजजन्ममांई॥ यशापशुमिजन्मुमेंताइ॥५८॥ ममबडेभाग्यहोकुं
तिनमांई॥ जोभाग्येतवजनकुंमीआई॥ गोपगोपिमेंजन्मुजबही॥ तोरचरनअलिसेवेनबही॥५९॥
असब्रजमेंगोगोपिजेती॥ अतिधन्यधन्यहेसबतेती॥ जिनकोपयअमृततूल्यजेकुं॥ पानकीन
बछगोपहोइतेकुं॥ तुमकुंत्रासकरनलियेएहा॥ सबमसबअबलुसमर्थनेहा॥६०॥ नंदव्रजजमिज

नरहरी जेता ॥ आश्चर्यजु तबडभागी नेता ॥ परमानंद सनातन जेऊं ॥ पूर्णब्रह्म जस मित्र तेऊं ॥ ६१
व्रजजन को महीमा है जोउं ॥ तिनकुं कहन समर्थ न कोउं ॥ त्रिव आदि एकादश जेहा ॥ व्रजजनकोइ
द्रिदेवने हा ॥ ६२ ॥ इंद्रिरूप भाजन में धारी ॥ तव पद किसु गंध सु भकारी ॥ अमृत तुल्य मीष्ट हे एऊं ॥
फेर फेर पीवत हम तेऊं ॥ ६३ ॥ सोरठा ॥ मम भाग्य पवर होते ॥ मनुष्यलोक में जन्म ही ॥ स्थावर जंगम
जोते ॥ वृंदावन रु गोकुल मे ॥ ६४ ॥ चोपाई ॥ व्रजवासिकि पगरज जेहा ॥ उपरगिरे मम जन्म होने हा
मुक्तिदाता प्रभू तुम जोउं ॥ व्रजजन को सब जिवन सोउं ॥ ६५ ॥ याकारण इनकी रज जोउं ॥ मम पर गी
रे अस जन्म होउ ॥ ऐसे से कृपा करो मम स्वामी ॥ तोर चरन रज अंतरजामी ॥ वेद दुंदत है अब लुं जाइ
सो भित्र कुं पावत नाइ ॥ ६६ ॥ प्रभु अस व्रजवासी हेताइ ॥ तुम बिन क्या दोगे फल लाइ ॥ सब फल रु
प तुम बिन फल नाइ ॥ विचारत मोर चित मुरझाई ॥ ६७ ॥ तुम कहोगे मे दोगि मोइ ॥ अति पापि पुत
ना पाइ तोई ॥ मारन आइ साधु मित्र धारी ॥ कुल जुत तुम कुं पाइ सो नारी ॥ ६८ ॥ व्रजजन के सुरूद थ
न गेहा ॥ सुत अंतःकर्णवल्लभ देहा ॥ तोरली सुं करर खे सब ताऊं ॥ इनकुं क्या दोगी कहो तेऊं ॥ ६९ ॥ ॥५२॥

तुम कहोगे राग द्वेष जेऊं ॥ व्रजजनकुं भिरे सब तेऊं ॥ हे प्रभु राग द्विषादि जेहा ॥ तुम से विमुख के
चोरा हा ॥ तिनकुं बंधनरूप है गेऊं ॥ पगामे बेडि सुं मोह तेऊं ॥ ७० ॥ प्रपंच रहीत प्रभु तुम जोउं ॥ शरणा
गत जन के हितु सोउ ॥ अति आनंद वृंदावन काजा ॥ व्रजजन के सुत भये ही राजा ॥ सुत रूपे यो गम
या कीना ॥ तुम विन के सुत नांहि प्रवीना ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ तव महीमा जानत ही जो ॥ सुखसे ता नकुं
तेऊं ॥ में क्या कहुं बहु बात सो ॥ तव सामर्थ है तेऊं ॥ ७२ ॥ चोपाई ॥ न तुम नव च कुं अगोचरेऊं ॥ स
स लोक जाने कि देउं ॥ आग्या मे मागु प्रभु एऊं ॥ सब दृष्टा सब जानत तुम एउं ॥ ७३ ॥ तुम कुं जन कु अरप
स्वामी ॥ बल गोपटुंद लेबहु नामी ॥ जदुकुल रुपी कमल के जोउं ॥ फूलवन हार सुर जन तुम सोउ ॥ ७४
द्विज गो देव प्रभु मि के जेऊं ॥ सिंधु वृधिकर चंद तुम तेऊं ॥ पाखंड धर्म रूप रजनि जेहा ॥ तिनको तिम
र हर तुम तेहा ॥ ७५ ॥ भुप रु कंसादि राक्षस सारा ॥ तिनकुं तुम हो मारन हारा ॥ सुर जन आदि देवकुं
जेऊं ॥ पुजन जोग्य तुम एक हितेऊं ॥ जो लुं ब्रह्मांड प्रलै होइ ॥ तालुं नमन करुं मैं तोई ॥ ७६ ॥ प्रभु क
कहे जग करता अजन एऊं ॥ सु तिक रि बड इस मकि तेऊं ॥ पुनि प्रदिक्षिणा करती ना ॥ चरने शिर कुं ना

ईप्रविना॥७७॥श्रीहरुदमआपप्रादिनेजबही॥मरलोकमेंगयेअसजबही॥नित्तदिगगादेथेंवछ
रकूं॥तिनकुंयमूनांतरलायेकुं॥जामेंनिजमितपुरवमाई॥वेरेथेतिमनेकिताई॥७८॥मोहपाये
प्रभुमायासेंकुं॥पालसेवल्लभहदमविनजेकुं॥एकवर्षजोबितिगयेकुं॥क्षणाकिअस्रधसुमानतने
कुं॥७९॥सोरठा॥प्रभुमायासेमोह॥पायेचितजाकेतेकुं॥संसारमितनसोह॥क्याक्यानहीवि
सरेरकुं॥८०॥चोपाई॥जोमायासेंसबजगरहा॥मोहपाईतनुमानिभयेहा॥वछलेहरिदिगआ
येजबही॥प्रभुसेंबोलेबालकतबही॥८१॥प्रभुतुमअतिवेगसेंआवा॥तुमविनएकग्रासनपा
वा॥आप्रओतृगोतिकरजिमोस्वामि॥हसिमित्रकतजियेवकुनामि॥८२॥पुनिअजगरकोचरमही
जेहा॥बालककुंदेखायेतेहा॥पुनिवनसेंआयेव्रजताई॥कुलमोरपिछधरीतनुमांई॥८३॥गेरुआ
दिसेंरंगितअंगा॥वेणुदलसिंगीबजातउमंगा॥करीबडआलूरुछवकतहोई॥गोपगातनिजकीर
तिसोई॥८४॥नितवछबोलातनादउचारी॥गोपिकिदृगकुंहोतमुदकारी॥व्रजमेंकिनेप्रवेशज
बही॥बालकहतव्रजजनकुंतबही॥आतसर्पबडहरिनेमारा॥हमसबकुंकरलिनउधारा॥८५॥ ॥५४॥

दोहा॥तेरकेअधामेंकही॥व्रजजनकुंथेहेत॥निजनिजसुतकुंकेवीथे॥हृदममेंथेजेत॥८६॥चो
पाई॥तामेंपुछतपरिक्षितरकुं॥परकेपुत्रहृदममेंजेकुं॥व्रजवासिकोप्रेमथेजेहा॥निजनिजसुतसें
अधिकतेहा॥८७॥इनकोकारणकहोतुममोई॥सुनिकेबोलतशुकजीसोई॥सबकुंनिजजिवव
ल्लभहेकुं॥तापिछेवल्लभसुतधनतेकुं॥८८॥नितआत्मामेंहेतहेजेसें॥ममतामानिसुतधनमेंनतेसें
तनकुंआत्मामानतजेकुं॥तिनकुंअतिवल्लभसुंदेकुं॥सुंतनुंपिछेउत्सनभयेहा॥सुतदारादिव
ल्लभनतेहा॥८९॥तनुंअभिमानीकोतनुभिजोउ॥रोगादिकतहोतजबसोउ॥तबजिवमाइवल्
लभनरहही॥तनुंजिरणहोईदुखकुंसहही॥तोभिजिवकुंजिवनेकीजेकुं॥आशापाअतिरहेमिटे
नतेकुं॥९०॥जिवअतिवल्लभसबकुरहही॥तिनलियुंसबवस्तुप्रियकहही॥सकलजिवकेजीव
हेजेकुं॥परिक्षितजानोहृदमतेकुं॥९१॥जक्तकोमंगलकरनरकुं॥मायासेंनरभासहीतेकुं॥अखी
लजक्तकोकारणजेकुं॥हृदमकुंकुंजानेनरतेकुं॥तिनकुंहृदमरुपजगजोउ॥हृदमकारणपरोससरो
उ॥९२॥सोरठा॥प्रलेमिवस्तुसबेकुं॥स्थुलरुपेनाव्राहोवतही॥कारणरुपेरहेकुं॥तिनकोभिकारण

भा॰द॰पू॰ हृदमहीं ॥ ९३ ॥ चौपाई ॥ हृदम विन वस्तु सत कछु नांई ॥ क्या निरूपण करूं मे नांई ॥ सब के कारण हृदम अ॰ १५
॥ ५५ ॥ मिंजोई ॥ व्रजजनकुं प्रेम क्युं न होई ॥ ९४ ॥ स्कंधजे शंवंत मुरदानव मारी ॥ हृदम चरणरूप नावजो भारी ॥
महाजनकुं आश्रयरूप राक्कं ॥ तिनकुं आसरहीन रजेकुं ॥ ९५ ॥ सो नर भवसागरकुं तरही ॥ वछके पद
मिंजल संकुं करही ॥ वेकुंठपदकुं पाइण हा ॥ पुनि संसारमिं आनन नेहा ॥ ९६ ॥ परिक्षीत तूम पुछे थे मोई
सो चरित्र हम किने उताई ॥ कुमार वयमें हरिने किना ॥ पौगंडमें बालक कहीं दिना ॥ ९७ ॥ बालसें क्री
डा किन हरी जेहा ॥ अघासुरकुं मारे उत तेहा ॥ जमुनां तट निलो खु इजोउ ॥ ता पर खेव जिमे हरि सोउ ॥ ९८
आप विन अरु चक्रभुजरूपा ॥ ब्रह्माकुं देखाये अनुंपा ॥ अजतने स्तुति किने वकुं जेहा ॥ इत्यादिक हरी
चरीत्र तेहा ॥ गावे अरु सुनें नर जोउ ॥ अर्थ धर्म मोक्ष पावे सोउ ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ छुपि रेनो पाल वांधनी
कुंदनो मस्कर होई ॥ पंचवर्ष लगी वृजमें ॥ छे वर्ष भये सोई ॥ १०० ॥ इतिश्रीमत भागवते ॥ दशमस्कंध मिंजे
कुं ॥ ब्रह्माने स्तुति किन जो ॥ भूमानंद कहेकुं ॥ १०१ ॥ इतिश्री सहजानंदस्वामी शिष्य भूमानंदकृत भाषा
यां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ दोहा ॥ कालि विषसें गोप रक्षण ॥ हने धेनुकासुर ॥ पनरके अध्यायमें ॥ ५५ ॥

गोचारत हरि इर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुक कहे पौगंड वय रीउ ॥ आसरे बल हृदम ही सोउ ॥ गोपक्त गो
चारत जाइ ॥ चकुं दिशा फिरी वृंदावन मांई ॥ २ ॥ निज पदपंकजकुं सेणकुं ॥ अति पवित्र करहे तेकुं ॥
वंसि बजावत बलकृत जाइ ॥ क्रिडा करन इछा उर लाइ ॥ ३ ॥ निजतत्र गावत गोप विराइ ॥ गोकुं आ
गे करिके भाई ॥ पशुकुं हितकारी वनण्डं ॥ वसंत ऋतुसें फुलि रहेकुं ॥ ४ ॥ स्कंद स्त्राह करन जा मांई ॥
मधुकर पंखि मृग सुंदपाइ ॥ महत पुरुषके मन तूल्य जोउ ॥ स्वछ जल जूत सर वनमें सोउ ॥ ५ ॥ सित
ल पवन कमल गंध वाई ॥ रक्त कुंपल्ल फल फुल सकुहाई ॥ भारसें डालियुं मुल मिंआई ॥ वृक्ष रहे वन
में लपराई ॥ देख हृदम विस्मित मुं होई ॥ मुदकृत बोलत बलपति सोई ॥ ६ ॥ सकल देवमें बड तूम भा
ई ॥ देख आश्चर्य द्रुम सकुहाई ॥ फल फुल रूप ग्रही पुजन जेकुं ॥ निज डालिरूप करमें तेकुं ॥ ७ ॥ आज आ
दिने पुजे उं जोउ ॥ तोर चरनकुं नमत ही सोउं ॥ जो पापसें द्रुम देह आवा ॥ नमत ता पर सो पाप मिटावा
८ ॥ सोरठा ॥ मधुकर देस बजेकुं ॥ जगकुं तिरथरूप तव जेश्रा ॥ गान करत हे तेकुं ॥ प्रतिक्षण तुमकुं भ
जत ही ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ वनमें गुप्त होते भि तोइ ॥ निज देव जानित जनन सोइ ॥ या कारण भ्रमरा सब

जेकूं॥ तोरेंतनमेंमुखिमुनितेकूं॥२०॥ हेवलदेवअसमथुरजेता॥ आनंदकृतनाचतहितेता॥ मृ
गिगोपिनुंनिरखकेंएहा॥ कोयलपुजेनिकबोलितेहा॥२१॥ वनमेंरेवनहारातेता॥ सबहीधन्यहे
संतहितेता॥ स्वभावहेसेंसतकूंकोएकूं॥ निजदिगहोवेवस्कजेकूं॥ मस्तजनघरूआयेतबही॥ सोइ
समर्पणकरनोतबही॥२२॥ झाडसबेनिजदिगफलजेहा॥ वनआयेतोयअर्पहितेहा॥ धन्यभुमी
तृणवेलियुंजेकूं॥ तोरचरणकुंपर्शहितेकूं॥२३॥ धन्यवृक्षपरवेलितुंएहा॥ तोरेकूरनखपर्शतितेहा
नदिपर्वतमृगपंखिजेता॥ दयाकृतनतुंमदेखिधनतेता॥ तवभुजमध्यापाईगोपीतेकूं॥ धन्यलक्ष्मी
जोइच्छततेकूं॥२४॥ ग्रुककहेंगोभाकृतवनएकूं॥ देखप्रसनमनद्दृष्टमभयेकूं॥ गिरिदिगनदीतटचा
रतगाई॥ खेलतनिजसखाकृतदोभाई॥२५॥ गावहीगोपचरित्रहिताके॥ बहुविधपुष्पहारहेताके॥ फुलगंधअंधभमरकिसंगा॥ गांनकरतवलकृतहरिरंगा॥२६॥ सुंदरवचकिरकोयलतब
ही॥ बोलतसुंहरिबोलततबही॥ कलहंसपिछेबोलतएकूं॥ निजमितकुंहसावततेकू॥२७॥ दोस
नचतमोरदिगनचतसो॥ घनसुंगंभिरनाद॥ बोलावतगोनामकृत॥ उरसेंमनहरसाद॥२८॥ चौपा

ई॥ चकोरकुकडीभारद्वाजा॥ चक्रवाकअरुमोरसमाजा॥ उनुंबोलेसुंबोलेहिएकूं॥ कबुवनजं
तुसेंडरिभगेकूं॥ व्याघ्रसिंहसेंडरिसुंदोउ॥ करतपलायनपुनिपुनिसोउ॥२९॥ कबुरमतकरीथ
केवलजबही॥ गोपगोदकरिओसीसकंतबही॥ वडेवंधुकीपगचंपिकरही॥ श्रीद्दृष्टमसबथाक
कुंहरही॥३०॥ कबुएकएककूरपकरीदोउ॥ गोपकुंहसेबलद्दृष्टमसोउ॥ गातनचतवलगतकृध
जेकूं॥ करतगोपकुंबखानेतेकू॥३१॥ कबुजुधकरीथकेद्दृष्टमजबही॥ गोपगोदकरिओसिसकंतब
हि॥ वृक्षमूलमेंबेठेजाई॥ कोमलपत्रकीसज्याबनाई॥३२॥ सबवनगोपगोदगिरिधारी॥ पगचां
पतकैगोपहिगवारी॥ पापरहितइजेगोपजेता॥ पत्रवितनकरिवायुंतेता॥३३॥ पुनिगोपथेइस
रेजेकूं॥ प्रभुकुंजोगपगानहेतेकूं॥ स्नेहसहीतधिरहिगावे॥ गदगदअंतरमेंहोजावे॥३४॥ युंनि
जयोगमायास्तेतेकूं॥ प्रभुपणोनिजगुप्तरखेकूं॥ गोपसकृतपणंदेतदेखाई॥ लक्ष्मिसेवतचरणही
जाई॥३५॥ ईश्वरकिचेष्टाकरीएकूं॥ प्राकृतगोपकिबालसंगेकूं॥ मनुषबालहोईखेलेजेकूं॥ बलद्द
ष्टमकोमित्रहेतेकू॥३६॥ श्रिदामासबबस्तोकनामा॥ द्दृष्टमआदिओरगोपगुणधामा॥ बोलत

रामहरुष्मदिगआई॥हेरामबडेबाकूसकहाई॥२७॥हेसुधमहेकुष्णकेहेता॥नजिकतालवनपंक्तिवंता
बङ्कंफलगिरेहेसोवनमांई॥नयेगिरतहेबकूअबताई॥२८॥दुष्टधेनुकासुरनेराहा॥रुंधिरास्वेहे
सबतेहा॥अतिबलियोखररूपहेतेहु॥तुम्हबकूखरनेघेरयोतेकूं॥२९॥सोरठा॥नरकोकरही॥
आहार॥धेनुकसेंसबतनडरही॥नरपशुपंखिसार॥वनमेंप्रवेशहोतनही॥३०॥चौपाई॥सक
गंधमानफलकोकूंनखाई॥इनकिसुगंधरहेप्रसराई॥लेकूंअतिसुगंधहेतेकूं॥अपनेनाकमें
आतहितेकूं॥३१॥हेबलहूधमसुगंधकुंपाइ॥चितहमारेरहेलोभाइ॥सोफलदेकूंबडइछाहेकूं॥
तोयरुचेतोचलोवनमेंकूं॥३२॥श्रुककहेमित्रवचसंनीदोउं॥हसिबलहरुधमसमर्थसोउं॥मित्रको
प्रियकरनकेकाजा॥गोपकुतगयवनमेंराजा॥३३॥पुनिबलप्रवेशकरीवनमाइ॥मदोरमतग
जकूंकीमाई॥करसेंतालकंपाइएकूं॥तालकेफलगीरानदीतेकूं॥३४॥फलकोशब्दसुनिकेधाये
वृक्षसहीतभूतलकंपाये॥धनुकासुरबलदिगआई॥पिछलेपगदोलातचलाइ॥३५॥बलकीछा
तियामेहनीएकूं॥दोउतखरशब्दकरीतेकूं॥पुनिक्रोधकरीबलदिगआई॥पिछलेपगरिपजूतचलाइ॥३६॥ ॥५७॥

एककरसेंपकरिपगदोउ॥फेरावतबलदेवजिसोउ॥भ्रमणसेंजिवबिनभयेकूं॥तालअग्रपरडारेतेकूं॥
३७॥दोहा॥खरकीदेहसेंतालको॥अतिबडशिरहनाई॥कंपतनिजदिगतालकुं॥तोरिडारतता
ई॥३८॥चौपाई॥सोनिजनिजदिगतालहीजेता॥तोरिडारतसबसोतेता॥बलनेफेंकेखरदेहजो
उ॥ताइहनानेतालहिसोउं॥३९॥सकलतालकुंदेतकंपाई॥अतिवायुसेंवनकीमाइ॥षटऐश्वर्य
जुतअनंता॥ईश्वरजोअरूअतिबलवंता॥४०॥जामेंजक्तचराचरजेकूं॥तंतुमेंवस्त्ररहेसुंतेकूं॥
ऐसेसंकर्षणकेमांई॥आश्चर्यतवमाननोनांई॥४१॥पुनिधेनुककीज्ञातिजेता॥मृतबंधुक्रोधे
नुतहीतेता॥बलहरुधमकुंमारनएकूं॥सनमुखदोरतखरसबतेकूं॥४२॥तबबलहरिपीछले
पगमांई॥पकरिपटकततालपरताइ॥बङ्कंफलखरतनुतालशिरजेकूं॥वनमेंछाइरहेसबतेकूं
४३॥बङ्कंबदरेआकाशाहीजैसें॥वनमेंभूतलसोहेतेसें॥अतिबडकर्मदेखिसबदेवा॥फुलझरी
करतआईतलखेवा॥बलहरिकेपरमहामुदपाई॥स्तुतिकरतबाजित्रबजाई॥४४॥धेनुकहनेपी
छेवनमांइ॥निरभयमनुषपातफलजाई॥पशुचरतखडनिरभयहोई॥कमलपाखडीसमनेनसोइ॥४५॥

स्कंधश्रवणकीरतनहे जाकी॥ गोपनिजस्तुतिकरतदिगताकी॥ बलदेवकृतश्रीकृष्णजेकुं॥ वनसे
व्रजमें आतहितेकुं॥४६॥ गोरजसेधुसरकेगाताके॥ वनफुलमोरपिछधरिताके॥ सुंदरद्रगरस
निमुखमांई॥ गोपगानकीरतिवेणुबजाई॥४७॥ असहकृष्णकुं देखनकाजा॥ सनमुखआतहीं
गोपीसमाजा॥ दरशनइछाकृतद्रगजाकी॥ कृष्णकेवदनकमलमेंताकी॥४८॥ सुगंधलेतभमर
ज्युंहोई॥ दिनवियोगतापमेरतसोई॥ लज्जाकृतगोपिहसहीजेकुं॥ विनयकृतदेखतपुनितेकुं॥
यहगोपिकोसतकारजोउं॥ पाईकृष्णआतव्रजमिसोउं॥४९॥ सोरठा॥ जसुदारोहिणीदोउं॥ सु
तपरअतिदयावंतही॥ कृतइछतजोजोउ॥ कालउचितइछापुरत॥५०॥ चोपाई॥ लाइललडावंत
पुनिनिजमाता॥ तेलचोरिनिवाईजलनाता॥ मगकोथाकमीटाइतेकुं॥ सुंदरसुंथणीपेराइएकुं॥
५१॥ दिव्यस्त्रजचंदनपुनिधारी॥ अतिस्वादुअनदिनमेतारी॥ सोनिमकेबलकृष्णहीजेकुं॥ सुं
दरसेजमेंसुइरहेकुं॥५२॥ युंवनमेंविचरतहरिएकुं॥ एकसमेनिजमितकृतनेकुं॥ बलदेवविनजमु
नागयेकुं॥ जनालाकेधुपसेतपेकुं॥५३॥ तरषासेंगोगोपविडाई॥ विषकृतजलपियेजमुनामांइ॥ ॥५८॥

ञारव्येहमेज्ञानजाके॥ गिरेजलदिगजिवगयेताके॥५४॥ योगेश्वरकेईश्वरएकुं॥ प्राणविनगोप
गवनकुंतेकुं॥ अमृतवर्षतीद्रगसेंहेरी॥ निजगोपगोकुंजिवाईफेरी॥५५॥ ततकालपाईस्मृति
सबतेकुं॥ उठिपरस्परदेखकेएकु॥ अतिविस्मेउरमेंसबपाई॥ विषपानकरिमरगयेताई॥ पुनि
जिवनेकोकारनएकुं॥ अनुग्रहकरीहरिहेरेतेकुं॥५६॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंध
मितेकुं॥ धेनुककुंकुंहनेप्रभु॥ भुमानंदकहेकुं॥५७॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृत
भाषायांपंचदशोऽध्यायः॥ १५ ॥दोहा॥ नागनिग्रहरूपलीने॥ स्तुतिकिनकृष्णकितेकुं॥ कि
नेअनुग्रहसर्पकुं॥ सोअध्यामितेकुं॥१॥ चोपाई॥ शुककहेकृष्णसमर्थजेकुं॥ कालिसर्प
डेरस्तुतकिनेकुं॥ असजमुनाकुंदेखिएहा॥ अतिशुधकरनेइछतनेहा॥२॥ सर्पनिकासिदि
नेउबारा॥ परिक्षितपुछेप्रेमसारा॥ हेशुकबकुजगजम्नामांइ॥ सर्परहेकहेंकारणताई॥३॥
किसविधहरिनेपकरेतेकुं॥ उग्रांजलजमुनांमेंजेकुं॥ क्युंरहहीकहेागाथाएकुं॥ स्वतंत्रमुरलीकृष्ण
हेकुं॥४॥ गोपहोईकिनचरितजोउं॥ अमृतरूपकुंकुंसेवेकोउ॥ तृमनांहिसंतपुरुषसोई॥ कृष्ण

चरित्रकहोशुकमोई॥५॥शुककहीजमुनांमिलकथेऊं॥कालिनागकोहृदराकतेऊं॥विषरूपअ
ग्निसेंजामोई॥जलतउछरतआंधलाकिमाई॥६॥उपरितुउडतपक्षिजोकोउं॥हृदकुंमेंगिरतहेसबसोउ
तटपरस्थिरचरजिवहीजेता॥विषकृतवायुसेंमरहीतेता॥७॥खलकुंदंडलियेअवतारा॥भुत
लपरश्रीहृदमनेधारा॥अतिछेरप्राक्रमहेजाई॥हृतुनेजमूनांउग्रपणपमाई॥८॥सोकालिकुंपक
रनकाजा॥कुदंबकीपरचरीमाहाराजा॥कसेउकमरमलकुंकीमाई॥करकुंसेंनिजखभावजाइ
९॥परतहीवेगकुंसेंहृदमांई॥नामहीसर्पक्षोभअतिपाई॥सर्पछेरसेंउछलनवारी॥छेरुपीया
तरंगभारी॥१०॥सोरठा॥जातधनूषचकुंओर॥दारतजलहृदकुंमेंसं॥अनंतहरिमेंजोर॥इन
कुआश्चर्यनहीकछु॥११॥चौपाई॥बडगजसुंप्राक्रमजामांई॥खेलनजलमेंहाथहलाइ॥तासें
हलायेजलकोंजेऊं॥जावृक्षकंनिसर्पआयेतेऊं॥१२॥निजगेहकोंपराभवकिना॥ताकुंनोहीसहत
मेनीहीना॥काटतहरीकुंमर्ममिधाई॥पुनिनिजतनुसेंरहेलपटाइ॥१३॥देखनलायककोमल
बाला॥श्रीवछचिनजतघनसमकाला॥पितपरसंकररमूखमंदहासी॥चरणहीकोमलरक्तस

वासी॥१४॥नागकुंसेबंधानेजोउं॥चेष्टाकछुकरतनहीसोउ॥असहृदमकुंदेखगोपाला॥पिडा
पावतउरअतिबाला॥१५॥हृदमकुंअर्पणदेहकीना॥धनस्त्रहृदसुतनारीप्रवीना॥दुखभयत्रो
कसेंमुरछुधिलकुं॥गिरतभूतलपरसबतेऊं॥१६॥गायबेलरूवछथेंजेता॥करतकुलाहलकु
खियातेता॥भयजुतनेत्रहृदममेंजोरी॥रोवतसुंगहिलकवोरी॥१७॥दोहा॥उत्पाततिनप्रका
रकी॥व्रजमेंहोतभयकार॥भुकंपनभसेंविजगारे॥वामकरहृदगचलार॥१८॥चोपाई॥बडउत्पा
तदेखिसबगोपा॥बलविनहृदमगयेलकरूपा॥गायुंचरावेनकुंसोजानी॥भयसेंउद्वेगउरमें
आनी॥१९॥अपशुकनसेंमानलाकुं॥हृदमसुपायेयुंतेऊं॥दुखशोकभयमेंआतुरहोई॥प्र
भुकिमहीमाजानेनसोइ॥२०॥हृदमप्राणहेजाकिजेऊं॥हृदममेंमनरखरहेतेऊं॥अतीहेतेवंत
पशुकीमाई॥हरिदरसनदुखनउरमांई॥२१॥दिननंदादिगोपहीजेता॥बालकवृद्धत्रियाजूतते
ता॥गोकुलसेंनिकसीततकाला॥भयसेंव्याकुलसबगोवाला॥२२॥तिनकुंदेखिबलदेवजेऊं॥
हसिकेकछुनबोलेतेऊं॥छोटबंधुकोमहीमाजेनो॥बलदेवजीजानतहेतेनो॥२३॥सबगोपची

भा॰द॰पू॰

॥ ६० ॥

कूकलपगजेहा ॥ देखिह्रदमकेजाननतेहा ॥ सोपगनेमगाकवरवेजबही ॥ ढूंढनचलेजमुनांतटतब
ही ॥ २४ ॥ अतिवल्लभकेपदकंजमांई ॥ ध्वजवज्रयवअंकुशाकहांई ॥ असुविधहरिकेपदकंजेकूं
डुसरेपगविचहुंदततेकूं ॥ २५ ॥ सोमगगापिगयेश्रीघ्रचलाई ॥ डुरसेह्रदविचदेखननाई ॥ सर्पव्रारी
रसेंरहेलपटाई ॥ चेष्टाकछुहोवननजाई ॥ २६ ॥ जमुनांतटगिरगोपसबैकूं ॥ सुदबुधिभयेजाकीतें
कूं ॥ तिनकेचकूंओरपशुहांजेता ॥ करनकुलाहलक्षा दूहीतेता ॥ २७ ॥ इनकुंदेखीअतिदुखपाई ॥
गोपनंदादिरहेमुर्छाई ॥ हरिमिअतिहेतमनजाके ॥ कहूंप्राणहेगोपिजननताके ॥ २८ ॥ मंदह्रदमनिज्ञू
तहेरततेकूं ॥ ह्रदमकूंकोसंभारततेकूं ॥ अतिवल्लभश्रीह्रदमहेजाई ॥ सर्पमेदेखीअतिदुखपाई ॥
निजवल्लभह्रदमविनएकूं ॥ त्रिलोकऊजडदेखनतेकूं ॥ २९ ॥ सोरठा ॥ जशोमतीदेखवाल ॥ पिछेप्रवे
शाकरनजब ॥ गोपिआईततकाल ॥ पकरनआंसकाईहगामी ॥ ३० ॥ चोपाई ॥ जशोमतिकेतूल्य
डुखजाई ॥ अतिवल्लभहेह्रदमहीनाई ॥ व्रजमेंहनेपूतनादिजेता ॥ जशोमतीकुंगोपिकहीतेता ॥
३१ ॥ हरिमुखमेंजोरिहगाएहा ॥ मरणतूल्यहोरहेउनेहा ॥ ह्रदमहेजिवनप्राणजाई ॥ नंदादीकजो

अ॰१६

॥ ६० ॥

गोपकहाई ॥ ३२ ॥ ह्रदमेंपेठनइछनजबही ॥ ह्रदमसहीमाजाननबलजबही ॥ रोकिराखेगोपकुं
जेहा ॥ ह्रदमदेखमाननमममएहा ॥ ३३ ॥ मोरलियुंअतिदुखिव्रजवासी ॥ त्रियारूबालकवृद्धउदा
सी ॥ निजमेंहगाजोविरहेजोउं ॥ गोकुलकुंदेखिहरिसोउं ॥ ३४ ॥ मनुष्यरूपमुकुंजेएकएकूं ॥ सर्पवं
धनमिरहीकेतेकूं ॥ छुटनेकिईछाउरधारी ॥ स्थूलकगीननिजदेहवीस्तारी ॥ ३५ ॥ जोरकरीतनुफे
रेजबही ॥ पिडापायेउकालियतबही ॥ शरीरगुचलिबंधसेंनेकूं ॥ त्यागकरिह्रदमकूंकुंतेकूं ॥ ३६
अतिक्रोधकरिफणउठाई ॥ करतेफुंफाडानाकहीमांई ॥ ह्रदमसनमुखगादेउजाई ॥ नाकछिद्र
मेविषरहाई ॥ ३७ ॥ तातितावडीतूल्यहगजाके ॥ जलतकाष्टसममुखसबताके ॥ दोदोजिह्वा
पतिमुखमांई ॥ चाटतेनिजगलोफाताई ॥ ३८ ॥ अतिभयंकरविषकिज्वाला ॥ हगमेंसंकवर्षत
विकाला ॥ ऐसेंकालिकंकेचकुंओरा ॥ फिरतह्रदमखेलतजूलतोरा ॥ ३९ ॥ बडेसर्पकीचकुंओ
रजेसें ॥ पकरनफिरेसुगरुडतेसें ॥ ह्रदमकुंकारनकेकाजा ॥ कालिफिरतहीचकुंओरराजा ॥ ४०
दोहा ॥ चकुंओरफिरिसर्पको ॥ बलसबपायेनाश ॥ तबबडफणानमायके ॥ शिरपरकिनेवास ॥ ४१

भा-द-पू- चौपाई ॥ सर्पकिशिरपररत्नकुंछोई ॥ प्रभुकेचरणलालरहेहोई ॥ आदिगुरुसबकलाकेजेत ॥ अ-१६
॥६१॥ नरतकरनभयेततपरसोउं ॥ ४२ ॥ नचतदेखिनिजसेवकजेता ॥ सिधचारणगंध्रवमुनीतेता ॥
देवरुदेवकीदासजोउं ॥ मृदंगरोलनगारेसोउ ॥ ४३ ॥ पुष्पादिकपुजासबलाई ॥ स्तुतिकरतसबहर्ष
टिगआई ॥ नागकेघातअसुराकफणाउ ॥ तामेंजोनहीनमतहिकाउं ॥ ४४ ॥ ताकुंलातसेंमारीदंडुं
नमातखलदंडदायकनेऊं ॥ क्षिणआयुषकालितवहोई ॥ नाकरुमुखसेंझारतलोई ॥ ४५ ॥ अती
दुखपायेकालियनवही ॥ दृगसेंविषकुंवर्षतलवही ॥ क्रोधसेंचक्रकुंफाडमारी ॥ जोजोशिरख
चोउधारी ॥ ४६ ॥ तिनकुंनचलचरणसेंमारी ॥ शिरसानमाइदिनदंडभारी ॥ तबकृदमपरप्रसंनहोई
सिधचारणगंधर्वजोसोई ॥ ४७ ॥ पुजाकरतप्रभुकीजेसें ॥ शेषशायिनारायणतेसें ॥ कृदमकीवक्र
न्हससेंजाई ॥ तूटगयेफणरूपछन्नताई ॥ मुखसेंरुधिरपरतवक्रजाके ॥ चुरणहोगईअंगसबताके
४८ ॥ सोरठा ॥ स्थिरचरकेगुरुतेऊं ॥ पुराणपुरुषनारायण ॥ ताकुंस्मरकेतेऊं ॥ मननसेंसरणेजातश
नि ॥ ४९ ॥ चौपाई ॥ अनंतन्रलोंउदरमिजाके ॥ दबिगयेअतीभारसेंताके ॥ पदपेनिकेमारसेंज ॥६१॥

वही ॥ तूटगयेफणसर्पकेतवही ॥ ५० ॥ देखिनागकुंनारिजेहा ॥ शिथिलकेशापरभूषणतेहा ॥
अतिपिडानिजउरमेंपाई ॥ नागपत्नीसबहरीरिगआई ॥ ५१ ॥ सबकेस्वामीशरणकेदाता ॥ प्रभु
कोशरणपाइसाक्षाता ॥ धरनिपरनिजदेहवहाई ॥ नमस्कारकीनकृदमकुंजाई ॥ ५२ ॥ विक्रलचि
तकरतेरिकेएऊं ॥ छोडबालआगेकरितेऊं ॥ पापीपतिछोरावनकाजा ॥ पतिवृताइछलतसुरराजा ॥
५३ ॥ नागपत्निकहेप्रभूतुमजेऊं ॥ पापिकुंदंडदिनेउतेऊं ॥ न्यायकियोतुमनेअसुनाथा ॥ निजर
क्ततअसुरनासुकुंसाथा ॥ ५४ ॥ दंडदेनेमेंतुमहृगतोरी ॥ खलनिग्रहलियुजन्मधरोरी ॥ जाकुंखल
जानोतुमजवही ॥ दंडधरतहोताकुंतबही ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ तुमदंडदिनोकालिकुं ॥ सोइअनुग्रह
किन ॥ असतपुरुषकुंदंडतव ॥ पापनाशाकरदिन ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ जोपापेहमसर्पनतुंपाई ॥ सो
पापतचदंडनेमिटाई ॥ क्रोधरूपभासतदंडएहा ॥ हमनेमानेअनुग्रहनेहा ॥ ५७ ॥ मानरहीतओर
कुंमानदिना ॥ क्याहुतुंनेनिकृतपकिना ॥ सकलजिवपरदयारखिएहा ॥ क्याधर्मकिनेपेलेतेहा ॥
५८ ॥ जासेंसबकेजिवतुमजेऊं ॥ प्रसनभयेअसमपरजोतेऊं ॥ तबपदरजकासपर्सजेहा ॥ कुनपु

भा·द·पु· समेभयेजतेहा ॥५८॥ सोतोकछुंहमजांनतनांही ॥ तोरचरणसपर्शजोताही ॥ करनईछालियुल अ·१६
॥६२॥ क्षिमितेऊं ॥ व्रतधरिकेवकुंतपकिनतेऊं ॥५९॥ सोतवपदपर्शनागजोतं ॥ क्यापुनकिनहमजानेन
सोउ ॥ तवपदरजपायेनरजेहा ॥ स्वर्गकीरासनइछेतेहा ॥६०॥ चक्रवरतीपलंइछतनांइ ॥ पुनित्र
ह्याकिपदविनाई ॥ रासरसातलमोक्षहीजेऊं ॥ अष्टांगयोगकिसिधितेऊं ॥६१॥ हेनाथतवपद
रजकावे ॥ औरपुरुषकुखकरीनहीपावे ॥ अज्ञांनरूपजोनिहेताकी ॥ क्रोधवज्ञांकालिपाइरजता
कि ॥६२॥ सोरठा ॥ वकुवेरजन्मसीजिव ॥ तवपदरजइछेजवही ॥ सोनवमुहीमादिम ॥ ज्ञानतपग
इहोतजोमि ॥६३॥ चोपाई ॥ सोरजकालिपायेजवही ॥ अतिवुडभागीहेसोतवही ॥ षटऐश्वर्य
संपनस्वामी ॥ पुरुषरूपजनअंतरजामी ॥६४॥ सबजनमेंहेनिवासतेहा ॥ जगजसतिपैलेतू
मथेहा ॥ परमात्मासबसेंपरस्वामी ॥ ज्ञांनविज्ञानकीगेहनमामी ॥६५॥ ब्रह्मतूमअनंतशक्ति
तिहारी ॥ निरगुणदिव्यमुरतिअविकारी ॥ कालशक्तितवेकालरूपा ॥ उसतिनाशपालनकरभू
पा ॥६६॥ विश्वरूपविश्वकीअंतरजामी ॥ कर्त्ताऊआधारतूमस्वामी ॥ पंचभूतपंचमात्राजेहा ॥ दश ॥६२॥

इंद्रिप्राणमनवुधितेहा ॥६७॥ चितअहंकाररूतत्वकहाई ॥ सबकेआत्मातूमविननांई ॥ तिनगु
णरूपअभिमानसेंजेऊ ॥ गुप्तरखेनिजज्ञानतूमेऊं ॥६८॥ अनंतसूक्ष्मरूनिरविकारा ॥ सर्वज्ञतू
महीनमनहमारा ॥ आगमनिगममिलिकरहीजोउ ॥ स्वरूपनिश्चेकोनिरणेसोउ ॥६९॥ दोहा ॥ चा
रूदेवआदिनामही ॥ तिनकेअर्थहीजेऊं ॥ तासेंनिरूपण होतहे ॥ तवस्वरूपकोतेऊ ॥७०॥ चो
पाई ॥ सूक्ष्मआदीप्रमाणजेता ॥ प्रवरतावततूमसबतेता ॥ सबशास्त्रकेकरताकहाई ॥ प्रवृत
निवृतधर्मतूमवरताइ ॥७१॥ तवप्रतिपादनवेदहीकरही ॥ प्रद्युमनअनीरुधवसुरूपधरही ॥ भ
क्तपतीवसुदेवसुतसोई ॥ सत्वादीगुणप्रकाशहीजोइ ॥७२॥ गुणअरुगुणकुंकेअभिमानी ॥
ब्रह्माविष्णुशिवरूपजानी ॥ तासेंप्रभूतूमरखेछपाइ ॥ जगकर्त्तापणंनिजकाई ॥७३॥ मनइंद्रिकुं
गोचरनोइ ॥ तिनकेदृष्टातूमकहाइ ॥ मनइंद्रिकिवृतीसेंजेऊं ॥ तवरूपजामनजोगपहीतेऊं ॥७४॥
अक्षरधाममेंक्रिडाकर्त्ता ॥ इंद्रिअंतःकरणप्रवर्त्ता ॥ सबकार्यसिधतूमसेंहोई ॥ मुनिवृतकुंकोस्व
भावसोई ॥७५॥ ब्रह्मादिदेवजीवसबजोउ ॥ तिनकेनियंतागतिजानोउ ॥ विराटपरतूमसोतवरूपा

विगारकर्त्ताहहूशाअनुंपा ॥ ७६ ॥ अकर्त्ताकालनाक्रीहिधारी ॥ गुणसेजगकरहरहीपारी ॥ शांतघोर
मुदस्वभावजेऊं ॥ कर्मरूपरहेतितुंमेंसोउ ॥ ७७ ॥ सबजिवकुंतूमजगातस्वामी ॥ निजहष्टिसेंअंतर
जामी ॥ सबविसूतोरेवत्राएऊं ॥ क्रोधिपृहृतीतुलनागजेऊं ॥ याकारनतवअपराधुकीना ॥ इन
कोअपराधनहींप्रविना ॥ ७८ ॥ सोरठा ॥ सवजगकर्त्तातोर ॥ त्रिलोकिमेंजीवजीतने ॥ शांतमृद
अरुंघोर ॥ स्वभावजूततोभिनवहे ॥ ७९ ॥ चोपाई ॥ शांतस्वभावीप्रियअबतोई ॥ संतुरक्षकहे
प्रपालिसोइ ॥ निजप्रजाकिनअपराधजेऊं ॥ एकवेरस्वामीसहतनेऊं ॥ ८० ॥ सर्पमृदतोयजान
तनांही ॥ अपराधसहनकरोहीनाही ॥ हमकुंअनुग्रहकरऊंस्वामी ॥ सर्पमरेगेअंतरजामी ॥
८१ ॥ अछेमनुषहेतिनकुंदारा ॥ शोककरनजोग्पहेयुंधारा ॥ पतिरूपेहेप्राणहमारा ॥ हमकुंदे
नजोग्पहोप्यारा ॥ ८२ ॥ तवकिंकरियुंहमहेताई ॥ आगपाकरीहमपरहितलाई ॥ तवआगपाप्रव
ऋतजेऊं ॥ पालिसवभयछुटेतेऊं ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ शुककहीनागपत्निकिये ॥ स्कतिस्कंनिहछम
जेऊं ॥ निजपगकेप्रहारकुंसें ॥ सागकरीदेततेऊं ॥ ८४ ॥ चोपाई ॥ तोरगयेशिरमुरछापाइ ॥ पृ

निपायोप्राणइंद्रिताई ॥ अनिदिनहोईनिसासाछोरी ॥ बोलतह्रदमदिगकरजोरी ॥ ८५ ॥ हेस्वामी
हमजपनेजवसें ॥ तामसिअतिखलभयेहितवसें ॥ अतिक्रोधहिहमारजेऊं ॥ स्वभावनीजड
स्तजहेतेऊं ॥ ८६ ॥ असतआग्रहजासेंहोई ॥ हेतातकरोसहनसोइ ॥ गुणसेंबऊविधजऊरचाई
चऊंस्वभावचलविर्यजाई ॥ ८७ ॥ विजजोनिअंतः करणनामें ॥ बऊरूपप्रभुतुमसरजेतामें ॥ सो
जगमेंअहिक्रोधहमेऊं ॥ तवमायासेंमोहीरहेऊं ॥ ८८ ॥ मायासागमेंकारणजोउं ॥ जगाईश्वरस
वेज्ञतूमसोउं ॥ सर्पअतिखलहमहेस्वामी ॥ देउअरुअनुग्रहबऊनामी ॥ दोमेस्काएककरऊमा
इ ॥ तुमकुंनिकललगेजासोई ॥ ८९ ॥ शुककहेप्रभुंभरहरनेकाजा ॥ ह्रदमनुष्यसुंभयेउराजा ॥ का
लियबचस्कंनिबोलेएऊं ॥ अहिअसह्रदमेरेनोनतेऊं ॥ स्कतदाराज्ञातिजूतजोउ ॥ सागरमेंजाऊं
तूमसोउं ॥ ९० ॥ जमूनांमेंस्कनिकसोजबही ॥ नदिसेवेगोमनूष्यनवही ॥ तूमकुंकिनहमशिक्षा
जेहा ॥ तिनकुंमनूषसेंमरहीनेहा ॥ ९१ ॥ सायंप्रातकालेहिजोउं ॥ किरतनकरेगोतिनकोसोउ ॥
तिनकूंतूमभयकरोनकोइ ॥ रवौममआगपाहेकऊंतोई ॥ ९२ ॥ सोरठा ॥ हमरमेहृदमांई ॥ नामे

भा॰द॰पू॰ स्नानकरिनरतो॥ देवपितृतरपनाई॥ जलमेंकरिकेपुनिनेकुं॥ ९३॥ चोपाई॥ एकनृपवासकरिसन्निमो अ॰१७
॥६४॥ ई॥ सबअघमेंछुटेगेमोई॥ गरुडभयसेंरमणककेजेकु॥ द्विपतजीरहेअसरुदमितेकु॥ ९४॥ सोगुरु
डुनहिंखावेतोइ॥ मोरचरनसेंअंकितजोई॥ शुककहेहरियुंकिनेजबही॥ प्रेमकरीपुजनकालितब
हि॥ ९५॥ नागपत्निहितउरअतिलाई॥ पुजनतपटफुलमालपेराई॥ मणियुंदिव्यआभूषणधरही॥
कमलमालदिव्यचंदनकरही॥ ९६॥ नागपत्निनेपुजेयुंजबही॥ प्रभुआग्यादिनकालिकुंतबही॥
पकुंमाप्रभुकुंपुनिदिना॥ नमस्कारकरिप्रसनकीना॥ ९७॥ कलतदाराककुदक्कत्नएकुं॥ जमूनांसें
गयेसिंधुमेंकुं॥ हृदयअनुग्रहसेंसाक्षाता॥ जमुनांजलअमृततुल्यजाता॥ ९८॥ दोहा॥ इतिश्री
मतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेकुं॥ कालिनागनिकाशीतो॥ प्रभुमानंदकहेकुं॥ ९९॥ इतिश्रीसदा
नंदस्वामिशिष्यप्रभुमानंदहृतभाषायांषोडशोऽध्यायः॥ १६॥ दोहा॥ सर्पपवयेरमणककमे॥ दवसें
रक्षाकिन॥ अतिडरवियेककुदकुंकी॥ सतरेअध्यायचिन॥ १॥ चोपाई॥ परिक्षितकहेकालिजे
हा॥ नागलोकरमणकछिपेहा॥ क्युंतिनकुंतजीआयेकारी॥ क्याअपराधकिनगरुडकिभारी॥ २ ॥६४॥

शुककहेगरुडकुंकोनेकुं॥ भक्षणरूपसर्पजनतेकुं॥ निजरक्षाकिलियेबलिदाना॥ सर्पकुंकोनिर
धारिकजाना॥ मासेंवारोआवेजबही॥ वृक्षमुलधरिजातहीतबही॥ ३॥ युंपेलेनिरमेथेजेहा॥
गरुडभक्षणदेनोंनेहा॥ जबजबगरुडआयेजानी॥ देवलअहिनिजरक्षामानी॥ ४॥ कद्रूसुतकाली
थेजेहा॥ विषपराक्रमसेमदकतनेहा॥ भागगरुडकोदेवतनोइ॥ औरदियेसोभिगयेपाइ॥ ५॥ नि
जअवगुणनाखंनिरवगेत्रा॥ क्रोधवेगकरिआयेदेत्रा॥ सरपहननइछाउरलाई॥ समर्थआही
दिगआयेधाई॥ ६॥ विषरुदंतआयुधहेजाके॥ करालजिभखुलेहगताके॥ गरुडसंगयुधकरने
ताई॥ धायेबडूफणउंचगवाई॥ ७॥ निजदंतसेंकाटेउनबही॥ क्रोधकलहोइकश्यपसुतलबही॥
हरिवाहनगतिपराक्रमभारी॥ कालिकुंदिनेडरउछारी॥ हेमवर्णिवामपांखनिजाई॥ कद्रुसुतकुंद
नेत्रताई॥ ८॥ सोरठा॥ पंखलगिजेहिवार॥ अतिविकलयमुनांहृदमि॥ प्रवेशकिनततकार॥ ग
रुडनहीजावेजामें॥ ९॥ चोपाई॥ पेलेगरुडसोहृदमांई॥ भक्षकरनमछलिननुगाई॥ हृदकेतटप
रसोभरिषिकुं॥ गरुडकुंकहेमछनलेकुं॥ सोभरिवचप्रभुखसेंनहीमानी॥ खागायोमछबलउरमिआ

भा॰द॰पू॰ नि ॥१०॥ जिनपतिकुंमारेजतबही ॥ औरमछदुखिदिनदेखितबही ॥ हृदमेमछकिरक्षाकाजा ॥ कृपा अ॰१७
॥६५॥ करिबोलेउकृषीराजा ॥११॥ हृदमेंगरुडजोमछखावे ॥ तिवरहीततनकालसोजावे ॥ सौभरिकुंकेश्रा
पजोएहा ॥ एकहीकालिजानततेहा ॥१२॥ औरसर्पकौजानतनांही ॥ इशिगरुडसेंरहेहृदमांही ॥ हृ
दमनेनिकासेउनेकुं ॥ पुनिनिकसेहृदसेंहरिराउकुं ॥ दिव्यमालाचंदनपरधारी ॥ मणिगणकनकभूषण
कहारी ॥ असप्रभुकुंदेखिगोपसबही ॥ उठेबालमिलिइंद्रियसुंतबही ॥१४॥ आनंदसेंपुरणमनएकुं
मिलेप्रभुकुंप्रितिकरतनेकुं ॥ नंदतत्रोदारोहिणीजेहा ॥ औरसबगोपिगोपहीतेहा ॥१५॥ हृदयमकुंमी
लिचेतनसबहोई ॥ पुरणमनोरथभयेउसोई ॥ बलहृदयमकुंमिलिहसेकुं ॥ हरिकोमहीमाजानतनेकुं ॥
१६ ॥ दोहा ॥ वृक्षवेलगोवछही ॥ परमआनंदपाई ॥ कुलगुरुदागकृतसब ॥ बोलतनंदरिगआई ॥
१७ ॥ चोपाई ॥ नंदतबसकलकालिसेंतेकुं ॥ छुटेउदानवीप्रकुंदेकुं ॥ सकंनिकेनंदजीप्रसनहोई ॥ गोकंच
नदेतद्विजहीसोई ॥१८॥ बडभागीजत्रोदाजीजेहा ॥ मृतप्रजापुनिपायेतेहा ॥ नितसकतकुंलिनेगोदउ
ठाई ॥ मिलिछतियामेंदगजलजाई ॥१९॥ सबव्रतजनगायुंथेजेती ॥ भूखत्रससेंपिडायेतेती ॥ जमुनां ॥६५॥

तटरहिरतियांजेकुं ॥ उनाव्याकेवनमेंजेकुं ॥२०॥ दावानलअधरतियामोई ॥ कलेव्रजजनबचकुंओरआ
ई ॥ जारनआरंभकिनेतबही ॥ जगिसंभ्रमकरतउठजनतबही ॥२१॥ श्रीहृदमकेशरणेउजारी ॥ बोलेन
रतनधरप्रभुपाही ॥ हेहृदमहेबलकरतजोरा ॥ हमकुंगिलतहिदवअतिघोरा ॥२२॥ तबसकरुदहमहे
सबजेहा ॥ नहिंउगरेकालअग्निसेहा ॥ निरभयतवपदपायेस्वामी ॥ रक्षाकरोअबअंतरजामी ॥२३॥
तोरचरनसागीहमजेकुं ॥ अवलगजानेसमर्थनहीनेकुं ॥ सुनिजनकिविकलताजोई ॥ पानकियेदावा
नलसोई ॥२४॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेकुं ॥ कालियकुंदंडदिनजो ॥ भूमानंद
कहेकुं ॥२५॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ दोहा ॥
प्रलंबासुरकुंहने ॥ बलकुंसेंहरिजोकुं ॥ अगारकेअध्यायमें ॥ ग्रिष्मऋतुमेसोकुं ॥१॥ चोपाई ॥ शुक
कहेसबमुदकरतहोई ॥ ज्ञातिगावतनितजन्नासोई ॥ सकलगोपकुंसेंविहाई ॥ करतप्रवेशापुनिव्रजमांई ॥
२॥ गोपमित्रामायाकुंसेंजेकुं ॥ व्रजमेंक्रिडाकरतहीनेकुं ॥ इतनेमेंग्रिष्मरितुआई ॥ देहधारिकुंप्रिय
नताई ॥३॥ वृंदावनकेगुणसेंजेकुं ॥ ग्रिष्मवसंतसमहोतनेकुं ॥ जोवृंदावनकुंकेमांई ॥ साक्षात्बल

कृतलक्ष्मरहाई ॥४॥ ग्रिष्ममेंगिरिझरेजलधारा ॥ तिनकेशब्दहोतउदारा ॥ तासेंतमरा केझरनेकुं ॥ छबि
रहेहेवनमेंतेकुं ॥५॥ झरनाकेकणसेंरहेछाई ॥ वृक्षसमुहवृंदावनमांई ॥ कल्हारकंजतउसलकिजेकुं ॥ रे
णुकृतचलेवायुतेकुं ॥६॥ नदिसरकिनहेरिसेंजोउ ॥ वनरेवनहारजिवकोसोउ ॥ ग्रिष्मकेरवितापदही
जेहा ॥ हरिलेतहींवायुसबनेहा ॥७॥ अतिनिनितोत्रणरहेभूछाई ॥ रवितापहोतनहिवनमांई ॥ उंडा
जलकृतनदियुंजेती ॥ तटेरितटमेपर्ज्ञहीतेनी ॥ तिनसेंभिन्नरहेचकुंजोग ॥ कादवसमभुमिगोरंगो
रा ॥८॥ सोरठा ॥ सोभुमिकोरसजेकुं ॥ रविकिकिरणोनोहिहरे ॥ वनमिफुलेफुलतेकुं ॥ शाद्वकरही
मृगपंखिपुनि ॥९॥ चोपाई ॥ गावेजामेमधुकरमोरा ॥ सारसकोयलकरेसोरा ॥ यहवनमेबलजु
तहंरिताइ ॥ खेलकरेरंगिबंसिबजवाइ ॥१०॥ गोपगवनकुंसेंविराई ॥ वनमेंकिनप्रवेशदोभाई ॥ नये
कुंपलफुलगुच्छमाला ॥ गेरुमुरपिच्छभुषणविशाला ॥११॥ बलहरिआदिगोपसबनेकुं ॥ गातनच
तयुधकरेमिलितेकुं ॥ कृष्णनचेतबकिलनेगावे ॥ कौबंसिकरसिंगिबजावे ॥१२॥ कौकहेनिकनचुत
होस्वामी ॥ करतबखानहीगोपसुदामी ॥ गोपजातिअरुरुपधरिदेवा ॥ स्तुतिकरतबलकृष्णकिसेवा ॥६६॥

चिगयेगोपपशुमांनि ॥ योगोष्ठरदारुणदवजेकुं ॥ मुखसेंपानकियेप्रभुतेकुं ॥१४॥ अग्निकुंसेंगोपछो
राई ॥ तेहिक्षणभांडिरवटआई ॥ अंखियुंखुलेगोपनेतबही ॥ दवसेंछोरायेजुतबही ॥१५॥ देखेआ
पगवनकुंताकुं ॥ विस्मयपाईरहेसबतेकुं ॥ योगमायाप्रभावजूतजोउ ॥ कृष्णकोयोगवीयेंसोउ ॥१६
अग्निकुंसेंकुशलपणुंजेकुं ॥ कृष्णकुंसेंमानतसबनेकुं ॥ पुनिकृष्णदेवहेयुंजांनी ॥ तबबलदेवरु
सारंगपानि ॥१७॥ सायंकालेगोकुंटेरे ॥ स्तुतिकरतहेगोपनिजकेरी ॥ गोधनआगेकरिहरिकुं ॥
बंसिबजतचलतआइतेकुं ॥१८॥ दरशनकिनकृष्णकोजबही ॥ परमानंदपाइगोपितबही ॥ हरिकेद
र्शनबिनक्षणताजाई ॥ ताकुंकृगतलसजातहिताइ ॥१९॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंध
मिजेकुं ॥ दावाग्निपानकिनेजो ॥ भूमानंदकहेकुं ॥२०॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृ
तभाषायांएकोनविंशतितमोऽध्यायः ॥१९॥ दोहा ॥ प्रावटऋतुअरुशरदकी ॥ सोभावरननकि
न ॥ तिनकुंनृचितहरिक्रीडन ॥ विशाकेअध्याचिन ॥१॥ चोपाई ॥ शुककहेदावानलसेंतेकुं ॥ गोपछोरा
यचरिततेकुं ॥ गोपकहतगोपिदिगजाई ॥ पुनिवधप्रलंबकोकिनताइ ॥२॥ वृधगोपगोपिसंनिसोगा

भा॰द॰पू॰ था॥ अद्भुतसकं निविस्मितहिसाथा॥ देवनमें तो श्रेष्ठकहाई॥ बलहरि आयेअसमन जमांई॥ ३॥ इतने अ॰२०
॥६९॥ कमें दृष्यारितु आई॥ सबजितउसनिहेजामांई॥ रविज्ञाशिकुं रालिरहेजामे॥ अतिक्षोभपायेनभतामे॥
४॥ बिजगर्जजूलबदरेजेकुं॥ ग्रामघटानभछायेनेकुं॥ तारादर्शनतहीजामांई॥ सोहतविशरत्रसकि
माई॥ ५॥ अष्टमासरविकीरणसें जोजं॥ पानकिनभुकीधनजलसोउ॥ सोरविकिरणसें छोरनताई॥
समयसमयचोमासामांई॥ ६॥ बिजसहीतमहामेघहीजेहा॥ अतिवायुनेप्रेरेतनेहा॥ जगतृधिलियुं
जलदेवतनेकुं॥ दयालुभुषतर्पेकुंजेकुं॥ ७॥ देषइनकीतमिकेकाजा॥ अन्नजलआदिदेतहीसाजा॥
अष्टमासतपेविश्वजानी॥ मेघदेतजलजिवनप्रानी॥ ८॥ सोरठा॥ उनाव्हासेंहतुजाजेकुं॥ धरनिघन
नेसिचेजब॥ अतिसुष्टभयेतेकुं॥ सकामतपफलसकृतनुंजु॥ ९॥ चोपाई॥ निशिनममेस्वद्योनजे
सें॥ सोहतहेतारानहीतेसें॥ पाखंडिसुंकलिमेंसकहाई॥ सुंवेदमगचलेसाधुसाई॥ १०॥ मेघगर्जसकें
निमंडुकबोले॥ पैलेसकतेद्विजअसतोले॥ गुरुकर्मकरिबोलतजबही॥ सनिवचनपुनिभणेसुतब
ही॥ ११॥ क्षुद्रनदिमगछोरिजैसें॥ तुरतसकीरहेपिछेतेसें॥ इंद्रिआधिननरकेजेकुं॥ तनुंधनसंपत ॥६९॥

खेलकरनहारेकिजेसें॥ औरनरस्कतिकरतहितैसें॥ १३॥ बालकेज्ञाधरबलहरिजेकुं॥ पककरिपर्स
परभ्रमातनेकुं॥ एकएककुं उलंघहीकोउ॥ पुनिएकपकरीफेंकतसोउ॥ १४॥ बजातखेभामलकिमा
ई॥ बाकुजूथखेलेदोउभाई॥ औरगोपनाचतहेजबही॥ बलहरिगातबजावततबही॥ १५॥ दोहा॥ ब
खानकरततबगोपकी॥ निकनचतसुंबोल॥ कबुविलिकुंभिफलकुंसें॥ खेलकरतसबतोल॥ १६॥
चोपाई॥ कबुआंवलफलमुष्टिखाई॥ दृगबांधिछोवनदेतनांई॥ मृगपंखिकिचेष्टाजेहा॥ करिखेल
तवनकुंमेंतेहा॥ १७॥ जोकपसिधकीडाहेजेती॥ खेलतहरिबलकरिकेतेति॥ नदिगिरिगुफाकुंजके
मांई॥ बकुबनसरमेंरमतेजाई॥ १८॥ गोपजूलहरिबलचारतगाई॥ बनमेंप्रलंबगोपरूपआई॥ हरीबल
हरनइछातरधारी॥ तिनकुंओलखिकुंजविहारी॥ १९॥ प्रलंबासुरकोवधजोउ॥ विचारिमितभयप्रभु
सोउ॥ बकुविधक्रिडाजाननहारा॥ सकलगोपबोलाईउदारा॥ २०॥ पुनिबोलतगोपनसेंएकुं॥ जिनकि
जेसिवयबलतेकुं॥ होदोकिजोरीहोइजबही॥ अपनेखेलकरेगेतबही॥ २१॥ हमकेवचनसकंनिसबग
कुं॥ वडमेरुकिनबलहरितेकुं॥ कितनेहमकेपक्षिहोई॥ कितनेभयेतबलकेसोई॥ २२॥ सोरठा॥ ग

कहुंगावनहार॥ एकबेरबनजोगपहोहिं॥ जितेसोअसवार॥ हारेतिनकिपरबैठे॥ २३॥ चोपाई॥ कृष्णआ
दिगोपसबजेता॥ बहेरूषहनकरणनहीनेता॥ गौवनकुंकुंचारततेकुं॥ भांडिरवटदिगआयेएकुं॥ २४
बलकेपक्षीजोतेउजबहीं॥ श्रीदामवृषभआदिकतबहीं॥ तिनकुंकृष्णादिगोपजेता॥ चढततबवा
ईकेसबतेता॥ २५॥ हारेजश्रीकृष्णजबहीं॥ भगवतश्रीदामकुंतबहीं॥ भद्रसेनवृषभकुंवहहीं॥ प्र
लंबासुरबलकुंलहहीं॥ २६॥ अतिबलियाकृष्णकुंजानी॥ बलकुंलेचलेदैसकुंमानी॥ मरजादाउलं
घकेएहा॥ हरिक्रिडागसेंदुरगयेतेहा॥ २७॥ बडेगिरिजेसोरूपधारी॥ धिरेधिरेचुलेदेहभारी॥ कंचन
केभूषणजूताकुं॥ बलजूलअसुरसोहततेकुं॥ २८॥ बिजकांतिजलतचंदकुंजेसें॥ वहनकरिघनसो
हेजेसें॥ अतीवेगकरिचलेनभमांई॥ दृष्टिअग्नितुल्यहीक्रहांई॥ २९॥ भृकुटितटमेंडाढ्युंजेकुं॥ अ
तिभयंकरलगरहीतेकुं॥ प्रकाशजनशिरकेवाहीजाके॥ कुंडलकटामुकुटशोभताके॥ ३०॥ दोहा॥
अद्भुतरूपअसदेखके॥ गोपसमूहपुनिडर॥ निरभयथेंबलदेवजो॥ थोरडरपायेउर॥ ३१॥ चोपाई
पुनिस्मृतिबलदेवकुंआई॥ गोपसेडरलेचलेतताई॥ प्रलंबासुरकेशिरमांई॥ बजतुल्यनिजमूष्टी ॥६१॥

चलाई॥ क्रोधकरिअरिकुंहनेजेसें॥ इंद्रवज्रसेंगिरिकुंजेसें॥ ३२॥ बलमुष्टिसेंफुटेशिरजाके॥ मूखसें
रुधिरवहेताके॥ मुरछाजूतबडशब्दउचारी॥ जिवरहीतगिरेभूपरभारी॥ ३३॥ वज्रकुंसेंगिरिशिखरमांई
बलवंतबलनेहनेजताई॥ तिनकुंदेखिगोपसबतेकुं॥ बलकुंवरखानिविस्मिततेकुं॥ ३४॥ बलकुंआशि
षदेतहीतेहा॥ प्रेमसेंविह्वलचितसबेहा॥ मरकेपीछेआयेसुमानि॥ बलकुंकुशलपुछतगुमानी॥ ३५
पापिप्रलंबबलनेमारे॥ परमसुखपाइदेवअपारे॥ सुमनझरीबलपरवरषाइ॥ पुनिपुनिकरतबखा
नहीताई॥ ३६॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेकुं॥ प्रलंबासुरकुंहने॥ भूमानंदकहे
कुं॥ ३७॥ इतिश्रीमहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांअष्टादशोध्यायः॥ १८॥ दोहा॥ गो
पगोकिरक्षाकिये॥ मुंजअरण्यकेमांई॥ पानकिनदावानलको॥ जगनिसअधाताइ॥ १॥ चोपाई॥
शुककहेपुनिगोपसबजेकुं॥ क्रिडामेंआशक्तभयेकुं॥ दुरचरनहारगोसबताकी॥ इच्छीनतृणकेलो
भसेंयाकी॥ २॥ घाटेवनमेंगयेजबहीं॥ अतिशामहीपिदीतविधतबहीं॥ एकवनसेंदुजेवनमांई॥ उ
नावालापसेंपिडाइ॥ ३॥ करतपोकारगवनसबगाकुं॥ घाटेमुंजवनमेंगइतेकुं॥ निजगोकुंनहीजानि

तेहा ॥ तापनंतरहृदमनआदिकजेहा ॥ ४ ॥ ढुंढतगोपसवेवनमांई ॥ गोवनकूंकीगतिनहीपाई ॥ नष्टजी
विकावृतिसवएहा ॥ निश्चैतननहोगयेजुतेहा ॥ ५ ॥ गोकेखुररूदंतसेंजोते ॥ कटेघासपगदेखतसोउ
अंकितमगमेंचलेसवेहा ॥ मुंजवनमेंगोभुलिमगतेहा ॥ ६ ॥ सोरकरतगोकुंसोपाइ ॥ गोपफिरेत्रस
थाकपीडाई ॥ हृदमघनसुंग्रान्नेउचारी ॥ नामसहीतगोकुंपोकारी ॥ ७ ॥ सुनिनिजनामहर्षजुततेकुं
प्रभुसनमुखबोलेगोगणकुं ॥ तवेवनवासिगोपक्षयकारी ॥ वायुप्रेरेदवभयोभारी ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ स्थी
रचरप्राणिनाशा ॥ करतउवाडाउडाइ ॥ दायकभयरुत्रास ॥ चहुंओरआइघेरतही ॥ ९ ॥ चोपाई ॥ देख
गोपगोभयजुतहोइ ॥ बलहरिकेशरणेगयेसोई ॥ मुमुक्षुकालसेंडरहीजैसें ॥ हरिशरणजाइबोलत
तैसें ॥ १० ॥ हेहृदमदावानलणकुं ॥ हमकुंतारनतेहेप्रभूतेकुं ॥ तोरशरणकुंपायेजस्वामी ॥ रक्षाकरकुं
अंतरजामी ॥ ११ ॥ प्रभुतवबंधुहमसवजेकुं ॥ निश्चेदुखपानजोग्यनतेकुं ॥ तूमहमारेएकहोस्वामी ॥
तवआश्रेहेसवसुखधामी ॥ १२ ॥ श्रुकुकहीभक्तसंकटहरणकुं ॥ गोपकेदिनवचनसुनितेकुं ॥ प्रभु
कहेतूममतिडरोभाई ॥ अंखियांमिचोकहुंतूमताइ ॥ १३ ॥ ततकालआग्पाहरिकिमानी ॥ हगमि

कुंमगचलितेकुं ॥ १२ ॥ निलतृणमेंभयेनिलिभुजेहा ॥ इंद्रगोसेंलालपुनितेहा ॥ जुलिकलिंधमेसोहे
सारी ॥ जसुंनृपकोसेनसोहेभारी ॥ १३ ॥ खेडुनेबोथेखेतजोउं ॥ धान्यरूपसंपतमेंसोउ ॥ खेडुकुंआनं
ददेतभारी ॥ धनवंतकोदिनअंतरजारि ॥ १४ ॥ सोघुंमोघुंजानतनांई ॥ अन्नसंग्रीवेगेथेताइ ॥ जलथ
लवासिजिवथेजेता ॥ नवजलसेंनिजरूपभइतेता ॥ जसुंहरिप्रगटकिसेवापाइ ॥ भक्तसुंदररूपहोजा
ई ॥ १५ ॥ वायुसेंबडअपजलहेरी ॥ सिंधुक्षोभिमिलितनदीयुंदेरी ॥ कामवासनाजुतचितजेकुं ॥ अप्र
कृतोगिकुकैतेकुं ॥ विशायसेघुजोराइजैसें ॥ क्षोभकुंकुंपावतसुंतैसें ॥ १६ ॥ दोहा ॥ वृष्टिकिधाराने
हने ॥ गिरिसुंपिडानपात ॥ हरिमेंचितजोसाधुसो ॥ लोककुंकेउपघात ॥ १७ ॥ चोपाई ॥ कृष्णपरभव
करतहीजैसें ॥ साधुपिडापालनतैसें ॥ निलेतृणसेंरहेउछाई ॥ बकुजननामेचलतेनांई ॥ संदेहजुत
मगरहेहोई ॥ अभ्यासविनश्रुतिजसुंसोई ॥ १८ ॥ चलसुहृदजसविनकहाई ॥ जनवंधुघनमेदिकत
नाई ॥ पुंश्चलिगुणवंतनरमिजैसें ॥ स्थिरपणंनहिपावेउतैसें ॥ १९ ॥ इंद्रधनूषपणगुणवीनजोउ ॥ गर्ज
जतनभमेंसोहतसोउं ॥ गुणजुतविराटकुमेंजैसे ॥ निरगुणवासुदेवसुंतैसें ॥ २० ॥ निजतेजनजुतवदरा

नेआई ॥ छायेउ चंदसो हतनाई ॥ स्वचैतन्यप्रकाशितजैसें ॥ अहंकारकृतजिवस्युं तैसें ॥ २१ ॥ घनआये
उज्वलजलमोरा ॥ आनंदपावततरवहोरा ॥ गेहतापसें वैरागपाई ॥ गृहस्थ्यजों हरिभक्तकहाई ॥ निज
घरुं हरिजनआतहिंजबही ॥ मुदपावेहरिमिलेस्युंतबही ॥ २२ ॥ वृक्षसबमूलसें पिनेवारी ॥ बहुप्रकार
किमुरतिजुंधारी ॥ पैलेतपकरि छूटातनुंजेहा ॥ बहुभोगपाइ पुलहीतेहा ॥ २३ ॥ कादवकोटाकृतलदजे
कुं ॥ सरमें सारसबसहीनेकुं ॥ अशांतिरूपघरमें अतिघोरा ॥ कारनस्वूटतनांहीबहोरा ॥ मलिनमन
चितविषइजैसें ॥ रहतहे घरकुंमें जनतैसें ॥ २४ ॥ वर्षतघनजलओघहीभारी ॥ इस्युंनेशरेउसेतूफारी ॥
कलिमें वादपाखंडीकेकुं ॥ वेदमगतोरिडारेउतेकुं ॥ २५ ॥ दोहा: ॥ वायुप्रेरेमेघजो ॥ अमृततुल्यजल
जजेकुं ॥ वर्षतस्युंद्विजवचमें ॥ नृपदितईछिनतेकुं ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ पाकेखजूरजांबूजामांई ॥ समृधि
जुतवृंदावनताई ॥ गोअरुगोपकुंमेंविराई ॥ रमतालियेंपैवेदोभाई ॥ २७ ॥ गोआउभारमंदगतिकारी ॥
बालानहरुस्तनामनचारी ॥ ख्रितिसें स्रवतस्तनपयजेकुं ॥ वेगसें आनहरुमरिगनेकुं ॥ २८ ॥ अतिआनं
दकृतभिरतिजेहा ॥ वनमें रेवमहारितेहा ॥ मधस्रवतवनपंक्तिजोउं ॥ गिरिसें गिरतजलधारासोउ ॥ ॥७०॥

धारज्राव्हे दिगगुफाउंजेकुं ॥ इतनेसबदेखतहरिजेकुं ॥ २९ ॥ कंदमूलफलकोकरिआहारा ॥ घनव
र्षतदेखिहरिप्यारा ॥ बडेफारकेकोतरमांई ॥ अरुगुहामेंरहेछुपाई ॥ ३० ॥ घरुंसेंदहिभातलायेथेकुं
जलदिगशिलापरधरितेकुं ॥ बलअरुगोपसहीतहरिजोउं ॥ जीमतजिमाउनजोग्यसमसोउं ॥ ३१ ॥
निलाखडपरबछबेलेकुं ॥ चावतअंखियांमिचितेकुं ॥ आउभारसेंथकिगौताई ॥ देखतहरिसबजनने
मुददाई ॥ ३२ ॥ सूधारितिकुंवखानतएकुं ॥ बलहरिदेखतशरदरितुतेकुं ॥ बदरनाशपावतजामांई ॥ नि
रमलजलमंदवायुवाई ॥ ३३ ॥ कमलकिउत्पत्तिहोतहीजामें ॥ होतहीनिरमलजलसबतामें ॥ कुसं
गसेंभ्रष्टजोगिकेकुं ॥ पुनितागसेंविसुधचितनतेकुं ॥ ३४ ॥ नभमेंबदरेरूपमलजेहा ॥ सबुजिवकीसं
किरगतेहा ॥ भुकेकिचुजलकेमलजोउं ॥ शारदरितुहरिलेतसबसोउं ॥ ३५ ॥ चकुंआश्रमिकेडखजे
कुं ॥ आश्रमकुंमेंभयेथेतेकुं ॥ श्रीहरुसमेंभक्तीहिजैसें ॥ सोडखकुंहरिलेतहीतैसें ॥ ३६ ॥ गाजबिजबद
राकुंत्यागी ॥ श्वेतकांतिघनसोहतरागी ॥ कृतविलसेकइषणाजेहा ॥ तजीसोहतअघहीनमुनितेहा
३७ ॥ कबुगिरिजलछोरतकबुनांई ॥ तैसेंज्ञानिपुरुषकहाई ॥ ज्ञानरूपअमृतदेतकबुएकुं ॥ समय

विनजहिदेतपुनितेकुं ॥ ३८ ॥ योरजलवृतिदिनस्फकाई ॥ रहनहारजिवज्ञानतनांई ॥ मुदनरवकुकुटुंब
कतनैसें ॥ प्रतिदिनवयगइजानिजनैसें ॥ ३९ ॥ योरजलवासीजिवहेजेते ॥ शरदअर्कधुपपावततेने
इपगदरिद्रअजिनइद्रियाई ॥ कुटुंबभरणसेंसुखपाई ॥ ४० ॥ भूस्थलधिरेकादवसागा ॥ वेलिका
चपलजनतहिरागा ॥ धिरपूरुषकुं देहगहमांई ॥ सुअहंममतजधिरेताइ ॥ ४१ ॥ शरदमेंसिंधुस्थिरहो
इ ॥ गर्जनतजीरहेचूपसोइ ॥ स्वरूपज्ञानलिंवेदभनेकुं ॥ आत्मनिष्ठापाइमुनिजेकुं ॥ निवृतिपानवेदघोष
नेकुं ॥ ४२ ॥ खेतिकृरनहारखेतमांइ ॥ रोकतजलबांधिबंधताइ ॥ नियमचीनइंद्रिसेंज्ञानजोउ ॥ सुविज्ञान
योगिकोसोउ ॥ सोइंद्रिनिममेंकरीजेसें ॥ रोकतजलसुंज्ञानतेसें ॥ ४३ ॥ सोरठा ॥ शरदअर्कसेंताप
सकलजीवकुंहोवततो ॥ चंदहरिलेतआप ॥ देहअभीमानसेंहोत ॥ ४४ ॥ चोपाई ॥ सोतापज्ञानहर
हिजेसें ॥ व्रजनारिकोतापहीतेसें ॥ कृष्णवियोगभयेजजेकुं ॥ हरिदरशानंदेहरतहितेकुं ॥ ४५ ॥ बदरर
हितनिरमलसबतारा ॥ शरदमेंनभसोहतअपारा ॥ सत्वजुतवेदअरथहीपावा ॥ असविधचितनि
रमलस्फहावा ॥ ४६ ॥ पुरणचंदतारासविराई ॥ सोहतनभमेंशरदहिमांई ॥ भूमिपरश्रीकृष्णहीजेसें ॥

जदुसमुहमेंसोहततेसें ॥ ४७ ॥ तूल्यशितउष्णवायुवाई ॥ फुलगंधकृतपर्शकेताई ॥ तापसागकरत
जनसबही ॥ हरिविनगोपितजेनकबही ॥ ४८ ॥ गायमृगलिपक्षणीयुंजेती ॥ मनुषकुंकिस्त्रियुंपुनि
तेती ॥ निजपतिकुंनहीइछतजबही ॥ पिछेपरतपतिवलकरीतबही ॥ ४९ ॥ गर्भधरतशरदमेंतेहा ॥
हरिलियेक्रियाकोनेउजेहा ॥ बहुविधफलकृतहोवतगुकुं ॥ बुलातक्रियापिछेतेकुं ॥ ५० ॥ दोहा ॥ स्फ
र्यउदयकुंदेखके ॥ कुमुदविनकंजजेकु ॥ अतिहर्षपावतहीसो ॥ होतपफुलितलेकु ॥ ५१ ॥ चोपाई ॥
सुंनिकनृपसेंचोरविनजेहा ॥ औरजननिरभयमुदपाइहा ॥ पाकेअन्नभूमीपरजबही ॥ छोरगांमबड
पुरमेंतबही ॥ ५२ ॥ नयेअन्नजिमावनकाजा ॥ होतउत्सवबृंदशासूमाजा ॥ उछवसेंभूसोहतभारी ॥
पुनिबहुहरिअवतारसेंसारी ॥ ५३ ॥ वणिकसंन्यासिराजाजेता ॥ वेदअलिरहेशाहृगतेता ॥ वर्षासें
रुधाइरहेकु ॥ शरदऋमेंमगपायेतेकुं ॥ सुंसिधभोतिकदेहकुंत्यागी ॥ दिव्यदेहपावेसुंस्फभागी ॥ ५५ ॥
दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेकुं ॥ शरदकेतूकोवर्णनो ॥ भूमानंदकहेकुं ॥ ५६ ॥ इ
तिश्रीमहज्ञानंदस्वामिशिष्यभूमानंदहृतभाषायांविंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥ दोहा ॥ शरद

विधिवनमेंगये॥हरिनेवेणुंबजाई॥सुंनिगोपिगितगावतजो॥एकवीशअध्याई॥१॥चोपाई॥श्रुकक
हिसरदऋतुसेंसवसुखकारी॥फुलेकंजसरसरूगंधहारी॥वायुकरतवृंदावनमांई॥गोगोपनसहहरिविचरेतांई
२॥फुलकरतवनकिपंक्तिपुंजामें॥गुंजतमतमधुकरपक्षिनामें॥शरदमहीतसरनदिगिरिराजे॥वनगये
हरिबलरामसमाजे॥३॥गौचारतप्रभुवेणुबजाई॥कामउदयहेजोगीतमांई॥सुंनिसबगोपिपरो
क्षगाई॥व्रजमेंवरनतनिजसखिताई॥४॥वेणुंगीतवरणनआरंभेहा॥हृदयमचरित्रसंभारीनेहा
हृदयसवंधीकामवेगभारी॥व्याकुलचीतभयेव्रजनारी॥५॥वर्णनकरनसमर्थनहोई॥चितक्षोभे
तहरिस्मरणसोई॥मोरमुकटनटसमवपुधारी॥कर्णिकाफूलकानपरडारी॥६॥कनकतुल्यपितप
टपुनिमाला॥वैजयंतिधरउरविशाला॥निजअधरामृतहेजोउं॥वेणुछिद्रमेंडारतसोउ॥७॥
॥सोरठा॥सबगोपकिरतीगात॥हरिनिजचरणचिन्हकरिसें॥पैठेउसाक्षात॥आतिसुंदरवृंदावन
मि॥८॥चोपाई॥सबजनमनोहरवेणुंजेहा॥व्रजनारीसुंनिवरनततेहा॥आनंदरूपहृदयकुं
एकुं॥तेहिक्षणमेंमिलतहितेकुं॥९॥बोलतगोपिपरस्परवानि॥हेसखिदृगकोफलअसजानी ॥१२॥

निजमितगोपसहितवनमांई॥गोप्रवेशकरातरेभाई॥१०॥नंदसुतकेमुखपंकजजोतें॥दृगसें
देखिउरधारेकोउ॥इनुंनेनेत्रकुंकोफलपावा॥औरनेअसखिदृष्यागमावा॥वंसिबजातमुखप
रधारी॥स्नेहजुतकटाक्षदेखतडारी॥११॥इजिकहेअबकुंपलजोउं॥मोरपीछकमनयुक्तसोउ
बहुविधकमलमालजुतधारी॥नयेवसनवीचित्रवेशकारी॥१२॥गानकरतकबहीसोउविरा॥गो
पसभाविचसोहेधिरा॥मृदुअखाडामध्येजेसें॥उत्तमनटसुसोहेतेसें॥१३॥औरगोपिकहेवे
णुंताहा॥क्यापुन्यकिनेपैलेतेहा॥अपनेभोगनजोगपहीजोउ॥अधरामृतपितएकसोउ॥१४
अपनेपिवनकोरसजेहा॥शेषकछुनहीरखेगीतेहा॥जोनदीजलकुंसेउछुरेकुं॥जननितुल्यकम
लमिषातेकुं॥१५॥खडेरोमरुजनालतेहा॥जोवृक्षवंशमिवेलुंएहा॥मधुधारामिशकरीकेहोरा
आनंदकुंकेआंसकबहोरा॥१६॥दोहा॥जमुंदधनरनिजवंशमें॥भयेहरिभक्तजोई॥खडेरोमआ
नंदके॥आंसकछोरतसोई॥१७॥चोपाई॥औरगोपिकहेअसवनजेकुं॥विस्तारतसुवभूमिकी
तेकुं॥कितिस्वर्गसेअधिकजेहा॥हृदयचरणसेंसोहनतेहा॥१८॥हृदयवंशिकोसुंनिकेसोरा॥

भा॰द॰पू॰ घनगर्जनमानिनचेमोरा ॥ तिनकुंदेखनजंतकोऊ ॥ गिरिशिखरपरवेवेजोऊं ॥ सबक्रियादिनेविस- अ॰ २१
॥ ५३ ॥ राई ॥ वृंदावनअसविधकहाई ॥ १९ ॥ औरगोपिकहेपशुकीजाती ॥ कृतार्थहेमृगालिसुख्याती ॥
वंशिकोस्वरस्कंनिकेतेहा ॥ कालामृगानिजपतिजूतरहा ॥ २० ॥ चित्रवेशहरिपरहांतलाइ ॥ निरीक्ष-
णकूंसेंपुजनताई ॥ औरगोपिकहेआश्चर्येकूं ॥ नारिकुंउछवरूपजेकूं ॥ २१ ॥ असविधरूपस्वभाव
निहारी ॥ वंशिगितस्कंदरस्कंनिनारी ॥ वेमानकूंसेंचलतहीजेकूं ॥ देवगोदमेंवारेतेकूं ॥ २२ ॥ हृदमस-
वंधिकामवशहोई ॥ धिर्यसागकरीसबसोई ॥ छुटेकुबरस्कमनगोरेताई ॥ खूलिगयेपेरनपरजाई
२३ ॥ सोरठा ॥ औरगोपिकहिगाथ ॥ हरिमूखनिकसेवेणगीत ॥ राहीअमृतगोसाथ ॥ पानकरतनी-
जकानसें ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ पुनिहगासेंउरमेंउतारी ॥ करलआलिंगनमनसेंधारी ॥ नयनसेंछोर
तआंस्कंधारा ॥ पुनिछोटवछधावनहारा ॥ २५ ॥ हरिवंशिगितस्कंनिकेसोऊ ॥ पानकरतकांनऊ
वाइदोऊ ॥ इधग्रासरहेउमूखमांई ॥ वादेवछसबथिरतापाई ॥ २६ ॥ इत्निकहेवृंदावनमांई ॥ पक्षि-
रुपेसबमुनीरहाई ॥ वृक्षडालीफलफुलजकतजेहा ॥ तापरबैविकेसबनेहा ॥ वेणूगीतस्कनतहग ॥ ५३ ॥

खोलि ॥ औरवांनिमूखसैंनहीबोलि ॥ २७ ॥ इत्निकहेवंसिस्कंनिभमरीभारी ॥ कामातूरनदियुं-
जकतवारी ॥ वेगवीनलहेरिभूजपसारी ॥ तामेकंजरूपपुजाधारी ॥ हृदमकेपदछोवनकाजा ॥ आई
दुवावनजलसेंराजा ॥ २८ ॥ इत्नीकहेबलगोपजकतआइ ॥ गोचारतहरिवंसीवजाई ॥ हृदमकूंकूंदे-
खीधुपमांई ॥ वदररूपहोइहछिपाइ ॥ घनवरषनस्कमनकिन्हाई ॥ छत्रकरतनीजतनुकोआइ ॥ २९
औरकहेवनभिलडीजेती ॥ करतारथभइहेसबतेती ॥ अपनेकुचकोकुंकुमजोऊ ॥ उरधरतप्रभु
पदलगेसोऊ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ सोप्रभूपदकोकुंकुम ॥ लगेघासमेजोउ ॥ भीलडीस्तनअरुमूखप-
र ॥ लेपनकरतहीसोउ ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ कुंकुमदेखिभिलडीजेहा ॥ कामरूपरोगपिडापेहा ॥
निजमुखस्तनपरधारीतेहा ॥ कामसबंधीदुखतजेराहा ॥ ३२ ॥ इत्निकहेगोवरधनराऊ ॥ हरि
दासमेंश्रेष्ठहेतेऊ ॥ वलहृदमकेचरणकुंछोइ ॥ अतिहर्षजूतरहेउहोइ ॥ ३३ ॥ गोगोपजकतबलहृदम
दोऊं ॥ तिनकुंसन्मानकरतसोऊं ॥ त्रणजलकंदमूलसेंजेकूं ॥ पुनिगुफासेंघरेस्नूतेऊ ॥ ३४ ॥ इत्निक
हेगोपजूतगोचारी ॥ नुळणपगियांस्नुशिरधारी ॥ गोवंधनरजूकंधपरडारी ॥ दोविरशोभाअस

विधकारि॥२५॥मधुरवंसिस्वरकंनिजोउं॥स्थावरजुंमथेनरपसुसोउ॥वृक्षादिकस्थावरहीजेता॥जं
गमजिवजुंहोरहीतेता॥२६॥सुकुकहेवनमेंफिरतजबही॥गोपिपरस्परचरनततबही॥असविध
क्रिडावरलीजेहा॥श्रीकृस्नकुंपायेउतेहा॥२७॥दोहा॥इतिश्रीमतभागवत॥दसमस्कंधमिजेकुं॥
वेणुंगीतवर्णनकिय॥भूमानंदकहेकुं॥२८॥इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायां॥
एकविंशतितमोऽध्यायः॥२१॥दोहा॥गोपकन्याकेपटहरी॥पुनिवरदिनेताई॥बाविशकेअध्यायमें
हरिलिलासोगाई॥१॥चोपाई॥सुककहेहेमंनकोजोउ॥प्रथममासमार्गशिरसोउं॥तामेंनंदादिगो
पकुंमारी॥हविष्यानजिमतव्रतधारी॥२॥कात्यायनिदेविकोजेहा॥पुजनरूपव्रतकरतहीतेहा॥र
ऊरविउगतसमेमांई॥कन्याजमुनांजलमेंनाई॥तटपरेरेतिप्रतिमाजेहा॥रचिकेपुजाकरतहेतेहा
३॥स्रगगंधिचंदनफलफुलधुपा॥नयेकुंपल्लनिवेदअनुंपा॥उत्तममध्यमसामग्रिलाई॥अक्षतर
आदिकदियजगाइ॥४॥कात्यायनिमहामायादेवि॥अधिश्वरीमहायोगिनिसेवी॥नंदकेसुतनह
मकुंपतिदेहुं॥नमिमंत्रगाइपुजततेऊं॥५॥इह्मकुंमेंचितरखिकुमारी॥एकमासकरतव्रतधारी॥

नंदसुतपतिहोउकहीएहा॥भद्रकालिकुंपुजततेहा॥६॥प्रातकालमेंउठविकुमारी॥निजनामलिकेना
मपोकारी॥एकएककेकरपकरीएऊं॥निसजमुनांछिलनजातनेऊं॥कन्यामगमेंचलतहीजबही॥
हरिकुंगानउंचेस्वरतबही॥७॥सोरठा॥एकदिनजमुनांआई॥निजनिजपटतटपरधरी॥गिरधर
केगूनगाई॥जलमेंछिलतमुदअतही॥८॥चोपाई॥पुनिजोगेश्वरकंन्याकेरा॥संकल्पजानिआये
नेरा॥इनकेकर्मसिधिकेकाजा॥गोपजनतअसथलआइराजा॥९॥सबकन्याकेवस्त्रउठाइ॥दोरि
चरेकदंबपरजाइ॥हसतबालसेंहसतहीएऊं॥मस्करीवचबोलतहरितेऊं॥१०॥हेअबलात्मअस
थलआई॥निजइछीतनिजपटलेजाइ॥सतसहमककहेमस्करीनांई॥व्रतकरितमगयेसुकाइ॥११॥आ
गेहमकुरवोलेनकबही॥अबकलुंकुबबोलेगेतबही॥असगाथाजानतमितमेरा॥एकएकसबआइने
रा॥१२॥पैरोपरतमनिजनिजकेरा॥मस्करीवचसुनिगोपिएरा॥प्रेमरसमेंदुबेसबएऊं॥लज्जापाइहह
सतसबनेऊं॥एकएककुंदेखिदारा॥जलमेंसनहिनिकसेवारा॥१३॥दोहा॥मस्करीवचगोविं
दके॥संनिचितगयेतणाइ॥शीतजलमेंकंठुबदे॥वेपसेंकंपिकाई॥१४॥चोपाई॥तामेसुधागो

पियुंजेती ॥ बोलतहमसन्मुखतेती ॥ अम्मायतुममतकरोगुमानी ॥ नंदकेसुतअरुवल्लभजानी ॥ १५
व्रजकुंवंदनजोग्यतुमजेकुं ॥ जाननहेतुमकुंहमतेकुं ॥ सितमेंकंपतकायहमारी ॥ वसननहमारेदेकुंमुरा
रि ॥ १६ ॥ फीरगोपिबोलतयुंवानी ॥ तुमहमसुंदरदासीमोयजानी ॥ जोतुमकहोसुंकरेहमजेकुं ॥ धर्मजानमोरे
पटदेकुं ॥ १७ ॥ जोतुमपटनहीदियोहमारी ॥ कंसकुंकरकुंगीजायपोकारी ॥ गोपिकेवचसुंनिहरिकिना
निकहसतहोतुमहीप्रविना ॥ मोरिदासियुंहोतुमजबही ॥ निजनिजपटयेरेआइतबही ॥ १८ ॥ शुक
कहेकम्मासबनेहा ॥ वंडसेंसककेअंगगहीरहा ॥ करसेंनिजगुह्यअंगछाई ॥ जलसेंनिकसिबाहिरआई
॥ १९ ॥ गोपिनेसकभभावसेंकिना ॥ प्रसंनपुरुषोत्तमप्रवीना ॥ शुधयोनीजुतदेखकेताई ॥ डालिपटधरी
मंदमुस्काई ॥ २० ॥ प्रभुकहेतुमनेव्रतधारी ॥ जलमेंपैरेजुनग्ननारी ॥ देवकुंकोअपराधभयेकुं ॥ याकार
नअघमेरोतेकुं ॥ २१ ॥ निजमस्तकपरकरकुंजोरी ॥ निचेनमीपरधरकुंगोरी ॥ प्रभुनेदोषदेखायेनवही
व्रतभंगकमामाननतनवही ॥ २२ ॥ व्रतपुर्णकरनेकुंएहा ॥ व्रतफलरूपहमकुंतेहा ॥ सकलपापकेहर
ताजानी ॥ नमस्कारकरतहीयुंमानी ॥ २३ ॥ सोरठा ॥ जुंहरिकिहीयुंकीन ॥ शुधभावजखिगोपिको ॥

संतोषपायप्रविन ॥ कृपाकरीपरदिनपिछे ॥ २४ ॥ चोपाई ॥ युंहरिनेठगिलज्जाछोराई ॥ मस्करीकरीमृक
रस्युंनचाई ॥ वस्त्रहरेतोकमाएहा ॥ प्रभुहिदोषहगअखेनतेहा ॥ अतिवल्लभहरिसंगतेजेकुं ॥ असंत
सुखकुंपायेतेकुं ॥ २५ ॥ निजनिजपटयेरिअंगराएहा ॥ हृदयकेवक्रपचितभइतेहा ॥ लज्जाजुतदरशिहेहरी
मांई ॥ गोपिकोचितचलहोननांई ॥ २६ ॥ निजपदपर्राकिइच्छाधारी ॥ व्रतकिनेसबगोपकुमारी ॥ ताकी
संकल्पजानिनाथा ॥ बोलतवचगोपिकेसाथा ॥ २७ ॥ पतिव्रतातवसंकल्पजोतें ॥ तुमनहिकिनर
मजानेसोतें ॥ ममअरचनकिनेतुमजेकुं ॥ मानेहमसिधकरेंगेतेकुं ॥ २८ ॥ कामभावकरिबुधिजननजे
हा ॥ मोमेंप्रवेशकराइतेहा ॥ सोनारीकोकामहेजोतें ॥ ममविनऔरपुरुषमेंसोत ॥ काम्यहेतिन
कुंदेनजारी ॥ नहीहोवतहेबंधनकारी ॥ २९ ॥ जुंरंधितसेंकितकएगोनेता ॥ फेरकबुनहिउगेतेता ॥
सुंमोमेंकामभावहीजेकुं ॥ बंधननकरेमुक्तिदेतेकुं ॥ ३० ॥ पुरणमनोरथभयेतिहारा ॥ अबतुमव्र
जमेंजाकुंदारा ॥ औररातरियुंआयगिजबही ॥ मोरसंगतुमरमोगितबही ॥ देविपुजनरूपव्रतकी
नजेकुं ॥ मनोरथसत्यसोतवतकुं ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ शुककहेहरिआग्याकरी ॥ पाइमनोरथजोतें ॥ धा

नकरतहरिचरणकों ॥ गयेतव्रजमिसोत ॥ ३३ ॥ चोपाई ॥ पुनिबलकृतहरिमितमिविलाई ॥ गोचारतव
नमेंदुरताई ॥ ननालरविकेतिखेतपमांई ॥ छांयकरिदुमछत्रमाई ॥ ३४ ॥ निजतपरिदेखिप्रभुतेकूं ॥
बोलनव्रजवासिसेंतकूं ॥ हेस्तोकृहृदमहेश्रीदामा ॥ हेअर्जुनऋषभनकबलनामा ॥ ३५ ॥ विशालतेजस्वी
ऋषभजेकूं ॥ हेदेवप्रस्थवरुथपतेकूं ॥ सबदेखोतुमरक्षहीभाई ॥ सबदुमअतिबडभागिकहाई ॥ ३६
परकेअर्थेजीवतहिजोतं ॥ वातहिमिशितधुपसहेसोतं ॥ अपनिसबनिवारततेहा ॥ सबतनजिवनद्व
क्षकोदेहा ॥ ३७ ॥ रुपालुकेघरजाचकजैसें ॥ विमुखनहीजावेकोऊतैसें ॥ वृक्षदीगआयेअर्थिजेता
रितानहीजावेनरतेता ॥ ३८ ॥ फलफुलपत्रछायाछाली ॥ मूलरूगंधगुंदलकरिडारी ॥ राखरूकुंप
जकूंसेंतेहा ॥ सबकेमनोरथपुरततेहा ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ जिमिपरततनुंधरजेकूं ॥ तिनकेजन्मफलअस
हे ॥ तनुंधनबुधिमेंतकूं ॥ सबजनकोसुभआचरही ॥ ४० ॥ चोपाई ॥ असविधबखानदुमकेकीना ॥
फलफुलकुंपलगुछनवीना ॥ पानअरुअंकुरसेंजेहा ॥ डालिनमेंवृक्षकिसबतेहा ॥ ४१ ॥ तिनकीवी
चहोइजमुनांआइ ॥ मिठशितलजलधेनुकुंपाई ॥ पुनिस्वाइजलगोपजुतताकूं ॥ पानकरतपुरुषोत्त ॥१६॥

मतेकूं ॥ ४२ ॥ जमुनांदिगवनकूंमेंजाई ॥ निजइच्छाकरिचारनगाई ॥ सोईगोपभुखसेंपिडाई ॥ बोलतब
लहरिकेदिगजाइ ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेकूं ॥ वस्त्रहरणहरिकिनेजो ॥
भूमानंदकहेकूं ॥ ४४ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२
दोहा ॥ अन्नजाचनकेमीसमें ॥ कृषीपत्निकुंकीन ॥ अनुग्रहद्विजकुंतपानहीं ॥ त्रेविशाध्यायेचीन
१ ॥ चोपाई ॥ गोपकहेरामहृदमदोउं ॥ बडेप्राक्रमिदुष्टहनजोउं ॥ क्षुधालगेहमकुंदुखदाई ॥ सांति
करनजोगपहोतुमभाई ॥ २ ॥ शुककहेगोपनेकिनीजबही ॥ श्रीहृदमसुनिबोलततबही ॥ कृषीपत्नी
कुंनिजजनजानी ॥ तापरप्रसंनहोइरुमानि ॥ ३ ॥ गोपतुमदेवयजननिताई ॥ अंगिरसयज्ञनामक
हाई ॥ स्वर्गपानइच्छाउरधारी ॥ वेदज्ञानविप्रजामगरी ॥ ४ ॥ हमदोनुंप्रेरतहेजाई ॥ मागोभातयागके
मांइ ॥ तुमकुंद्विजनदेवेजबही ॥ बलअरुममनामलेनोतबही ॥ ५ ॥ हृदमनेप्रेरेगोपजेकूं ॥ हरिवच
कहीअन्नयाचततेकूं ॥ करजोरिद्विजदंडवतकिना ॥ नमस्कारकरिबोलेप्रविना ॥ ६ ॥ हेभुदेवसुगोव
चरहा ॥ हरिआगपासेंआयेतेहा ॥ मंगलतेरोहोद्विजराजा ॥ बलप्रेरेतबदिगसमाजा ॥ ७ ॥ सोरठा ॥

भा·द·सू· धर्मकिजाननहार॥ तामेंश्रेष्टविप्रतूमही॥ हरिबलनंदकुमार॥ गोचारतनजिकुआये॥८॥ चोपाई॥ भु अ·२२
॥११॥ खभयेहेदोउभाइ॥ जोअन्नहोयसोदेऊंताई॥ द्विजश्रेष्ठातूमकुंहोयजबही॥ भातदेऊंबलहरिलिंतंनब
ही॥९॥ तुमकहांगेदिक्षितकेगेऊं॥ अन्ननजिमायकऊंमेंनेऊं॥ पशुहिंसाकीदिक्षाजोउं॥ सोत्रामणि
मखदिक्षासोउ॥१०॥ होविनओरदिक्षाकिमांई॥ दिक्षितकेअन्नमेंदोषनांई॥ याकारणतबअनहेजेऊं॥
जिमनजोगपुहमारेनेऊं॥११॥ शुककहेप्रभूकियोवचनहा॥ ब्राह्मणसकंनिकेगिननननेहा॥ तूच्छस्वर्गादि
फलकेमांई॥ केवलईश्वरहततहीनाई॥१२॥ बहुकेवानूतकर्मही जाके॥ बहुदापणदृधकोमाननताके॥
देवताकालबहुविधद्रव्याई॥ चरुपुरोडाशादिककहाइ॥१३॥ मंत्रतंत्रऋत्विजदेवनाई॥ यजमानधर्मरूप
ज्ञकहाई॥ सबकेआत्माहृदमहीजोउं॥ परब्रह्मसबनियंतासोउ॥१४॥ असहृदमकुंब्राह्मणाऊं॥ दुष्ट
बुधिअहंमानितेऊं॥ मनुष्यमाननहृदमकुंजेऊं॥ नाहामुखसेंनांहिकहेऊं॥१५॥ दोहा॥ मिशन्नाहोई
पिछेफीरी॥ बलहृदमदिगआई॥ गोपकियेगाथासब॥ जोभइसोइसकंनाइ॥१६॥ चोपाई॥ सकंनिगोपब
चहरीमुसकाई॥ बोलतलोककीरितदेखाई॥ गोपतूमकुपीपत्निदिगजाई॥ बलजूतमोकुंदेऊंजनाइ॥ ॥११॥

१७॥ नितनोअन्नचेयेतूमताई॥ तितनोदेवेगेसोलाई॥ केवलतनुसेंरहिघरुमांई॥ बुधिमेंरहेमोमे
मोहपाई॥१८॥ मेरोनामसकंनिकुषीदारा॥ अन्नदेगितूमकुंततकारा॥ पत्नीब्राह्मणपतीगोपजाई॥ दे
खतबहुभूषणऊतजाइ॥१९॥ नमस्कारकरिबोलतएहा॥ ऋषीपत्नीदिगजाइकेतेहा॥ हेद्विजपत्नी
तोयनमामी॥ सकंनुचचआयेअंतरजामी॥२०॥ नजीकहेहमकुंपठवाए॥ गोचारतगोपजूतहीआ
ये॥ बलऊतभूखभयेहेएऊं॥ अन्नयाचनपठवायेतेऊं॥२१॥ सोरठा॥ गोपजूतपुराणहोइ॥ दूतनि
अन्नहमकुंदेऊं॥ शुककहेवचसोई॥ सकंनिकुषीकिपत्नीसबही॥२२॥ चोपाई॥ हृदमकथातानेम
नजाके॥ नितहरिदर्शनमितउच्छवयाके॥ दिगआयेहरिकुंसकंनिसबही॥ अतिउछाहजूतभयेतबही॥
२३॥ भक्ष्यभोजलेह्यचोष्यकहाई॥ बहुगुणजूतभरिभाजनमांई॥ निजपतिसुतजननीतातभाइ॥ स
बमिलिरोककरतेनहेताई॥२४॥ अतिवाताश्रीहृदमहेजाई॥ चलतनदिजमुंसागरनाई॥ बहुकाल
हरिकिरतिसकंनिजेऊं॥ धरिअंतःकरणहृदममितेऊं॥२५॥ आसपालवकुपजलहाई॥ यमुनांके
तटपरवनमांई॥ तामेंगोपऊतसोतुंभाई॥ देखतहीजकित्रियातांई॥२६॥ रूपांमसवर्णसमपितपटधारी

भा॰द॰पू॰ नये फुलकुं पहुमुरपिछारी॥ गेरूआदिक अंगमें लगाई॥ नटसमनीतमवेश बनाई॥२७॥ निजमितगो अ॰२३
॥ ७८ ॥ परवभायपरडारी॥ ताककराककुं मीकंजधारी॥ कानेकमलधरिरहेजेकुं॥ अलककपोलपरझुकिर
हेकुं॥२८॥ मंदहसहीमुखपंकजताको॥ दारादेखतरूपअसताको॥ बकुवेरसकंनेहरिचरितजेकुं॥
कानहताथकारकतेकुं॥२९॥ दोहा॥ जोकंनिचितश्रीकृष्णमें॥ प्रवेशभयेहेजाइ॥ सोनारिनिज
नेवसें॥ ततारेखरमांई॥३०॥ चोपाई॥ बकुवेरमनसेंमिलिकेनेकुं॥ तापतजततहीजदारातकुं॥ अहं
कृतिसकपुनिमें जेसें॥ प्रज्ञाभिमानीपाइमिटिजेसें॥३१॥ सकलनजीवरूबल्प केनेकुं॥ दरशहेश्रीकृष्ण
हिजेकुं॥ निजहिगआइहीजदाराजेती॥ पुनिसकलवचनहीमानितेती॥३२॥ सबइछाकोकरीकेसा
गा॥ निजदर्शलियुंआईजूतरागा॥ ताकुंदेखप्रभूमुसकाई॥ बोलतदीजपत्नीकेताई॥३३॥ हे बडभा
गितूमभलेआइ॥ वेगेतूमकुंककुंसकसदाई॥ कहाकाजमेंकरूंतीहारा॥ मोयमिलनतूमतजीपरी
वारा॥३४॥ जोतूमआयेपुदितजेकुं॥ निजसकभचहेविवेकिजेकुं॥ सबपरजानमीयमोमांई॥ फलइछा
विनभक्तीकहाइ॥ विघनसेंनाशहोतनजेहा॥ साक्षातभक्तीकरतहीनेहा॥३५॥ प्राणबुद्धिमनसबंधी ॥ ७८ ॥

देहा॥ सकलदाराधनआदिकजेहा॥ मोरसबंधमेंप्रियसबएकुं॥ यह विधमोविनवल्लभनतेकुं॥३६
पतीवृतामममदर्शमेसोई॥ करतारथतूमरहीसबहोई॥ तूमनिजमरवमिजाओगिजवही॥ पुर्णकर
हिमरवपतिवतवही॥ गेहमिबुद्धिचंतहीजगहा॥ इनकुंअनुग्रहकरजइगेहा॥३७॥ सोरठा॥ सकं
निहरिवचकषीदार॥ बोलतवचनहंशिदिगजो॥ प्रभूवचकठिनकरार॥ तूमकुंबोलनजोगनही॥३८
चोपाई॥ रामचंद्ररूपेतूमकिना॥ कयीवकुंसेंवचनपविना॥ मोरवारगआयेजनकोडं॥ तिनकोसा
गकरूंनहीसोउ॥३९॥ सोवचसमकरोतूमस्वामी॥ हमसकरूदतजीतवपदपामी॥ तूमपगसेंदितत
लसीमाला॥ आयेहमशिरधरनविशाला॥४०॥ तोरचरनमूलहमसबपावा॥ पतीसकतआदिक
सकहुदकावा॥ सोहमकुंनहीशरवेजबही॥ औरसगांरखहीक्युंतबही॥ तोरचरनपायेहमजेहा॥ औ
रगतीहोतनकरकुंतेहा॥४१॥ सकंनिवचकृष्णबोलेबानि॥ जागेकुंतूमसबहीसयानी॥ जननीजन
कसकतपतिनिहारा॥ दुर्शनकरेमानतदारा॥४२॥ सबअंतरहमपेरेजेकुं॥ दुर्शनहीकरेलोकसबेकुं
अजशिवआदिदेवहेजोडं॥ नवपदरजसेवेगेसोउ॥४३॥ जगमेंजनभेलेरहेकुं॥ सकवरूसोहन

भा॰द॰पू॰ ॥ ७७ ॥

बदही तेऊं ॥ स्मरो मो कुं निज गेह जाई ॥ पाओगि मोय तृरत हिआई ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ शुक कहे हरि व चकं श्री॰२३
निके ॥ कृषी पल्लिसब जे ऊं ॥ यज्ञ प्रति पुनि ज्ञात ही ॥ पति ईर्षा न करे ऊं ॥ ४५ ॥ चोपाई ॥ स्त्रिसें यज्ञ समा
प्ति ही किना ॥ एक कुं निज पकरी लिना ॥ हरि दिग जान न पावे ऊं ॥ मन सें ध्यान करत कं निते ऊं ॥ ४६ ॥ उ
रमे देख ह्रदम कुं भेटी ॥ तनु तजि दिन कर्म बंध मेटी ॥ पुनि च कुं विध अन्नदाता लाई ॥ ह्रदम जीम त निज
गोप जिमाई ॥ ४७ ॥ लिलासें नर देह हरि धारा ॥ मनुष्य आचरण करत उदारा ॥ रूप वचसे करि चरित्र
जे ऊं ॥ गो गोप गोपि रमाइ रमे ऊं ॥ ४८ ॥ पुनि मख करता द्विज सब जोउ ॥ नरमुं करत बल हरि कि सोउ
या चा भंग ई मूर कि कीना ॥ युं स्मरि बोलत द्विज दिना ॥ ४९ ॥ निज त्रिया कुं की भक्ति तेहा ॥ ह्रदम मी देख
अलोकि कुं तेहा ॥ निज आत्मा भक्ती हिन जोउ ॥ तिन कुं निंदत तपत हि सोउ ॥ ५० ॥ जन्म तिन प्रकार धि
कताई ॥ याज्ञिक ज्ञो कुसा विद्याई ॥ ब्रह्मचर्य व कु ज्ञान पणाई ॥ धिक कुल क्रिया उपण जाइ ॥ ५१ ॥ ह
रिसें विमूर्ख अपने ताइ ॥ हरि माया दिन मोह पमाइ ॥ सब जन के गुरु अपने जेऊं ॥ निज स्वार्थ लियुं मुर
आए ऊ ॥ ५२ ॥ सोरठा ॥ जगगुरु ह्रदम मि भाव ॥ देखो अपनि त्रिया को ॥ गेह रुप ब ईपाव ॥ छेदत मसु ॥ ७७ ॥

पात्रा सबे ॥ ५३ ॥ चोपाई ॥ स्नान संध्यादि यज्ञो पविता ॥ संस्कार त्रिया कुं नही किता ॥ गुरु गेह वेद पर
तनं जहा ॥ तप अरु आत्म विचार न तेहा ॥ ५४ ॥ पवित्र पणं रुभ क्रिया हीना ॥ ह्रदम में भक्ति करत प्रवी
ना ॥ हद भक्ति योगेश्वर मांइ ॥ उत्तम कि जिहि हरि में हेताइ ॥ ५५ ॥ संस्कार क्रिया जुत अपने हि ॥ ह्रदम में भक्ती
हिन सब ते ही ॥ स्वार्थ में मूढ गेह का जमाई ॥ अपने असावधान रहाई ॥ ५६ ॥ सत पुरुष की गती रूप जेऊं
गोप वच सें संभारन तेऊं ॥ गोप वच में न स्मरे जब ही ॥ पुर्ण काम को विगरे न तब ही ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ के
वल्यमोक्षादिक सब ॥ ऐश्वर्य के ईशा ॥ अपने शिक्षक सो प्रभू ॥ क्युं स्मरे उ जगदीश ॥ ५८ ॥ चोपाई ॥ अ
पनि प्रयोजन इन कुं नांई ॥ मांगत सो नररित देखाई ॥ श्री प्रभू विनओर देव त्यागी ॥ पुनि च पलता दी ष
तजी भागी ॥ ५९ ॥ चरण स्पर्श कि आत्रपा धारी ॥ फिर फिर भजत प्रभू कुं प्यारी ॥ अस श्री ह्रदम कियां चा
जेऊं ॥ जन कुं मोह करत हे तेऊं ॥ ६० ॥ देश काल चरु पुरोडासाई ॥ मंत्र तंत्र ऋत्वीज क हाई ॥ देव अग्नि
यजमान मख जेऊं ॥ धर्म आदि विद्यमुप रते ऊं ॥ ६१ ॥ सो साक्षात प्रगट ये घड मांइ ॥ अपने कं निमख पेले
नाई ॥ मूर्ख अपने ज्ञान तन नही तेऊं ॥ योगेश्वर के ईश्वर ए ऊं ॥ ६२ ॥ हे द्विज अपने अति धन्य भाइ ॥ जस

दारभक्तीसेंहरीमांई ॥ अवनिनिश्चलमतिभइताई ॥ हमकुंनमेहमशिरनाई ॥ ६३ ॥ अरवंडच्छुद्धि
हरिमायासेकुं ॥ मोहपायेबुद्धिहमारएकुं ॥ कर्ममगमेंभ्रमतहेतेऊं ॥ पुनिहहमकिमायाकरतेइ
६४ ॥ अंतःकरणमुग्धाइहमारी ॥ नहीजानेमहीमाहमभारी ॥ हमारअपराधहइमरोहा ॥ क्षमाक
रनकुंयोग्यहीतेहा ॥ ६५ ॥ शुककहीकृषीनेअपराधकीना ॥ पुनिपुनिस्मरतसोइनवीना ॥ तापकु
रतउरमेंअतिएकुं ॥ दर्शइछतवलहरिकुंतेऊं ॥ कंसकुंसेंकृपीसवउरपाइ ॥ दर्शननाहीकरतसो
ताई ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमिजेऊ ॥ अन्नयाचाऋषीयागमें ॥ भूमानंद
कहेंऊं ॥ ६७ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृतभाषायांत्रयोविंशोध्यायः ॥ २३ ॥
दोहा ॥ इंद्रमखमेंहरिकेप्रभू ॥ गिरिकोउछवकीन ॥ चोविशाकेअध्यायमें ॥ इतनेगाथाचिन ॥ १ ॥ चो
पाइ ॥ शुककहीकंससेंहीजउरपाई ॥ भजतहइमकुंरहीघरमांइ ॥ वलकृतहइमवसतव्रजताई ॥ इं
द्रमखकरतनंदादिजाइ ॥ २ ॥ इनकुंदेखिअंतरजामी ॥ जानततोभीपूछतवऊनामी ॥ विनयजुत्तह
रिकहेंहेअनुंताता ॥ क्याउछाहभयेकहोवाता ॥ ३ ॥ जोतुमकहोयज्ञहेएकुं ॥ तवयाकोफलकहो

हितेकुं ॥ कुनस्करकाजकरतहोसोई ॥ कोनपदारथसेंसिधहोई ॥ ४ ॥ सोईस्कंनतकिइछासोई ॥ ता
तकहोतुमसोकुंसोई ॥ सचआत्माहकसाधुकहाई ॥ इनकोकार्यकछुगोप्यनांई ॥ ५ ॥ असमेराअ जा णी बे
सपरहेतेोउं ॥ मित्रउदासिहेषीनकोउं ॥ तदपिउदासीशत्रूमाई ॥ स्यागकरनजोग्यसोकहाई ॥ ६ ॥
स्कृदआत्मातुल्यप्रतिजे ॥ मनसकवामेइनकुंलिजे ॥ कोजनजानिकर्मकुंकरही ॥ कोजनजानेवी
नअनुसरही ॥ जानिकर्मकरसिधिपावे ॥ अज्ञानकरिकेफलनहीगमावे ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ करतहीक्री
यायोग ॥ कुंनशास्त्रसेंकरतेहो ॥ कुलपरंपरालोक ॥ करतेहेत्युंतुमकरही ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ पुछतेहे
हमकहकुंताला ॥ तवनंदजीवोलेसाक्षाता ॥ हेस्कृतकुलकिपरंपराई ॥ इंद्रयागकरहीहमभाई ॥
९ ॥ इंद्रहिघनवरसावनहारा ॥ मेघसवीचाकरजसप्यारा ॥ जनजिवनजस्तिकरतोत ॥ जलकुंव
र्षावतघनसोउं ॥ १० ॥ अपनेऔरमनुषहेजेता ॥ सवघनपतिइंद्रकुंतेता ॥ जलसेपकेअन्नादी
जाई ॥ यज्ञकरतहिइंद्रकिताई ॥ ११ ॥ मखसेंशेषरहेअन्नजेऊं ॥ तिनकरिजिवेंसवजनतेऊं ॥ धर
मरुकामअरथकिजेहा ॥ सिधिपावतहेसवतेहा ॥ १२ ॥ कहोगितुमत्रिवर्गकिजेकुं ॥ पुरुषप्र

भा·द·पू· यत्नसिधिहोहितेकुं॥ कहाकरेगिइंद्रयामाई॥ इनकोउत्तरकहुंसमुंताई॥ पुरुषप्रयत्न फल सिधि[illegible]ते अ·२७
॥८१॥ कहा॥ इंद्रबिनानहीहोतहोतेहा॥ १३॥ हेसुकृतपरंपरासेंजेकुं॥ चलेआतहेधर्महीतेकुं॥ कामलोभम
यद्वेषसुजोउं॥ तजीसुभपावेनहीनरकोउ॥ १४॥ दोहा॥ शुककहेनंदगोपकी॥ सुनिवचहूहमजो
ई॥ क्रोधउपजावनइंद्ही॥ नंदसुबोलेसोई॥ १५॥ कर्मसेंउपजतजिवसबेहा॥ नाशहोतहेकर्मसेंतेहा
सुखदुखभयक्षेमहीजोउ॥ कर्मकुंसेंपावतपुनिसोउ॥ १६॥ कहोगेतुमकर्मजडजोई॥ तिवकुंसुख
दुखप्रदक्युंहोई॥ इनकोउत्तरकहुंसमुंताोइ॥ कर्मकीफलप्रदइश्वरकोइ॥ १७॥ जोजीवकुर्मकरतज
सजाइ॥ तिनकुंतसफलदेतहीताई॥ कर्मनकरहीजिवजोकोइ॥ तिनकुंफलनदेतइशसोइ॥ १८॥
निजकर्मफलभोगतसवही॥ इंद्रसेंसुभअसुभक्यातवही॥ पुर्वकर्महुतसुखदुखजोउ॥ इंद्रमेट
नसमर्थनहीसोउ॥ १९॥ पुर्वकर्मआधिनजनसवही॥ पुर्वकर्मफलभोगततबही॥ सुरअसुरनर
सुतजगतेकुं॥ कर्मकुंकेवशवरतहीतेकुं॥ २०॥ सोरठा॥ पुर्वकर्मअनुसार॥ उंचनिचतनुधरुनि
तजही॥ उदासीअशिहितकार॥ ईश्वरगुरुकर्मजीवके॥ २१॥ चौपाई॥ कर्मकरनहारेनरजेकुं॥ व ॥८१॥

र्णाश्रमकुंउचितकरितेकुं॥ कर्मकुंमांनिसुखिरहाई॥ सोनरकेदेवकर्मकहाई॥ २२॥ निजआजी
वकावृतीकुंसजही॥ औरवृतिकुंजोजनभजही॥ सोसुखकुंनहीपावेनैसें॥ पुंश्चलिजारकुंकुंभ
जीजैसें॥ २३॥ वेदपठनरूपवृतिसेजेकुं॥ विप्रसववरततकरितेकुं॥ क्षत्रिभूरक्षणवृतिकरही॥ वै
श्यकृषीआदिकअनुसरही॥ विप्रक्षत्रिरुवैश्यकीसेवा॥ शुद्रकीवृतिकोअसभेवा॥ २४॥ वैश्य
वृतिकेचउंप्रकारा॥ कृषीगौरखनीअरुवेपारा॥ चोथीव्याजरुपवृतीकिना॥ तिनमेंगोवृतिअ
पनीप्रवीना॥ २५॥ सत्वरजतमगुणविश्वकीकर्ता॥ उसतिस्थितिरुप्रलेधर्ता॥ रजप्रेरितबहु
विधजगजेकुं॥ नरत्रियपोगेहोहीतेकुं॥ २६॥ दोहा॥ रजप्रेरितघनवर्षत॥ जलजनजिवनका
ज॥ तासेंजिवतप्रजासब॥ क्याकरेगीसुरराज॥ २७॥ चोपाई॥ तातअपनेनहीपुररुदेश॥ न
हिघरगामवनरहीहमेशा॥ नेलनिवासीअपनेतेकुं॥ गोद्विजगिरिमखकरऊतेकुं॥ २८॥ इंद्रया
गसामग्रिहिजेती॥ गोद्विजगिरिमखकरऊतेती॥ दुधपाककंसाररुपुडा॥ दालरुदुधजलेवोही
रूडा॥ २९॥ वेदज्ञानब्राह्मणबोलाई॥ अग्निहोमकरावऊताई॥ बहुविधअन्नसेंविप्रजिमाउ॥

धेनुं कृत दई दक्षिणा तातें ॥२०॥ श्वचांडाल पतित पर्यंता ॥ तिन कुं उचित अन्न दे संता ॥ धेनुं कुं घा
स डार कुं लाइ ॥ बलि दे नो गोवरधन ताई ॥२१॥ निके वसन भूषण अंग धारी ॥ जिमि के चंदन चरच कु
मारी ॥ गो द्विज गिरि अग्नि कुं कर ही ॥ प्रदक्षीणा सब मिलि फर कुं ॥२२॥ हे नंदजी मम मत हे एकुं ॥
तुम कुं रुचे तो कर कुं ते कुं ॥ गौ द्विज गिरि को जो अस जागा ॥ मो कुं बहुत भहे बड भागा ॥२३॥ सोरठा ॥ शु
क कहे जे कुं काल ॥ तिन के प्रेरक हम के ॥ वचन स्कंनि गोपाल ॥ नंदादिक सब मानत ही ॥२४॥ चौ
पाई ॥ मधुसूदन कुने सुं किना ॥ तैसें करत ही गोप प्रविना ॥ स्वस्तिवाचक राये जब ही ॥ इंद्रयाग सा
मग्री सब ही ॥२५॥ गिरी द्विज कुं अरपन सो लाइ ॥ घास दिने गो कुं मुद पाई ॥ निज निज धेनु कर के आ
गी ॥ गिरि प्रदकंमा करत सुभागी ॥२६॥ निक भूषण कृत गोपि सब ही ॥ निक बेल जूत गाकर परत
ब ही ॥ द्विज आशिष कृत हरि सुत गाइ ॥ करत प्रदकंमा गिरि की जाइ ॥२७॥ गोपकु कुं विश्वास कि का
जा ॥ ओर रूप धरी बोलत राजा ॥ परवत हो में अति बुरदे कुं ॥ बकु अन्न लेकर जिमत ने कु ॥२८॥ गि
रि रूप निज तनु कुं हरि जे हा ॥ व्रजजन नूत नमत ही ते हा ॥ व्रजजन कुं कहे देखो एकु ॥ रूप धरी अ ॥८२॥

पनो अन्न जिमे कुं ॥२९॥ निज इच्छीत रूप कुं सो धारी ॥ अवज्ञा कर कुं दे गे मारी ॥ निज अरु गौ रक्षण
लियुं जाई ॥ नम कुं गिरि कुं अपने भाई ॥३०॥ प्रभु प्रेरे नंदादि गोपा ॥ गोगी रि द्विज मखक रि अनुंपा
पुनि श्रीकृष्ण सन्मूल गोप ने कुं ॥ सब ही व्रज में आवत एकुं ॥३१॥ दोहा ॥ इति श्रीमत भागवत ॥ दशम
स्कंध मिजे कुं ॥ गोवरधन को उछव ही ॥ भूमानंद कहे कुं ॥३२॥ इति श्री सहजानंद स्वामि शिष्य भूमा
नंद कृत भाषायां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ दोहा ॥ इंद्र वर्ष व्रजनाशन ॥ गिरिधर रक्षण कीन ॥
धारा सें गोकुल कुं की ॥ पचीश अध्याय चिन ॥१॥ चोपाई ॥ शुक कहे निज पुजा की हानी ॥ गोपने
किने सो इंद्र जानी ॥ कृष्ण नाथ हें नंदादिके ॥ ता पर इंद्र ही कोप करी के ॥२॥ सांवर्तक घन प्रलय कारी
तिन कुं प्रेरत करि रिस भारी ॥ इंद्रापणा को मान हे जाइ ॥ बोलत इंद्र वचन मेघनाइ ॥३॥ वनवासी गोपकु
को एकुं ॥ श्रीमद माहात्म्य आश्रयते कुं ॥ कृष्ण मनुष्य के शरणे जाइ ॥ गिनत न ही मैं देव हो ताई ॥४॥
जेतुं नर ब्रह्म विद्या कुं त्यागी ॥ अहद कर्म मय मख में रागी ॥ नाम नाव तुल्य मख से एकुं ॥ तरन इच्छत भ
व सागर ते कुं ॥५॥ बकु बोले अति अन नम्र वाचा ॥ पंडित मानि अज्ञ रुकाचा ॥ मनुष्य कृष्ण कुं आश्री

भा॰द॰पू॰ तणहा॥ मोरअप्रियकीनगो पतेहा॥६॥ सोरठा॥ लक्ष्मीकोमदपाई॥ इन्द्रसेंदृधिपायेतनुं॥ नं अ॰२५
॥८३॥ हादिकुजोताई॥ श्रीमदगर्वमर्दमेदिदेऊं॥७॥ चोपाई॥ मेंऐरावतगजपरवारी॥ महाघाक्रमीघ
वनलेहारी॥ नंदव्रजनाशाकरनकीताई॥ घनतबपीछेआनचलाई॥८॥ शुककहेइंद्रआगपाकी
ना॥ घनकेबंधनछोरिदिना॥ नंदगोकुलकुंपीडनजाई॥ बलकरिजलधारावर्षाई॥९॥ विजप्र
काशकरतजामांई॥ करतकडाकागरजतआई॥ अतिवायुनेप्रेरेउणहा॥ जलमयकंकरवर्ष
ततेहा॥१०॥ स्तंभतूल्यधाराजोदेरा॥ जलकेओघनेअबनिघेरा॥ उंचनिचथलजनातनांही॥ अत
निअनिलजलधारामांही॥११॥ कंपतगोगोपीगोपजेऊं॥ शीतपिडाइहरिशरणगयेऊं॥ निजमस्त
कस्कतऊंकुंतेहा॥ छुपातनिजतनुंऊंसेंरहा॥१२॥ जलधाराकंपपीडापाइ॥ बोलतचरणमूलमें
जाइ॥ हेहरिसमरथमहाभागा॥ भक्तवत्सलतूमहीकृतरागा॥१३॥ दोहा॥ हमअरुसबगोकु
लकेहरि॥ तूमहोनाथ॥ इंद्रकुंकेअतिकोपसें॥ रक्षणकरऊंसाथ॥१४॥ चोपाई॥ जलपथरकेमा
रसेंजोऊं॥ अचेतनगोकुलसबसोऊं॥ निजजनसंकटहरभगवाना॥ कोपइंद्रबरषातहीमाना॥१५ ॥८३॥

कृतूविनअतिवायुजामांई॥ बहुवर्षाव्रतपथरपाई॥ हमइनकोमदहनेसोजानी॥ हमारक्ष
यविशुवर्षहीपानी॥१६॥ इनकिनिवृतिहोवेजेसे॥ ममसामर्थ्यसेकरुंगेतेसे॥ मूरखतासेलोक
इशमाने॥ इंद्रादिलोकपालयुजाने॥ इनकोलक्ष्मीमदरूपजेऊं॥ अज्ञानहमहरगेतेऊं॥१७॥
साधुपणाकृतदेवसबेऊं॥ हमईश्वरयुंगर्वकृततेऊं॥ असंतऊंकोमानभंगाई॥ मोसेंभयेअ
नुग्रहताई॥१८॥ हमहेशरणरूनाथहेजाके॥ मोरसामग्रीहेव्रजजाके॥ रक्षाकरुंसामर्थ्यदे
खाइ॥ युंनिमधारीनिजव्रतमाइ॥१९॥ सोरठा॥ युंकहीहरिएककहाथ॥ ऊंचेउठाइगिरिधरे॥
गोपसेंबोलतनाथ॥ माततातव्रजजनसबनुं॥२०॥ चोपाई॥ सबतूमनिजगोधनकृतआई॥
रहोगोवरधनकिगरतमांई॥ ममकरसेंगिरिगिरेकितोनु॥ ऐसेत्रासनहिरखहिकोऊ॥२१॥ वा
युरुवृष्टीसेमतिडरना॥ तासेरक्षामेरेकरना॥ युंहमविश्वासदिनजबही॥ मनमानिव्रजवा
सिसबही॥२२॥ निजगोचाकरगाडाजोरी॥ पुरोहीतकृतचलेचऊंओरी॥ गोवरधननिचेसब
जाइ॥ सावकाशजूतरहेसमाइ॥२३॥ भूखतृषसेव्रजजनपिडाइ॥ सुखकीइछातजीरहाई॥

देखिरहे छ्यमकुं तेहा॥ सातदिवसप्रभुगिरिधरेहा॥ जेहीथलगरेपावरिकाई॥ तेहीथलकुंसेचा
लतनांई॥२४॥ छ्यमकुंकियोगमायाकेरा॥ प्रभावदेखकेइंद्रदेरा॥ तजीअहंकारविस्मयपाया॥ व्रज
नाथसंकल्पडरमिटाया॥२५॥ पुनिअतिनम्रहिइंद्रहोई॥ निजघनगणकुंवारतसोई॥ बिनबदरखी
तुरगेनभमांई॥ अतिवायुवर्षातमिटाई॥२६॥ सोसबदेखगोवर्धनधारी॥ बोलतगोपकुंसेंपोकारी॥ नि
जधेनुंसुतदारसहीता॥ त्रासतजीबहीनिकसोमिता॥२७॥ बावर्षातनिहृन्निहिपाइ॥ थोरेजलरहे
नदितमांइ॥ सबनिगोपनिजगोवोलाई॥ गिरिखाडसेंबाहिरआई॥२८॥ त्रियाबालकरुद्धथेंजेता॥
सामग्रीकृतसबजो तेता॥ ग्राकटवेगिधरेनिकसेकुं॥ पुनिप्रभूसबजनदेखततेकुं॥ २९॥ दोहा॥ गो
वरधननिजथानपर॥ धरिकेपुर्वमाई॥ लिलाकरीहरिनिकसे॥ व्रजजनकुंमुददाई॥२०॥ चोपाई॥ पुं
निव्रजवासिसबढिगआई॥ प्रेमवेगसेंपुर्णतापाई॥ मिलततनिछावरकरिताकुं॥ दधिअक्षतजलगो
पिलेकुं॥२१॥ पुजतप्रभुकुंअतिहरषाई॥ देवतआशिरवादहिताई॥ जशोमतिरोहीणिनंदनामा॥ मि
लतप्रेमविहवलबलरामा॥२२॥ सुभआशिषछ्यकुंजोरी॥ देवगणनभमिआइबहोरी॥ साध्यसिध ॥८४॥

चारणगंधर्वा॥ स्तवनअस्तुमनअस्किरवा॥ तुंखडुंदुभिनभदेवबजाये॥ तुंबरुआदिगंधर्वगाये॥
२३॥ पुनिनिजमेंप्रितिकृतगोवाला॥ आश्रीतमिजकेबलकृतपाला॥ गोवरधनसेंव्रजेमेंआवा॥
गोपिछ्यमचरितलगेगावा॥ सोगोपिकेप्रेमजूतगाना॥ तिनकेसंननहारसुजाना॥ जिनकेउरमेंगोपी
युंआई॥ परसकरतहीआनंददाई॥२४॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेउं॥ गोवर्धन
उठायेजो॥ भूमानंदकहेउं॥२५॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांपंचविंशती
तमोध्यायः॥ २५ ॥दोहा॥ प्रभुकेअद्भुतकर्मसे॥ विस्मितगोपकीताई॥ गर्गकिवाचसुनावत
परविन्नाउंकेमांई॥१॥ चोपाई॥ छुककहेंकर्मछ्यकेजोउं॥ अतिविस्मितगोपनत्विसोउ॥ बोल
तनंदजिकेढिगआई॥ सोहरिखाकमजानतनांई॥२॥ नंदतबसुतकेअद्भुतजोउं॥ कर्महीआश्चर्यकारी
सोउं॥ बोलतनंदजीकेढिगआई॥ सोहरिखाकमजानतनांई॥ पाकृतअपनेलिनकेमांई॥ इनकोजन्म
सोजोग्पनांई॥३॥ सातवर्षकेजेउंकुमारा॥ रमतगिरिराजकरधरीगारा॥ सुबडहस्तीकमलकुंधारे
पुनिपुतनाउंकुंसुमारे॥४॥ राक्षसिआतदेखकेबाला॥ अंखियांमिचिगयेततकाला॥ बलबंतीपु

भा॰द॰पू॰ तनाकेजेकुंस्तनपानकरिप्राणकनतेकुं॥ देहकिआयुषकुंकुंजेसें॥ कालहीपानकरतस्युंतेसें॥५॥ अ॰२६
॥८५॥ सोरठा॥ सकटनिचेस्कतेकुं॥ तिनमासकेबालकजो॥ पदकुंसेंहनेतेकुं॥ जंधुंगिरतत्राकटसोजु॥६॥
चोपाई॥ एकवर्षकेप्रभुपरगारे॥ तृणावर्त्तनभमगजडारे॥ तबइनकोकंगपकरीबाला॥ आतुरकुंकुंह
नेततकाला॥७॥ एकदिनमांखणचोरिकिना॥ उखुखलबांधेमातप्रविना॥ यमलार्जुनवृक्षविचजा
ई॥ करसेंचलतेदेतगिराई॥८॥ बलकृतबालकमेंवीराई॥ बछचारतवनकुंमेंजाई॥ इनकुंहननवका
सुरआया॥ करचंचपकरिफारिबहाया॥१०॥ निजकुंमारनइछाकारी॥ वछरूपकुंमारेहेंगारी॥ एम
तहमितनुंवछकिउद्धारे॥ कोठिफलकृतभूपरडारे॥११॥ बलकृतकृष्णमहीधेनुकुमारा॥ पुनिइनके
बंधुसंहारा॥ पकेफलकृततालवनतेकुं॥ क्षेमकुशलनिरभयकिनतेकुं॥१२॥ बलसेंअतिसोभतब
लदेवा॥ तासेंप्रलंबहनितनखेवा॥ पुनिप्रभूदवसेंलिनबचाई॥ गोपअरुव्रजपशुसबताई॥१३॥
॥दोहा॥ अतिविषधरकालिदमी॥ मदविनकरिकेताइ॥ जमुनांकृदसेनिकासत॥ स्वधजलकिने
जाइ॥१४॥ चोपाई॥ नंदतवस्कतमेंहमारीजेकुं॥ दुस्सजहेतनजानतेकुं॥ कृष्णकुंहेतहमारमांई॥ स ॥८५॥

भाविकसोकेसेरहाई॥१५॥ सातवर्षकेतोरकुंमारा॥ इनुंनेवडगोवरधनधारा॥ शंकाभइतवस्कत
मेंमोरा॥ प्रभुहेक्याअसतोरा॥१६॥ सबगोपवचनशंकाकृतस्कंनि॥ नंदबोलतसबकुसेंपुनी॥
ममस्कतमेंशंकातुमकिना॥ सोसबमेंदिदेकुंप्रविना॥१७॥ बालनिमितकरिमोयकहेकुं॥ गर्गव
चनस्कंनोकुंतेकुं॥ गर्गकहेअसपुत्रतिहारा॥ युगयुगप्रतीधरततनुंप्यारा॥१८॥ सतयुगश्वेत
वर्णतनुंएकुं॥ रक्तवरणत्रेतामेंतेकुं॥ पितवर्णद्वापरमेंधारा॥ कलिमेंकृष्णवर्णउदारा॥१९॥ या
कारणनंदस्कततिहारा॥ कृष्णनामपावेगेप्यारा॥ नंदअसस्कतनिहाराजोउ॥ पेलेवृस्कदेवकेथेसो
उ॥ इनकेस्वरूपजानतहारा॥ वास्कदेवकहीनामउचारा॥२०॥ शोभाकृततवस्कतकेहेरा॥ गुणक
र्मजोअपनामरूपेरा॥ नामरूपसबमेंजानुंताई॥ इजोकोउजननजानतनांई॥२१॥ गोपगोकुलकुंमु
ददाता॥ कल्याणकरेगितवसाक्षाता॥ असबाजसेंदुजनजेता॥ प्रयासविनदुखतुरेगितता
२२॥ हेनंदपेंलेप्रथ्वीमांही॥ राजाविनसाधुथेंतांही॥ चोरकुंनेपिडेजननजबही॥ एस्युहोइकिनेर
क्षानवही॥ सोसाधुनेचोरवत्राकिना॥ अनिवलियाकुंकुंजितलिना॥२३॥ सोरठा॥ प्रितिकरेनर

भा॰ द॰ पू॰ कोउं॥ तोरपुत्रमेंबडभागी॥ तिनकिपराभवजोउं॥ शत्रुसेनहीहोवतही॥२४॥ चोपाई॥ विहमुपक्षी अ॰ २६
॥८६॥ हेवकोजैसें॥ असुरपराभवकरेनतैसें॥ तेहीकारणनंदहमजोउं॥ समस्तशौचसमदमगुणसोउ
२५॥ तिनसेंनारायणकुंषीतूल्या॥ सोभाकिरतीमहीमाअमूल्या॥ नारायणतूल्यसकलतवगुणकुं॥
गर्गकहीमोयमहीमातेकुं॥ हमकेअद्भुतचरितमांई॥ तूमअश्चर्यकरोमतभाई॥२६॥ युंउपदेश
गर्गमोयदिना॥ पुनिनिजगेहगयेउघवीना॥ वेदिनुकुंसेंहमकुंजाने॥ नारायणकिअंशहममाने
निजशरणेआयेजनकोउं॥ तिनकेक्लेशमिटावतसोउ॥२७॥ गर्गाचार्यकुंकोवचनेकुं॥ व्रजजनसके
निनंदसेंतेकुं॥ मुदकुननंदकुंपुजततेहा॥ अतिप्रतापिहमकुंगहा॥ पुजतमहीमादेखसुंनेहा
त्रांकासागतगोपसबेहा॥२८॥ गोवरधनधरेलखिविश्णुकमूनि॥ हरियोगमायाशर्वपुनि॥ हम
कुंकीप्रारथनाकरही॥ गोपनेनिजमरवहनेनतरही॥२९॥ विजपातअतूलघनवरषाइ॥ कठिनवायु
जलपथ्यरलाइ॥ गोपगौस्त्रियाडुखिजामांई॥ निजआश्रितगोकूललखिताई॥३०॥ आइदयाप्रभु
मुखमुसकाई॥ गोवरधनकुंलेतउचाई॥ रमतबालछत्राकहीजेसें॥ एककरमिगिरिधारनतेसें॥३१ ॥८६॥

शुकजिकहेछेहेराजन

गोकुलकि जिनरक्षाकिना॥ अभिमानइंद्रकोहरिलिना॥ गोवनकुंकोइंद्रतूमजोउं॥ हमपरप्रसन्न
होप्रभुसोउं॥३२॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमितेकुं॥ गर्गगीतनंदकुंकही॥ भूमानं
दकहेउं॥३३॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृतभाषायांषड्विंशोऽध्यायः॥२६॥ दोहा
हमकुंकोमहीमालखि॥ सुरभिइंद्रजोकिन॥ अभिषेकवडउत्सव॥ सप्तविश्रामेचिन॥१॥ चोपा ६५
ई॥ शुककहेहमनेगिरिधारी॥ अतिघनधारसेंव्रजरगारी॥ तबगोलोकसेंसुरभीआई॥ स्व
र्गसेइंद्रआयेधाइ॥२॥ अतिअपराधहमकोकीना॥ मिलिशकांतमेजनातदीना॥ रवीकांती
तूल्यमुकुटनाई॥ पड्याकरतप्रभुकीपदमाई॥३॥ अतिप्रतापिहमकेजेहा॥ देखिसकनेथेमहीमा
तेहा॥ त्रिलोकिइशाकेमदविनहोई॥ करजोरिहमकुंकहीसोई॥४॥ इंद्रकहेअसस्वरुपतोरा॥ स
धसत्वमयशांतबहोरा॥ सर्वज्ञरजतमगुणहीनजेकुं॥ याकारणमोहिप्रभुतेकुं॥५॥ मायाकेकार्य
रुपहीजेता॥ तमुंइंद्रियअंतःकरणतेता॥ गुणप्रवाहरुपहममेंएकुं॥ तोरविशेषप्रभूनहीहेतेकुं॥ द
निजस्वरुपअज्ञानहेजोउं॥ गुणप्रवाहकोकारणसोउ॥६॥ निजस्वरुपअज्ञानसेंहोइ॥ पुनीअ

भा・द・ए・ ज्ञानकहेतुंसोई ॥ अज्ञानिपुरुषकोताकुं ॥ स्वरूपजनावनहारातेकुं ॥ ७ ॥ जोआदिकजोनामकहाई अ・२३
॥८१॥ तोरविषेसोनरहतनांई ॥ दुष्टरक्षणखलनिग्रहकाजा ॥ दंडहीतुमधारतजोराजा ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ प्रभुज
गकेगुरुतात ॥ नियंताकालरूपतुमें ॥ दंडपकरिसाक्षात ॥ ममजगईश्वरमानतुंन ॥ ९ ॥ चोपाई ॥ जग
मंगलइच्छनहोजबही ॥ धरिअवतारकिंइतुमतबही ॥ इन्द्रपणाकोमानहेजाई ॥ हमजेसेअज्ञा
निकहाई ॥ १० ॥ सोहमकुंभयआतहेजबही ॥ निरभयतुमकुंदेखितबही ॥ जगदीश्वरमानतजीतत
काला ॥ गरवरहीनहमसेवेमराला ॥ ११ ॥ गोवरधनतुमजबठायेतेकुं ॥ ममखलकुंदंडदिनेतेकुं ॥ १२
ऐश्वर्यमदव्यापनहमेरा ॥ तोरप्रभावनजांनुएहा ॥ तबअपराधकिनमूढमतिहोई ॥ क्षमाकरोममप्र
भुतुमसोई ॥ १३ ॥ असतमतिपुनिहोवेनजेसे ॥ मोपरक्रपाकरोतुमतेसे ॥ तुमकहोगेअपराधबड
कृं कीना ॥ एसकुंमेंकहोगेप्रविना ॥ १३ ॥ अधोक्षजअवतारतिहारा ॥ जरासंधआदिनृपअपारा ॥
भुभररूपबकुमारकेतेकुं ॥ इनकुनाशनलियेप्रगटेकुं ॥ १४ ॥ चरणसेवककीरक्षाकारी ॥ मेंभिसेवक
हाउतिहारी ॥ अतिअपराधकिनमेंजेकुं ॥ क्षमाकरनेजोग्यतुमतेकुं ॥ १५ ॥ दोहा ॥ परऐश्वर्यही ॥८१॥

संपन ॥ अंतरजामिउदार ॥ अपारमहीमानोरहे ॥ वसुदेवकेकुंमार ॥ १६ ॥ चोपाई ॥ जडपतीनिजइ
च्छानतुंधारी ॥ विशुद्धज्ञानमुरतीतिहारी ॥ सबमेंव्यापकसबकेकरता ॥ असअंतरजामिअरुभ
र्त्ता ॥ १७ ॥ वेरवेरतोयनमोनमामि ॥ ममममखभंगकिनअंतरजामी ॥ मानिहमअतिक्रोधचराई ॥
वावृष्टिकिनव्रजनाशताई ॥ नहीकरनेकोकिनहमजेहुं ॥ क्षमाकरनजोग्यहोतुमतेकुं ॥ १८ ॥ प्रभु
कहेइंद्रकुंनेअसकिना ॥ स्तुतिसुनिहससिद्धसमप्रविना ॥ गंभिरघनसमवानिउचारी ॥ बोलतइंद्र
कुंसेमोरारी ॥ १९ ॥ तोयअनुग्रहकिनहमजबही ॥ यज्ञकुंकोभंगकीनेतबही ॥ इंद्रपणाकीसमृद्धि
पाई ॥ अतिमदोन्मतभयेतुमभाइ ॥ २० ॥ मोरस्मृतिनिस्मरहनकाजा ॥ तबमखभंगकीनेसुरराजा ॥ श्री
ऐश्वर्यमदअंधहोई ॥ दंडकरमोयदेखतनसोइ ॥ जासअनुग्रहइच्छुजबही ॥ संपदसेंगिरावतसतव
हि ॥ २१ ॥ इंद्रतोस्वर्गमेंजाउं ॥ कल्याणकुंअवतुमपाउं ॥ ममआग्यापालोतुमताई ॥ अहंकारन
जिकुशलरहाई ॥ ममआग्यासेंलीकपालाई ॥ आपअधिकारेरहोजाई ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ पुनिकाम
धेनुआई ॥ निजसंतानधेनुजुलही ॥ गोपरूपह्र्मताई ॥ नमनकरतस्थमनस्करभि ॥ २३ ॥ चोपाई ॥

भा·द·पू· हरिहिगआपमागीतहा ॥ हेकृष्णकहीबोलेतनेहा ॥ हेजोगिजगपालनहारा ॥ हेविश्वात्मअरूपसु अ·२७
॥८८॥ तप्यारा ॥ २४ ॥ हमकुंइंद्रहननवर्षाई ॥ किनरक्षातुमगिरिउगाई ॥ हेजगपतितुमहमारेजेऊ ॥ प्र
रमहीदैवतहोप्रभूतेऊ ॥ २५ ॥ गोद्विजदेवसाधुकेपाना ॥ ममइंद्रहोतुमसाक्षाता ॥ प्रभूअजनेप्र
रेहमजेहा ॥ हमारइंद्रतुमकुंतेहा ॥ २६ ॥ तुमबीनऔरइंद्रहेजेऊ ॥ अबसेंनहीमानेहमनेऊ ॥ भूभ
रहरनेनवअवतारा ॥ तुमकुंकरेगिइंद्रहमारा ॥ २७ ॥ शुककहीऐसरभीतहीप्रकारा ॥ हरिआगपा
मानितकारा ॥ निजपयसेंकृष्णकेकरही ॥ अभिषेकरअरभिअनुसरही ॥ २८ ॥ अदितिप्रेरेइं
द्रहिआये ॥ देवअरुऋषीऋनतेहिधाये ॥ ऐरावतगजऊपरसेंलाइ ॥ नभगंगाकेजलउवाइ ॥ २९
हरिकुंअभिषेककरिऊरेशा ॥ गोविंदनामधरतहीतेसा ॥ अभिषेकउछवमेंआया ॥ तुंबरुनार
दआदिकधाया ॥ गंधर्वविद्याधरसिधजेता ॥ चारणआदिकआयेतेता ॥ ३० ॥ दोहा ॥ सबजन
अघहरकृष्णजस ॥ ऊंकोकरतसोगांन ॥ नचतदेविसबमूदजुत ॥ रिझावनभगवान ॥ ३१ ॥ चौपाई
सबदेवनमेंमूखियाजेता ॥ स्तुतिकरतश्रीकृष्णकिनेता ॥ कुसमनवृष्टिकरिबधातगऊ ॥ अतिसु ॥८८॥

खपायेत्रिलोकिनेऊं ॥ ३२ ॥ धेनुंसबनिजउधसेंआई ॥ सकलधरातलदेतभिजाई ॥ तबनदिबहु
विधरसपुरवाही ॥ द्रुमसबमधकुंदेतबहाही ॥ ३३ ॥ खेतेबिनपाकतअन्नशाली ॥ गिरिधरतबा
हिरमणीआली ॥ स्वभाविकक्रूरजीवथेजेता ॥ हरिअभिसेकसेंमितभयेना ॥ ३४ ॥ गोगोकुलप
तिकृष्णकोकिना ॥ अभिषेकइंद्रहोइदिना ॥ पुनिइंद्रप्रभूआगपाई ॥ स्वर्गगयेदेवमेंचोराई
३५ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमाजेऊ ॥ इंद्रस्तुतिकीनेजो ॥ भूमानंदकहेऊ ॥ ३६
इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ दोहा ॥ वरु
णभूवनसेंनंदकुं ॥ लायेपुनिवेकुंव ॥ देखायेसबगोपकुं ॥ अजनाविशमेंनहीजूव ॥ १ ॥ चौपाई
शुककहेएकादशीदिनमांई ॥ निराहारव्रतकिननंदताई ॥ बहुविधसामग्रीसेंतेऊ ॥ पुजीश्रीवि
ष्णुकुंतेऊ ॥ २ ॥ हरिकथाअरुकिरतनगाई ॥ जागरणकिनेउरतिथांमांई ॥ द्वादशीलवघटिकाजा
नि ॥ शिघ्रनाइनिसकर्मकरानि ॥ ३ ॥ द्वादशीमेंपारणहोहिजेसें ॥ पिछलिपोरलिनविचारते
सें ॥ स्नानादिककरनेकुंजाई ॥ प्रवेशकिनजमुनांजलमांई ॥ ४ ॥ आसुरिवेलाकुंनहीजानि ॥ रती

भा॰द॰पू॰ योपैठेजमूनांपानी॥ वरुणकिंकरअसुरआइ॥ नंदपकरिगयेवरुणताई॥५॥ पुनिनंदकुंनलखि अ॰२८
॥६६॥ गोपाला॥ हेदूरमबलकहीतकुकाला॥ कंनिहरिवरुणगृहरेनंदजोउ॥ निजजनगोपसकंबोलतसोउ॥
६॥ सोरठा॥ मतिउरोयुंकहीनाथ॥ वरुणसमीपेजातनव॥ सोइवरुणसंकंनिगाथ॥ निजरिगआये
हूदमलखि॥७॥ चोपाई॥ दर्शनकरिवडउच्छवपाया॥ बहुपुजासामग्रिहिलाया॥ हमकुंपुनीवरु
णहीजोउ॥ बोलतवचनकरजोरिसोउं॥ न[illegible]देप्रभूअबहमनेंदेहधारा॥ जन्मफललिनकरिदर्श
तिहारा॥ बडुंरत्नहेजोसिंधुमांई॥ तिनकेपतिहमवरुणकहाई॥८॥ तवदरशनरूपवडनिधिजोउ॥
तवअनुग्रहसेंपायेसोउ॥ तवपदसेवहीभक्तीसेंजेहा॥ भवसागरतरिजातहीतेहा॥१०॥ परब्रह्मप
रमात्मास्वामी॥ नमनकरुंमेंअंतरजामी॥ मायाजरूकुंसरजनहारी॥ तोरविधेनहीहेमुरारी॥११॥
प्रभुतवतातकुंजानतनांही॥ करनजोगपअरूअजोगपनाही॥ सोनहिसमझतमुरखतेऊ॥ ममकोक
रनंदकुंलायेऊ॥१२॥ सोममअपराधक्षमकुंनाथा॥ तोरतातकुंलेजाऊंसाथा॥ शुककहेवरुणने
असभांती॥ प्रसंन्नकिनेपमायेशांती॥१३॥ दोहा॥ नियंताअजआदिककेे॥ हमलेहीनिजता ॥६६॥

न॥ गोकुलमिआईगोपकुं॥ देतहिमुदसाक्षात॥१४॥ चोपाई॥ कहुनदेखेनंदनेजेऊं॥ वडौश्वर्यव
रुणकोतेऊं॥ पुजाप्रार्थनासकनिजकृतजेहा॥ करीनमस्कारहदमहीतेहा॥१५॥ लखिनंदजीउरविस्म
यपाई॥ कहतसवेनिजज्ञातिताई॥ सोनंदमुखकुंसेंकनिगाथा॥ सोदेखनउछवजूतसाथा॥१६॥
गोपकरतसंकल्पमनमांइ॥ लोकपालकिइश्राहूदमकहाई॥ ब्रह्मरूपनिजलोकहेजोउ॥ अपनेकुंदे
खायगिसोउ॥१७॥ सबअंतरजानहदमहीएहा॥ अनन्यभक्तकीसंकल्पतेहा॥ जानिसिधकरनेंके
काजा॥ कृपाकरियुंविचारेराजा॥१८॥ यालोककुंमेंजनहेजेता॥ देहआत्मबुधिवंततेता॥ त्रियादी
भोगकिइछाजोउ॥ करमकरिसकमअसकमसोउ॥१९॥ देवमनुष्यपशुयोनिमांई॥ भ्रमतनिजस्कभ
जानतनांई॥ कल्याणउपायजानेजैसें॥ सकलगोपमेंकरुंगिजैसें॥२०॥ अतिकरुणाजूतप्रभुजेहा
निजभक्तसंकटहरतेहा॥ विचारकरिब्रजजनकुंएऊं॥ मायाकेतमपरहेजेऊं॥ ब्रह्मरूपवैकुंठहेतेऊं॥
निजलोकप्रभूदेखायेऊं॥२१॥ सोरठा॥ सत्यज्ञानहीरूप॥ ब्रह्मरुसोतिरुपपुनि॥ सनातनअरूअ
नुप॥ सोवेकुंठकुंदेखत॥२२॥ चोपाई॥ ध्यानसेंसहरिमिअचलमनजेहा॥ जिवमेंसकतिनगुननिकासी

नेकुं॥ ऐसें जन जो बैकुंठ पाया॥ सो व्रजजनकुं प्रभु देखाया॥ २३॥ पैले गोपकुं डारे जाई॥ सच्चिदानंद
ब्रह्मरूप मांई॥ तामें लिन भये गोप सबही॥ कृष्ण जी बहोई रहे सो नबही॥ २४॥ तब ब्रह्मरूप में बहीनि
कासी॥ बैकुंठ कुं देखत ब्रजवासी॥ अक्रुर ने देख्यो जोउं॥ कृष्ण महापाये देखत सोउं॥ २५॥ नंदादिक व्र
जवासि जे हा॥ लखि बैकुंठ मुद पाये ते हा॥ जामि मुरति मान बेद चारी॥ स्तुति करत कृष्ण परि गवारी॥ २६॥
ऐसे हि कृष्ण कुं देखिले हा॥ विस्मय पाये गोप सबे हा॥ दोहा॥ इति श्री मत भागवत॥ दशम स्कंध मिजे उं
ब्रह्मलोक दर्शि गोपही॥ भूमानंद कहे कुं॥ २७॥ इति श्री सहजानंद स्वामि शिष्य भूमानंद कृत भाषायां
अष्टाविंशोऽध्यायः॥ २८॥ दोहा॥ रासलिये संवाद जो॥ कृष्ण गोपि मिलि कीन॥ सो गुनत्रिंशत्म
ध्याय मि॥ इत निगाथन बीन॥ १॥ चौपाई॥ शुक कहे कृष्ण कहे थें नेकुं॥ गोप कन्या कुं आगे राकुं॥ अ
बवत में तुम जाकुं कुमारी॥ आन रतियां रमो गि मम हारी॥ २॥ सो इन शरद रतियां सब आई॥ प्रतिफु
ले मल्लिका जिन मांई॥ सो रतियां लखि के प्रभु राकुं॥ योगमाया कुं आश्रित ते कुं॥ ३॥ गोपिसंग रमने मन
किना॥ तेहि क्षण लाव गे चंद प्रविना॥ स्वरूपला लकिरण सें ते कुं॥ दिशा उगम णो रंगे उते कुं॥ ४॥ बकु

दिन आये पति घर जैसें॥ त्रिया मुख मिकं कुरं गिते से॥ सब जन कुं धुप सें खेद जे कुं॥ चंद्रमा मिटाइस ब
ते कुं॥ ५॥ कुमुद कुं फुलावन हारे॥ अखंड मंडल क तनु शाश्रिसारे॥ रमा के मुख तुल्य कांति जाकी॥ न
येकं कुसम रालपलाकी॥ ६॥ तिनकी कोमल किरणुंहि जोउं॥ वृंदावन कुं रंगत सोउं॥ सो वन देखि प्र
भु मुद पाई॥ मधुर गीत जूत बेणु बजाई॥ ७॥ सुंदर दृग जूत दारा जोउं॥ तिनके मन हरगा वत सोउ॥ ८
सोरठा॥ काम बदावन हार॥ गीत सुं निब्रज दार जो॥ चलि बन में तन कार॥ हरे मन कृष्ण कुं ने जब॥ ८
चौपाई॥ को किन कुं निज गाथन कीना॥ कृष्ण पथें तहां जात प्रबिना॥ दोरत बेग करि के जबही॥ जल
कुल कान मिकुं टलत बही॥ ९॥ कितनी क धेनुं दोतउ धताणी॥ अति उछाह जूत हरि दिग भागी॥ को
उं कटत उध चुलि पर धारी॥ को चुलि कं सार नही उतारी॥ १०॥ पिरसत को त्यागी चले ते हा॥ स्तन धव
रावत तजी के गे हा॥ निजपति सेवा तजि चलि कोउं॥ जिमत भोजन नितजि के सोउ॥ ११॥ कोलिंप
त स्यागि आगारा॥ तनुं तैल चोरि नात को दारा॥ निज लोचन अंजन तत जि सोई॥ उलटे पट भूषण धरि
कोई॥ १२॥ ताके मन चीन कृष्ण हरि लिना॥ प्रभु गीत सें मोह पाइ प्रविना॥ मात तात पति भ्रात ताते कुं॥

भा॰द॰पू॰ ॥८२॥ इनुंनेरोकिनांहिरदेकुं ॥ १३ ॥ कौ निजपति रुंधे घरमांही ॥ निकसनकोंमग पावतनांही ॥ हरिमिलनके भा अ॰२९
वसेंतेकुं ॥ अंखियांमिचिज्ञातहीजेकुं ॥ १४ ॥ असनवल्लभहरदमकहाई ॥ इनकोंविरहसह्योनजाई ॥ वि
रहसेंतिव्रतापभयेकुं ॥ दुखदअसुभकर्मधोतहीतेकुं ॥ १५ ॥ ध्यानकरिहरिकुंउरलाइ ॥ मिलकेहरदमकुं
सुखपाई ॥ सुखसेंनास्रापायेतिवकेकुं ॥ सुखदायकसुभकर्महीतेकुं ॥ १६ ॥ कर्मबंधसबकटगयेजब
ही ॥ जारबुधिसेंगोपियुंतबही ॥ पाइहरदमकुंतदपिराकुं ॥ मागकरततिनगुणरूपदेहा ॥ ब्रह्मरूपभ
येगोपियुंजबही ॥ सुनिपरिक्षितपुछततबही ॥ १७ ॥ दोहा ॥ हेसुकगोपियुंहरदमकुं ॥ जाननतनिजप
तिजेकुं ॥ केवलजारहीभावसे ॥ ब्रह्मनजानेतेकुं ॥ १८ ॥ चोपाई ॥ तिनगुणरूपबुधिहेजाकी ॥ गुणका
र्यदेहइंद्रिमनताकी ॥ तिनकोंविरामभयेक्युंताकुं ॥ हरिमेंसुधभावनहींजेताकुं ॥ १९ ॥ सुककहेसम
मकंधमांइ ॥ असगाथाहमकहीतुमताइ ॥ हरदमकोंद्वेषकरीशिशुपाला ॥ जन्मसेंमरणपरयंतकाला
२० ॥ तदपिसायुज्यमुक्तिहीपाये ॥ परिक्षितपेलेनवर्कनाये ॥ हरदमकुंगोपिगुणतजीपाई ॥ ताराहरूप
यामिसंक्रोनांइ ॥ २१ ॥ अपारअक्षयमहिमाजाके ॥ निरगुणगुणनिर्यतानाके ॥ सुगटपणंसबप्रका ॥८१॥

रेजेहा ॥ सबप्राणिकेसुभलियुंनेहा ॥ २२ ॥ याकारणहरिमेंजनजोउं ॥ कामलियेमनजोरेसोउं ॥ क्रो
धस्नेहभयसबंधसेंकुं ॥ भक्तिसेंनिसंधरेमनजेकुं ॥ सोजीवनिश्चेहरिरूपमांई ॥ प्रवेसकरतहेसंज्ञोनांई
२३ ॥ सोरठा ॥ शिवअरुसनकादि ॥ इनकेईश्वरअजन्मा ॥ योगेश्वरहरिनिक ॥ तामेविस्मयनहीकरो ॥ २४
चोपाई ॥ हरदमकुंकोसबंधजबहोइ ॥ स्थिरजंगमजीवछुटेसोइ ॥ सुककहीविस्मयमतिकरराजा ॥ सं
तुहरिदिगगइगोपिसमाजा ॥ २५ ॥ तिनकुंलखिश्रीहरदमजोउं ॥ बोलनहारमेंश्रेष्ठहिसोउ ॥ वचविला
ससेंमोहउपजाई ॥ बोलनहरदमगोपिजताइ ॥ २६ ॥ हेबडभागितुमभलेंआई ॥ हमतोरप्रियकरहाक
राई ॥ व्रजसुखसमाताहेकिनांई ॥ कछुविक्षेपपस्योकिआई ॥ २७ ॥ जसकारणतुमशिघ्रहीआइ ॥ सो
क्योंनकहोममताई ॥ अतिघोररतीयांहीजामांइ ॥ फिरहीवाघवराहजिवधाइ ॥ २८ ॥ निशिवनमें
नहिरहोव्रजजाउं ॥ माततातसुतभ्रातनाउं ॥ तुमकुंढुंढतहेसबतेहा ॥ करुअपराधनकरोगेहा ॥
२९ ॥ दोहा ॥ चंदकिरणसेंरंगित ॥ वनफुलेकुसुमहेहोई ॥ जमुनांजलकुंपर्श्रीकरी ॥ मंदवायुजोवाई ॥
३० ॥ चोपाई ॥ ताहीकंपतद्रुमकुपलजामी ॥ तुमदेखवनज्योआनामी ॥ पतिव्रताव्रजमेंतुमजाउं ॥

निजपतिसेवोशिघ्रचलाउं ॥ ३१ ॥ रोवतहितवसुतवछवाला ॥ धवराईगोइकुंतनकाला ॥ मोमेंस्नेह
हेतवुदारा ॥ तासेंवज्राचितभयेतिहारा ॥ ३२ ॥ मोरस्नेहसुं आयेजेहा ॥ जोग्पहेतुमकुंगोपिनेहा ॥ सव
जनमोमेंप्रितिकरही ॥ तुमकिनेसोजोग्पअनुसरही ॥ ३३ ॥ करविनपतिकिसेवाजेऊं ॥ परमधर्मत्रि
याकोतेऊं ॥ पतिकेसुहृदअरुनिजवाला ॥ तिनकिभिसेवाधर्मविशाला ॥ ३४ ॥ दुरभागीअरुदुष्ट
स्वभावा ॥ वृधमुरखनिरधनरोगिकावा ॥ महापंचुपापरहीतजोइ ॥ दारानिजपतिसेवेसोइ ॥ ३५ ॥ दे
वलोकपानइछनहारी ॥ निजपतिकुंनहीत्यागेनारी ॥ निकेकुलकीनारिपुंजोउं ॥ तिनकुंनिंदितजा
रसुखसोउं ॥ स्वर्गविरोधिअपजसकारी ॥ तुछअरुदुखदभयआगारी ॥ ३६ ॥ सोरठा ॥ श्रवण
कीरतनध्यान ॥ दरशनसेंपुनिहोतजस ॥ निष्चलभावसुजान ॥ मोमेंहोवुतहीजेसें ॥ ३७ ॥ चोपाई
तेसोभावसमीपेंमोरे ॥ होतनताकुंगोपिघरुंतोरे ॥ श्रुकसुकहेवचनसुदमकीएऊं ॥ गोपिकुंवल्लभल्
गेनतेऊं ॥ ३८ ॥ सुनिसिघ्रलहोरहीसवअंगा ॥ सवसंकल्पकिभयेतभंगा ॥ दुखसेभिरेनचिंताजे
ऊं ॥ गोपिसवपावनहेतेऊं ॥ ३९ ॥ दुखसेअतितदमभयेस्वासा ॥ सुकेहोठविंवफलसमजासा ॥

सोमुखनिचेकरकेएहा ॥ पगअंगुठेभूखनेतेहा ॥ ४० ॥ काजलजुतहगनिरभराई ॥ निजकुचकुंकु
मधोवतताइ ॥ अतिदुखजुतगोपीसवहोई ॥ चुपमुखसेंरहेगाठिसोई ॥ ४१ ॥ हरिमिलनसवकाम
तजआई ॥ असंतप्रितिकुंसेंधाई ॥ रुदनकरिअखियुंसुजवाई ॥ निजकरसेंलोवतहिनाई ॥ ४२ ॥
अरितुल्यवचवल्लभकेमानी ॥ रिसकरिवोलतगदगदवांनि ॥ स्वतंत्रसुरतिसमरथ्यहोई ॥ कुरव
चवोलनेंजोग्पननोई ॥ ४३ ॥ सकलविषयतजोतवपदपाई ॥ हमकुंभजऊंदयाउरलाई ॥ आदीपु
रुषमुमुक्षुकुंजेसें ॥ भजनहेप्रभुतुमभजोतेसें ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ पतीसुतआदिसवंधिकी ॥ सेवा
स्वधर्मकीन ॥ त्रियाकोप्रभूतुमनेंजो ॥ धर्मजानिप्रवीन ॥ ४५ ॥ चोपाई ॥ धरमकेवक्ताप्रभूतुममां
इ ॥ पतिसेवाबुधिरहोसदाइ ॥ सवतनकेतुमअंतरजांमी ॥ अतिवल्लभसुहृदतुमस्वामी ॥ पती
पुत्रादिमिहेनहीजोउं ॥ तोरवीषेप्रभुहोसवसोउं ॥ ४६ ॥ कमलनयनप्रियजिवकेजियरा ॥ तुममें
प्रितिकियेहमपियरा ॥ पुरुषविवेकिहेजोकोउं ॥ तुममेंप्रितिकरतहेसोउ ॥ ४७ ॥ दुखदायकपुत्रा
दिकजेऊं ॥ हमकुंसुखप्रदनहीहेतेऊं ॥ प्रभूतुमहमपरप्रसंनहोइ ॥ तुममेंआसवडुंकटोनसोइ ॥ ४८

अबलुंममचितफरबलियुंजेकुं॥ रहतप्रवेशाकरिघरुमितेकुं॥ सोचितकुंप्रभूतुमहररलिना॥ घर
कामसेकूरहरेप्रविना॥४९॥ डगनहीचलेपगहमारसोतुं॥ तोरचरनकुंछोरिसोनु॥ क्युंकरिकेहम
ब्रजमेंजावे॥ हालहमारअमकहीसंनावे॥५०॥ हसनिसहीतनिरिक्षणतेरा॥ सुंदरगीतसेकाम
उपजेरा॥ मन्मथअग्निदेकुंबुझाई॥ अधरामृतप्रभुतवपाई॥५१॥ सोरठा॥ हेमित्रअग्निएकुं
तोरविरहउसरोवङ्कि॥ जारतममतनुंतेकुं॥ ध्यानकरीतवपदपाउगी॥५२॥ चौपाई॥ कमलनेन
तुमकूहोगीजवही॥ जाकुंपतिदिगकामपिरेतवही॥ इनकेउतरसंनुंकडुंस्वामी॥ अरएपजनप्रि
यतवसकरवधामी॥५३॥ लक्ष्मिपतिकुंउलवदाता॥ तवपदहमपर्सेसाक्षाता॥ तूमनेरमायेहमकुं
जवही॥ वेदिनसेंओरपतीनतीमवही॥५४॥ प्रभुतवउरमेंश्रीकरिगेकुं॥ रहतहेउजीसोक्यविन
तेकुं॥ तदपितोरेचरणरजजेहा॥ भक्तसेवतहेजीनकुंतेहा॥ निजसोक्यतुलसीसंगेजोतुं॥ पावनइ
छेलक्ष्मीसोतुं॥ ब्रह्मादिकश्रीकिंदगकाजा॥ वकुतपकरतहादेवसमाजा॥५५॥ तदपिदेवकुंदेखत
नांई॥ सोश्रीतवपदसेवनपाई॥ सुंहमतोरचरनकुंपावा॥ सबदुखहरताप्रभूतुमकावा॥५६॥ हम

परप्रमनहोब्रजराया॥ पदसेवनआग्नाकरिआया॥ हसनिकूनहेरननवजोतुं॥ इनुंनेउपनकिन
कामसोतुं॥ हमारमनकुंतपवनहारा॥ दासिकरोहमकुंप्रभुप्यारा॥५७॥ दोहा॥ कुंडलगालपर
सोभही॥ अमृतभरेउअधुर॥ हसनिरिक्षणकनमुख॥ केशआवृतकतनुर॥५८॥ चौपाई॥ नी
जजनअभयदाईभुजदोउ॥ श्रीकुंप्रितिप्रदउरतवसोउ॥ इतनेअंगतवनिरखीस्वामी॥ दासीउहे
गिअंतरजामी॥५९॥ तुमकहीजारपुण्यनंदितजोतुं॥ तिनकोउत्तरकडुंसंनुंतोउ॥ सुंदरपदप्रिय
अमृतजेसें॥ वेणुगितसंनमोहपायेसे॥६०॥ देवनरसेंसुंदरतवरूपा॥ देखीनिजपतिदूतधर्मअ
नुंपा॥ तिनकुंनतजेअसनारिनांई॥ पतिब्रतात्रिलोककीमांइ॥६१॥ तवगितकुंसेंमोहपायेकुं॥ गो
पक्षीमृगवृक्षसबतेकुं॥ तवरूपकुंदेखिकेएहा॥ रोमांचितहोरहेसेवेहा॥६२॥ पिडावंतकेउंकट
हरता॥ ब्रजजनकेभयहरकरवकर्ता॥ नारायणदेवलोकसुंरखही॥ प्रगटेब्रजकोमेटनदरवही॥६३
तोरविरहसेंतपहीजेकुं॥ स्नानअरुमस्तकहमारतेकुं॥ तापरहस्तकमलधरनाथा॥ तवदासिहम
हेसंनुंगाथा॥६४॥ शुककहीजोगेश्वरकेईशा॥ गोपिकेडखवचसंनिआधिशा॥ दयालुनिजसखपु

रताहमके॥गोपिकिभक्तीसेंहोइवसके॥६५॥सोरठा॥ब्रजविनताहीरमात॥निरखतनटवरन
यनभरि॥नवफुलेमुखगात॥गोपीकुंकेमिलिहृदमकुं॥६६॥चौपाई॥उदारचेष्टाहासवहोरा॥
असहृदमविचगोपीचकुंओरा॥कंदस्मोगराकलिसमदेता॥कांतीऊनहृदमअतिसोभेता॥६७
ताराविचशोभेसुंचंदा॥जशगावतगोपिकेदंदा॥आयगानस्वरंउचनिकासी॥गोपिनसुखकुंदेतसु
खरासि॥वैजंतिमालारहेधारी॥विचरतवनमेंरूहानभारी॥६८॥सितलवेलुहेसववनमांई॥य
मुनांतहेरिम्रानंददाई॥कुमुदगंधहूलवायुसेकुं॥रुगंधिमानयमुनांतटजेकुं॥तामेंप्रवेशाकर
केजोई॥रमतगोपीसंगहृदमसोई॥६९॥मिलतगलेविचभुजकुंडारी॥छोवनकेंशापटपरस्पतारी
स्तनसाथलपरसतवेरवेरि॥हांसिमस्करीबोलतटेरी॥७०॥नखचूंटफीऊतक्रिडाकरही॥निर
खनहमनकुंकुंअनुसरही॥ब्रजसुंदरिकुंकामवढाई॥हृदमरमावतगोपिसुंताई॥७१॥अतिम
रुचितसमर्थमेकुं॥मानपायेमाननियुंतेकुं॥भुपरसवमाननियुंमांई॥अधिकमानतनिजदेहह
ताई॥७२॥मानगर्वसौभागमेंभयेकुं॥ताहीसमाचतकेशवतेकुं॥हृपाकियेगोपिपरभारी॥अंतर

ध्यांनभयेअसमगारी॥७३॥दोहा॥इतिश्रीमतभागवत॥दशमस्कंधमितेकुं॥रासक्रीडाप्रभूकिनेजो
भूमानंदकहेकुं॥७४॥इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांरासक्रीडानवत्रिंशोऽध्यायः॥
२९॥दोहा॥विरहतापेतपीगोपिका॥ढुंढतहरिकुंधाई॥उनमतज्युंवनवनकुंमे॥त्रिंशकेअध्यामां
ई॥१॥चौपाई॥शुककहीअंतरध्यांनहोई॥गयेहृदमगोपीद्वंदसोई॥नपतहृदमदेखेविननैसें॥जू
थपालगजविनगजिनिजैसे॥२॥रमापतीकिगतीअनुरागा॥मंदमुसकनिहगविलासभागा॥
क्रिडामनोहरवचहरिकेरा॥चितचोरलिनगोपिकेदेरा॥३॥गोपियुंकेमनहेहरिमांई॥हृदमक्रि
डाकरतमुदाई॥हसनिबोलनीदेखनितेकुं॥गमनादिक्रीडाहरिकितेकुं॥४॥इतनेरूपमुरतिभये
ताकी॥हरिसमक्रीडाविलासताकी॥हृदमकुंमेंनिजमनकुंसोई॥हमहेहृदमकहनयुंसोई॥५॥
सबमिलिहोईउनमतज्याई॥गातउंचस्वरहीवनमांई॥ढुंढतहृदमकुंगोपितेहा॥नभज्युंरहेबहीभि
तरजेहा॥नररूपधरकुंपुछतताकुं॥वृक्षऊंकुंगोपिसवतेकुं॥६॥सोरठा॥वटपिपरपिपलाई॥
नंदसुतप्रेमऊतहसी॥वोलिमनममचुराई॥तुमनेदेखेहेसोई॥७॥चौपाई॥कुरबकअशोक

नागपुनागा॥ हे चंपक तुम हो बड़भागा॥ बकुल अशोक बंधुकी हम निजे कुं॥ गर्वहरन मान निके ते कुं॥
तुम हिग निकसे हे सो अब कही॥ तुम देखे हे कि नही तब ही॥८॥ हे तुलसि निकलग तेमोई॥ हरि
चरणवल्लभ हे तोइ॥ भ्रमर समुह जुत तो कुं धारी॥ देखे इहां कें गये मुरारी॥९॥ मालति मोगरा युथी
रु जाती॥ मल्लिका हरि देखे विख्याती॥ फुले तुम श्रीपती नेजत वही॥ करपर सिपर्शि तिउ पजाइ तब ही॥
१०॥ आंबा अन पनस प्रियाला॥ बोरसली बिलि जंबु रसाला॥ अर्क कदंब आम्र केल्हार॥ नि
परु और दुम को विदारा॥११॥ परअर्थे निवसत हो जोउ॥ देखे हे हरि मग हो सो उ॥ यह बिन चित रहेम
रुआई॥ हरिको मग देउ बनाइ॥१२॥ दोहा॥ भूमि तुम ने क्या तप किये॥ हरि पद परसि पाई॥ उ
छव सें निज अंग में॥ रुवे रोम कहाई॥१३॥ चोपाई॥ अब उछव हे तुम कुं जोउ॥ हरि के पद परसि
भये सोउ॥ पेले वामन पग चंपाइ॥ भयो हे उछव वे दिन ताइ॥१४॥ तिन सें पेले वराह अंगा॥ परसि क
रि तो प्रभु रि उमंगा॥ या कारण भूमि तुम ने जे कुं॥ निरखे हरि को कुं देखे कुं॥१५॥ हे मृगदारा हरषिती ह
री॥ हरि मुख हेरि सुखि भये भारी॥ नित दारा जुत हरि यही जोउ॥ तुम हिग निकसे देखे सो उ॥१६॥ ॥९५॥

निज नारि अंग संग किन जवही॥ कुच कुंकुम रंगि माला तवही॥ हरि कंठ मि मोगरा कि जे कुं॥ यह अथ
ल सुगंध परत ते कुं॥१७॥ फल भार में नमें वृक्षाई॥ पुछत गोपि यु देखि ताई॥ त्रिया स्कंधे एक कर धारी
दुजे कर धरि कमल मुरारी॥१८॥ तुलसि गंध कुंसें अंध होई॥ तुलसि हार मिर हे भ्रंग सोई॥ भ्रंग ग्रज
त निकसे हरि स्याम लु॥ डुमत वन मन मानत हयालु॥१९॥ सोरठा॥ सखि पुछो तुम ताई॥ लता कुं
निरखे हरि मिलि॥ नित पती कुं लपटाई॥ वृक्ष कुं आलिंगन कर॥२०॥ चोपाई॥ इन के अति बडभा
ग कहाई॥ हरि के नख परसि कुं पाई॥ या कारण वेलि सब एहा॥ रोमांचित तनु हो इरहे हा॥२१॥ ऐसु
कु कही उन्मत सुं वच एकुं॥ बोलि तुं दत हरि कुं ते कुं॥ अति विह्वल गोपि सो हाई॥ करत लिला
प्रभु की मन पोइ॥२२॥ पुतना सुं आचरत ही एका॥ दुजि आचरि हरि सुं ते का॥ स्तन को पान
करत ही जैसें॥ उं पुतना को हरि ही तैसे॥२३॥ रोवत बाल क उं एक होई॥ हनत त्राकट रुप कुं
पग सो ई॥ तृणावर्त रुप भये को उ॥ बाल रुप कुजिकुं हरे सो उ॥२४॥ को भू षन त्राणू जुत पद ताली
चल न नजानुं सें हरि सुं मानि॥ चल हरि सुं आचरत दो उ॥ और गोप दंर होन ही को उ॥२५॥

भा॰ द॰ पू॰ कृस्नरूप भये थे जेहा ॥ हनन वछासुर रूप कुं तेहा ॥ गोपि कृस्नरूप गाकु जोउ ॥ बकरूप इनि कुं हनन अ॰ ३०
॥ ९६ ॥ नहि सोउं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ डर वरगौ कुं कृस्न सुं ॥ नाह कुं सें बोलात ॥ किउं न वेणु बजानसो ॥ कृस्न हि सु
साक्षात ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ तिन कुं इस रि गोपी युं जेतो ॥ तिक किउं न युं बखानें नती ॥ कृस्न विषे है मन
जो कोउं ॥ और के खं भाउ परि सोउ ॥ २८ ॥ तित कर दारी चलत ही जब ही ॥ हम कृस्न है बोलत तब ही
देखो स्कंदर चाल हमारी ॥ कहत युं मुख सें पोकारी ॥ २९ ॥ हे गोप वाव पोत मिमिती ॥ नाहि रखो रक्षा
कृस्न कीनि ॥ युं कहि एक कर से उगाइ ॥ और दन को पट धारत आई ॥ ३० ॥ एक गोपि उजी पर गारी ॥ ता
के शिर पर लात सें मारी ॥ कहे कालि तू मन जाउं पलाई ॥ खल दंड धरमें प्रगटे आई ॥ ३१ ॥ एक गोपि क
हे देखो भाई ॥ घोर दावानल आयो नाइ ॥ तूम अंखियां मिचो गेंत बही ॥ तत काल रक्षा एक करी मेत
वही ॥ ३२ ॥ एक माला सें बांधन धाई ॥ और गोपी कुं उखुखल ताइ ॥ पुनि स्कंदर हग जून मुख जे कुं ॥
छपाइ के रस पाचत तेऊं ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ युं गोपि विवल माइ ॥ पुछत वृक्ष वेलि कुं कुं ॥ पुनि एक थल मां
ताई ॥ पुनत प्रभु के पद कुं ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ हे सखि नंद सकत के पद एकुं ॥ ध्वज अंकुश ब ज्र अंकुश जानत जे ॥ ९६ ॥

कुं ॥ इतने चिह्न अंकित ही जब ही ॥ निश्चे पग श्री कृस्न के जब ही ॥ ३५ ॥ सो पद विषे अबला एहा ॥ दुंट
न चलि आगे जब नेहा ॥ कृस्न संगे गोपि चलि कोउ ॥ तिन पग देखी पिउ ये सोउ ॥ ३६ ॥ हे सखि की
न के हे अस पावा ॥ प्रभु के भे ले कोन चलावा ॥ गज स्कंद कांध पर गति नी धारी ॥ सुं हरि भुज न ख भाप रस
री ॥ ३७ ॥ अपने सब कुं छोरि के जोउं ॥ प्रसन भये तिन के पर सोउ ॥ एकांत मिलि गये उ ताई ॥ पुर्व तन्म
प्रभु पुजे ताइ ॥ ३८ ॥ हे सखि कृस्न चरण रज जेऊं ॥ पवित्र भव अज श्री सेवे कुं ॥ सो सब निज अघ मेट
न काजा ॥ निज शिर पर धारत करराजा ॥ सो रज शिर धरो अपने जब ही ॥ हे सखियो मिले कृस्न जब ही
॥ ३९ ॥ इनि कहे सखी यो एक एहा ॥ अपनो सब धन ले गइ तेहा ॥ कृस्न कुं को अधरामृत जोउ ॥ एकांत
में भोगत हे सोउं ॥ ४० ॥ दोहा ॥ सो गोपि के पग हैं जो ॥ अपने कुं डख देत ॥ यह विन हरि पद सो नजो ॥
तो रज शिर पर लेन ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ पुनि गोपि के पग बिन जेऊं ॥ केवल कृस्न पद देखि तेऊं ॥ अति खेदें ज
न बोलत बानी ॥ इहां इन के पग नाहीं सयानि ॥ ४२ ॥ या कारण को भल पग या के ॥ तृण अंकुर सें डख
भइ ताके ॥ अति चल भ हे कृस्न कुं एहा ॥ निश्चे खंभे उठाइ ते हा ॥ ४३ ॥ कामिने नितंब कु कुं उठाई ॥ भार

मेंपगरुदेखेभूमांई ॥ पुष्पबिननलियेजुसबारा ॥ निचेउतारिदेखनिजदारा ॥ ४४ ॥ निजनारिलियेपु
ष्पहिंजांई ॥ बिनलखिरेफणासेंसोई ॥ आधेआधेपगहैजोउं ॥ देखोभुपरधरेहीसोउ ॥ ४५ ॥ कामी
हमकूंनेजुसगारा ॥ केशगूथिशिरबेगइदारा ॥ फुलगुथतइनकेशिरमांइ ॥ देखोजुसथलबैठीता
इ ॥ ४६ ॥ सोरठा ॥ प्रभुकहेनिजस्वरूप ॥ कूंसेंक्रिरखिजुआत्मारामहीं ॥ हमहीसुरतीअनुप ॥ त्रियावि
लासेंक्षोभेन ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ कामिनरकोदिनपणोजोउ ॥ त्रियाडुष्टपणूंदेखालदोउ ॥ एकगोपिसें
रमतहीमोउं ॥ इतनेकूमेंगोपिसबकोउ ॥ ४८ ॥ हरिदरशानबिनहोइउदासी ॥ बनमेंढुंढतपगजूलगा
मी ॥ हमओरसबगोपिकुंत्यागी ॥ एककुंसंगलेगयोभागी ॥ ४९ ॥ सोसबत्रियासेंअधिकजोउं ॥
निजआत्माकुंमानतसोउ ॥ निजकुंमिलनइछाकरआई ॥ सोसबगोपिकुंबनमेंबराइ ॥ ५० ॥ हरिम
प्रणकुंभजनलनबही ॥ हमतुम्हडजीनहीकोउनबही ॥ युंनिजकुंमांनिपुनिएकुं ॥ बनमेंजइउन्मतजुं
नेकुं ॥ ५१ ॥ बोलतहमकुंसेंशिरनामी ॥ मेंचलनेसमर्थनहीस्वामी ॥ जानइछोतुमजोथलमांई ॥ नेही
थलमोकुंचलेउगाइ ॥ ५२ ॥ इनकेवचमनकेहरिकिना ॥ मोरखेभापरबेविप्रबिना ॥ सोबेवनतनपरभइ

जबही ॥ अंतरध्यानभयेप्रभूतबही ॥ ५३ ॥ पुनिगोपितपिनिजउरमांइ ॥ हाहानाथकहतसुरआई
रमणवल्लभबउभुजधरस्वामी ॥ हेमित्रतुमकहांहोनमामि ॥ ५४ ॥ तबदासीहूपराजुतिमोइ ॥ देकुं
दरशानमोकुंकहुंनोई ॥ इतनेकूमेंगोपिसबधाइ ॥ हमसमगरढुंढतदिगआइ ॥ ५५ ॥ हरिबिजोगसेंदु
खिअतिताई ॥ सबदेखनिजसखिकुंआई ॥ सोगोपिनेकिनेनिजगाथा ॥ मानदियेथेजोनिजनाथा
५६ ॥ दुष्टपणासेंअपमानजेकुं ॥ कूंनिगोपिपाइविस्मेतेकुं ॥ सोसखिकृतगोपिसबएहा ॥ ढुंढतमि
लिकेहरिकुंनेहा ॥ ५७ ॥ जहांलुंचंदकांतिदरशाई ॥ तहांलुंप्रवेशकिनबनमांई ॥ पुनिदेखबनघो
रअंधेरा ॥ पायेनिवृतिहिढुंढनकेरा ॥ ५८ ॥ हरिसुंबोलतमनहरिमांई ॥ करतहीचेष्टाहरिकिआई
जिनकेजीवनहरिहेजेहा ॥ नहीसंभारतसोनिजगेहा ॥ ५९ ॥ हरिकोध्यानधरतउरमांइ ॥ हरिआवन
इछनहरखाई ॥ पुनिजमुनांजिकेतटआई ॥ हमकेजशगानसमुदपाई ॥ ६० ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभा
गवत ॥ दशमस्कंधमिजेकु ॥ हमकुंगोपिढुंढन ॥ भूमानंदकहेकुं ॥ ६१ ॥ इतिश्रीमहज्ञानंदस्वामी
शिष्यभूमानंदकृतभाषायांत्रिंशोध्यायः ॥ ३० ॥ दोहा ॥ निरासहोइजमुनांतट ॥ आइहमकुं

भा॰द॰पु॰ गात॥प्रारथनाआवनकुंकी॥एककृत्रिशाकुंमेंवात॥२॥चौपाई॥गोपिकहेवल्लभसुखदाई॥तोरजन्म अ॰३१
॥९८॥ मेंअसव्रजमांई॥वेदिनसेंलक्ष्मिजीजेहा॥रहतनिरंतरव्रजमेंतेहा॥२॥याकारणव्रजजनमुदपावा
भक्तनिहारहमसबकावा॥तोरदियुंधारेहमप्राना॥तुंदलकुंदेदर्शसुजाना॥३॥संभोगपतीवल्लभ
वरदाना॥हेंकहमतुमहोसाक्षाना॥नारदरितसरकंजकीजेहा॥उदरकियोभाद्दरतेहा॥ऐसेंहम
हमकुंगयेमारी॥विनामूल्यकिदासितीहारी॥तवहमसेंवधहमारजेकुं॥शास्त्रकुंसेसुंहोतहेनेकुं॥
हनादहमसेंप्रानहमारा॥दर्शनदईजिवाओप्यारा॥५॥बहुमृत्युसेंलिनेवचाई॥हनोनहमसेंका
मवदाई॥विषजलपानसेंरक्षणकीना॥अघासुरसेंपुनिप्रवीना॥६॥वायुदइहीविजमेंजोतें॥आ
ग्निज्योमासुरसेंसोतें॥इजेवहुभयकुंसेंवचाया॥अवहीउपेक्षाप्रतकरोराया॥७॥सोरठा॥वि
श्वपालनकिकाज॥प्रगटभयेहोप्रभुतुमही॥निजजनकिमाहाराज॥करनिउपेक्षानहीघटे॥८
चौपाई॥हेमितत्समजशोमतिसुतजेकुं॥निश्चेहमजानेनहीतेकुं॥सबजिवकीवुधिकुंकेजोउ॥
साक्षिहोपुरुखोत्तमसोउं॥९॥जगरक्षणलियेअजनेनवही॥जाचेजउकुलप्रगटेतवही॥जउ ॥९८॥

मेंजन्मकोतहमारा॥प्रारथनासिधकरोप्रभुप्यारा॥१०॥संसृतिभयपाईजिवजेता॥तोरचरणमें
किनेनिकेता॥तिनकेभयहरकरतचुजेकुं॥भक्तकुंइछावरदतेकुं॥११॥लक्ष्मीकेकरपकरनहारा॥ह
मारशिरपरधरकुंप्यारा॥हेव्रजजनकिविरहहरता॥हसनिभक्तगर्वनाशकरता॥तवदासीहमकुंप्र
भुजानी॥मनकुंसुंदरमुखदेखलानी॥१२॥हेवल्लभनवपदकंजजेकुं॥सरणागतकेअघहरतेकुं॥
गोकेपीछेगतिकरेजेहा॥अतिसुंदरलक्ष्मिकोगेहा॥१३॥कालिकेफणपरजोधारा॥सोममकुचप
रधरकुंप्यारा॥हमारउरमेंकामहीजेकुं॥छेदिडारोप्रभुतुमतेकुं॥१४॥दोहा॥कमलनेनहेहमत
व॥सुंदरवानिसुखदाई॥सोसुंनिशिवमनकादिक॥जोनिरहेहरखाई॥१५॥चौपाई॥अमृतसम
मिठवानितिहारी॥सुनिकेमोहपाईव्रजनारी॥अधरअमृततिहारेजेकुं॥जिवाओहमकुंपाइ
तेकुं॥१६॥जन्ममरणडखसेंतपेजेउं॥मुमुक्षकुंजिवनरूपसोउ॥शिवनारदनेस्तुतियुंकीना॥सक
लपापक्षयकारकचीना॥१७॥श्रवणकरनकुंमंगलदाता॥कथाअमृतसुंदरसाक्षाता॥तिनकुंवी
स्तारहीजनजेहा॥बहुदाताहोवतहेतेहा॥१८॥विरहीजनकुंजिवातएकुं॥दरशानदेहमकुंजिवनेकुं

हेकपटिहृदमतोरहासी॥प्रेमकृतहेरिनतवसुखरासी॥१९॥ध्यानमंगलरूपतवधिहारा॥राकों
तकेकरीवचुतिहारा॥उरमेंपरसकरतहेराऊं॥मनकुंक्षोभकरतअतितेऊं॥२०॥व्रजतसेंवनप्रिजा
ततुमजबही॥कोमलचरनकमलतवतबही॥तृणकंकरअंकुरसेंराऊं॥दुखपावेगीविचारिउर
मेंऊं॥२१॥हमारचितमेंकष्टअपारा॥होवतहेमेरोप्रभुप्यारा॥सायंकालेआततुमजबही॥सा
मकेन्नाछायेमुखतबही॥२२॥गोरजसेंधुंसरमुखगहा॥कामअरपतदेखाइतेहा॥अंगसंगनही
देवतजेऊं॥कपटतिहारोहेप्रभुतेऊं॥२३॥सोरठा॥मनदुखहरप्रभूतोइ॥नमतजनकेमनोरथही॥
तिनकुंपुरणसोई॥चरणकमलतवपुजतजो॥२४॥चोपाई॥भूक्षुपलआपतकालमांई॥ध्यान
करनउरजोगपकराइ॥सेवासमयअतिसुखरूपा॥पदपंकजप्रभुतोरअनुपा॥२५॥हमारस्तन
परधरऊंस्वामी॥कामव्रणतिलियुअंतरजामी॥प्रभूतवअधराअमृतजोऊं॥कामकोवृद्धिका
रकसोऊं॥२६॥शब्दायमानवेणुंनेजेऊं॥हरिशिस्मिचुंबनकीयेतेऊं॥तवपदविननृपकेसुखजेता॥
तिनकीइछाटारेतेता॥२७॥शोकमेटनअधरामृतजोऊं॥हमकुंपानकराओसोऊं॥क्षणतव

दरशनहोतनजबही॥दुखहोवतहेहमकुंतबही॥युंजानिसबकोकरिसागा॥पायेतुमकुंहमअनु
रागा॥२८॥सागहमारोमतिकरनाथा॥युंबोलतसबगोपिसंघाथा॥दिनमेंवनविचरततुम
जबही॥क्षणयुगसमविनेउतबही॥२९॥वनसेंगोकुलआतचलाइ॥केशखितलियामु
खसुहाई॥सोसुंदरदेखतहमधाई॥आग्रहकृतअंखियांफुलाई॥३०॥सोहगामदकोकरत
हितोऊं॥हमसेंसहोनजातहिसोऊं॥इनकेकर्त्ताब्रह्माजेहा॥जडहेहमजानेउतेहा॥३१॥दोहा
॥पतिसुतभाइसुहृदसबे॥मातताततरिसागा॥तुमढिगहमआयेचलि॥मोहपाइसेंलिग
गा॥३२॥चोपाइ॥रतियामेंनारिढिगआई॥तुमविननरकोउतजततनांई॥हेकपटितुमहमकुं
सागी॥तवदरशनकिनेथेआगि॥३३॥अबवियोगेरोगउरमांई॥भेरोहमकुंदेऊंमोराई॥रा
कोतमितवमस्करिजेहा॥कामकुंउत्पन्नकरतहितेहा॥३४॥प्रेमकृतहसनीदेखनिजोऊं॥
वदनकमलमेंसोभहीसोऊं॥लक्ष्मिगेहरूपउरविशाला॥देखिहमकुंभइलालकाला॥इछामी
उनकुंकीउरमांई॥तासेंहमारमनमुरझाई॥३५॥प्रभुतवप्रगटपणुंहेतेऊं॥सबव्रजजनदुख

प्रेरनतेकुं॥ विश्वमंगलरूपमिलनतोई॥ हमारमनमेंरोगरहीसोई॥२६॥ सोमेरनकोऔषधजेकुं॥
देहमकुंजाननहोसोउ॥ प्रेमसेपरवशगोपिजेति॥ रुदनकरतहरिबोलततेती॥२७॥ वल्लभकोमल
चरननतीहारा॥ अतिकठीनहेकुचहमारा॥ तापरतवपदधारतजबही॥ खुचेकिहरलागततबही
२८॥ सोपदसेंविचरतवनमांई॥ पातपिङ्गकंकरसेंताई॥ युंविचारकरतहमजबही॥ ममबुधिमें
हपावततबही॥ अंतरध्यांनकरिगयेमारा॥ अबदरशानदेजिवनप्यारा॥२९॥ दोहा॥ इतिश्रीम
तभागवत॥ दशमस्कंधमितेकुं॥ गोपिकागितरासमें॥ भूमानंदकहेकुं॥४०॥ इतिश्रीसहजानंद
स्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांएकत्रिंशोऽध्यायः॥३१॥ दोहा॥ विरहवचनसुनिगोपिके॥
छिनरुदयहरिहोई॥ प्रगटभयेलावनकरतसो॥ गोपिकुंवनिशोमांई॥१॥ चोपाई॥ श्रुकहेरंजेस्वर
उचारी॥ बहुगितगावतव्रजनारी॥ करिविलापअतीसेरकुं॥ हरिदरशानईछाकरतेकु॥२॥ रोव
तगोपिकेवीचआई॥ प्रगटभयेहरसमुदाई॥ हसतवदनकमलमेंरताके॥ सुमनमालपितपट
हेताके॥३॥ जगमोहककामहेजोऊं॥ तिनकुंभिमोहकप्रभुसोउ॥ अतिवल्लभकुंलखिव्रजनारी

फुलेहगखितिभयेभारी॥४॥ एककालसबउठेउतनेहा॥ ज्युंईद्रिअंतःकरणतेहा॥ प्राणकुंकुंपाई
केजेसें॥ एककालेउठेज्युंतेसें॥५॥ कोगोपिमुदकरकरमांई॥ हस्तकमलहरिकोलवाई॥ कोचं
दनचरचितकरजेकुं॥ नितखंभापरधारतसोउ॥६॥ सोरठा॥ कोगोपिकरदोउ॥ अंजलिकरके
लेवतही॥ चरवितताबुंलसोउ॥ ग्रहणकरतमहामुदकृत॥७॥ चोपाई॥ कोपदपंकजहरिके
जोउ॥ तातेस्तनपरधारतसोउ॥ कोचंकिनिजभ्रुहचढाई॥ प्रेमक्रोधविहवलताआई॥८॥ एकनिमिनि
नहोवकाटिरहा॥ कटाक्षदगमारतलखितेहा॥ हरिमुखकंजहेरतकोनारी॥ मटकाविननिजने
नउघारी॥९॥ लखिमुखतृप्तनहोवतजेसें॥ प्रभुपदसेवतसंतहीजेसें॥ कोदगछिद्रसेंउरकेमां
ई॥ प्रवेशकराइपुनिमिचतताई॥१०॥ मनसेंमिलनहृदयकुंसोई॥ रोमांचितरहेअंगहोई॥ ध्यां
नसेयोगिसुखीरहीजेसें॥ मुदमेंयुंबिनअंगनातेसें॥११॥ हरीदरशानसेंउत्सवजेकुं॥ तासेंसुखपा
ईगोपिनेकुं॥ वियोगसेविरहथेजेहा॥ तिनकोसागकरतसबनेहा॥१२॥ इश्वरपाईमुमुक्षुजेसें॥
तापकुंकुंसागतज्युंतेसें॥ शोकविनगोपिकेह्रदमांई॥ अतिसोहतहरिरहेविराई॥१३॥ प्रहसतीकुं

भा॰द॰पू॰ केपुरुषहिजेमें॥ सत्वादिकह्वनसोहतनेमें॥ सबगोपिकुंसंगेरेरि॥ कालिंदिलटप्रवेश्राकियेरी॥ श्री॰रा॰
॥२०१॥ १३॥ दोहा॥ मोगराफुलगुलदावदी॥ सुगंधिसहितसमीर॥ इनुंनेतानेभमरजेा॥ वनमेंताकिभी
र॥१४॥ चोपाई॥ सरदचंदकिकीरणंत्र्याई॥ रतियांकोतमहेरेवनमांई॥ यमुनांतरंगकुंनेडारि॥
कोमलवेलुसेंसुखकारी॥ १५॥ सोतरमेंगोपिजूतत्राई॥ अतिसोहततासेंवीराई॥ हरिदरशनसें
आनंदपाई॥ हृदयरोगसबदिनेमिराई॥ १६॥ पुरणकांमगोपिसबहोई॥ उपनिषदकीश्रुतिजुंसो
ई॥ साक्षातब्रह्मस्वरुपपाई॥ पुरणकामभइगोपिमाई॥ १७॥ गोपियुंओटनपटउतारी॥ कुचकुंकु
मअंकितसबडारी॥ निजवलभकुंबेठनकाजा॥ रचनतहिंआसनगोपीसमाजा॥ १८॥ सोरठा॥ ता
परबेठेजाई॥ ब्रह्मजोगेश्वरकुंके॥ रहहीहृदयामांई॥ आसनकरहीईश्वरसो॥ १९॥ चोपाई॥ त्रि
लोकिमेंशोभाहेजेति॥ ब्रह्मकेअंगमेंसबवेंतेति॥ सोसोभतगोपिसभामांई॥ गोपिजनपूजतमुद
पाई॥ २०॥ हासविलाससहीतभ्रुहमारी॥ गोपिहरिपगकरगोदधारी॥ चांपिसन्मानकरिकेएऊ
हा॥ पुनिस्कतिकरिगोपियुंनेहा॥ किंचितकोधकृतहोइकेएऊं॥ बोलतकांमबढानसुंतेऊ॥ ॥२०१॥

२१॥ हेब्रह्मसंसारमेंकोउ॥ निजभजनारकुंभजतसोउं॥ निजकुंनभजेतिनकुंजोउं॥ भजतेहेऐसे
सेनरकोउ॥ २२॥ कोनिजभजनहारकुंनभजही॥ नभजेतिनकुंभिसोतजही॥ त्रिविधपुरुषकेल
छनजेाउ॥ पृथककरिकहोप्रभुतुमसोउ॥ २३॥ सुनतप्रश्नपणुंनिजमुखसेंजेऊं॥ केवरावनअभि
प्रायएऊं॥ गोपिकोश्रीब्रह्महिजानी॥ कहनउतरहिसारंगपानि॥ २४॥ एकएककुंभजतहीजे
ऊं॥ निजकुंभजावनकेलियुंतेऊं॥ धर्मसुहृदपणूंइनमेंनाही॥ गोकुंस्वानदेस्वारथ्यचाही॥ २५
दोहा॥ नभजेताकुंभजतजो॥ ऐसेसेनरहेदोउं॥ एकमातअरुतातहे॥ एकदयालुसोउ॥ २६
चोपाई॥ निरअपवादहीधर्मकहाई॥ सोइरहतहेदयालुमांई॥ सुहृदपणुंकहावेजेऊं॥ मात
पितामेंरहहीतेऊं॥ २७॥ कितनेभजतकुंनभजेजबही॥ नभजेताकुंक्युंभजेनबही॥ चऊप्रका
रकेपुरुषएऊं॥ आत्मज्ञानपुरणकामतेऊं॥ कृतघ्निगुरुद्रोहिहितेऊं॥ हरिसुखसेंकंनिगोपी
तेऊं॥ कृतघ्निब्रह्मकुंमानितेहा॥ हगसांनकरिहसतसवेहा॥ २८॥ हरिकहेचऊनरह्मतोकि
ना॥ तिनमेंहमकोउनहीप्रवीना॥ परमकारुणहितकारिमोइ॥ भजतेरेतीवतोजोकोई॥ २९

भा॰द॰पू॰ तिनकुंहमनहीभजतेजबही ॥ मोमेवृतिरहनलियेतबही ॥ ज्युंनिरधननरधनकुंपावे ॥ सोधनकिजब अ॰३२
॥१०२॥ नाशहोजावे ॥ ३१ ॥ तबधनचिंताकुंसनैसे ॥ भूखलरखाउखजानेननेसें ॥ सुंममचिंतनकरानकाजा ॥
भजतकुंनभजंगोपिसमाजा ॥ ३२ ॥ ममलियेंलोकवेदकुटुंबजोऊ ॥ सागकीयेहेतुमसबसोऊ ॥ मोमे
वृत्तिरखनेतुमारी ॥ परोक्षहमहोरहेव्रजनारी ॥ ३३ ॥ प्रेमजुतविलापसुंननताई ॥ अंतरध्यांनभयेहम
मताई ॥ याकारणप्रियातुमजोऊ ॥ ममअबगुणमतिलेतुमकोऊ ॥ ३४ ॥ निदारहीनसंजोगतिहा
रा ॥ मोरेसंघेकिनतुमदारा ॥ तिनकोप्रतिउपकारहीजोई ॥ सतवर्षलुदेवकेसोइ ॥ ३५ ॥ करनेकुं
हमसमर्थनांई ॥ गेहरुपीसांकलुंकहाई ॥ तिनकुंकाटिभजेतुमसमोई ॥ याकारणहमनतीहारोंमा
ई ॥ ३६ ॥ तबगुणसेंउरणहोंगऊं ॥ ममसामर्थसेंहोतननतेऊं ॥ तुमकिनसोहमजानतसबही ॥ हम
नघ्रिमोकुंनमानोतबही ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमिजेऊं ॥ प्रगटहोइप्र
भुश्रांतहो ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ ३८ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांद्वात्रिंशो
ध्याय ॥ ३२ ॥ गोपिमंडलीबिचमेंहरि ॥ रासरमावततांई ॥ नदिवनमेंकेलिकिये ॥ तेत्रिंशाअ॰ ॥१०२॥

ध्यामांई ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुककहेसुंदरहरिविचक्षणि ॥ करचरणादिकपत्नीकेपुनि ॥ सकलमनोर
थप्राप्तहोई ॥ बिरहतापसागतहीसोइ ॥ २ ॥ पुनिप्रभुजमुनांकेतटमांई ॥ गोपीसंघरचिरासक्री
डाई ॥ निजआगयाकरजुतमनारी ॥ अन्योअन्यकरेकरधारी ॥ ३ ॥ अतिप्रसनगोपिसेंवीराई ॥ आ
रंभतहीरासक्रिडाई ॥ मंडलरचिगादिव्रजनारी ॥ दोओरहरिकरकंधधारी ॥ ४ ॥ दोगोपिबिचरणक
रहेऊं ॥ योगेश्वरसेंसोभतरऊं ॥ रासउछबमेंत्रियाजेति ॥ निजढिगमानतहरिकुंतेती ॥ ५ ॥ तबकुतु
हलसबजुतमनहोई ॥ निजदारजुतदेवसबसोई ॥ तिनकेविमानदुजारुंआई ॥ नभकुंमेंसबरहेउ
छाइ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ बजहीनोबतनगार ॥ कुसुमनकिहरिपरभयेउ ॥ गंधर्वहीजुतदार ॥ निरमल
जशगातहरिके ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ निजपतिजुतगोपिकेजेहा ॥ नुपुरकांकणकोधुरकेहा ॥ अनिव
ऊरावहोतहेजाको ॥ रासमंडलमिरमतहीताको ॥ ८ ॥ कंचनवरणिगोपिसेंजेऊं ॥ रासमेंसोहत
हरिनेऊं ॥ कंचनकिरेमणिबिचजेसें ॥ सांममणिसोहतसुंतेसें ॥ ९ ॥ पगधरेभूपरहाथचलावे ॥
मंदमुखहसनिभ्रुहविलसावे ॥ कटिमरोरिनाचतजबही ॥ कंपतकुचपटताकेसबही ॥ १० ॥ कपो

भा॰द॰पू॰ ल्पपरकुं उलचलेजाई ॥ स्वेदसहितमुखअंचलीसुहाई ॥ कटिमेखलाकंवरखंधेऊं ॥ सुदमकिपल्लिगा अ॰ ३३
॥२०३॥ वततेऊं ॥ ११ ॥ गर्जनजंतवदरेमेंजैसें ॥ सोहतविजसुंगोपियुंतैसें ॥ रंगेकेंववकूरंगलगाई ॥ प्रभुकुं
परसिमहामुदपाई ॥ १२ ॥ सुदमकुंकुंअतिवल्लभजेहा ॥ गालउचेस्वरनाचततेहा ॥ जिनकेगितसेंरहे
पुराई ॥ विप्रसकलजोहेतवताई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ षडजादिस्वरजातिजो ॥ सुदमउंचेस्वरगान ॥ तासें
ऊदेशास्से ॥ प्रियाप्रभुसंघान ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ सोसुंनिपसंनभयेसुजाना ॥ देतमानप्रभुकरिविरसा
ना ॥ धुवतालकोभेदकहाई ॥ गातगोपियुंचेस्वरताई ॥ १५ ॥ वहुमानप्रभुताकुंदिना ॥ रासमेंथकेज
गोपिप्रविना ॥ सिथलभयेकंकणशिरकेशा ॥ फुलझरतमोगराकेलेशा ॥ १६ ॥ निजहिगासुदमकुंदेखी
कोउ ॥ कंवपकरतकरउंसेंसोउ ॥ ताकुगोपीनिजखंभाताई ॥ कमलसुगंधसमहरिकिबांह ॥ १७ ॥
चंदनचरचितसुंघेजवही ॥ रोमांचितभयेगोपीतवही ॥ हरिकरपकरिचुंबनकिना ॥ नचतहीकुं उ
लचुलननविना ॥ १८ ॥ कुंडलकोतिजतहरिगाले ॥ निजगालजोरतगोपिवाले ॥ सोगोपिकेमुखकुं
मेंदिना ॥ पानबिडिहरिचाविप्रविना ॥ १९ ॥ कोनाचतगावतव्रजनारी ॥ वजतमेखलाझांझरधारी ॥ ॥२०३॥

थकेजतवहरिकेरिगजाई ॥ हस्तकमलसुखरूपजगाई ॥ २० ॥ सोरठा ॥ स्तनपरधारततेऊं ॥ उजि
सबगोपिकाजेहा ॥ हरिकेकरऊगणउं ॥ छिओरकंवेउारतही ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ श्रीकुंवलभराकांत
मांई ॥ रमतगोपीपतिमांनिताई ॥ कानेकमलकपोलेकेशा ॥ लटसोहतमुखस्वेदलेशा ॥ २२ ॥ कां
कणझांझरघुघरिरूपा ॥ वजातवाजोपगसेंअनुपा ॥ गिरतकेशमेंसुंफुलदामा ॥ हरिसेंनृसकु
रतहीभामा ॥ भमरागानकरतहेआई ॥ ऐसेरासमंडलकिमांइ ॥ २३ ॥ श्रीपतिमिलतगोपिकुंऐ
सें ॥ परसकरतनिजकरसेंतैसें ॥ सुंदरदगसेंसनमुखहेरि ॥ करतहीहासविलासादेरि ॥ २४ ॥ ब्रजसुंद
रिसेंरमतहितेसें ॥ निजप्रतिबिंबसुंबालकजैसें ॥ हरिअंगसंगसेंप्रितिजतहोई ॥ परवशाइंद्रिभये
सबसोई ॥ २५ ॥ स्रजभूषणअस्तव्यस्तभयेऊं ॥ छुटेकेशपटकंचुकितेऊं ॥ पुनिधारनपुर्वेकिम्याई
गोपीसमर्थहोननताइ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ रमणसुदमकोदेखके ॥ कामकुंसेंपिडाई ॥ देवनकीदारासबे
मोहअतिउरपाई ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ जोरतियामेंरमतमुकुंदा ॥ रमणदेखिताराजुतचंदा ॥ स्थिरता
पाइरहतसोजवही ॥ सवरतियांवडिहोवततवही ॥ २८ ॥ जितनिथेंव्रजजकुंकिनारी ॥ नेतनिनिज

मुरलीप्रभूधारी॥ निजसुखसेंसुखियाहेजेकुं॥ रमतगोपिसंगलिलासेकुं॥२९॥ अतिरासक्रिडाकी
मेजबही॥ श्रांतभयेगोपिजनतबही॥ दयालुनिजकरसुखरूपजेकुं॥ गोपिकेमुखपरफेरततेकुं॥३०॥
कुंडलश्रिरकेशाकिकांति॥ कपोलसोहावतवकुभांती॥ अमृततुल्यहसनिजूततोई॥ इतनेसेंपति
कुंपुजनतसोई॥३१॥ हस्तकेनखपरमिकेगहा॥ अतिमुदपावतगोपिनेहा॥ रमतहदमभेलेसबदा
रा॥ गातपवित्रचरित्रअपारा॥३२॥ सोरठा॥ गोपिकेअंगसंग॥ करिचोलायेत्रजफूलकी॥ कुचकुं
कुमकेरंग॥ जूतसुगंधिमानअली॥३३॥ चौपाई॥ तामेंभ्रमरगंधर्वन्याई॥ गानकरतसबपिछेधा
ई॥ रमणकरिहरियाकेजबही॥ श्रममेटनगोपिजूततबही॥३४॥ जमुनांजलमेंपैठेजाइ॥ गोपिके
वृंदमेंविराई॥ गजतोरिबुरगजमतहोई॥ हाथलीजूततलमेंसुसोइ॥३५॥ हसतउछारेजलवि
नताई॥ हरिकुंचकुंओरदिनभिताई॥ प्रेमकनतहरिकुंहेतेतेकुं॥ देवबेमानफुलवर्षितेकुं॥३६॥ सक
लिदेवकरतहेताकी॥ चरगजतूल्यलिलाहेताकी॥ निजसुखसेंसुखियाहेतोजें॥ जलक्रिडतगो
पिसंगसोज॥३७॥ जलथलकेफुलगंधकुंलाइ॥ चलेपवनसबदिशाअंतनाई॥ याविधजमुना ॥१०५॥

दिगबनमांई॥ मधुकरत्रियामेंविराई॥३८॥ मदझरगजबनविचरेजेसें॥ विराइहस्तनिकुंमेंतेसें॥
ससंसकल्पश्रिहदमजोतं॥ हिनवंतत्रियासमुहमिसोतं॥३९॥ दोहा॥ चंद्रकिरणसेंसोभही॥
सबरात्रियुंमांई॥ वियरुधिनिजदेहमे॥ रमतगोपिसंघाई॥४०॥ चौपाई॥ श्रृंगाररसकुंआसरी
जेती॥ सरदमित्रियारमणकिनेती॥ कामजगास्त्रमेकथाहीतोउ॥ तेसेंकरतश्रीहदमसोउ॥४१॥
परिक्षितकहीशुकसेंनकुंगाथा॥ धरमहीथापनप्रगटेनाथा॥ नाशकरनअधर्मकोराकुं॥ बले
देवजूतजगकेईशातेकुं॥४२॥ धर्मकुंकीमर्यादाहीजेती॥ कहतकरतअरुपालननेती॥ परत्री
यासंगरूपअधर्मा॥ केवलआचरतहदमकर्मा॥४३॥ पुरणकामजदुपतिहरिराहा॥ करतनिं
दितपरसंगतेहा॥ इनकोमेंअभिप्रायनतालुं॥ छेदोमोरसंशायसयानुं॥४४॥ शुककहेसमर्थ
अजबलजेअं॥ वृहस्पतिइंद्रचंद्रहितेकुं॥ विश्वामित्रादिकनेकिना॥ धर्मलोपसोदेखेप्रविना
४५॥ तिनकोसाहसकर्मजोतं॥ देख्यामेंआयिहेसोउ॥ तेजस्वीइश्वरकुंताहा॥ दोषअरथेनहीहो
वनतेहा॥ सबभक्षकअग्निकुंजेसें॥ दोषकछुनहिलागततेसें॥४६॥ सोरठा॥ इश्वरकेआच

रहा॥ अनिश्वर मन कुं ऐसें करे॥ तो भि पावे मरण॥ देहक रिके क्युं होवे॥४७॥ चोपाई॥ अज्ञाने ईश्वर सुं
आचरे कोउ॥ नाश पावे तत काल ही सोउं॥ शिव विन हलाहल पिवे जैसें॥ ओर शिव सुं मर रही तें
सें॥४८॥ अज्ञ आदिको वचन सत सोउ॥ इन कुं आचरे सब जन तो उं॥ इनके आचरण सब पतन तांई
वचकुं मिले जो करनु ताई॥४९॥ निर अहंकार ईश्वर जे कुं॥ कुशल कर्म कुं आचरे ते कुं॥ तिन सें इन
को निकी न होई॥ अशुभ कर्म सें बुरो न कोई॥५०॥ पशु पक्षी नर देवके जो तें॥ अज्ञ आदिक ईश्व
र जो को उं॥ तिनके नियंता हु इम कहाई॥ शुभ अशुभ कर्म क्या ताई॥५१॥ जिनके पद रज कुं कुं मे
वि॥ तृप्त भये सो अकल अभेवी॥ योगके प्रभाव कुं सें टारे॥ सकल कर्म के बंधन जारे॥५२॥ नारद
दि परासर आ मुनि॥ स्वतंत्र निर्बंध विचरे पुनि॥ जिव मंगल लिये मुरती धारी॥ प्रभु कुं क्या हो यबं
धन कारी॥५३॥ दोहा॥ गोपि अरु तिनके पति सब॥ जिवके अंतर माई॥ गति करत बुधि ज्ञान सें
क्रिडा न रत नुं जनाई॥५४॥ चोपाई॥ अखिल जिवके अनुग्रह काजा॥ मनुष देह धारा महाराजा
सब कुं इछित क्रिडा करही॥ सो सुनि जिव हरि कुं अनुसरही॥५५॥ हरियोगमायासें मोहाई॥ स

ब व्रजवासि गोप कहाई॥ निज निज दारा कुं कुं जानी॥ निज निज पड खे स्फति युं मानि॥५५॥ ब्रह्म की
दुर घा करत न राकुं॥ रास रमत हरि गोपिसें घठकुं॥ ब्रात्म मुहूर्त भये जबही॥ आग्या देत गोपि कुं त
बही॥५६॥ नही इछत घर कुं जावन राकुं॥ तो भि धिरे चले उत तकुं॥ काम जितन लियें हरि ने किना॥ रास
क्रिडा सें नीगा न प्रविना॥५७॥ सो भि काम कुं जितत जबही॥ उत्तम भक्ति कुं पुनित बही॥ जिव कुं उ
रवद ब उरोग जोतें॥ काम कुं तूरत मेटे सो उ॥५८॥ दोहा॥ इति श्री मत भागवत॥ दशम स्कंध मीजे
कुं॥ गोपि संग रमे न दिवने मैं॥ भूमानंद कहे कुं॥५९॥ इति श्री सहजानंद स्वामि शिष्य भूमानंद ह
त भाषायां त्रयोत्रिंशो ऽध्यायः॥ ३३॥ दोहा॥ अंगिर शाप अरु सर्प सें॥ नंद छुट तर शान सो उ॥
जो रिहने शंखचुड कुं॥ चो त्रिंश अध्या सोउं॥१॥ चोपाई॥ शुक कहे देव जात्रा माई॥ नंदादिक
अति उछाह पाई॥ शाकट जोत रिबे ल सें राकुं॥ जात अंबिका वन में ते कुं॥२॥ सरस्वति में स्नान क
रि ने हा॥ पुजा सामग्री बकुं धन स्नेहा॥ भक्ति कुं सें पुजन सब जाई॥ पशुपति अरु अंबिका ताई॥ शीव
३॥ देत विप्र कुं गोप सबे कुं॥ गो कंचन पर भूषण नेहा॥ मधु जुत मिठ अन्न विप्र जिमाई॥ पशु

भा.द.पू. पतिप्रसनहोकहतगाई ॥४॥ शिवपुजिदेइ विप्रकुंदाना ॥ नंदसकनंदहिगोपसकजाना ॥ पिवतजल अ.३४
॥१०६॥ सबकरिउपवासा ॥ सरस्वतीतटनिशारहेतासा ॥५॥ अतिभूखेअजगरबडआई ॥ गिलतसक
तेनंदजिकुंधाई ॥ गिलेसर्पनेनंदकुंजबही ॥ हमहमयोकारततबही ॥६॥ हेसुतबडअहिगि
लतहेमोइ ॥ छोराओइनसेंकऊंताई ॥ नंदकोत्राससुनिसबगोपा ॥ तेहिक्षणउठेकरिकोपा ॥
७ ॥ सोरठा ॥ गिलेनंदकुंदेख ॥ संभ्रमऊतनही गोपसबे ॥ जलततेंबाउलेख ॥ हनतसर्पकुंतोरकी
८ ॥ चोपाई ॥ जलतकाष्ठसेंजजेउजबही ॥ नंदजीकुंनहीछोरततबही ॥ भक्तपतीप्रभुतेहीथल
आई ॥ सरपकुंपरसतलातचलाई ॥९॥ सुंदरचरणहरिकेजोई ॥ इनकेपापदहनानेसोई ॥ सर्पदे
हकुंसोगिरइऊ ॥ विद्याधरउत्तमभयेतेऊ ॥१०॥ तेजोमयतनुहरिढिगआई ॥ ठाढेकंचनसरजज
रमांई ॥ नमनकियेनिजऊकुंजबही ॥ पुछतहसप्रतिनकुंतबही ॥११॥ अद्भुतसोभाऊतनहोतेऊं
कोनहोतुमकहोमोकुंतेऊ ॥ निंदितगतीपरबसतुमपाये ॥ कहोकिनुनेताययपमाये ॥१२॥ सर्प
कहेप्रभुमेंहोकोउ ॥ विद्याधरसुदरशनसोउ ॥ स्वरूपसंपतीहेनामाई ॥ असससोभातनविमान ॥१०६॥

ताई ॥१३॥ बेठफिरतसबदिशामेंजाई ॥ रूपकुंकोअहंकारहाई ॥ सोहमकुरूपअंगिराकेरी ॥ हस
केमस्करीकिनेंदेरी ॥१४॥ ममअघकुंसेंअंगिराजोउ ॥ सर्पजोनिमेंडारततोउ ॥१४॥ दोहा ॥ कु
रुणाऊतकुपीनेदिये ॥ श्रापहीमोकुंजोउ ॥ जासेंतवपदपर्सभई ॥ किनअनुग्रहसोउ ॥१५॥ चो
पाई ॥ त्रिलोकिगुरुचरणसेंमोरा ॥ अघकेओघहनायेरेरा ॥ संसृतिकुंसेंडरपाया ॥ जोजनतो
रेशरणेआया ॥१६॥ तिनकिभयहरतात्मताइ ॥ मागुंआगपामेंशिरनाई ॥ ममलोकमेंजाने
किजेहा ॥ तवपदपरसित्रापछुटेहा ॥१७॥ महापुरुषमहायोगिस्वामी ॥ संतपतितत्राणा
मेंपांमी ॥ जगदिशाअजाविऊकेईश्वा ॥ मोकुंआगपादेऊंअधिशा ॥१८॥ तवदरशनसेंद्वीजदंड
तेऊं ॥ तुरतमिटगयेमेरेतेऊं ॥ तोरनामग्रहणकरनहारा ॥ श्रोताकुनिजहीसुधकरतारा ॥
तोरचरणकुंपरसहीजबही ॥ सुधहोयक्याकेनीतबही ॥१९॥ हरिसेंआगपामागेशिरनाई ॥
पुनिप्रक्रमाकरिकेनाई ॥ स्वरगगयेसुदरशनऊं ॥ नंदकष्टसेंछुटेउतेऊं ॥२०॥ सोरठा ॥ ह
रिकेमहीमाजोई ॥ विस्मयपायेव्रजवासी ॥ अंबावनमेंसोई ॥ नीयमपुरणकरिकेपुनी ॥२१॥

भा॰द॰पू॰ चोपाई॥ मुदकृतकरतहृदमकिगाथा॥ व्रजमेंआवतगोपहीथाथा॥ अद्भुतपाक्रमिबलहरिज्ञि अ॰३४
॥१०७॥ उ॥ व्रजदाराकृतवनमेंयोउ॥२२॥ रमतहेरतियाकुंमेंताई॥ त्रियाकुंबलभदोउभाई॥ सुंदरगा
नकरतसबनारी॥ चंदनस्त्रजपटभूषणधारी॥२३॥ आशितारागगेआमांई॥ फुलेमल्लिकासुगं
धदाई॥ तिनसेंउनमतमधुकरहोई॥ कुमुदगंधकृतवायुसोई॥ याविधरतियांमुखलखिधिर
अनिवरवानतदोनुंहीविरा॥२४॥ सप्तस्वरमुरछनएकबेरा॥ गानकरतदोविरहीहेरा॥ सबज
नकेमनकानहीताई॥ मंगलरूपसोगितकहाई॥२५॥ सुनिकेगोपिकेचितजेहा॥ लिनभयेहेगी
तमेंतेहा॥ गिरतवसनशिरसेंफुलहारा॥ निजदेहकुंनजानतदारा॥२६॥ युंसुतेत्रकिरतदोउ
गानकरतघुमतसुंसोउ॥ कुबेरकुंकोअनुचरजेहा॥ शंखचुडआयेतेहा॥२७॥ दोहा॥
बलहरिदोउदेखिरहे॥ निशंककरकेजोर॥ सबगोपिकुंलेचले॥ उत्तरदिशामेंचोर॥२८॥ चोपाई
सिंहपकरिगोबोलहीजेसें॥ हृदयरामकहीपोकारितेसें॥ निजपरिग्रहलखिबलहरिदोउ॥
शंखचुडपिछेदोरतसोउ॥२९॥ नहीडररखोअभयवचकिना॥ द्रुमसालकेहाथमेंलिना॥ ॥१०७॥

अतिदोरकेपोंचेउताई॥ गुह्यककुंमेंअधमहीताई॥३०॥ कालमृत्युज्युंनजिकदोउ॥ देखिउ
दवेगपायेसोउ॥ त्रियाकुंतजीकेमृत्युडरकुं॥ जीवनइच्छाकरिभागतनेकुं॥ जहांजहांशंखचुडप
लाही॥ तहांतहांहृदयपाछेधाई॥ शिरकोरत्नहरनहरिराकुं॥ त्रियारक्षकबलगादरहेकुं॥३१॥
समर्थहरिपकरतशिगताई॥ दुष्टकुंकोशिरमलिकृतजाई॥ मुष्टिकुंसेंहरिलेतहीताकुं॥ हनी
शंखचुडकुंहृदयनेकुं॥ प्रकाशमानमणीजोराहा॥ त्रियादेखतदिनबलकुंतेहा॥३२॥ दोहा॥
इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेकु॥ शंखचुडकोवधकिनजो॥ भूमानंदकहेकु॥३३॥
इतिश्रीमहज्ञानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृतभाषायांचतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३४॥ दोहा॥ ह
रिवनगयेनवविनता॥ युगलश्लोककहीगाई॥ दिनकरतअतिदुखसें॥ पांशिसअध्यामांई॥१॥
चोपाई॥ शुककहेहृदयगयेचनजबही॥ गोपिकेचितरहेहरिमितबही॥ दरशनविनगोपीदु
खपाई॥ दिनगमावतलिलाहीगाई॥२॥ वनमेंकिनेहरिलिलाजेती॥ गोपिपरस्परकहतहीं
तेती॥ वामकपोलवामकरमिधारी॥ भृकुटनचावतवंसीहोवउारी॥३॥ कोमलकरअंगुलिउजो

उ॥ वेणुंछिद्रपरधारतसोउ॥ याविधवंशीबजावततबही॥ नभगतिकरतासिधकितबही॥ ४
वनितानिजपतिसहीतसबेहा॥ वंशीकोस्वरसुनिकेतेहा॥ विस्मितभईकामबाणविंधाई॥ ह
रिहीलखिचितरहिमोहाई॥ ५॥ निजनिजपतिढिगदेखलजाये॥ येरनपटकीनारिविसराये
हृदयविरहयाविधकोतेऊ॥ सहनहोवेक्युंअपनेतेऊ॥ ६॥ सोरठा॥ हेअबलासुनुएऊ॥ आ
श्चर्यअसअद्भुतहे॥ हरसुंनिरमलतेऊ॥ हसनिहरिकिसोहतसो॥ ७॥ चोपाई॥ व्रजमित्रीरह
हिवितरिग्याइ॥ आरतजनकुंप्रतिफरबदाइ॥ ऐसेनंदतिकेसुततेऊ॥ बनातबंसिकुंजब
तेऊ॥ ८॥ तबव्रजमेंवृषमृगगोजेती॥ सुनिवंशीचितहराइतेती॥ दुरहेउगारेनथहोई॥ घा
सकवलरहेदांतमेंसोइ॥ कांनउंचेउवाइएऊ॥ चित्रामणसुंजुधिरहेऊ॥ ९॥ हेसखिरूबुमोर
पिछगेरूं॥ नयेकुंपल्लवसुंकेटेरूं॥ मल्लसुंवेश्राअखाडामांइ॥ रमलहिबलगोपसुतसहाइ॥
१०॥ वेणुंसेंगोदेरततबही॥ सुनिनादनदिसुंसबतबही॥ भग्नगतिपदरतलेनचाई॥ वायु
पमायेनिजदिगनाई॥ ११॥ नहीपावतअपनिमाइतेऊ॥ बहुपुन्यनांहिकियेउएऊं॥ प्रेमतरं ॥१०८॥

गरूपभुजचलाई॥ निश्चलतलतिनकेथिरपाई॥ १२॥ दोहा॥ हेसखियोनिजगोपने॥ अतिवीर्य
किनुगान॥ नारायणसमअचलहे॥ लक्ष्मीकृतभगवान॥ १३॥ चोपाई॥ विचरतहरिवृंदाव
नमांई॥ चरतधेनुंगिरितटजाई॥ वोलातवंसिकुंसेंतबही॥ नामउचारधेनुंकेतबही॥ १४॥ त
बअतिभारसेंनमेडाली॥ प्रेमेहरखीततनुंविशाली॥ मोसबेवनलतानिजमांई॥ प्रसक्षहरिमु
कुचतआई॥ १५॥ मधधाराकुंवरषततहा॥ मुदआंसुकुमसुंचततेहा॥ इतिकहेदरशनजोगप
जेऊं॥ तिलकचंदनकेआरवेऊं॥ वनमालामेंलसितेजोउ॥ तिनकेगंधसेंमनहीसोउ॥ १६॥ अम
रगानजेसेस्वरकीना॥ सुनिआइजूतघभूपवीना॥ तबहीवेणुंहोठपरधारे॥ सरमेसारसहे
सअपारे॥ औरपक्षीसुंदरगितजेऊं॥ हरिमोरलिकोसुनीसबतेऊ॥ चितहरायेमिचेउनेना
मनवशाकरीबोलतनहीवेना॥ १७॥ प्रभुढिगआइभजतहेएहा॥ हरीगिनसुनितएयेतेहा
पक्षिकेचिततारोजेऊं॥ आश्चर्यवडदेखोउनेऊं॥ १८॥ सोरठा॥ हेसखिबलकृतश्याम॥ फू
लहारसेंनिरमेजो॥ कानकेभूषणनाम॥ तिनसेंविशालाहीताके॥ २०॥ चोपाई॥ गिरितटसुदे

 जूतविचरतएऊं ॥ हर्षउपजातनहीविष्टकुंतेऊं ॥ मोरलिमोहनवजातनजवही ॥ घनजानिवरहहृदय
 कुंतवही ॥ २१ ॥ अपराधकिन्होंकाचितलाई ॥ मंदगरजतमुरलिसंधाई ॥ पुनिनिजमितहृदयपर
आई ॥ करतछांयघनछत्रमाई ॥ करतसूक्ष्मनव्हरीवरषतसोउं ॥ इनिकहतदेखआश्चर्यकोउ
२२ ॥ हेजग्गीमतितवस्कृतविधनाना ॥ गोपक्रिडामिचतुरन्नायाना ॥ वेणुबजानमेंजानतएऊं ॥
निजबुधिसेंस्वरजातिजेऊं ॥ २३ ॥ अधरबिंबपरवेणुधारी ॥ ऋषभनिषादस्वरगाततउचारी ॥
तबअजभवइंद्रादिकदेवा ॥ मंद्रमध्यमतारहीभेवा ॥ २४ ॥ यहविधगीतसुनतजेहिओरा ॥ न
मतकांधरूचितततेहिवोरा ॥ स्वरजातिसुनिविवेकीसवही ॥ निश्चभेदनजानततवही ॥ अतिमो
हकुंपायेउएहा ॥ वोलतइसरिगोपिनेहा ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ चडगजतूलगतिकरतजो ॥ वज्रकमल
ध्वजचिन ॥ अंकुशअंकितचरणसें ॥ व्रजभूमिस्पर्धकिन ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ गोखुरसेंपिडाभूमिताई
सोपिडाप्रभूदेतसमाई ॥ वेणुंवजातेचालततजवही ॥ विलासकृतहेरतहसितवही ॥ २७ ॥ अरपत
कामअपनेउरमांई ॥ इनकिगतिनेकियेदुमसाई ॥ मोहसेंछुटेकैसाहीजेऊं ॥ गिरतपरनहीजानत

तेऊं ॥ २८ ॥ इनिकहेगौगणनेकाजा ॥ मलिकिमालारखतहिराजा ॥ कंबुकमलकासेंगोगनही
वल्लभगंधतूलसिस्रजवनही ॥ २९ ॥ निजभुजवल्लभसखाकेंदोउ ॥ स्कंधापरधरिगावतसोउ ॥ चा
लतवेणुंस्वरलेतवही ॥ चितहरखिनमृगालिकेंतवही ॥ ३० ॥ कालामृगकिनारिजेंतेहा ॥ गुणग
णसागरहरिकुंएहा ॥ पाइकेप्रभुहिगरहतनैसें ॥ घरआशगतती अपनेजेसें ॥ ३१ ॥ सोरठा ॥ इ
सरिकहेनिष्पाप ॥ जग्गोमतीतवसुतजेऊं ॥ भोगरासव्रजहिआप ॥ धरिगोपिकुंउछवद ॥ ३२ ॥
चोपाई ॥ आश्चर्यरुपवेश्याबनाई ॥ गोपगवनकुंसेंविराई ॥ प्रेमिजनकुंहर्षदएऊ ॥ जमुनामेंक्रि
डतहृदयमतेऊं ॥ ३३ ॥ तबमंदवायुशितलसुहाना ॥ अतिसुगंधिचंदनसमाना ॥ हृदयकुंकुंमुद
दायकतेहा ॥ चालअनुकुलवायुएहा ॥ ३४ ॥ गंधर्वआदिबंदिजनजेता ॥ स्तुतिअरुगितबाजी
तरतेता ॥ सुमनव्हरिकरीसवएहा ॥ करतउपासनहृदयकितेहा ॥ ३५ ॥ आनतहृदयव्रजमेंलखी
नारी ॥ मुदकृतबोलतपदमतचारी ॥ व्रजजनअरुगौकेहीतकरता ॥ पुनिगोवर्धनगिरिकेंधर्ता
३६ ॥ त्याहिदेवनेमगमांई ॥ वंदनकिनेचरणमुदपाई ॥ गितकृतवेणुंरहेउधारी ॥ किरतीगान

हिगोपवृंदारी ॥ ३७ ॥ गोरजजुतस्त्रजतधारिरहेहेंकुं ॥ देवकीउदरनिवासितेहेंकुं ॥ ज्ञातिज्युंसायंकालेंआ
ये ॥ सबगोंआगेकरकेलाये ॥ ३८ ॥ श्रमजुतननिजमुखकोंनिबनाई ॥ निजजनकेदृगकुंमुददाई
इनकेसकहरदअपनेजोउं ॥ आयेमनोरथपुरणसोउ ॥ ३९ ॥ इन्निकहेकामसेंविकलनेनों ॥ सकठ
रकुंदेतमानसुविना ॥ वनमालिअरुवदनहेतोउ ॥ पितबोरसमसोहतसोउ ॥ ४० ॥ कोमलक(र)
पोलकेपरआई ॥ कंचनकेकुंडलसकहाई ॥ वडगाजतूल्यहिविहारजाको ॥ निरमलनृशिसमसु
खहेताको ॥ सायंकालेचंदज्युंआई ॥ दिनवियोगतापदेतमिटाई ॥ ४१ ॥ शुककहेविरहकेडुख
मांइ ॥ गातलिलाहरिकिसकखदाई ॥ चितमनरखीहृदयमेंएहा ॥ दिनमेरमतउछवजनतेहा ॥
४२ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमितेहुं ॥ वृंदावनक्रिडा[illegible] ॥ वृंदावनक्रिडा
किये ॥ भूमानंदकहेहुं ॥ ४३ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांपंचत्रिंशोऽ
ध्यायः ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ अरिष्टहनेनारदसें ॥ वलहरिकुंकंसचिन ॥ पठवायेअक्रुरकुं ॥ छत्रिस
अध्यायकिन ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुकजीकहेवृषकोरुपधारी ॥ आतअरिष्टासरव्रजताही ॥ वडे

देहकुंरखुरकुंमेंतेहुं ॥ खनतभुमिकंपावतएहुं ॥ २ ॥ कविनभयानकशब्दउचारी ॥ पगसेंभुमि
देतउखारी ॥ पुंछउंचोकरिसिंगलगाई ॥ उखारतनदिकेतरधाई ॥ ३ ॥ किंचीतछानमुत्रसोकरही
कवीरनेनमदकुंनहीभरही ॥ कवीनशृंगकुंसेंगोनारि ॥ पंचषटमासेगर्भगिरारी ॥ ४ ॥ चतुरमा
सकेगर्भहिजोउ ॥ भयसेंस्त्रविजातहेसोउ ॥ अरिष्टकुंटगिरिज्युंमानि ॥ वदरावेगनतलवर्षानी
५ ॥ तिखेशृंगजुतअरिष्टआवा ॥ गोपरुगोपिसबडरपावा ॥ पशुरपायेतुंदेखिनाई ॥ व्रजकुं
सेंसबगयेउपलाई ॥ ६ ॥ तबव्रजकेसबनरअरुदारा ॥ कृष्णकृष्णमुखकरीपोकारा ॥ रक्षाकरो
हमारिनाथा ॥ पातमरणहीसबव्रजसाथा ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ हरिभागतगोकुल ॥ तिनकुंदेखहीह
ष्णसो ॥ बोलतमंगलमूल ॥ मतिडरमतिडरकहीबांनि ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ आश्वासनाकरीहरिताई
वृषभासुरकुंलेनचोलाई ॥ हेमंदडष्टअंतरहीनेरा ॥ गोपगोकुंक्युंडरातदेरा ॥ ९ ॥ तेरोबलअमहं
कारहीतोउं ॥ ममदिगआउहनुअबसोउं ॥ युंकहीनिजजनकेडुखहरता ॥ भुजपरभुजकुंताडन
कर्ता ॥ १० ॥ करशब्दसेंवृषकोपाई ॥ सर्पदेहसमनिजभुजताई ॥ निजसखाकेरखेभेडारी ॥ गादरहे

भा॰द॰पू॰ पुनिकुंजविहारी ॥ २१ ॥ युंहरिनेकोपायेतबही ॥ खुरसेंअवनिखोदततबही ॥ ऊंचपुछउठाइकेंअ अ॰२६
॥१११॥ ऊ ॥ बदरेकुंभ्रमावततेकुं ॥ २२ ॥ करिक्रोधहरिदिगधाये ॥ शृंगअग्रणियुंआगेकरीआये ॥ कवो
ररुधिरतूंस्परगताके ॥ कराक्षकरीबंकिदेखनिताके ॥ आवतईद्ववनकिमाई ॥ श्रीहरिमकेसन
मुखधाई ॥ २३ ॥ दोहा ॥ शृंगपकरिप्रभुताहीके ॥ पिछेदेतहटाइ ॥ बडगतजंतुओरगजकुं ॥ अव
रउगलांताइ ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ पिछेप्रभूनेदिनेबहाई ॥ पुनिउवसनमुखआयेधाई ॥ भि[illegible]जगाई
सबलनुंस्वेदमाई ॥ अतिस्वासछोरतमुखताई ॥ २५ ॥ क्रोधव्याप्तवृषभकुंजोई ॥ तिनकेशृंगपकरी
हरिसोई ॥ भूतलपरपटकिकेताई ॥ तिनकेपरनिजजानुंलगाइ ॥ २६ ॥ निचोवृतनिलेपरमाई ॥ शृं
गनिकासीमारतताई ॥ अतिपिडाननुंपाइकेएकुं ॥ रुधिरवमतमुखकुंसेंतेकुं ॥ २७ ॥ छाणमु
त्रकरिपरकृतपावा ॥ गयेजमपुरिमिजीवगमावा ॥ मुनिइंद्रादिकफुलवर्षाई ॥ स्तुतिकरतश्री
हरिमकिआई ॥ २८ ॥ बउकुटकृतअरिष्टहीमारी ॥ स्नवनकरतनिजज्ञातिसारी ॥ बलकृतवृंज
मेंपेवततबही ॥ गोपिद्रगउछबपावततबही ॥ २९ ॥ सोरठा ॥ अद्भुतकिनेचरित ॥ वृषभहनेत ॥१११॥

चत्रजतचासि ॥ देखिहरिमनिजमित ॥ परमआनंदपावतही ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ देवकृषीसमर्थना
रदआई ॥ कंसकुंकुंसबदेतसुनाई ॥ देवकीगर्भअष्टमिकेस्या ॥ जसोदाजनिकिहैयुंगमा ॥ जशो
मतिकेसुतहरिमतोउं ॥ देवकिजीकेपुत्रहैसोउ ॥ ३१ ॥ रोहिणीसुतबलदेवजीजेकु ॥ सातमेसुत
देवकीकेनेकुं ॥ तुमसेउरिवसुदेवजेहा ॥ निजमितनंदघरुपठइतेहा ॥ ३२ ॥ नारेचाकरहनेहि
जेता ॥ सोनुविरऊंनेसबतेता ॥ नारदवचनसुनिकंसकराला ॥ चलईद्रिकरिक्रोधविसाला ॥ ३३ ॥
वसुदेवहननकिईछाकिना ॥ तिक्षणतरवारहस्तमेंलिना ॥ नारदकहेकंसतुमतोउं ॥ वसु
देवकुंहनोगेतोउं ॥ ३४ ॥ बलहरिभागजायगेंतबही ॥ देवसुदेवकुंबेरिअबही ॥ नारदवचनसु
निकंसप्रवीना ॥ वसुदेवसुतमृत्युनिजचिना ॥ वसुदेवदेवकिकुंजोउं ॥ लोहबेरिमेंडारतसोउं
३५ ॥ दोहा ॥ नारदगयेपुनिकंसही ॥ केसिअसुरकुंबोलाइ ॥ पठायेव्रजमेंमारन ॥ बलहरिमकुंता
इ ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ चालतोचालमुष्टिकचाणूरा ॥ अमासमावतदरेशिहजूरा ॥ कंसकहेबलहरिम
हिजेकुं ॥ मोकुंमारनहाररहेतेकुं ॥ ३७ ॥ चाणूरमुष्टिकसुनकुंभाई ॥ वसुदेवसुतदोहेव्रजमांई ॥

भा·द·पू· निश्चैममम्रत्युहेतऊं॥नारदनेकहीगाथानेकुं॥२०॥याकारणतुमइनकुंलाई॥मल्लसिलासेंमारकुं अ·३६
॥११२॥ नाई॥मल्लअखाराकेचहुंओरा॥रचोमांचतुमजाईबहोरा॥तापरदेखअरुपुरजननगरी॥देखो
हिजूधतुमारोभारी॥२९॥हैमावतरंगद्वारिनाई॥गजकुवलयापिरकुंलाई॥बलहरुहमममशत्रुहेतो
ऊं॥मारउगेतुमगजसेसोउ॥३०॥अश्वमासतुमचौदशकेदिना॥धनुरयागकुंरचोप्रवीना॥यागमें
भूतपतिकेकाजा॥हनोपवित्रपशुहीनाजा॥३१॥शुककहीआपपासवकुंदिना॥कार्यसिद्धिनिज
जानप्रविना॥जउश्रेष्ठअक्रूरबोलाई॥करसेंकरपकरिकहीनाई॥३२॥दोहा॥कारनकरोमेरोतु
म॥आश्रयरेकुंमेंतोइ॥इंद्रचीहमुकुंआश्रयरी॥कारजकरेजुसोई॥३३॥चोपाई॥नंदव्रजतमिवसुदे
वकेजोउ॥सूतहेताओरथकुंसेसोउ॥विद्युआश्रितदेवनेएकुं॥मममृत्युरुपसरजेउनेकुं॥
३४॥भेरननंदादिगोपसहीता॥बलहरुहमकुंलाओशिप्रिता॥लाओतुमतबमेंमारुंभाई॥काल
तुल्यगजकुंसेंनाई॥३५॥गजसेंजोबचेगेजबही॥चाणुरमल्लसेंहनेगेतबही॥मरेबलहरुहमकुं
लखिएकुं॥तपेगेवसुदेवआदितेकुं॥३६॥वृष्णीभोजदासाहैकाई॥पुनिहममारडारेगेताइ॥ ॥११२॥

वृधममपिताउग्रसेनाई॥राजकरनइछहीउरमांई॥तिनकेबंधदेवकजोउं॥ओरममशत्रुहनेग
गेसोउं॥पुनिशत्रुहिनपथविग्रहा॥निष्कंटकहोवेंगेतेहा॥मोरससुरजरासंधहेकुं॥द्विविदमीत्र
हमारहेतेकुं॥३८॥संबर्वाणनरकासुरजेहा॥मोरेसुहृदहेसबतेहा॥तिनसेंसुरकेपक्षिहनाई
सबभुमिभोगेगेउभाई॥३९॥सोरठा॥जानिकेअसगाथ॥धनुर्यागपुदिखनही॥देखिजाउतुमस
साथ॥वसुदेवकेसुतकुंकु॥४०॥चोपाई॥शुककहेवचसुनिअक्रुरा॥कहेकेसकुंसुनकुंसु
रा॥किनेतुमनेनिकेवीचारा॥सोतवमृत्युमेटनहारा॥४१॥सिधिअसीधिहोनितेहा॥तिनके
फलदेवहेतेहा॥बडेमनोरथजनसबधरही॥ताकोनाशदैवसोकरही॥४२॥हर्षशोकपाव
नजननेकुं॥तदपितवआग्याकरुंमेंकुं॥शुककहेकंसआग्याएकुं॥अक्रुरकुंकरिगयेउगेकुं॥
पुनिअक्रुरमानिवचराहा॥सोभिगयेउवकेनिजगेहा॥४३॥दोहा॥इतिश्रीमतभागवत॥द
शमस्कंधमिजेकुं॥कंसपठयेअक्रुरकुं॥भूमानंदकहेकुं॥४४॥इतिश्रीसहजानंदस्वामीशि
ष्यभुमानंदकृतभाषायांषटत्रिंशोध्यायः॥३६॥दोहा॥हनेकेशिरुव्योमकुं॥नारदकिनेउ

आई॥ होचनहारिगाथसब॥ सादत्रिशन्अध्याई॥१॥ चोपाई॥ शुककहेहेकंसकेशिपठाये॥ हय
रूपधरिसोव्रजमेंआये॥ खुरहुंसेंभूमिदेतविदारी॥ मनसमवेगकुंसेंगतिकारी॥२॥ केशावाली
सेंबदरधुनाई॥ औरविमानसहीतनभमाई॥ हयनातिकोत्राहुतवारी॥ सुनीउरपावतनरअरु
नारी॥३॥ करतकुंगोरहहगाटहीएकुं॥ हनतबदरकुंपुछसेंतेकुं॥ जरनहहदमसंगडुंदतआई॥ ह
रिनिकसेताकेरिगजाई॥४॥ बोलातकेशिकुंप्रभुतवही॥ सिंहनादकरतसोइतवही॥ जरिखह
रिकुंमुखफारिधाया॥ जुंनभकुंगिलनेकुंचाया॥५॥ अतिअमर्षिअजीतकेशी॥ बकुप्राक्रमी
भयंकरवेषी॥ पिछलेपगाकिलातचलाई॥ कमलनेनहदमपरजाई॥६॥ सोरठा॥ सोपगाकुंवंचा
इ॥ प्रभुपकरितेपगताके॥ रिषकरिताहीभमाई॥ धनुषत्रातकुरफेंकदिये॥७॥ चोपाई॥ बडे
नागकुंगरुडजेसें॥ डुरखहाईगाटतनेसें॥ पाईचेतनाकेशितेकुं॥ उठेतक्रोधकरिपुनितेकुं॥८॥
होरत वेगकुंसेंमुखफारी॥ तिनकेमुखमिदेतसंचारि॥ ड्योकरहसिकेहरिजेसें॥ अहीप्रवेश
हिबिलमेंजेसे॥९॥ हरिभुजतनमलोहसमसोई॥ गिरनदंतकेशिकेजोइ॥ सोभुजकेशिकेअंगमांई

बढतजपेक्षितरोगकीन्याई॥१०॥ घुसभुजरुधेवायुजबही॥ चहुंपगपरकेस्वेदकतलबही॥ ब
हिनिकसीगयेद्रगहीजाके॥ लिंडोनिकसीजातहेताके॥ प्राणरहीतकेशिसोहोई॥ गिरतहीभु
तलकेपरसोइ॥११॥ महाभुजयत्नबिनअरीमारी॥ पकीकाकडीफलअनुसारी॥ केशिकेत
नुसेंकरतेकुं॥ लेतनिकासिहदमहीएकुं॥ जरिखइंद्रादिकविस्मयपाई॥ करतकुमनरूरिप्रभुप
रआई॥१२॥ दोहा॥ कहीनारदवचकंसकुं॥ पुनिहहदमदिगजाई॥ मिलिएकांतमेंकहतही
गाथासवहीसुनाइ॥१३॥ चोपाई॥ हेहदमहेअप्रमाणस्वरूपा॥ अनंतमहिमाजगकेभूपा॥
सकललोकआधारनमामी॥ जादवमीतवश्रेष्ठहोस्वामी॥१४॥ सबजिवमेंतुमआपरहाई॥
काष्टहुंमेंअगनिकिन्याई॥ जिवकुंदरसत्रानहोतनतेरा॥ सबबुधिसाक्षिइशहोमेरा॥१५॥ स्व
रूपसेंसबप्राणीकेकुं॥ आश्रयसमसंकल्पहीजेकुं॥ सर्वनियंतातुमनेएहा॥ निजमायासेंर
चिगुणजेहा॥१६॥ जक्तकीउतपतिपालननासा॥ करातहोतुमतिनगुनपासा॥ धराभाररूपन
पहीजेता॥ देत्यरूपप्रमथराक्षसतेता॥१७॥ तिनकुंमारनतनमहितेरा॥ धर्मकिसेतुरक्षणदेरा

केशिकुंतुममारेउजेऊं॥आनंदवरषयेहमकुंतेऊं॥१८॥शत्रुसंनिकेशिकोदेवा॥स्वर्गततीगयेर
क्षितरेखवा॥चाणुरमुष्टिकऔरमलजेऊं॥मावतकंसहनोगेतेऊं॥१९॥परस्युंदिनहमदेखेगेऊं
शंखकालयवनमुरदानवतेऊं॥नरकासुरवधकरोगिजेहा॥पारिजातहरोगेतेहा॥२०॥इंद्रपरा
जयकरोगिजवही॥निजप्राक्रमसमूल्यसेतवही॥नृपकन्यापरनोगेतेऊं॥अघस्कंनगमोक्षद्वार
कामेऊं॥२१॥जाबवतिक्रतस्यमंतकलाई॥महाकालपुरनिजधामतजाई॥मृतपुत्रब्राह्मणकेजे
ऊं॥लाऔगिवांसुपिछेतेऊं॥२२॥पौंड्रकवधकाशिकुजारी॥दंतवक्रकुंकुंतुममारी॥युधि
ष्ठिरकेराजस्रयमांइ॥शिशुपालवधकरोगेजाई॥२३॥सोरठा॥वसिद्वारकामांई॥औरचरीत
तुमबऊंकरही॥देखेगेहमताई॥गावनजोगपकवीऊकुं॥२४॥चौपाई॥कालरूपतुमसभुभार
हरता॥सारथिऔरऊनकेसुभकर्त्ता॥वकुअस्रोहिलोहनोगिस्वामी॥देखेगेहमअंतरजा
मि॥२५॥युंसबगाथाहरिकुंसुनाई॥नमनकरतनारदपुनितांई॥केवलज्ञांनसुरतितोनें॥पा
इअर्थेनिजस्थितिकरिमोउ॥२६॥सततसंकल्पनिजतेजसुतेऊं॥मायाप्रवाहमीटायेएऊं॥अ ॥११५॥

निरैश्वर्यक्रतलखितोई॥तवशरणेआयोमेंसोई॥२७॥सर्वनियंतास्वतंत्रहोई॥मायासेंवऊभे
दकिनजोई॥अबक्रिडालियुंनरतनुंधारी॥सात्वतवृष्णीतडकुलचारी॥२८॥शुकककहेभऊमें
उत्तमजोनें॥नारदहरिकुंनमिकेसोउ॥हरिनेआग्यादिनेजवही॥स्वर्गचेसवक्रतगयेजतवही
२९॥दोहा॥जुधमेंहरिकेशिहनि॥व्रजकुंसुखपदजोनें॥प्रितिक्रतसबगोपसें॥धेनुंचरावत
सोउ॥३०॥चौपाई॥एकदिनगिरिकेतटगाई॥चारतगोपसबेमुदपाई॥चोररूपालकोमिषलें
एहा॥सिंहमेंडक्रिडारचिनेहा॥३१॥काऊचोरकोपालकहोई॥कोभेडहोइक्रिडतसोउं॥मयसु
तव्योमासुरहीभारी॥आयेवेशगोपकोधारी॥३२॥चोरभयेथेलरकाजेऊं॥तिनमेंमिलिगये
आइलेऊं॥भेडभयेथेलरकाजेना॥चोरसुंपकरिगयेउतेना॥३३॥गिरिगुहामेंबालकुंडारी॥
गुहामुखपरधरिशिलाभारी॥चारपांचअवशेषरहेऊं॥पुनिप्रभुसंतसरणदतेऊं॥३४॥व्यो
मासुरकुंकोक्रतजानी॥गोपकुंपकरिजातकुमानी॥ताकुंपकरतजोरजनाई॥सिंहपकरहीना
रसुंधाई॥३५॥तवव्योमगिरितुल्यहोई॥निजरुपअसुरभयेउसोई॥हरिकरकुंसेंछुटनेचाई

आतुरछुरनसमर्थनांई ॥ ३६ ॥ सोकरसेंपकरेहरिजबही ॥ भूतलपरपरकिकेतबही ॥ स्वरगमेंदे
॥११५॥ खरहेहीदेवा ॥ हनतपसुकिम्याकृततरवेवा ॥ ३७ ॥ पुनिपुहाकीश्रिलाहरितोरी ॥ दुखसंगोपछो
रातबलजोरि ॥ स्तुतीकरतहीगोपअरुदेवा ॥ ऐसेगोकुलमेंततरवेवा ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीम
तभागवत ॥ दसमस्कंधमितेकुं ॥ केशिव्योमासुरहने ॥ भुमानंदकहेकुं ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमहज्ञा
नंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ ध्यानकरतगोकुलग
ये ॥ अक्रूरकुंविरहेतें ॥ किनसनकारलईगेहमी ॥ अष्टत्रिंशमेंसोत ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहेअ
क्रूरमधुपुरमांई ॥ रातिरहिभोरमेंरथलाई ॥ महाबुधिसोरथपरगारी ॥ चलेगोकुलपतीतनका
रि ॥ २ ॥ बडभागीचलेमगमेंजबही ॥ कमलनेनहृदयमेंतबही ॥ परमहीभक्तिपायकेएकुं ॥ ऐसे
मेंबिचारकरतहीतेकुं ॥ ३ ॥ ऐसेमेंनेक्यापुन्यकिने ॥ कोईपरमतपहमकरदिने ॥ दानदियेजुपा
त्रकुंजबही ॥ जासेंहरिनिरखेंगेअबही ॥ ४ ॥ उत्तमकिरतिहृदयकोंतोउं ॥ दुलभदर्शममवित्रो
कुंसोउ ॥ वेदउचारणशूद्रहिजेसें ॥ दुर्लभहममानतहेतेसें ॥ ५ ॥ मोयअधमकुंहृदयहिकेरा ॥ ॥११५॥

दरसनहोवेगेअसफेरा ॥ नदितानेदारूतृणजेसे ॥ तामेकोउकरततहीनेसें ॥ ६ ॥ कालनदितेता
नेउजेता ॥ तामेंकोउकपातसुंअंता ॥ अबमेरेगयेपापपलाई ॥ निश्चेजन्मकुंकोफलपाई ॥ ७ ॥
सोरठा ॥ ध्यानकरनकुंजोगप ॥ चरनकमलबडजोगिकुं ॥ हममेंटनभवरोग ॥ नमस्कारकरुंगीअ
बही ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ अतिरवलकंसकुंनेअबमोई ॥ किंनेअनुग्रहअतिबडसोई ॥ इनुंनेप्रबे
मोकुंजबही ॥ चरनकमलनिरखेंगेतबही ॥ ९ ॥ भुभारहरनेप्रगटेजोउं ॥ तिननखमंडलकांति
सोउं ॥ ताकेध्यानसेंभवअंधकारा ॥ अंबरिषआदिनरेअपारा ॥ १० ॥ अजशिवादिकपुजत
जोउं ॥ लक्ष्मीपुजतचरनहिसोउं ॥ पुजतभक्तसहीतमुनिजेता ॥ निजसेवकसबगोपहीतेता
११ ॥ गोपिछेगतिकरनपदजोउं ॥ गोपिकुचकंकुरंगीतसोउ ॥ असपदनिरखिहृदयकेजोउं ॥
पुनिनिश्चेमुखनिरखेंगिसोउ ॥ १२ ॥ जमणामृगहोवतहेजबही ॥ सुंदरकपोलनाकजुतसब
ही ॥ मंदहसनिजुतदृष्टीजामें ॥ लालकमललोचनतामें ॥ १३ ॥ वंकेकेशअलकुकेदेखआई ॥ मु
खपंकजपरस्हेउछाई ॥ भुभारहरनमनुषतनुहोई ॥ अतिसुंदरशोभाजुतसोउ ॥ १४ ॥ ताकोद

भा॰द॰पू॰ र्होहोवेगेअबही॥ फलपावेगेहमकोलबही॥ कार्यकारणकुंहमजेकुं॥ केवलहमसेंकरतही अ॰२८
तेकुं॥१५॥ तोभिनिरअहंकारीहोही॥ निजतेजकुंसेंमेटनसोही॥ निजजनकेअज्ञानहीभेदा॥
॥११६॥ अरुमोहकोकरतहीछेदा॥१६॥ दोहा॥ निजहमसंकेनिजमायाने॥ रचेविराटहीमांइ॥ प्राणबु
धिइंद्रिकृततीवही॥ जाननहरिकुंताई॥१७॥ चोपाई॥ गोपिकेघरुमिसकन्याई॥ सकलजिव
जाननहेजाई॥ सबजनअघहरमंगलकारी॥ जन्मकर्मगुणसहीतबचारी॥१८॥ याबानिस
बजकजीवाई॥ करतपवित्रदेतसोभाई॥ हरिगुणजन्मकर्मविनुबानि॥ अलंकारअरुरस
कुंकीखानि॥ सोबानिसोहतनहीकेसें॥ परभुषणकृतसबसुंतेसें॥१९॥ निजरचेवर्णा
श्रमकिसेतू॥ बडेदेवतिनकेपालनहेतू॥ सोइदेवकुंकुंसखकारी॥ जदुकुलमेंभयेअवता
रि॥२०॥ निजजशविस्तारतजगमांई॥ सर्वनियंताहमकहाई॥ जगमंगलरूपजशहीजोतें
देवइंद्रादिकगावतसोउ॥२१॥ बडसंतकुंकेगतिरुपजेकुं॥ ब्रह्मादिककेगुरुहीतेकुं॥ त्रिलो
कमेंरूपबेनकहाई॥ जनहमकुंबरउछवराई॥२२॥ सोरठा॥ श्रीकुंइछितरूप॥ निश्चेहमदे ॥११६॥

भा॰द॰पू॰ हमजोउं॥ परमआनंदपावेसोउं॥२१॥ अतिवल्लभनिमज्ञानिकहाई॥ हरिबिनइजोदेवजसनांइ अ॰२८
॥११७॥ असविधमोकुंजानिनाथा॥ मिलेंगिबडभुजसेंभरिबाथा॥२२॥ तबममनतुंअतिपवित्रहो
हि॥ कर्मबंधनसेंछुटेअबसोही॥ हरिअंगसंगहोमेजबही॥ जोतिहमनमेगेउ तबही॥२३॥
तबबकुंकिरनिवेनहरिमोई॥ हअकुरहेतानकहीसोई॥ बोलावेगेमोकुंजबही॥ सफलजन्म
होवेगेतबही॥२४॥ अतिबडेश्रीहमहिजोउ॥ तिनकुंआदरदेतनसोउ॥ असेनरकेजन्म
हिताई॥ ताकुंधिकधिकयातगमांइ॥२५॥ सोरठा॥ हमकुंकुंनहीकोउ॥ प्रियअप्रियहो
तकारी॥ द्वेषकरनजोगपसोउ॥ उपेक्षाकियेजोगपनही॥२६॥ चोपाई॥ नरविनिजभक्तनकुं
भजही॥ कल्पवृक्षसुंतैसेरजही॥ जइउत्तमहरिकेबडभाइ॥ बलकुंमेंजबनमेगिजाई॥२७॥
तबमोकुंमिलिकेहसीरकुं॥ करसेंममकरपकरीतेकुं॥ लेजावेगेनिजघरुमांई॥ करेगेसतका
रपुजावनाइ॥ निजसकदइखकंसंसेंजेकुं॥ मोकुंपुछेगेसबतेकुं॥२८॥ शुकककहेश्वफल्कसुत
मगमांई॥ हमकुंचितवततउरमिलाई॥ रथसेंगोकुलआयेजबही॥ रविअस्ताचलपायेतबही ॥११७॥

खेगिसो ॥ भोर भई मोयत्न अनुंप ॥ कमदायक सुंदर हीतो ॥ २३ ॥ चोपाई ॥ बलहरिकुं देखे गिज
वही ॥ तुरत उतरि रथ कुंसे तवही ॥ कुंगलवरि के पद कंजमांई ॥ नमस्कार करुं गीहमताई ॥ २४
पुनि तिनके मित गोपकहाई ॥ तिनकुं नमे गिरहम मुद पाई ॥ प्रभु के पद बरु यो गिजे कुं ॥ निजआ
तम प्राप्ति लिये तेकुं ॥ केवल बुधि में धारहीतहा ॥ सोपद कुं नहीं देखत तेहा ॥ २५ ॥ पदमुलमें
हरि गिरे गिज वही ॥ हस्तकमल शिर धरे गित वही ॥ कालसर्प वेग कुंसे जेता ॥ इरि त्रारण कुं
दुःखत केता ॥ २६ ॥ मुमुक्षु जन कुं कुं करजे कुं ॥ अभय कुं कुं दायक हे तेकुं ॥ कर में पुजन दइ वही
करेसा ॥ इंदु भये त्रिलोकु के इत्रा ॥ २७ ॥ पुंकज गंध सम हस्त हिजो उ ॥ पत्नी करि चित्र तदार कुंसो
जें ॥ रासक्रीडा को श्रम हिजे नो ॥ जोकर सें मिटात हे ते नो ॥ २८ ॥ दोहा ॥ कंस पगाये ज्ञात में ॥
कंस दुत्त होतोई ॥ अरि दुत मोये नता ने हि ॥ मनकुं में हरि सोई ॥ २९ ॥ चोपाई ॥ सर्वज्ञान म
म चित्त अरुं बारा ॥ ज्ञान रूप दृग स्कंदे खहीसारा ॥ गिरे गे पद में जब करजोरि ॥ कृपा अमृत
भिजे दृग दोरि ॥ ३० ॥ हरि मोकुं हरेगे जबही ॥ सकल पाप मम जले गित वही ॥ नित्रां करों वेगे

३९ ॥ इंद्रादि लोकपाल हि जेता ॥ धरत मुकुट में पगरज तेता ॥ सो हद्म के पद ब्रजमांई ॥ देखत अ
कुर अतिहरखाई ॥ ४० ॥ यव अंकुशाकमल कुल जेहा ॥ भुमिके भूषण रूप हे तेहा ॥ सोपद केदर
शन कुं पाई ॥ अक्रुर के उर मुद न माई ॥ ४१ ॥ अति सें भ्रम वश आये तवही ॥ खडे रोम भये तनु में
सवही ॥ जलधारा लोचन में लाई ॥ रथसे कुद धरा पर धाई ॥ पद पंक्ति में लोरत ताकुं ॥ आश्चर्य नु
अति मानि तेकुं ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ श्रुकरु हृदे हधरनी वही ॥ तनु धरे कोफल किन ॥ कंसकुं के सं
देस में ॥ अक्रुर नें जो चिन ॥ ४३ ॥ चोपाई ॥ सुरति के दर्शक रिके जेहा ॥ तनुं फल पाये अक्रुर जी ते
हा ॥ दंभमय अशोक नजी रजमांई ॥ जोरे सोन रतन फल पाई ॥ ४४ ॥ पुनि ब्रज में अक्रुर जी तेकुं ॥ ह
रि बलकुं कुं देखन ते कुं ॥ गौदोवन लिये शिघ्र चारी ॥ हद्म पित पट बलसांम धारी ॥ ४५ ॥ सरद
कंज सम लोचन या के ॥ किशोर वयहि भये तुता के ॥ हद्म सांम वल श्वेत सरिरा ॥ श्री के गेह रूप
वरु भुज धीरा ॥ ४६ ॥ सुंदर वर सुंदर मुख ताके ॥ छोटे गज सुं पाक्रम ताके ॥ ध्वज वज्र अंकुशा कं
ज ते कुं ॥ चरण कमल में चिन्ह ही तेकुं ॥ ४७ ॥ सोपद सें ब्रज भुमी सुहाई ॥ बरु मन दयाजन हसनी

भा·द·पू· ताई ॥ हास्यसहीतहेरतहेदोउ ॥ रुचिरउदारक्रिडाकरसोउ ॥ ४८ ॥ रत्नकिरिटअरुपुष्पहिहारा ॥ चंद अ·३८
नचरचितअंगकुमारा ॥ स्नानकरिनिरमलपटधारी ॥ पुरुषोत्तमहेजनअघहारी ॥ ४९ ॥ सोरठा ॥ स
॥११८॥ बकेआदिजगतात ॥ जगहेतुभूभरहरता ॥ प्रद्युमनकृतसाक्षात ॥ बलकेशवपुगरेहिसो ॥ ५० ॥
चोपाई ॥ निजकांतिसेंदशदिशाजेहा ॥ देतप्रकाशबलहरितेहा ॥ कंचनअरुमरकतगिरिजेसें ॥ रू
पागिरीरिगत्रोभहीजैसें ॥ ५१ ॥ असविधबलहरिदेखअक्रुरा ॥ स्नेहसेंविकलभयेचकचुरा ॥ रथ
सेंकुदकेचरनमिंजाइ ॥ गिरतअक्रुरदंडकिन्याइ ॥ ५२ ॥ हरिदर्शसेंआनंदपावा ॥ आकुलहगजल
अतीवर्षावा ॥ खडेरोमअरुभयेशरीरा ॥ गदगदकंठकछुकहतनगिरा ॥ ५३ ॥ पुनिप्रभूअक्रुरको
हृतजानी ॥ चक्रचीह्नअंकितनीजपानी ॥ तासेंपकरिकेप्रभूएकुं ॥ मिलतहीअक्रुरनिजकुंतेकुं ॥ ५४
निजकुंनमहीजननीकोउ ॥ तापरअतिदयालुहेसोउ ॥ बडमनजूतसंकर्षणजेकुं ॥ नितकुंनमतअ
क्रुरहूंतेकुं ॥ ५५ ॥ मिलिकेनितकरसेंकरदोउं ॥ पकरिअक्रुरजिकेसोउ ॥ हृदमसहीतबलदेवजीता
इ ॥ अक्रुरहिलेगयेघरमांइ ॥ ५६ ॥ पुनिबलनेअक्रुरकुंजबही ॥ क्षेममकुशलपुछेउतबही ॥ पुनि ॥११८॥

उत्तमआसनबेठाई ॥ विधिसेंपावपखालिताई ॥ ५७ ॥ मधुपर्कादिकपुजालाई ॥ करतसमर्पण
अक्रुरलाई ॥ पुनिबलनेआदरसेंदिना ॥ अतिथिकुंकुंगायनवीना ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ पगचंपिकरि
अक्रुरकी ॥ पवित्रभोजनलाई ॥ प्रद्यासहितअक्रुरकुंकुं ॥ बहुगुणयुतजिमाई ॥ ५९ ॥ चोपाई ॥
असविधसनमानकिनेजबही ॥ अक्रुरकुंनंदपुछनतबही ॥ अतिनिरदईकंसजिवतजबलुं ॥ कै
सेंतुमजिवतहोतबलुं ॥ ६० ॥ कसाइचारनहारहीजाके ॥ भेडकुंकुंसुंतुमहोताके ॥ उदरभरखल
कंसहीजोउ ॥ पोकारतनिजभग्निकेसोउ ॥ ६१ ॥ सबबालककुंमारनमोजबही ॥ तबकुशलकाप
छेतबही ॥ अक्रुरतिहारोजिवनजेकुं ॥ हमदुर्लभजानतहेतेकुं ॥ ६२ ॥ मधुरवचसेंनंदनेजबही ॥
अक्रुरनेसतकारकिनतबही ॥ सुनिनंदकेवचअक्रुरजोई ॥ मगकोश्रमनजतहिसोई ॥ ६३ ॥
दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमिजेकुं ॥ अक्रुरगोकुलमेंगये ॥ भूमानंदकहेकुं ॥ ६४
इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभुमानंदकृतभाषायांअष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ शुकक
हेपलंगपरबैठेकुं ॥ बहुमानदिनबलहरिनेएकुं ॥ मगमेंकिनेमनोरथजेता ॥ अक्रुरजीपायेसब
मथुरामेंगयेहमही अक्रुरजमुनामांई विष्णुलोककुंदेखत उगनचालिसअध्याई १ चोपाई

तेता॥२॥श्रीनिकेतप्रसनभयेजबही॥आपापवस्तनहीकछुतबही॥तदपिहरिकेभक्तहेजेहा
कछुवस्तनहीइछततेहा॥३॥पुनिसंध्यासमेजिमिहरिजेऊ॥पुछतअक्रुरजीकुंतेऊ॥नितसकह
हमेकंसकोजेोई॥ब्रतांतइछितपुछतसोउ॥४॥हमकहेअक्रुरजीताता॥आयेतुमसभहोसा
क्षाता॥सहृदसबंधिहांतिममजोई॥सकविअरूआरोग्यहेसबसोउ॥५॥कुलमेरोगरूपमामोजे
ऊ॥जालुंजिवतहेकंसतेऊ॥इनकिप्रजाहीजादवमांई॥कयाकुनलअबपुछुंमेतोई॥६॥निरदोष
माततातममदोउ॥ममलियेबहुदुखपायेसोउ॥ममलियुंइनकेबहुसुतमारे॥बंधिखानेममली
येडारे॥७॥सोरठा॥अक्रुरसहृदमोर॥साधुअरुनिकेतुमहो॥वांछितदरसनतोर॥अबमो
कुंसभदायभई॥८॥चोपाई॥हेअक्रुरजीकारणजेऊ॥तबआवनकोकहोममतेऊ॥शुककहेर
सनिअक्रुरहरिताई॥जदुमीकंसवैरआग्रहजाई॥वसुदेवबधकोउद्यमजेऊ॥कहतहरितिग
अक्रुरतेऊ॥९॥धनुषयागसंदेसआलाये॥कंसनेपठवेसोसकंनाये॥चाणुरमुष्टिकमलसेंजोउं
हनेगेहृदयपकुंकहीसोउ॥१०॥हृदमजन्मवसुदेवसुजेहा॥नारदनेकहीकंससदिगेहा॥अक्रुरसेंसु ॥११९॥

निबलहरिदोउ॥ग्राज्ञुहंताहसतहीसोउ॥११॥कंसनृपकोसंदेसआये॥निजतातनंदहीसबसु
नाया॥नंदसबगोपहीआगपादिना॥दधिदुधनिजगेहरखोप्रवीना॥१२॥उतमवस्तनृपकेका
जा॥ग्रहणकरोसबभेटसमाजा॥सकटजोतरोनिजनिजकेरा॥चलोगोपसबसुनऊमेरा॥१३॥
॥दोहा॥कलमथुरामेंतायके॥दधिदुधगोरसजेऊं॥देवेगेसबकंसकुं॥चोदसाकेदिनतेऊं॥१४॥
चोपाई॥धनुषयागदेखेगेजाई॥सबदेसाकेजननातहिधाई॥युंनंदकोटवालबोलाई॥जाहुकरा
वतघरघरताई॥१५॥हृदमप्राणजिवनहेजाके॥गोपिसुनेदुखहोनहीताके॥रामहृदमकुंदेरन
जेऊं॥अक्रुरब्रजआइमथुरासेऊं॥१६॥कोगोपिकुंसुनिउरमोई॥तापऊंसेंअतिस्वासचलाई॥
तासेंमुखकीसोभाससकाई॥गिरेउपटकेकणकरताई॥१७॥ग्रंथिछुटेत्रियकेजाकोउ॥हृदमकोध्या
नकरतजोसोउ॥तिनकिइंद्रियुंनिवृतिपावा॥निजदेहकिसोसुधविसरावा॥आत्मस्वरुपकुंमु
निवरपाई॥निजदेहकुंसुंजानेतनांई॥१८॥कोउहृदमकिसंभारिवानि॥अतिमोहपाइसुधविस
रानी॥विनिहसनिजसतवानिराहा॥चित्रपदजनउरपरसहितेहा॥१९॥सोरठा॥गतिमुकुंदकी

भा॰ द॰ पू॰

॥१२०॥

अ॰ ५९

जेकुं ॥ अतिसुंदररूपश्रेष्ठअति ॥ हमनिसुंदरतेऊ ॥ तेहीकृतसुंदरहष्टिही ॥ २० ॥ चोपाई ॥ पुनि
उदारचरित्रहीयाके ॥ श्रीकृष्णसर्वकृरिवचहीताके ॥ तिनकुंसंभारनगोपिगेहा ॥ विरहसेंविकुलभ
येतेहा ॥ २१ ॥ श्रीहृदयमेंचिंतहेंताके ॥ भयसेंदृगजलकृतमुखताके ॥ सबगोपिवृंदएकगहाई ॥
बोलनयावोधकेवचसोई ॥ २२ ॥ हेब्रह्मानदयाकछुनांही ॥ जिवकुंमैत्रिस्नेहकराही ॥ भेलेकरी
भोगनहीभोगाई ॥ तुरतवियोगकरानहीताई ॥ २३ ॥ याविधतवआचरणहिंजाउ ॥ व्यर्थहेबाल
कृकेसुंसोउ ॥ जोतूमसहृदयकोमुखदेखाई ॥ पुनिपरोक्षकरदियेताई ॥ २४ ॥ यहकारणतवकुर्म
हिंजोई ॥ निंदाकरनेजोगपहिसोई ॥ प्रभुमुखसामकेत्रालपराई ॥ सुंदरकपोलसेंस्कहाई ॥ उंचिना
साकृतगुरहासी ॥ सुंदरमेरतनश्रोकुकीरासी ॥ २५ ॥ अतिक्रुरहोअज्ञतोयचिना ॥ हमकुंदृगदई
पुनिहरलिना ॥ अज्ञांनिकीन्याईतूमहररही ॥ अक्रुरनामेतूमअनुसरही ॥ २६ ॥ तुमनेलोचन
हमकुंदिना ॥ सोदृगसेंहमदेखेप्रविना ॥ तवसदृशमेंरापणजेतो ॥ हरिएकअंगमीदेखितेतो ॥
२७ ॥ तिनकीतूमकुंदर्षाआई ॥ ममरहस्यगोपिनेपाई ॥ यहकारणहरीवियोगकिनो ॥ सोहम ॥१२०॥

कुंअंधापेदिनो ॥ २८ ॥ दोहा ॥ कहतपरस्परगोपिका ॥ अतिकष्टपरेंआई ॥ क्षणभंगुरस्नहद्रप
णु ॥ नंदसुतकोबाई ॥ २९ ॥ चोपाई ॥ गेहसुहृदसुतपतिहमत्यागि ॥ इनकिदासिभइहोइवितरा
गी ॥ हासविनोदेपरवशकरके ॥ अबनहीहेरतमोहगभरके ॥ ३० ॥ मथुरात्रियाकुंअसराती ॥ अ
तिसुखरूपहोसेप्रभाती ॥ पुरणमनोरथहोयगिनारी ॥ मथुरांप्रवेशकरतगिरधारी ॥ ३१ ॥ तिन
मुखअतिआदरसेंहेरी ॥ कटाक्षकृतमंदहासरसेरि ॥ सोरसपानकरेंगेनारी ॥ व्रजमेनहीआवे
गिरधारी ॥ ३२ ॥ प्रिगसुंदरवचसुनिकेएऊ ॥ त्रियावश्यचितहोयेगेतेऊ ॥ लज्जातूत्तविलाससेंभ
माई ॥ स्नेहरुधिरजनहिंरहेताई ॥ ग्राम्यत्रियाअपनेकुंजानि ॥ दिगनहिंआवेसारंगपानि ॥ ३३
दाशार्हभोजअंधकहीजेऊ ॥ वृष्णीसात्वतजदुकुलतेऊ ॥ तिनकेदृगकुंमथुरामाई ॥ बडउछव
होवेगेबाई ॥ ३४ ॥ श्रीपतिदेवकीसुतगुणधामा ॥ मगमेंचलतजदुलखिसुखदामा ॥ औरमनुष
देखेगिअबही ॥ बडउछवदृगपावेगितबही ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ हेसखियोअसनांम ॥ अक्रुरऐसे
मतहोऊ ॥ अतिदारुणदुखधाम ॥ असंतडखिवजनकुं ॥ ३६ ॥ चोपाई ॥ सांतिकियेवीनडर

लेताई॥ ग्वालसें प्याराहृदमताई॥ कहोरबुधिवंतहृदमणऊं॥ प्रथमरथ्थवैवेजैतेकूं॥ ३८॥ दुर्मदगो
पसकरनिजतोरी॥ चलनसारभयेसबदोरि॥ वृधगोपदेखिरहेउताई॥ हृदमकुंकोउरोकतनांई॥
३९॥ याकारणअपनेदैवजेकूं॥ प्रतिकुलबरतनहीअबुतेकूं॥ हेगोपिचलोअपनेधाई॥ शोके
गेहरिकुंरिगजाई॥ ४०॥ कुलमेवृद्धरूसबंधिजेते॥ अपनेकुंक्याकरेगिनेते॥ अर्धनिमिषदुं
सागनहोई॥ हरिसंगकुंसवियोगसोई॥ दैवनेदिनचितकिनेतबही॥ नहीमृत्युभयअपनेकुं
तबही॥ ४१॥ हरिकोनिकविचारअरुहासी॥ हेरतअरुमिलनसुखरासी॥ विलासहीतरम
णरासमांई॥ सबरतियांक्षणएकस्युंजाई॥ ४२॥ सोइहृदमबिनअपनेजेती॥ दुरंतविरहदुख
तरेक्युंतेती॥ दुखतरनेकितजीकेगाथा॥ क्युंजीवेगेकहतहिमाथा॥ ४३॥ दोहा॥ गोखुररज
सेंधुसरे॥ केशअरुफुलहार॥ बलविरगोपसहीतजो॥ करतहिवेणुउचार॥ ४४॥ चोपाई॥
सांयकालेआतव्रजमांई॥ मंदहसतजोतकटाक्षताई॥ अपनेचितकुंचोरतजेकुं॥ यहविन
क्युंजीवेकहोतेकुं॥ ४५॥ एकककहेबोलतगोपितेसें॥ हृदमेंसंक्रमनकृततेसें॥ विरहसेंअ

रथदिनचलाई॥

तिहोईअ्यातुरा॥ लज्जाकुंतजिदेतहिडुरा॥ ४६॥ हेगोविंददामोदरस्वामि॥ हेमाधवहेअंतर
जामी॥ युंकहीकेउंचेस्वरजेहा॥ रुदनकरतसबगोपियुंतेहा॥ ४७॥ त्रियारोनरविडुगेजबही॥
संध्याआदिककर्मकरितबही॥ अक्रुरनैतिनकेनोरनंदादिधाई॥ ४८॥ बहुभेवनगोरसघर
जेकुं॥ धरिव्राकुरपरलैचलेकुं॥ गोपिनीजवल्लभपिछेधाई॥ प्रभुनेदेखिमोदयमाई॥ हरिसंदे
शआवनकीजेकुं॥ गादरहेमगदेखितेकुं॥ ४९॥ सोरठा॥ जडमेंजतमजोउं॥ निजचलनेंनिमि
तदेखे॥ तायगोपिकोसोउं॥ तुरतआयेगेयुंकहत॥ ५०॥ चोपाई॥ चिंतानाहीरखोयुंकिना
डनवचसेंसान्वनकरदिना॥ प्रभुकेपीछेनिजचितजेहा॥ दिनेपठाईगोपिनेतेहा॥ ५१॥ रथके
ध्वजरजदेखततांलुं॥ चित्रामणजुंहोरहीतांलुं॥ प्रभुकुंपीछेफरनोजेकुं॥ नामेंनिरासभईस
बतेकुं॥ ५२॥ पुनिव्रजमेंआइकेतेहा॥ शोककरहांनहोइसबएहा॥ हृदमवल्लभकेचरित्रगाई॥
दिननिरगमनकरतव्रजमांई॥ ५३॥ बलअक्रुरकृतहृदमहिजोउं॥ वायुवेगसमरथ्यसेंसोउ
पायनआनजमुनाकुंपाया॥ हस्तपावधोवतजउराया॥ ५४॥ मणितुल्यउज्वलमिववारी॥

भा.द.पू. पानकरतप्रभुइछाचारी ॥ तटरिगद्रुमसमुहकुंपाई ॥ छोरेअक्रुरकुंनेताई ॥ रथकेपरवारतदोभा अ.३९
॥१२२॥ ई ॥ पुनिअक्रुरबलहरिढिगआइ ॥ ५५ ॥ आग्यामागिजमुनामिलऊं ॥ स्नानकरतविधिजुतते
ऊं ॥ प्राणवससहीतगायत्रिगाई ॥ रेतडुबकिअक्रुरजलमांइ ॥ ५६ ॥ तबबलहरदमकुंजलमिलऊं ॥
देखिउरमेंविचारततेऊं ॥ वसुदेवसुतरथपरबैठाई ॥ कयुंदेखातहीजलमेंआइ ॥ ५७ ॥ रथपरत
हिहैबैठेदोउ ॥ देखननिकसेबाहीरसोऊ ॥ सोरथपरपुरखकीनाई ॥ बैठेदेखिअक्रुरताई ॥ ५८ ॥
दोहा ॥ पुनिजलमेंडुबकिदिये ॥ पेलेदेखेतेऊं ॥ याचतुर्भुजानिनलिये ॥ बलहरदमकुंतेऊं ॥ ५९ ॥
चोपाई ॥ देखेबडेमैरपजलमांई ॥ सिधाचारणगंध्रबढिगताई ॥ स्तवनकरतअरूअसुरजे
ता ॥ स्तुतिकरतहिनाईसिरतेता ॥ ६० ॥ एकाउनमानसहस्त्रसिरधारी ॥ मुकुटसहस्त्रफणापर
डारी ॥ कमलमुलतुल्यश्वेतशरिरा ॥ निलवसनधारिरहेधिरा ॥ ६१ ॥ शिखरकैलासकेसोउंसो
हे ॥ श्वेतअहिदेखअक्रुरमोहे ॥ शेषनागपरपुरुषतोउं ॥ नयोमेघसमसुंदरसोउं ॥ ६२ ॥ पितही
रागलपटअंगधारी ॥ सांतमुरतिअरूभुजच्यारी ॥ रक्तअरुलंबदृगहैदोउ ॥ कमलपांखडी ॥११२॥

तुल्यजोसोउं ॥ ६३ ॥ सुंदरप्रसनवदनहेताके ॥ सुंदरहासयुतदृष्टिताके ॥ उंचिनासासुंदरकाना
सुंदरकपोलभ्रुहकवाना ॥ ६४ ॥ सोरठा ॥ रक्तहोठभुजतोई ॥ स्थुलअरुलंबेहेताकी ॥ उंचेसंभा
हिसोई ॥ उरमेंश्रीरहहीयाके ॥ ६५ ॥ चोपाई ॥ कंठकंबुसमनाभिउंडाइ ॥ त्रिवलितुंदपिंपलपत्र
माई ॥ स्थुलकटिनितंबुसाथलदोउ ॥ गोलकरभतुल्यसोहेसोउं ॥ ६६ ॥ जंगलजानुंजेघासुहा
ई ॥ उंचेगोलगुल्फहेताई ॥ लालउंचनखसमुहकांती ॥ कोमलअंगुलिअंगुष्ठभांति ॥ ६७ ॥ सो
सवपत्ररूपजामाइ ॥ तासेंचरनकमलसुहाइ ॥ अमुल्यमणीसेंजरितजेऊं ॥ मुकुटकडाबाजु
धरतेऊं ॥ ६८ ॥ कटीमेखलाहारजनोई ॥ झांझरकुंडलधरिरहेसोइ ॥ कमलगदाशंखचक्रधारी
श्रीवत्सचिन्हउरबिचभारी ॥ ६९ ॥ कौस्तुभमणीकंठमेंताके ॥ वनमालाशोभाजुततताके ॥ निरम
लअंतरवंताजेहा ॥ पार्षदभिनभिनभावसुंतेहा ॥ ७० ॥ उत्तमवचनबोलिकेठऊं ॥ स्तुतिकरतप्र
भुकीतेऊं ॥ नंदसुनंदआदिपुनिजेता ॥ स्वामिनामकहीस्तुतिकिनतेता ॥ ७१ ॥ करतस्तवनसन
कादिकचारी ॥ परब्रह्मतत्वादिकउचारी ॥ अजत्रिवअआदिबडेदेवजेता ॥ ईश्वरपरमेश्वरकहीतेता ॥ ७२ ॥

भा॰द॰पू॰ मरिच्यादिप्रजापतिजेते ॥ नारायणवैराजनकहीतेते ॥ प्रह्लादनारदभक्तकहाई ॥ वासुदेवकिसक्ती अ॰ ४०
कहाई ॥१३॥ दोहा ॥ कांतिश्रीपुष्टिगिरा ॥ कीर्तितुष्टिइलाई ॥ विद्याअविद्याऊर्जा ॥ मायाशक्तिक
॥१२३॥ हाई ॥१४॥ इत्यादिकशक्तिसबै ॥ स्तुतिकरतहैजाइ ॥ सोप्रभुशेषसज्यापर ॥ पौढेदेखततोइ ॥१५॥
अतिप्रसन्नअक्रूरभये ॥ रोमांचिततनुहोई ॥ मुदजलछूटतदृगजोरिकर ॥ परमभक्तिजुतसोई ॥ पुद
नाईशिरधरिजधरी ॥ गदगदवचमुखगाइ ॥ स्तवनकरतअक्रूरजी ॥ वासुदेवढिगजाइ ॥१६॥ सो
रठा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमीजेते ॥ भूमानंदरुकेहेत ॥ अक्रूरकालिंदिदेखहरि ॥
१७ ॥ चौप ॥ इतिश्रीमहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायामेकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥
३९ ॥ दोहा ॥ स्तुतिकिनअक्रूरभक्तिजुत ॥ सगुणअगुणभेदचिन ॥ चालिशाकेअध्यायमें ॥
हृद्महीजानिप्रविन ॥१॥ चौपाई ॥ अक्रूरकहेनमुंमेंतोई ॥ नारायणरूपहोतुमजोई ॥ सकल
जक्तकेकारणजेता ॥ प्रकृतिपुरुषमहतत्वतेता ॥२॥ तिनकेभिकारणतुमस्वामि ॥ प्रथमअव
तारतोयनमामि ॥ अविनाशितोरनाभिमांई ॥ कमलभयोतामेंअजताइ ॥३॥ जोअजनसेंसबज ॥१२३॥

क्तभयेते ॥ भुजलवायुअग्निनभतेते ॥ अहंकारमहतत्वरुमाया ॥ पुरुषअरुमनइंद्रिकहा
या ॥४॥ शब्दसपर्सरूपरसगंधा ॥ सबइंद्रिकेदेवसबंधा ॥ इतनेजक्तकेकारणजेते ॥ तवतनुसे
उत्पन्नभयेतेते ॥५॥ जगसृष्टाअजआदिकजेता ॥ सकलजिवहैजक्तमेंतेता ॥ आत्मातोरस्वरू
पकुंराते ॥ जाननसमर्थहोतनतेते ॥६॥ अजआदिकसबजिवहैजेहा ॥ देहाभिमानिहैसब
तेहा ॥ ब्रह्मानहीजाननजोतोई ॥ मायागुणसेबंधहेसोई ॥७॥ सोरठा ॥ तुमहोगुणातीत ॥ वा
सुदेवस्वरूपहिजो ॥ निसरूअकलअजित ॥ नमस्कारमेरोतुमही ॥८॥ चौपाई ॥ महापुरुषवै
राटकहाई ॥ अनिरुधतुमहोप्रभुतोई ॥ हिरण्यगर्भआदिकहीजेता ॥ प्रजापतीतुमकुंजनही
तेता ॥९॥ विराटरूपतुमहोप्रभुजोतं ॥ नियंताब्रह्मादिकेसोतं ॥ इंद्रिअरुपंचभूतकहाई ॥ इं
द्रिकेदेवसबतुममांइ ॥१०॥ यज्ञकर्माद्विजहेजेहा ॥ तिनवेदविस्तारसेंतेहा ॥ जूतविस्तारयज्ञ
करीएते ॥ यजतहेएकतुमकुंतेते ॥ इंद्रादिकदेवनामउचारी ॥ तुमकुंजजतहिनामेंधारी ॥११॥
कर्मप्रवृत्तिमगदिनसागी ॥ सांख्यविचारवैराग्यमिरागी ॥ आत्मस्वरूपमेंउपशमपाई ॥ ऐसें

ज्ञानिपुरुषकहाई॥१२॥ सोअध्यात्मशास्त्रमेंकिना॥ ज्ञानयज्ञकरिवकुप्रविना॥ ज्ञानमुरतीनि
रगुणषभुतोई॥ तुमकुंयज्ञतहेज्ञानिसोई॥१३॥ दोहा॥ वेदमविदिक्षापायेजु॥ ऐसेभक्तहीजोउं
पंचरात्रविधिकुंसे॥ तुमकुंयजहीसोउ॥१४॥ चोपाई॥ संकर्षणप्रद्युमनअनिरुधा॥ वराह
आदिवरुरुपसुधा॥ एकमुरतिवासुदेवतोई॥ अनन्यमानियज्ञहिसोई॥१५॥ शैवीदिक्षापा
येजेता॥ शिवनेकिनेजुमगसेतेता॥ वकुआचार्यभेदसेंएकुं॥ शिवरूपतुमकुंयजहीतेकुं॥१६
शिवादिकओरदेवकेजेता॥ जोजोभक्तहेसोइतेता॥ तिहारोभावबुधिमेंलाइ॥ शिवादिदेवकुंय
जतनाइ॥१७॥ तदपिसर्वनियंतातोइ॥ तुमकुंयजतेहेसबसोइ॥ शिवकुंभजीसुधहोवतजवही
फलप्रदतुमकुंमानततबही॥ औरदेवकुसागिएकुं॥ अंतकालनोयपावेतेकुं॥१८॥ हिमाच
लसेंभयेनदिजेती॥ घनकेजलसेपुरकतजेती॥ चकुओरसेंमिलेसिंधुमांई॥ सुवेदकर्मपुज
नरुपाई॥ तवजुपासनवलसेंतेकुं॥ असेतुमकुंपावहीएकुं॥१९॥ सोरठा॥ शिवआदिगुणदे
व॥ अरुतिनकेजुपासकके॥ सागकरिनितसेव॥ नमस्कारकरुमेतुमही॥२०॥ चोपाई॥ माया ॥१२४॥

केसबगुणकेमांई॥ आसक्तहइलिलोरिनांई॥ सबअंतरजामितुमजोउं॥ सबबुधिकेसाक्षि
सोउं॥२१॥ अविद्यानेरचेकुंजेता॥ पंचभुतइंद्रिरुदेवतेता॥ प्रवाहगुणकुंकोसबएकुं॥ देवप
शुनरदेहमेंतेकुं॥ प्रवेशकरिकेवरतहीतहा॥ दिव्यमुरतितुममेंनहीतेहा॥२२॥ विराटरूप
हरिनमुमेंतोइ॥ मुखतेरोअग्निहेसोई॥ पगभुमिहगसूर्यहितेरा॥ नभहेतोरिनाभिदेरा॥२३
दिशातबश्रोत्रइंद्रहिकिना॥ स्वर्गतिहारोमस्तकचिना॥ तवभुजइंद्रादिलोकपाला॥ तवकु
क्षिहसिंधुविशाला॥२४॥ प्राणअरुबलतुममेंजेता॥ वायुकुंकुकल्पेहेतेता॥ मायापरतव
रोमहीजेहा॥ वृक्षअरुओषधियोतेहा॥२५॥ निशादिवसहगमदकाकिना॥ ब्रह्मामेंढुइं
द्रिहिचिना॥ जलवृष्टितवविर्यकहाई॥ विराटरुपेकहेजुगाइ॥२६॥ दोहा॥ सतआत्मारु
पतुममे॥ इंद्रादिलोकपाल॥ सकलजिवजनतलोकसबे॥ रहेतुममेंविशाल॥२७॥ चोपाई॥
सागरजलमेंजलजिवजेसे॥ उबराफलमेंजंतुतेसे॥ सुमनोमयपुरुषतुममांई॥ सर्वलोक
रहेअसमाइ॥२८॥ मायामयरुपकिनेजुएकुं॥ जोभजिनिरगुणहोतककुंतेकुं॥ किडाकरत

लियेरूपतबजोउं ॥ तृषसाधुरक्षालियेसोउ ॥ २९ ॥ नाश्राकरनअधर्मकोजेहा ॥ रूपधरनतूंलोकमेंट
नतेहा ॥ जोरूपसेंजनमतब्रजनृभाई ॥ निरगुणहोनदुखीनसबपाई ॥ ३० ॥ वेदउधारणमछरूपधारी ॥
प्रलयसिंधुमेंकिनसंचारी ॥ मधुकैटभकुंमारनहारा ॥ हयग्रिवरूपहीतूंमनेधारा ॥ ३१ ॥ नमस्का
रकरूमेंतोइ ॥ कूर्मरूपभयेतूमसोई ॥ निजपिठपरमंदरगिरिधारी ॥ नमूंतोयमेंवारमवारी ॥ ३२ ॥ सो
रठा ॥ अवनिउधारनरूप ॥ विहारनतेरोहेजेकुं ॥ भयेजवराहअनूप ॥ तोयनमामिमेंस्वामी ॥ ३३ ॥
चोपाई ॥ नृसिंहरूपप्रभूतूमधर्त्ता ॥ साधुलोककुंकोभयहरता ॥ वामनरूपधरितूमजोई ॥ तिनभू
वनतिनडगकिनसोई ॥ ३४ ॥ मदोन्मतक्षत्रिवनछिना ॥ भृगुकुलपरशुरामरूपलिना ॥ रामरघुवं
शमेंतूमहोई ॥ रावणनाशकियेनमुंतोई ॥ ३५ ॥ संकर्षणप्रद्युमनअनिरुधा ॥ जदुपतिवसुदेव
केसुतसुधा ॥ श्रीकृष्णतूमकुंमेंजानी ॥ पुनिपुनिनमुंजोरिजुगपानी ॥ ३६ ॥ दैसदानवकुंमोहक
जोजोई ॥ सुधबुधाअवतारनमूंतोई ॥ म्लेछरूपक्षत्रिमारनहारा ॥ कल्किरूपतोयनमनहमारा ॥
३७ ॥ प्रभूतवमायासेंमोहपाई ॥ लोकमेजीवनेजिवकहाई ॥ देहगेहमेंअहंममबानि ॥ असत

आग्रहकृतसबप्रानि ॥ बहुविधव्यवहारमगमिजेकुं ॥ अखिललोकभ्रमनहेएकुं ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
स्वप्नतुल्यतनतुंगेहकृत ॥ सुरधनअरुदार ॥ ससजानिइनकेविषे ॥ भमुंमेंमूढगमार ॥ ३९ ॥ चौपा
ई ॥ अनित्यमेंनित्यपणूंहीजाई ॥ देहमेंआत्मपणूंमनाइ ॥ दुखमेंसुखमानतहेजेकुं ॥ असविध
विपरीतमतिमममनेकुं ॥ ४० ॥ सुखदुखमेंरमतेहेजोउं ॥ अज्ञानसेंव्यापुमेंसोउ ॥ जिवकुंकेहितका
रिनोई ॥ तूमकुंनहीजानेहमसोई ॥ ४१ ॥ जलसेंभयेतृणादिकताई ॥ पुनितलकेपररहेउछाई ॥
तिनकुंतजीअवीवेकीजेसें ॥ मृगतृष्णाकुंदुखनतैसें ॥ ४२ ॥ सुंसबसुखरूपतूमकुंत्यागि ॥ देहगेहमें
हमअनुरागी ॥ विषेवासनाकृतबुधिमरि ॥ कामकर्मक्षोभीतमनदेरी ॥ ४३ ॥ वासनाजलइंद्रिय
वजोउं ॥ इतउतमनकुंतानतसोउं ॥ विषयसुखजानमनधाई ॥ वशाकरनेहमसमर्थनांइ ॥ ४४
सोरठा ॥ असमर्थमेंजेकुं ॥ तोरचरनकुंपायेही ॥ असतपुरुषकुंनेकुं ॥ दुखसेंनांहीमिलेपदरी ॥
४५ ॥ चौपाई ॥ सोईचरनहमपायेजोइ ॥ तवअनुग्रहभयोमोपरसोई ॥ जिवकुंजन्ममृत्युमिटेजब
हि ॥ संतसेविमतिरेतूमसितवही ॥ ४६ ॥ यहकारणप्रभूतोयनमामी ॥ विज्ञानरूपमुरतीतवस्वा

मि॥ ब्रह्मादिकगणअंसनतिवजोउ॥ तिनकुंज्ञानदेततृमसोउ॥४७॥ ब्रह्मादिकजिवजगमेंजेता॥ पुरु
तिपुरुषकालादिकतेता॥ ब्रह्ममुर्तिनियंतानाके॥ अनंतशक्तिआधिनजाके॥४८॥ सकलजिवकेआ
श्रयस्वामि॥ वासुदेवरूपीकेज्ञानमामि॥ पभूतवशरणेआयेजानी॥ रक्षाकरहुंसारंगपानी॥४९॥
सोरठा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधविजेहुं॥ स्तुतिकिनेअक्रूरने॥ भूमानंदकहेहुं॥४९॥ इ
तिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांचत्वारिंशोध्यायः॥४०॥ दोहा॥ पुनिपैव
नथोविहने॥ रुद्माणिकुंवरदिन॥ एकचालिशअध्यायमें॥ प्रसनहोयप्रविन॥१॥ चोपाई॥
शुककहेअक्रुरस्तुतिकिना॥ पुनिप्रभुजलमेंहोगयेलिना॥ जमुनतटनिजवाजीदेखाइ॥ अंतरधा
नकरतपुनिनाई॥२॥ जलमेंरूपनदेखेजवही॥ तुरतनिकसेअक्रुरतवही॥ निसकर्मकरिकेपुनि
एहुं॥ विस्मेपाईरथपरिगआयेहुं॥३॥ पुछतअक्रुरकुंतवनाथा॥ क्यादेखेजलमिकहोगाथा॥ नभभू
मिमेंआश्चर्यजोउ॥ देखेसुंतृमभाषतसोउ॥४॥ अक्रूरकहेभूनभजलमांई॥ जोकछुआश्चर्यदेखाइ
विराटरूपतृममेंसवहुं॥ तवदरशनमेंदेखेतेहुं॥५॥ ब्रह्ममुरतिहृदमतृममांई॥ सवअद्भुतरहेहे ॥१२६॥

आई॥ जलभुनभमेंदेखेजोउ॥ तृमविनवस्तुनहीकछुसोउ॥६॥ सोरठा॥ युंकहीगांदिनिसुत॥
हृदयमंकुंपुनिरथहांकी॥ असमयरविअस्त॥ तवमथुरांवलहरिलाई॥७॥ चोपाई॥ मगमेंआ
तसुनेहरीजवहीं॥ गामगामजनआवतेतवहीं॥ वसुदेवसुतदेखितेहा॥ प्रसननिजदृगतानेन
जेहा॥८॥ गोपनंदादिआगेजाई॥ मथुरांरहिगउतरेवनमांई॥ हृदयमकुंकोरथनायेजांलु॥ वादरहेम
गदेखिनांव्हुं॥९॥ पुनिनंदादिकुंप्रभुपाई॥ विनयेउतअक्रुरविगजाई॥ निजकरमेकरपकरिया
से॥ हसतवदनबोलतहरितासे॥१०॥ अक्रुरपैलेपुरिमेंजाई॥ रथकंसघररुधरिनिजघरूपाई॥
हमउनारोककरिथाकरवाई॥ पुनिमथुरांदेखेंगेआइ॥११॥ अक्रुरकहेस्तुतिविनतिएहुं॥ दोविरवी
ननहीजाउमेंगेहुं॥ भक्तवत्सलमैंभक्तनीहारो॥ आगमतिकरहुनाथहमारो॥१२॥ दोहा॥ हेअ
तिवलभअधोक्षज॥ वलअरुगोपसहीत॥ स्वामिचलोममगेहतुम॥ सनाथकरोअवमित॥
१३॥ चोपाई॥ गेहमेंवुधिरहेहमारी॥ तोरचरणरजतामेंडारी॥ करोपवित्रप्रभुममगेहुं॥ तवपद
पंकजकोजलजेहुं॥ अंगणभूमेगिरेजोतेहुं॥ पितृदेवअगनितसहितहुं॥१४॥ तोरचरणयु

गलकुंधोई॥ निजशिरपरधारितलसोई॥ वलिमधकिन्हिरूमोरपपावा॥ अतुलऐश्वर्य्यकृत
वनिआवा॥१५॥ भक्तएकांतिकिगतिजेहा॥ तिनकुंभियायेवलितेहा॥ मधनवचरणकुंकेज
जनेकुं॥ पवित्रकिनेतिनलोकहीतेकुं॥१६॥ शिवशिरपरधारततलतोउं॥ सागनहजारसगरस
तसोउ॥ तोजलपरसिस्वरगगयेकुं॥ सोपदसेंमधकरोममगेकुं॥१७॥ हेजगन्नाथहेदेवनदेवा
तोरश्रवणकिरतनमधमेवा॥ उत्तमश्लोकयदुतुमस्वामी॥ नारायणमेंतोयनमामि॥१८॥ सोर्ठा
युंप्रारथनाकिन॥ अक्रुरनेश्रीकृष्णकुंकी॥ नवचोलेउपविन॥ तवघरूआयगिरामनृत॥१९॥
चोपाई॥ सवजनडद्धोहिकंसकुंमारी॥ प्रथमसरूपकोप्रियविस्तारी॥ पुनिआउगियुकिनप्रभूत
वही॥ उदासमनहोइअक्रुरतवही॥२०॥ पुरिमेंजाइकंसकुंकिना॥ पुनिनिजगेहगयेप्रवीना॥ पि
छलेपोरहिनरहेजवही॥ वलकृतगोपनेघेरेतवही॥२१॥ देखनकिइछाउरधारी॥ मथुरामेंपैठे
मुरारी॥ कोटरूघरदरवाजाजेता॥ स्फाटिकमणिकेउंचहितेता॥ कंचनकमाडतोरणताई॥ त्राबु
पितलमयअन्नशालाई॥२२॥ चकुंओरखाईवलंघिनजाई॥ पुरसेंडरवनउद्यानकहाई॥ समी॥ ॥१२७॥

पर्कुंदरउपवननेकुं॥ सबकुंसेंपुनिसोहेतेकुं॥२३॥ कंचनकेसवचोकहवेलि॥ फुलवारिमेंबंग
लाडेलि॥ कारिगरिकिपेदिहजोउ॥ और्गेहसेंसोहेसोउ॥२४॥ वैडुर्यहिरास्फाटिकउपामा॥ प
रवालोंनिलसवमणिनामा॥ तासेंरचितकनेरीजेती॥ तिनकेनिचिवेंदियुंतेती॥२५॥ मणिमय
जालियुंचोककीमांई॥ मोरपारेवांकरेत्राछाई॥ जलसेंछिरकितराजमगजेकुं॥ वणीकसेरिघर
अंगणनेकुं॥ फुलजवाराधाणिजेहा॥ चोरवावेरतचोकमिनेहा॥२६॥ चंदनछिरकेहेजामांई॥
फुलपत्रदिपपंक्तीकहाई॥ केलसोपारिध्वजजूलतोउं॥ फलव्रागलेपरवेष्टितसोउ॥२७॥ जलसें
पुरणकुंभहीजेहा॥ सबघरद्वारिसोहेतेहा॥ असविधमथुरापुरिमांई॥ राजमगमेंचलतेदोभाई
२८॥ तुमसखासेवेष्टितएकुं॥ वसुदेवकेसुतदेखनतेकुं॥ मथुरांकिनारिसवनिधाई॥ कोउहवे
लिपरचरेजाई॥२९॥ उलटेवसनभूषनतनुंधारी॥ कंकणकुंडलमिणकविसारी॥ एकपनकि
तेधरिकोउ॥ एकफ्राउरधरिपगमिसोउ॥३०॥ एकहगामिकाजलकोसारी॥ उठवजूतनिरखत
गिरधारी॥ हरिन्हायेयुंसंकनिकेकेती॥ जिमनभोजननतजिधायेतेती॥३१॥ दोहा॥ दासीनेललगा

भा॰द॰पू॰ तननु॥ तिनकोकरिकैंस्याग॥ स्नानकियेविनआतस्यो॥ हरिदेखनक्रतराग॥ ३२॥ चोपाई॥ कि अ॰ ४१
॥१२८॥ तनिन्हायनस्यागकरिआवा॥ कितनिबालकतजीधवरावा॥ मदोन्मतगजश्राक्रमकारी॥ कमलने
नकुंदेखतनारी॥ ३३॥ उदारलिलाक्रतहसितेऊं॥ लक्ष्मिरमणरूपतनुधरितेऊं॥ पुरनारिकिहग
कुंप्रीतं॥ उछवदइमनहरतहीसोउ॥ ३४॥ श्रुककहेपुनिसकनेथेजेऊं॥ हृदयमेंचितक्रतत्रियातेऊं
लखिहरिकिसुसकनीअरुरूपा॥ देखनिअमृतसिचनिअंगनुंपा॥ ३५॥ इतनेसेंपुरलाभमनोरथहो
ई॥ मुदसेंरोमरखडेननुंसोई॥ दृगसेंमुरतिउरमेंजतारी॥ मनमेंमिलतहृदयकुंनारी॥ विरहकिपिडा
अतिन्नोतेहा॥ आनंदमुरतिहिमिलितजेहा॥ ३६॥ सोधत्रिखरपरवारेजेती॥ त्रितिसेंमुरवकंज
फुलेतेती॥ रामहृदयकेउपरितेहा॥ क्रमनरूरिकिरतसबतेहा॥ ३७॥ सोरठा॥ जोजोस्थलचली
आत॥ तेहिथलक्षिजयवदेखि॥ बलहरिकुंसाक्षात॥ अतिप्रसनद्विजहोवत॥ ३८॥ चोपाई॥ दधि
अक्षतचंदनफूलमाला॥ सामग्रितलपात्रविसाला॥ तासेंहृदयकुंपुजततजवही॥ पुरकीत्रियावो
लततबही॥ ३९॥ हेसखिनतविनतासबजेहा॥ क्याबडतपकिनोहेतेहा॥ सबजनकुंवडउछवदा ॥१२८॥

ता॥ बलहरिकुंदेखतसाक्षाता॥ ४०॥ परंगाराधोवनहारा॥ धोबिकुंदेखिप्रभूप्यारा॥ धोतउ
तमपरमागतजाई॥ हेधोबिनिकेपरलाई॥ ४१॥ पैरनलायकहमदोउभाई॥ योग्यवसनदेकऊं
तुषताई॥ परमकल्यानहोयगितेरा॥ इनमेंसंशयनांहीलगेरा॥ ४२॥ सबबसेंपरिपुरणप्रभूजं
वही॥ मांगेपरधोबिढिगतवही॥ नृपचाकरमदछहीजाई॥ करिकोपतिरस्कारताई॥ ४३॥
सोरठा॥ बोलतहरिढिगवचनसो॥ निरअंकुशात्मदेउ॥ मदोन्मतवनगिरिकुंमें॥ फिरनेहारे
सोउ॥ ४४॥ चोपाई॥ नितअसेपटपैरनहारे॥ नृपपटपैरनइछाधारे॥ मुर्खततकालजाऊंपला
हि॥ जिवनइछोलवमागोनांही॥ उनमलकुंनृपचाकरजेता॥ बांधतमारतलुटतेतेता॥ ४५॥ युं
वचबोलतधोबिजवही॥ क्रंनिकोपक्रतभयप्रभुतबही॥ निजकरसेंशिरइनकोतेऊं॥ काटी
डारेकायसेंसोउ॥ ४६॥ तिनकेचाकरधोबिजेता॥ गंठियांपरकिभागेतेता॥ पुनिप्रभूनेंपरली
नजगाई॥ निजइछितपैरनदोभाई॥ औरवसनसबगोपकुंदिना॥ शेषभूपरधरिचलेप्रविना
४७॥ पुनिएकदरजीप्रसंनहोई॥ बहुविधरंगवसनकेसोइ॥ भूषनकरिपेरायेतैसें॥ हरिबल

कुंशोभेसुंतेसें॥४८॥बहुविधलक्षणवेत्राबनाई॥ दरजीसंगारेसोतुंभाई॥इनकिन्होभावरनी
नताई॥स्यामश्वेतगजबालकन्याई॥उछवमेंसंगारेजेसें॥गजसुंदोनुसोभनतेसें॥४९॥सोरठा
पुनिप्रसन्नभइसाम॥सारुप्यमुक्तिदरजीहि॥देवनपुरणकाम॥लक्ष्मीदिनेअसलोकमी॥५०
चोपाई॥बललेपुर्यसुधिहीदिना॥इंद्रिप्रिसामर्थ्यदेतप्रविना॥पुनिसुदामामालिकेगेहुं
आयेबलहरिकुंदेखिनेहुं॥५१॥तुरततनकेसनमुखधाई॥नमतहिभूमिपरशिरनाई॥आस
नपाद्यअर्घ्यपुनीदिना॥गोपकृतहरिकुंसेविप्रवीना॥५२॥तांबुलचंदनपुष्पकीमाला॥पु
जनसामग्रीलाईविसाला॥प्रभुतुमआयेकृपाकरिजबही॥जन्मसुफलभयेकुलसुधनबही
५३॥देवऋषीअरुपित्रहेजेता॥मोकुंप्रसन्नभयेसबतेता॥सबजगकेकारणतुमसोउ॥जग
भयेहरअरुपालकसोउ॥५४॥प्रद्युम्नआदिकअंशसहीता॥अवनिपरअवतारहीलिता
सकलजिवकेसुहृदस्वामी॥अखीलजगतकेअंतरजामी॥५५॥देउअनुग्रहजिवकुंजोउ
करनातामेंसमतुमदोउ॥भजतकुंतुमभजतहोदोइ॥तदपिविषमदृष्टिनहोइ॥५६॥दो

हा॥तबसेवकमेंहोप्रभो॥आग्यादेहुंमोई॥तोरप्रियमेंक्याकरुं॥कहोकृपाकरिसोई॥५७॥
चोपाई॥तुमकछुकाजमित्रोरतजबही॥तबअनुग्रहबड्तापरतबही॥शुकुककहेमालिहरि
कुंसुनाइ॥प्रसनहोइसुगंधिफुललाई॥तिनसेमालारचिकेदोउ॥पेरावतबलहलधरकुंसोउ
५८॥इतुनेसुजनपेरायेजबही॥सोभाधामप्रसनभयेतबही॥निजसेवकहीगोपकृतदोउ॥व
रदायकबलहलधरहीसोउ॥निजशरणेआइनमेजबही॥इछितवरदिनमालिकुंतबही॥५९
अचलभक्तिकुंमागतरहुं॥सबअंतरज्ञानहलधरमितेहुं॥हरिजनमेंसुहृदपणुजोउ॥परम
दयासबजिवपरसोउं॥६०॥पुनिप्रभुमागेविनदिना॥लक्ष्मिवंशमेंबढेयुक्तिना॥बलआयु
षजनाकीर्तिरुपा॥वरदईबलकृतचलेअनुपा॥६१॥दोहा॥इतिश्रीमतभागवत॥स्याम
स्कंधमीतेहुं॥धोबिहनेसुइमालिमिलि॥भूमानंदकहेहुं॥६२॥इतिश्रीसहजानंदस्वामीशि
ष्यभूमानंदकृतभाषायांएकचत्वारिंशोऽध्यायः॥४१॥दोहा॥कुब्जासरलधनुभंगही॥धनु
रक्षककुंमार॥अयप्रकनपुनिकंसकुं॥वेताज्ञिसमेंमार॥१॥चोपाई॥शुकुककहीनिजजनकुं

सुखदाता॥ चलतराजमगमेंसाक्षाता॥ चंदनपात्रकरकुबजाधारी॥ तरुणवयसुंदरमुखनारी॥२
मगमेंआवतजखिहरिहसके॥ पुछतकुबजाकुंटिगवसके॥ अंगनाश्रीह्वतुरूतवनारी॥ कुनतुमचं
दनकिनलियुंधारी॥३॥ कहोगाथचंदनदेमोंई॥ तवकुब्जानहोसेकछूतोई॥ कुबजाकहेसुंदरव
रस्वामी॥ कंसदासीमेंअंतरजामी॥४॥ चंदनकुंघसनेकेकाजा॥ बहुमानतमोकुंकंसराजा॥ नाम
त्रिवक्रामेरोजानो॥ ममचंदनप्रियकंसहीगानो॥५॥ सोचंदनजोग्पतुमबिननांई॥ सबअंगेचरचो
दोउभाई॥ सुंदरकुमारहमकीहासी॥ इगवचमेमोहपायेदासी॥६॥ सोरठा॥ घादुंचंदनलाई॥
अरपणकिनेबलहरिकुं॥ तनुंचरचिदोभाई॥ निजनिजवानसेदृतरही॥७॥ चोपाई॥ नामिसे
उपरिचरचेजबही॥ शरीरसोहतअतिशोतबही॥ कुबजापरअतीप्रसंनहोई॥ तुरतदेखावतदर
शफलसोई॥८॥ त्रिवंकीसुंदरसुखिनारी॥ पांत्रारिकुरनइछामनधारी॥ कुबजाकेपगफणाहीदो
उ॥ नापरनिजपगधरिहरिसोउ॥९॥ एकअंगुलिजंचिकरमांई॥ तासेपकरतडाढिसांई॥ पुनी
प्रभुकुबजाकुंकोदेकुं॥ उचेउवाइताननतेकुं॥१०॥ पांत्रारीतनुनितंबवरजाके॥ प्रभुकुंपरसिभये ॥१३०॥

उताके॥ सबत्रियामेंउतमएहा॥ तुरतभयेउकुबजातेहा॥११॥ उदारगुणरूपसंपनएहा॥ मंदह
सतकामातुरनेहा॥ द्रुपटोपकरेप्रभुकोजाई॥ कुबजाबोलतउरहरखाई॥१२॥ दोहा॥ हेविरपु
रुषोत्तमप्रभु॥ ममगेहचलकुंनाथ॥ क्षोभपमायेचितनुमे॥ प्रसंनहोममसाथ॥१३॥ चोपाई॥
तुमकुंतजनमेंसमर्थनांई॥ शुककहेकुबजामागततांई॥ तबप्रभुकुंबलदेखरहेकुं॥ गोपमुख
देखहसतहरितेकुं॥१४॥ बोलतकुबजासेंमोरारी॥ निकभ्रुकुटिहेतोरेनारी॥ कंसकुंमारेहम
जबही॥ अर्थसाधिकहरकोतबही॥१५॥ पुनिआवेगेहमतबगेकुं॥ नरमनपीडाहरगेहेतेकुं॥
नारिविनबटाउहमजोउ॥ तिनकुंआश्रयहोतुमसोउ॥१६॥ मिठबचनकुबजाकुंकोना॥ इनकुं
घरूपवाइप्रविना॥ पुनिबलजुतमगचलेउनबही॥ बजारमेंआइवणीकतवही॥१७॥ भेसम
सामग्रिबहुविधलाई॥ तांबूलचंदनधरिकरमांई॥ पुष्पहारलाइकेएहा॥ पुजाकरतप्रभुकि
तेहा॥१८॥ हरिकुंदेखिमथुरानारी॥ कामक्षोभक्षतभईउरभारी॥ भुलगयेनिजदेहकोभाना॥
गिरवसनभूषनविधनाना॥ केशबंधनछुटिगयेतबही॥ चित्रामणजुंभयेउसबही॥१९॥ सो

भा॰ द॰ पू॰ रज ॥ पुनि धनुष को स्थान ॥ प्रभु पूछत पुरजन कूं ॥ शाला में भगवान ॥ प्रवेश करिकें देखत ही ॥ अ॰ ४२
॥ २३१ ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ अद्भुत इंद्र धनुष तहं लखेऊ ॥ बहु भट रक्षा किने तेऊ ॥ सम्रिधि जुत पुजि कें कीना ॥
बल करि पकरत प्रभु प्रविना ॥ ३१ ॥ बहु जन रोकत प्रभु कूं आई ॥ तिन धनुष आक्रम देखाई ॥ उ-
ये कर सें उठाइ एऊ ॥ लीला कूं सें चढाइ तेऊ ॥ सब जन देखत तोनें जब ही ॥ तत काल तोरे बिच सें तब
ही ॥ बडु हस्ती इक्षु दंड जैसें ॥ दोनुं टुक करि डारे तैसें ॥ ३२ ॥ भागे धनुष शब्द हि छाई ॥ भुन भ स्वर्ग
दशों दिशा मांई ॥ सो सुनि कंस त्रास ही पाये ॥ धनुष रक्षक पुरुष हि धाये ॥ ३३ ॥ आतताइ चाकर
कूं लख ही ॥ प्रभु कुं पकरन इछत ते ही ॥ पकरो बांधो बोलत एऊ ॥ बल हरि कुं घेरि लेत तेऊ ॥ ३४ ॥
दुष्ट अभिप्राय सब को जानी ॥ कोप करत बल सारंग पानी ॥ धनुष के टुक लीन उ बाई ॥ हनन हि
रक्षक पीछे धाई ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ धनुष कूं की रक्षा लिये ॥ कंस पठाये तेऊ ॥ सब दल कुं हनि के ह-
रि ॥ धनुष याग जिते ऊ ॥ ३६ ॥ चौपाई: ॥ निकसे बहिर देखत दोउ ॥ पुर सोभा प्रसन भये सोउ
बिच ॥ बिचरत पुर में बिरदौ जब ही ॥ मथुरा के वासी जन सब ही ॥ ३७ ॥ अद्भुत आक्रम लखि तरमां ॥ २३१ ॥

ई ॥ देखु में उत्तम मांनत ताई ॥ दोबि स्वतंत्र बिचरत जब ही ॥ सूर्य अस्त पाये उत तब ही ॥ पुनि प्रभु
गोपन में विराई ॥ पुर सें आये सकट ताई ॥ ३८ ॥ शुक कही जब निकसे व्रज बारा ॥ विरहातुर
भई गोप किशोरा ॥ जो आग्रिष्य दिये थे तब ही ॥ सस भइ मथुरां जन कुं सब ही ॥ ३९ ॥ पुरुषोत्तम
कि मुरति केरी ॥ सो भा सब उर धारि हे हेरि ॥ श्री कुं भजन अजा दिक देवा ॥ तिन को सागर करि तन खे
वा ॥ सो मुरति में रहे वन कांता ॥ लक्ष्मि जिह छत हे राजा ॥ ४० ॥ सोरठा ॥ पुनि बल लक्षि धमरोत्र ॥
निज तताररु आये तें ॥ पद युगल धोई सो तें ॥ दुध अरु भात जिमि पुनि ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ कंस कें गे
सो सब जानी ॥ रातिउ तारे रहे गुमानी ॥ धनुष भंग सुने कंस जो उ ॥ पुनि रक्षक न र को बध सोउ
४२ ॥ निज प्रेरित सेना कुं मारी ॥ रमत किये केवल मुरारी ॥ बल हरि को कछु आक्रम नांई ॥ सुनी
सब कंस डरे उर मांइ ॥ ४३ ॥ इष्ट मति बहु उ जागराइ ॥ जाग्रत स्वप्न मि देखत ताइ ॥ मृत्यु कुं देखा
वन हारा ॥ अपशुकन कुं देखे अपारा ॥ ४४ ॥ जल में निज प्रतिबिंब माई ॥ निज शिर कुं सो दे-
खत नांई ॥ चंद अरु सूर्य ऊं कुं जो उ ॥ दो दो रूप देखत सोउ ॥ ४५ ॥ निज छाया में छिद्र देखाई

कान मुंदे जो ग्रान्ह कनाई ॥ प्राणवायु को कावे जे तेऊं ॥ अंतने में नही आवे तेऊं ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ कंचनपु
तितिहं अक्षमें ॥ होवत है पुनि ताई ॥ निजपग लापरे रेनमि ॥ सो भिदे खत नांइ ॥ ३७ ॥ चोपाई ॥ इतने
जाग्रतकूं में किनो ॥ स्वप्नमें अपश्रुकन कछु चिनो ॥ मृतमनुष्यकुं मीलनो जेऊं ॥ खरपर बेवि
चलनो तेऊं ॥ ३८ ॥ विषभक्षण फुलकणेर केरा ॥ लालनहार पे रिगले देरा ॥ दिगंबर अंग तेल
लगाई ॥ एक चलतल खीस्वप्नमांइ ॥ ३९ ॥ असविध जाग्रत स्वप्नमें जोउ ॥ अपशकुन बहु देख
तसोउ ॥ मरणकूं सें अनिडरसोपाई ॥ चिंतासें पुनि निंद गमाइ ॥ ४० ॥ कूष्णकूं सें रतियां गइ जबही
रवि उगे तब में संतबही ॥ मलक्रिडाबहेरउ वतेऊं ॥ फेरि कंसकरात है तेऊं ॥ ४१ ॥ कंसचाकरपु
जतपुनि जाइ ॥ मल्ल अखाराकुं सुद पाइ ॥ तूर्लि अरुभेर्य बाजत तबही ॥ ध्वजासकमे नस्रजकूं सें स
बही ॥ ४२ ॥ मंचासबसंगारतरहा ॥ पटके तोरण बांधतनेहा ॥ आत्मणक्ष त्रिपुरजनजेता ॥ दे
शके जन आये उतेता ॥ ४३ ॥ बेवतमंचपर सुखकरी तेउ ॥ दिवान वेष्ठित कंस ही तेऊं ॥ राजमंच
परबेवत आई ॥ मंडलपती विचडखिउरमांइ ॥ ४४ ॥ मल्लखंभाके ठाढ़ जोउ ॥ वाजिंत्र सें अधि ॥१३२॥

कसोउ ॥ पटसे सोभाकृत मल्लजेता ॥ निजनिज गुरु कृत आये तेता ॥ ४५ ॥ अंदर वाजासें निह
र्घोइ ॥ मुष्टिक चाणूर कुटक हाई ॥ शालतोशाल आदिक सबएऊं ॥ मल्ल अखाडे आये तेऊं ॥ ४६
भोजराजके राये जेता ॥ गोपनंदादि आये तेता ॥ भेट न कंस दिगधरि के एऊं ॥ एकमंचपर बेवे ते
ऊं ॥ ४७ ॥ सोरठा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमीजेऊं ॥ भूमानंद ही कहत ॥ धनुभंगीकु
शारुजू किये ॥ ४८ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायां द्विचत्वारिंशो ऽ
ध्यायः ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ रंगमंडपमें गजजहूनी ॥ चाणुरकी संगगाथ ॥ बलहरि शोभाबरने उ
श्वेता सिव्रामें साथा ॥ १ ॥ चोपाई ॥ श्रुककहे शौचकर्म करि दोउ ॥ मल्लनगारे सुनि केसोउ ॥ बल
हरि आये देखन काजा ॥ मल्ल अखाराकूं में राजा ॥ २ ॥ द्वार विचें गजवाडे तेऊं ॥ नाम कुवलयापी
ड़ हीतेऊं ॥ मावत पेरे निज दिगजबही ॥ श्री हरिमनें देखे जबही ॥ ३ ॥ पटसें कटि कसे शिरके सा
वंके बांधि किने सु भवेशा ॥ घनसम गंभिर बानि उचारी ॥ मावत सें बोलत गिरिधारी ॥ ४ ॥ हे
मावत हम कुं मग देऊं ॥ विलंब मति करो दुर रहेऊं ॥ मोकुं मगतूं मन हि देजबही ॥ गज तूं तजम

भा॰द॰पू॰ पुरपगतेंअबही ॥५॥ तिरस्कारयुंहरिनेकिना ॥ कोपसहितमावतमतिहिना ॥ कालमृत्युजमत् अ॰४२

॥२२२॥ अगजराऊ ॥ कोपकतलकरिकेप्रेरततेऊं ॥६॥ सोरठा ॥ प्रभुकुंमारनकाज ॥ त्रिघ्रचलिवडगजर
आये ॥ शुंडमेंपकरिराज ॥ लेतहृदमकुंजबही ॥७॥ चोपाई ॥ पुनिसुंडसेंनिकसीतरऊं ॥ मुष्टि
गजकुंमारीकेतेऊं ॥ छुपिजाततिनकेपगमांई ॥ तबहरिकुंसोदेखतनांई ॥८॥ घ्राणदृष्टीअति
शिघ्रकतहोइ ॥ फेरप्रादसेंपकरतसोइ ॥ पुनिबलकरिनिकसीगयेनाथा ॥ अतिबलिकोपुछ
पकरीहाथा ॥९॥ पचिसधनुषतानिगयेजैसें ॥ सरपकुंतानतगरुडतेसें ॥ पकरनजमनिऔ
रफिरेजबही ॥ वामओरप्रभूतानेतबही ॥१०॥ लिलासेंभ्रमावतजैसें ॥ गजभेलेप्रभुभ्रमततेसें
सें ॥ वछकेसंगेबालकजेऊ ॥ डायेतमनेभमेंजुतेऊ ॥११॥ पुनिप्रभुगजकुंकरसेंमारी ॥ करतप
लायनत्रिघ्रचारी ॥ प्रतिपगभ्रुदछोवतजुंआई ॥ गिरानगजकुंडरदोडाइ ॥१२॥ दोहा ॥ दोड
तकीडकरिप्रभू ॥ गिरेधरापरराऊ ॥ ततकालउठिगयेहरि ॥ गजनहीजानततेऊं ॥१३॥ चोपाई
गिरिधरापरमांनीताई ॥ हनिदंतोत्रालरिसेंभूमांई ॥ अतिअमर्षकतबडगजराहा ॥ निजप्रा ॥२२२॥

क्रमहिनभयेउतेहा ॥१४॥ पुनिमावतनेप्रेरयोजबही ॥ शिघ्रकरिहरिढिगदोरततबही ॥ आव
तगजढिगचलाइनाथा ॥ पटकिभुपरसूंडपकरिहाथा ॥१५॥ गिरेगजकुंप्रभुपावलगाई ॥ मा
रतकेहरिशिसिंहकिन्हाई ॥ दंतोउखालनिकासीदोउ ॥ हस्तिमावतकुंमारतसोउ ॥१६॥ मृतगजत
जिदंतधरिकरराऊ ॥ मल्लअखाडामेंगयेतेऊं ॥ खंभापरदंतोसलधारी ॥ रुधिरअरुमदबिं
दुलहारी ॥१७॥ स्वेदकणिकाजलमुखकंजा ॥ हस्तीदंतआयुधमनरंजा ॥ गोपकुंसेंविराजे
दोउ ॥ आयेअखाडाकुंमेंसोउ ॥१८॥ सोरठा ॥ तबचाणुरआदिक ॥ मल्लदेखबलहदमकुं
कुं ॥ कठिनवज्रसमनिक ॥ भासतमल्लअखाडामें ॥१९॥ चोपाई ॥ औरमनुष्यकुंजनात
जोउं ॥ सकलमनुषमेंश्रेष्ठहिसोउ ॥ अनंगमूर्तिमानजुंआये ॥ त्रियासबसुदेखहर्षाये ॥
२०॥ गोपकुकुंनिजमित्रजनाया ॥ निजमाबापहीबालदेखाया ॥ असतनृपकुंजनातरहा ॥
सबराजाकेशिक्षकतेहा ॥२१॥ निजमृत्युजानतकंसताइ ॥ अज्ञानिकुंविकलजनाइ ॥ परम
तत्वयोगिनेचिना ॥ कुलदेवजानतजडप्रविना ॥२२॥ हेनृपहरिनेहनेगजतोजे ॥ देखिकंस

भा. द. पू. हरषिरजोसोउ॥ अनिरुद्धजयबलहृदमकुंजानी॥ अतितरदवेगपायेसोमानी॥२३॥ बहुभुजविची अ. ७२
॥१३४॥ त्रवेत्राहीकारी॥ परमभूषनसमनस्त्रतधारि॥ निजकुंदेखतमनुष्यकोउ॥ तिनकेमनहरकौंतीसेसो
उ॥२४॥ दोहा॥ असविधरामरुहृदमजो॥ मल्लअखाडामांई॥ सोहतजन्नमवेषधर॥ दोनुंदवा
किन्याई॥२५॥ चौपाई॥ जन्नमनरबलहृदमकुंजोई॥ हर्षकुंसेंफुलेहगसोई॥ प्रफुलमुखमंचप
रजननजेता॥ देखअरुपुरवासितेता॥२६॥ बलहरीमुखकमलकोराकुं॥ पानकरतअखीयांसते
कुं॥ तोभित्रपिनपावततेहा॥ चक्षुसेंजनुपिवतएहा॥२७॥ जिह्वासेंजनुंचाटतताई॥ नाककुं
सेजनुंसुंघतआई॥ भुजकुंसेंजनुमिलतेएकुं॥ याविधसबजनदेखततेकुं॥२८॥ मंचपरगादेउ
जननजेता॥ रूपगुणरसीकपलंलखितेता॥ पौरुषपलंदेखितनजोउ॥ देखितसबनितसंभारी॥ संग्रथ
सोउ॥२९॥ बोलतलोकपरस्परबानि॥ असबलदेवरुसारंगपानी॥ नारायणकेअंससेंदोउ॥
वसुदेवघरुमेंजन्मेसोउ॥३०॥ सोरठा॥ निश्चेजहृदमजेकुं॥ देवकिमेंजन्मेसोउ॥ वसुदेवनेतेकुं
गोकुलमेंपववायेउ॥३१॥ चौपाई॥ इतनेकालनंदघरुमांई॥ छुपीरहेअरुदधिहीपाई॥ अ ॥१३४॥

सहृदमनेपुतनामारी॥ तृणावर्तकुंदिनसंहारी॥३२॥ यमलार्जुनदुमउखारे॥ केशिधेनुकशंख
चुडमारे॥ औरअघासुरआदिकजेता॥ असहृदमनेमारेउतेता॥३३॥ गोपसहीतगायुंथेजेती
दावानलसेंछोरइतेती॥ कालिनागकुंदमनकीना॥ इंद्रकुंकीमदहरेत्रविना॥३४॥ गोवरधनकुं
एककरमांई॥ धारणकिनेसातदिनलाई॥ विजवायुवृष्टीसेंएकुं॥ रक्षाकरतगोकुलकितेकुं॥३५
निसमुदजनतहगहसुनिजोउ॥ वदनकमलमेंसोहतसोउ॥ सोनिरखतमुदजुतव्रजनारी॥ बहु
विधतापजनततकरी॥३६॥ दोहा॥ पुनिसबजनकहीहृदमजो॥ रक्षाकरेगिआइ॥ तबजन
हुवेंगाविख्यातही॥ धनजन्नामोटनपपाइ॥३७॥ चौपाई॥ हृदमकेबडभाइबलएकु॥ कमलने
नश्रीभाजुततेकुं॥ वच्छप्रलंबइनुंनेमारे॥ बकासुरकुंफाडिडारे॥३८॥ मंचपरजनयुंबोलतस
बही॥ बहुविधबाजाबजनलतबही॥ बलअरुहृदमकुंकुंबोलाइ॥ चाणूरकहतवचनककुंताई
३९॥ हेनंदसुतत्मससमर्थदोउ॥ कुस्तिकरनमेंकुशलहीसोउ॥ तबकुस्तीदेखनकेकाजा॥ देश
पतत्महीकंसराजा॥४०॥ मनवचकर्मसेंनृपकोजोउ॥ प्रियकरिकेप्रजाहिसोउ॥ निश्चेश्रेयकुं

भा·द·पू· कुंसोपावे॥ नृपकुंनमानेकुखिरहावे॥ ४१॥ निसमूरदजूतवछचारतगोपा॥ मल्लयुधकीडाकरतअ अ·४३
गोपा॥ वनमेंगोचारिकियेजोउ॥ ममदिगखेलोदेखुमोउ॥ ४२॥ युंजानिकंसकुंनेअबही॥ युधदे
॥२३५॥ खनदेरायेतबही॥ याकारणतूमहममिलिदोई॥ राजाकोप्रियकरकुंसोई॥ ४३॥ सबप्राणिमयन
पतिकहाई॥ अपनेपरजोप्रसनहोजाई॥ तबमेहिभूतप्राणिजोउ॥ प्रसनहोसेअपनेपरसोउ॥
४४॥ सोरठा॥ सुनिकेवचभगवान॥ चाणूरमलकुंकेमबही॥ मनसेकरिबखान॥ मल्लजूधअ
तिइछिनमानि॥ ४५॥ चोपाई॥ देखाकालकुंजोगपहीजोइ॥ वचबोलतश्रीहरहमसोई॥ हेचाण
रभोजकुलपतिकेरी॥ वनवासीहमपूजाहेदेरी॥ ४६॥ निसनृपकोप्रियकिनहमभाइ॥ जनको
अनुग्रहहेहमताई॥ हमहेबालकवयमेंअबही॥ तूम्यबलवंनसेंलरुंगीतबही॥ ४७॥ घटि
तयुतजुधहोवेजेसे॥ सभामिअधर्मपरसेनतेसे॥ चाणूरकहेहहमतूमजोउ॥ बालरुकिशोर
नहीतूमसोउ॥ ४८॥ बलियाकुंसेंश्रेष्ठबलदेवा॥ तूमनेहनेउगजनतखेवा॥ सहस्त्रगजकेबल
जूतजोउ॥ याकारनजुधकरोतूमदोउ॥ ४९॥ बलिष्टमलसेकरकुंलराई॥ निश्चेयामेंअधर्मनां ॥२३५॥

ई॥ हेहहमतूममोसेलरकुं॥ मुष्टिकसेंबलदेवयुधकरकुं॥ ५०॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥
दशमस्कंधमिजेकुं॥ गजहनिरंगकुंमेगये॥ भूमानंदकहेकुं॥ ५१॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशि
ष्यभूमानंदकृतभाषायांत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४३॥ दोहा॥ मलअरुकंसकुंकुंहने॥ सांत
नकंसकीदार॥ रहेदिनमाबापकुं॥ चूमालिसमेसार॥ १॥ चोपाई॥ छकककहेसंकल्पनिश्चेकिना
चाणुरदिगगयेप्रभूप्रविना॥ रोहिणीजिकेसुतबलजेकुं॥ मुष्टिकमलदिगगयेउतेकुं॥ २॥ कर
सेंकरपगकुंसेंपावा॥ जितनइछाकरिदोलपटावा॥ अतिबलकरिपरस्परराकुं॥ नाननताकताक
कुंलेकुं॥ ३॥ मुष्टिकुंसेंबलहहमहीदोई॥ महामुष्टिकुंमारतसोई॥ जानुकेसंगजानुंलगाई॥ शिर
शिरसेंछातिछातियांई॥ ४॥ करपगकरिकेचकुंओरा॥ फिरातपिछेहवातजोरा॥ बथमेंपकरीदा
बतदोउ॥ परकिभूपरतजिरेतसोउ॥ ५॥ आगेहोइकेनिकसीजाना॥ पिछेनिकसेपुनिसथाना
अेमेपेचकरिबलहरिदोउ॥ मलसंगजूधकरतहीसोउ॥ ६॥ सोरठा॥ जानुंभेलिकरिदोउ॥ गि
रेकुंउवातहेसो॥ करआरिअंगसोउ॥ भेलेकरिकेदाबतहीं॥ ७॥ चोपाई॥ जितनइछतपरस्प

भा॰ द॰ पू॰ राई॥ पेचकरिकैपीरडतनाई॥ श्रुककरेमल्लयुधदेखिदारा॥ कहतपरस्परगाथअपारा॥८॥ जवा अ॰ ४७
॥१३६॥ नवलवंतमल्लसवकेऊं॥ निरवलकिशोरवलहरिकेऊं॥ राजसभामेंबैठेजेता॥ वडेअधर्मीहोयगे
तेता॥९॥ बलिअरुनिर्बलकोजुधजोऊ॥ देखतवैठनहारासोऊ॥ असजुधनृपदेखतहेतवही
तिनकेपिछेदुखतसवही॥१०॥ वज्रतुल्यसवकेहीनअंगा॥ वडेगिरिसमहेतवुरंगा॥ कोमल
अंगासवकिशोरदोऊ॥ जवाननहीभयेवलहरिसोऊ॥११॥ इतिकहेयाविवेकिजोऊसभाकेमां
ई॥ धर्मउलंघनहोतअसमाई॥ जेहिथलहोवेअधर्मजोऊ॥ नेहिथलनरहेविवेकिकोऊ॥१२॥ धर्म
न्यायकेजाननहारा॥ सोईसभाकुमेंजोवारा॥ अधर्महोवतजानिकेएऊं॥ बोलेविनदोषपावेतेऊं
१३॥ धर्मसेविरुधबोलेजतवही॥ दोषकुंकुंसोपावेतवही॥ हमकछुनांहिजाननयुकहही॥ तदपी
सोनरदोषकुंलहही॥ युंबोलतमथुराकिदारा॥ असविधदोषहिजाननहारा॥ बुधिवंतनरकरी
विचारा॥ सोइसभासेरहेउमारा॥१४॥ दोहा॥ निजशत्रुचाणुरकुंके॥ दोउतहेचकोर॥ वदनक
मलअसमहप्रभकी॥ देखोसखिदृगजोर॥१५॥ चोपाई॥ कमलडोरजलविंदुभिजेसें॥ स्वेदजलतसु ॥१३६॥

खसोहततैसें॥ इजीकहेवलमुखदेखोरी॥ लाललोचनहेजाकेदोरी॥१६॥ निजशत्रुमुष्टीकके
संगा॥ अमर्षसहीतलरततुमंगा॥ हास्यक्रोधजुतसोहतएऊं॥ अतिपुन्यवंतव्रजभुजेऊ॥१७
जामेंजुगलमनुषतनुंधारी॥ फिरतगूढवनमेंगोचारी॥ पुराणपुरुषहिवसिवजाई॥ वहुविध
पुष्पकिस्त्रजतरमांई॥१८॥ त्रिवलक्ष्मिपदपुजनजाके॥ वहुविधक्रीडाहोतहीताके॥ अल्पपुन्य
वंतअपनेजेती॥ वहुपुन्यवंतागोपिजेतेती॥१९॥ हरिकेरूपकुंकुंसवएहा॥ दृगसेंपानकरतनि
सनेहा॥ पुर्वजन्मकेस्वातपकिना॥ हरिकेरूपतूल्यहमनहीचिना॥२०॥ सोरठा॥ वसनभूषनकुं
एऊं॥ सोभावतनिजरूपकुंसें॥ निसनविनहेतेकुं॥ थोरपुन्यजनपावननही॥२१॥ चोपाई॥ जसल
क्ष्मिरूपऐश्वर्यजेता॥ सदारहेहरिरूपमेंनेता॥ सोरूपअपनेदेखतनांई॥ याकोरनयुनहीनकहांई
२२॥ दोतवलोवतखांरनजवही॥ लियतबालहिंशोरनतवही॥ शेवतवालधवरावतएऊं॥ घरु
मेंझाडुदेतपुनितेऊं॥२३॥ सवकीयामेगोपिजेहा॥ हृदयमेजसगावतहेतेहा॥ आश्रुजुबुधिह
रिमेयाकी॥ दृगमेजलचितहृदयमिताकी॥ हरिविनविषयइछनांहि॥ सवगोपिधन्यभाग्यक

भा॰द॰पू॰ हाही ॥२४॥ व्रजमेंवनमें नानमवारा ॥ सायें आवतगौअन तप्यारा ॥ वेंजीसवरसकें निगोपि युंजेती ॥ नंत अ॰ ५४

कालमगमिं आनहिनेंनि ॥२५॥ स्यामसुहासिकऩजोउ ॥ मुखपंकजहेरतसबसोउ ॥ बहुसुमवं

॥२३१॥ तिगोपिकहावे ॥ सुकराजाकुंकहीसुनावे ॥२६॥ दोहा ॥ भयभूतवचबोलतसबे ॥ मथुरांकुंकिदार

चाणुरकुंमारनलिंजे ॥ मनकीनरेंदरकुमार ॥२७॥ चोपाई ॥ भयकऩवचत्रियाकेजोउ ॥ कंनिवस

देवदेवकीदोउ ॥ सुतस्नेहसैंविकलहोई ॥ बलनहीजानतसुतकेसोई ॥२८॥ अतितापपावतउ

रमांई ॥ निजतातमातामुरछाई ॥ वसुदेवदेवकीदुखपाई ॥ बहुविधमलजुधविधिलाई ॥ चाणु

रहरिसुमलरहीसोउ ॥ बलमुष्टिकजुधकरहीसोउ ॥२९॥ वज्रतुल्यहरिअंगकठोरा ॥ गुणकरद्रि

रछतियांपोरा ॥ तिनसेंहनीचाणुरकुंजबही ॥ तोरेसबइनकेअंगतबही ॥३०॥ पुनिपुनिग्लानि

पातचाणूरा ॥ सेनपक्षिसमवेगवंतसूरा ॥ सेकरकीमुष्टीकरिताकुं ॥ क्रोधकरिहरिउरसिहनितेकुं

॥३१॥ चाणुरकिमुष्टिसेंजोउ ॥ प्रभुचलायमानहोतनसोउ ॥ पुष्पहारसेंहनेउजेसें ॥ हस्तिसुंडो

जतनहीतेसे ॥३२॥ सोरठा ॥ निजभक्तकेजोउ ॥ संकटकेहरताहरिही ॥ करमेंपकरिसोउ ॥ चाणू ॥२३१॥

रहिफेरतवेगे ॥३३॥ चोपाई ॥ क्षितिजिवतभयेभ्रमणमांई ॥ भुमिपरपटकतप्रभुताई ॥ छुटेकेश

भूषनअरुमाला ॥ गिरेइंद्रध्वजसमविकराला ॥३४॥ प्रभुमुष्टिप्रहारसेंसोई ॥ विकलचितहोचाणू

रहोई ॥ देखततनभंगकुंतबएकुं ॥ त्रातचंद्रमासरहीतरीतेकुं ॥३५॥ मुष्टिकमलदोकरसेंधाई ॥ ब

लकुंहनिचाणुरहरिमांई ॥ पुनिबलनेएकथपारमारी ॥ रुधिरवमतकंपततनुभारी ॥ प्राणविन

गिरेमुष्टिकजेसें ॥ वायुसेंगिरेवृक्षरीतेसें ॥३६॥ मारनहारमेंश्रेष्टकहाई ॥ बलदेवनिजदायेकरता

ई ॥ हनतकुटमलकुंपुनिताकुं ॥ करिअवज्ञालीलासेकुं ॥३७॥ तबहइसकेपावसेंजोउ ॥ फूटगये

शिरसलमलसोउ ॥ दोचिरिकिनतोशालकीजबही ॥ गिरेधरापरदोनुंतबही ॥३८॥ दोहा ॥ शा

लतोशालचाणुरजो ॥ मुष्टिककुटमलजेकुं ॥ पांचहनेतबओरमल ॥ जिवनइछततेकुं ॥३९॥

चोपाई ॥ किनेपलायनसबमलजबही ॥ निजतुल्यगोपदेरिहरितबही ॥ तासेंबाथ्थभरिविरहोई

करतवाजिंतरनचतहीसोई ॥४०॥ राहुकरतनुपुरपगमांई ॥ गोपसंगखेलतदोभाई ॥ द्विजआदी

निकमनुष्यजेता ॥ बलहरीकर्मबखानततेता ॥४१॥ तबकंसबिनओरतनजोउ ॥ अतिहरख

भा·द·पू· उरपावनसोउं॥ श्रेष्ठ पंचमल्लहनेउजबही॥ औरमल्लकिनपलायनजबही॥४२॥ निजबाजाकुंकंसमु अ·४४
निवारी॥ बोलनकंमयुंबचउचारी॥ दुष्टआचरणकरताजोउं॥ वसुदेवकेसुतदृष्टमसोउ॥४३॥ इनकुं
॥१३८॥ पुरसेंदेहुनिकासी॥ लुट्टलियोधनगोपकोवासी॥ दुष्टमतिनंदबांधोलाई॥ दुष्टबुधिवसुदेवकहाई
॥४४॥ सोरठा॥ अतिअसाधुताई॥ तूरतमारदियोइनकुं॥ उग्रसेनकहाई॥ ममतातकुंमारदि
यो॥४५॥ चोपाई॥ सोरत्रातुकोपक्षिनेऊं॥ चाकूरसहीनहनोअबराऊं॥ युंनिजबखानकीनकंस
जबही॥ अतिकोपकिनहृदयमनेतबही॥४६॥ उंचमंचउपरीततकाला॥ चढेवेगसंभरिणकफाला
निजमृत्युरूपहृदयमहीजोउं॥ नजिकमंचपरदेखिसोउं॥४७॥ आसनसेंउठेततकाला॥ ढालअसि
करलियेकराला॥ श्रीनपक्षिआकाशमेंजैसे॥ ठायेजमनेफिरनहीनेसे॥४८॥ सुखरंगाकंसग्रहीकु
रमांई॥ ठायेजमनेरोरनधाई॥ सोकंसकुंकुंपकरतनेसे॥ गरुडसरपकुंपकरेजेसे॥४९॥ उग्रनेज
वलजुतहरिजोउं॥ पकरिकेशाकंसकेसोउं॥ उंचमंचसेंदिनगिराई॥ चलतमुकटरंगमेंइपमाई॥५०॥
तापरगिरेश्रीहृदयमजोउं॥ भारलइत्रत्योउकोसोउं॥ मृतकुंतानतहृदयमहीनेसे॥ सिंहनानेगजकुंकुं ॥१३८॥

जैसें॥५१॥ सकलजनऊदेखितेहिवारा॥ हाहाकरिबडशब्दउचारा॥ कंसजिवतेथेउजबही॥ उद्वेग
गबुधिजुतनिसतबही॥५२॥ दोहा॥ खावतपिवतबोलते॥ ऊचतचलतपुनिराऊं॥ स्वासलेत
कंसदेखत॥ चक्रजुतहरितेऊं॥५३॥ चोपाई॥ दुखेनपावेअसतनरनाई॥ कंसपायेहृदयरूपताई
पुनिकंसकेछोरेभाइ॥ कंकन्यग्रोधादिककहाई॥५४॥ नितबंधुवैरलेवनकाजा॥ क्रोधजुतअ
तअष्टसमाजा॥ तिनकुंरोहिणिसुतबलदेवा॥ हनतभोगलकुंसेंततखेवा॥५५॥ वेगवंतकुंसिया
रसोहोई॥ सिंहहनतपशुकुंसुमोई॥ नभमेंदेवबजावततबही॥ नोचसुआदिबाजांसबही॥५६
ब्रह्मादिनिजविभूतिजेती॥ पुसनऊमनउरिकरतहीनेती॥ स्तुतिकरतमुदजुतपुनिसबही॥ नृ
त्यअप्सराकरतहितबही॥५७॥ कंसादिनवभ्रातकिदारा॥ पतिमरणसेंदुखिअपारा॥ हगमेंजल
शिरकुटतरहा॥ मृतपतितेहिथलआइतेहा॥५८॥ सोरठा॥ ऊनेविरसजामाई॥ निजपतिकुंपक
रिभुजमें॥ सोचकुरतदुखपाइ॥ फिरफिरजलवर्षतहगसें॥५९॥ चोपाई॥ उंचेस्वरसेंकरतवील
पा॥ हाहानाथयोकारिआपा॥ धर्मज्ञानकरुणाजुतनाथा॥ प्रियवछलकहीउरहनिहाथा॥

भा·द·पू· ६० ॥ पतीनृममृत्सुपायेउनवही ॥ घरश्वनात्नूतमरिहमसबही ॥ त्यागकियेतृमनगरिरहा ॥ उछ अ·४५
वमंगलरहीतनेहा ॥ ६१ ॥ नहीसोहेघूरीहमन्माई ॥ पतितृमबिनपस्योदुखन्माई ॥ न्नपराधरही
॥२३९॥ तजीवकोजेहा ॥ न्मनिडोहतृमकिनेउतेहा ॥ ६२ ॥ सोडोहेन्मसदवागहिपाया ॥ जिवडोहकरिस
खपालनगाया ॥ न्मसहूहमसवजीवकेजोउं ॥ उसुतिवृलयपालकसोउ ॥ ६३ ॥ इनकोडोहकरेन
रकोई ॥ कबुसुखवहूधिपावेनसोई ॥ शुककहीलोककेरक्षकजोउं ॥ विलापकरनदाराकुंतेऊं ॥
६४ ॥ न्माश्वासनाकरिहूहमजोउ ॥ मृतकसादिकेपुनिसोउ ॥ लोकिकक्रियाकरातसबही ॥ मातता
तरिगन्माइहरितबही ॥ ६५ ॥ बंधनसेंछोरितनकाला ॥ पगमेंशिरधरिनमतहीबाला ॥ तबवसु
देवदेवकिजोउं ॥ जगईज्ञानानिस्कलकुंसोउं ॥ सुतनेनमनकिननिजकुंतबही ॥ त्रांकापाईमिलन
नहितबही ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंधमिजेऊं ॥ कंसहनिन्मष्टमालही ॥ भू
मानेरकहेऊं ॥ ६७ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायांचतुश्चत्वारिंशोऽध्या
यः ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ नंदादिककुंसांत्वना ॥ उग्रसेनन्मभीषेक ॥ गुरुगेहसेन्मायेजो ॥ पितताजिस ॥२३९॥

न्मभीषेक ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुककहेपुरुषोत्तमजोउं ॥ मातपिताजाननतबसोउं ॥ हूहमकहेप्रभूप
णुमतमानो ॥ निजपुत्रमोकुंसोइजानो ॥ २ ॥ विचारिनिजमायाविस्तारी ॥ जनकुंमोहउपजावनहा
रि ॥ पुनिवलनतजडुन्नमजोउं ॥ नमतविनयकरीहूहमसोउं ॥ ३ ॥ देवकिवसुदेवदिगजाई ॥ मा
ततातकरिबुसंननाइ ॥ हेतातहमलियेतृमदोउ ॥ नित्यचिंतिनिजतृतथेतृमसोउ ॥ ४ ॥ तदपिसुख
निजसुतसेंतेऊं ॥ बाल्यपोगंडकिशोरकेऊं ॥ वयसबधिसुखहेजेता ॥ हमसेंतृमनहिपायेतेता ॥ ५
हमकुंदैवेहनेउनबही ॥ तृमदिगवासनपायेतबही ॥ गेहमेंरहहीबालकजोउ ॥ मातकृतालनलडा
वनसोउ ॥ ६ ॥ तबमुदपावतबालकजेऊं ॥ हमनहीपायेन्मानंदतेऊं ॥ धर्मन्मर्थकाममोक्षकहाई
उत्पनहोवतहेतनूमांई ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ पसवीपोषणकिन ॥ मातपिताऊंनेतनुकुं ॥ अनृणीपणं
प्रविन ॥ शतवर्षसुतपानतनहि ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ समर्थसुतनदेहधनसेंजबही ॥ मातपिताकीजिवका
करबही ॥ नहीकरेसोतमपुरजावे ॥ तबनिजमांसतमकुतखवावे ॥ ९ ॥ मातनातहुधपतिव्रतनारी
बालगुरुविप्रशरणगतारी ॥ इनकोभरणपोषणनकरही ॥ जिवनेमृतकावेसोनरही ॥ १० ॥ न

भा·द·पू· हिसमर्थकंसडरुंसेजोउं॥ निसजुरवेगचितकरतदोउं॥ हमसेवानहिकिनेतुमारी॥ इतनेदिनवृथाग अ·४५
॥१४०॥ येहमारी॥ ११॥ हेमाततहेतातहमदोई॥ हकेउनापाईअतिकंससंकसोई॥ परतंत्रहोईसेवानकिना॥ क्ष
माकरोअपराधसबविना॥ १२॥ श्रीशुककहेमायामनुषजेऊ॥ जगकेआत्माहृदमहीनेऊ॥ तिनकि
वोनिसकंनिमोहपाई॥ वलहरिकुंलिनगोदउवाई॥ १३॥ मिलतदेवकीवसुदेवदोउ॥ परमआनंद
पावतसोउं॥ हगजलधाराऊंसेतउं॥ निजसुतकुंसिंचतहितेऊं॥ १४॥ स्नेहपाशबंधेरहेअवराई
गदगदकंठकछुबोलतनांई॥ असविधमाततातकुंजोउ॥ सांत्वनकरिदेवकीसुतसोउ॥ १५॥ निज
जननिकेकाकोजेऊं॥ उग्रसेनजइनृपकिनेऊं॥ नृपसेंहरिबोलतकरजोरी॥ हेमाहाराजप्रजाहम
तोरि॥ १६॥ तुमकुंआग्याकरऊंनाथा॥ तुमकुंकरऊंकंनोममगाथा॥ ययातिनृपकोशापहेजोइ॥
नृपगादिनइबेवेनकोइ॥ १७॥ दोहा॥ तुमयदुकुलहोनदपि॥ ममआग्यासेंनाई॥ राजआसन
परबेठऊ॥ तुमकुंदोसहीनांई॥ १८॥ चोपाई॥ राजेकरनसमर्थहमनांही॥ तिनकोउतरकऊंमन
हुंताही॥ हमतोरसेवककरजरिहोइ॥ सावधानरहूतवरिगसोइ॥ १९॥ तवइंद्रादिकदेवहीआई ॥१४०॥

तोयुबलिदेवेगिज्ञिरनाई॥ औरनृपनमिदेवेगेतोई॥ बलिदानकधाकेनोसोई॥ २०॥ कंसडरसें
परदेशपलाई॥ गयेथेनिजज्ञातियदुताई॥ वृष्णीअंधकमधुदाशाहीई॥ आर्यककुकुरकुल
दिसमांई॥ २१॥ तेराडुसनमानकिनेतवही॥ परदेशाकाभयेसबही॥ धनदइत्रसकुरतसबवी
ना॥ निजनिजगेहमेंवसाइदिना॥ २२॥ बलहृदयकेभुजसेजोउ॥ रक्षाकिनेजादवसोउ॥ पुर
णकाममनोरथपावा॥ बलहृदयमनेतापमिटावा॥ सबजादवनिजनिजघरमांई॥ रमतसदाउर
आनंदपाई॥ २३॥ निजअतिहर्षशोभाकरनजेऊं॥ दयासहीतहगहसनितेऊं॥ तेहीजनसुख
कमलहरिकेरा॥ निशादिननिरखतजादवहेरा॥ प्रसनहोइनितहगसेंरहा॥ हरिमुखअमृत
पिवतनेहा॥ वृधवृजादवकुंमेंजेता॥ बलशक्तिपाइजवानितेता॥ २५॥ पुनिबलहरिसमनंदहिगा
जाइ॥ मिलीनंदकुंबोलतदोभाई॥ हेनंदअतिहेतवंतदोउ॥ हेतातनुमनंत्रगदासोउ॥ २६॥ पा
लनपोषणकिनेहमारा॥ निजदेहसेकरिअतिप्यारा॥ माबापकुंनिजदेहसुंनेऊ॥ अधिकपि
तिरहेसुतमेंनेऊ॥ २७॥ पोषणरक्षणकरनेजोउं॥ माततातसमर्थनहीकोउं॥ त्यागकीयेबाल

ककुंनेकुं॥निजपुत्रसुंपालेजेकुं॥सोमानसोईतातकहाई॥पोषणकरेजोसुतकिन्याई॥३८॥सोरठा
ताकुंव्रजमेंनंद॥सकलगोपसहीतत्महीं॥ओरसुहृदयदुवृंद॥तिनकुंरक्षकरिपुनिमें॥३९॥
चोपाई॥व्रजमेंआयेगिरदेवनकाजा॥ओरस्नेहकरिउत्सवसमाजा॥तातेंकुंहममिलेगेआई॥ह
रिवचनसुकनीकहीनृपताई॥३०॥व्रजजननतूलनंदजिकुंकिना॥सांत्वनापुनिपरभूषणदिना॥त्रां
बपितलकेवासणलाई॥देतआदरकरतपूजनताई॥३१॥हरिवचसुनिप्रेमविह्वलहोई॥बलह
रिकुंमिलकेनंदसोई॥हगजलसेंपुरणकरीनंदा॥गयेव्रजमेंसवगोपहिवृंदा॥३२॥पुनिश्रुरसु
तवसुदेवजेकुं॥निजसुतबलहृदमकुंतेकुं॥द्विजातिसंस्कारयज्ञोपवीता॥निजपुरोहितगर्गनेदि
ना॥ओरब्राह्मणकुंबोलाइ॥करानशास्त्रकिविधिलाइ॥३३॥संस्कारकर्त्ताद्विजजेता॥परभू
षणसेंसिंगारीतेना॥पुनिदक्षिणाद्वीजकुंदिना॥कंचनमालावसनननवीना॥३४॥द्विजगलसेंगौ
सणगारि॥वछसुमनकुंतदेतहीधारी॥रामहृदमजन्मेतजवही॥वसुदेवमनसेदिनेतवही॥कं
सअधर्मकरिलायेजेकुं॥गौदेवतद्विजकुंसवनेकुं॥३५॥दोहा॥संस्कारनिकेवेतजूत॥द्विजप ॥१४१॥

ताकुंपाई॥कुलआचार्यगर्गसें॥गायत्रिव्रतदौभाई॥३६॥चोपाई॥ब्रह्मचर्यधारिकेदोई॥सबवि
द्याकेकारणसोई॥सर्वज्ञानजगईश्वरजेहा॥स्वसिधनिरमलज्ञानवहीतेहा॥३७॥मनुष्यचेष्टाकुंसें
छुपाई॥वासइछतगुरुकुलमेंजाइ॥उजेणमेंसांदिपिनिनामा॥कश्यपगोत्रकोद्विजस्कामा॥३८
जितइंद्रियआदरकृतजोउ॥रामअरुश्रीकृष्णहिदोउ॥गुरुहृतिनिंदाविनजेहा॥ओरजनकुंसिखावत
तेहा॥३९॥भक्तिकुंमेंसोदोउभाई॥सेवतगुरुकुंदेवकीन्याई॥शुधभावसेंसेवेजोउ॥संतोषपाई
सांदिपिनिसोउ॥४०॥अंगअरुउपनिषदजूतवेदा॥भनातवलहरिकुंजूतभेदा॥रहस्यमंत्रनाम
कहाई॥ज्ञानदेवकुंकोजामांई॥४१॥तेहिजूतधनुरवेदअरुधर्मा॥धरमशास्त्रकहतअनुकर्मा
मिमांसादीन्यायमगजेना॥तर्कविद्यापुनिकहततेना॥४२॥राजनितिकेषटप्रकारा॥गुरुकहत
सबहीएकवारा॥सबविद्यापुर्वस्कदोउ॥ग्रहणकरतगुरुकुंसेंसोउ॥४३॥सोरठा॥चोसठर
तियांदिन॥चोसठकलापढीलिने॥निजआचार्यकुंकिन॥गुरुदक्षिणासेंदोभाइ॥४४॥चोपाई
गुरुकीनेविद्याएकवारा॥ग्रहणकरतवलहरिततकारा॥असअद्भुतमतीमालखिताकुं॥जनसे

भा·द·पू· अधिककुबुधिरोकितेऊं॥४५॥ लखिकेंहीजनिजनारिसंगा॥ किनविचारएकांतउमंगा॥ प्रभासपिं अ·४५
धुमेंडुबेजेऊं॥ मागतवरनिजबालकतेऊ॥४६॥ मृहारथिअतिश्राक्रमीरोउ॥ गुरुकुंकहीहमलाए
॥१४२॥ वेसोउ॥ रथबेगीगयेप्रभासमांई॥ सिंधुतटक्षणुबेवतजांई॥४७॥ निजतटपरखलहरिकुंजानी॥ तू
रतसिंधुपुजतपेश्यानी॥ निजदिगआयेसागरजबही॥ हृदमृहितासेंबोलततबही॥४८॥ ममगुरु
कतलहरीसेंतांनि॥ गिलिगयेतुमनूरतदेआनी॥ सिंधुकहेहूदमभगवाना॥ तबगुरुकतहमने
नहींआना॥४९॥ पंचजननामदैतहीतेऊं॥ रहेममजलमिहरिगयोतेऊं॥ शंखरूपकुंरहेउधारी
सोसिंधुवचकेंनिमुरारी॥५०॥ दोहा॥ जलमेंपैठिपंचजन॥ दैसहनेंनतकाल॥ तिनकेउदरमें
हदमहा॥ देखतनहीगुरुबाल॥५१॥ चौपाई॥ पांचजन्मशंखभईतनुमांई॥ तिनकुंलेआये
रथताई॥ पुनिबलजुतहरिजमपुरीजांई॥ शंखबजावतवरहूरखांई॥५२॥ शंखनादकेंनिय
मराजाई॥ श्रीहदमदिगआयेचलाई॥ भक्तिजूतवरपुजाजोउ॥ करतप्रजापावकेपममसोउ॥
५३॥ सबअंतरजामिकुंएऊं॥ भक्तिजूतनमिबोलततेऊं॥ जिलामनूष्यविहमूतुमजोउं॥ तब ॥१४२॥

स्वाकुमेंकहोहिसोउ॥५४॥ हदमकहेस्कंनकुंयमराया॥ ममगुरुस्कतनिजकर्मबंधाया॥ आ
योहेयमपुरिमांई॥ ममआग्यासेंदेअबलाई॥५५॥ लाइदियेयमकुंनेजबही॥ आइउजेलदि
नगुरुकुंतबही॥ पुनिमागोवरगुरुकुंकिना॥ तबबोलतेसोगुरुप्रवीना॥५६॥ सोरठा॥ हेपूत्र
तुमदोउ॥ गुरुदक्षीणादिनसबे॥ तोरगुरुमेंसोउ॥ सकलमनोरथपूर्णभई॥५७॥ चौपाई॥ हे
हदमबलदेवतुमदोउं॥ निजगेहजाओकहुमेंसोउं॥ पवित्रकीर्त्तिरहोतिहारी॥ अबपदेसुंरहो
वेदचारी॥५८॥ असपरलोककहुमेंपुनितेहा॥ निमेनविनरहोसबतेहा॥ सुकुकहेगुरुनेआग्या
दिना॥ कंनिहदमबलदेवप्रविना॥५९॥ वायुवेगतूल्यरथजोउं॥ मेघनादस्युगरजतसोउ॥
सोरथपरराममहदमगारी॥ निजपुरमथुरंआनदकारी॥६०॥ सबप्रजादेखिकेताई॥ पाइअती
आनंदउरनमाई॥ बहुदिनहरिनहिदेखीतहा॥ नष्टरीधनस्युंपायेतेहा॥६१॥ दोहा॥ इतिश्री
मतभागवते॥ दशमस्कंधमीजेऊं॥ गुरुसुतलायेजमपुरसें॥ भूमानंदकहेहेऊं॥६२॥ इतिश्री
सहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृतभाषायां पंचचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४५॥ दोहा॥ उध

 वव्रजपठयेवभु॥इनकिवातसेंजेऊं॥नंदजशोदाशोकहरि॥छेतालिन्नामेतेऊ॥१॥चौपाई॥
॥१५३॥ शुककहेयहमेंश्रेष्टहिजेऊं॥राजनितिसवजानेतेऊं॥बुधिसेअतिश्रेष्टकहाई॥वृहस्पतिशीष्य
उधववजाई॥२॥वल्लभसखाश्रीहरमकेरा॥भक्तराकांतिकरहहीनेरा॥तिनकोंकरग्रहीनिजकर
मांई॥जनदुखहरकहेउधवताई॥३॥हरमकहेउधवव्रजजाउ॥नंदजशोदाकुंप्रितिपमाउ॥व्र
जविनताकुंपिडाजोउ॥मोरवियोगकुंसेंहेसोउ॥४॥सोपिडातुमदेकुंमिटाई॥मोरसंदेशास्कंना
इताई॥इनकोमनममसुरतिमांई॥मेकुंइनकेप्राणसदाई॥५॥ममलियुंपतिपुत्रादिसागि॥
लोकधर्मतजीदिनेस्कभागी॥असविधजनहेताकोजोई॥भरणपोषणकरुमेंसोई॥६॥अ
तिवल्लभसेंवल्लभजेऊं॥सोहमतजीकेदुररहेऊं॥तवव्रजविनतामोयसंभारी॥मिलनइछनविर
हजूतनारि॥७॥सोरठा॥विरुलहोइमुर्छात॥गोपिमोमेमनजाको॥कहीमेंइनकुंवात॥जव
निकसेथेगोकुलसें॥८॥चोपाई॥ततकालपिछेआउगीजेहा॥सोसंदेशासंभारीतेहा॥अ
तिकष्टसेंधारतप्राणकुं॥निजप्राणकुंगोपीयुतेऊं॥९॥शुककहेयुंहरमनेकोना॥संदेशाउधवर ॥१५३॥

स्कंनिषविना॥आदरकतसंदेशलइएऊं॥रथवेठिगोकुलगयेतेऊं॥१०॥स्करजअस्तभयेउजव
हि॥गोकुलआयेउधवतवही॥खुररजसेंरथरहेछाई॥सोभाजुतनंदकेव्रजमांई॥११॥गर्भहीत
धारणकालकुंपाई॥गोखीयेजुधकरेतसवधाई॥मदोन्मतवृषधेनुहिजेती॥आउभारकतदोरेत
तेति॥निजनिजवत्सबोलानहीएऊं॥शाद्रायमानकिनव्रजतेऊं॥१२॥इतउत्तकुदतश्वेतवछाई
गोदोहनकेशब्दस्कहाई॥वेणकेस्वरहोतहीजामे॥स्कभहरिचरित्रगावेतामें॥१३॥अलंकारजूत
गोपरुगोपि॥तासेंव्रजरह्योहेओपि॥द्विजरविअग्निअतिथिगोजेहा॥पित्रदेवपूजाजुतहीगे
हा॥धुपदिपफूलफलगोपकेऊं॥अतिमनोहरगोकुलतेऊं॥१४॥फुलेउवनव्रजकीचऊंओर
भमरपंखिवृंदकेशोर॥हंसकारंडवपंखिजेता॥वेठेकमलसमुहमेंतेता॥१५॥दोहा॥अस
विधनंदकेव्रजकुं॥उधवपायेजेऊं॥हरमसेवककुंमीलके॥प्रसनभईनंदतेऊं॥१६॥चौपाई॥वा
स्कदेवसमजानिताई॥नंदपुजतउधवकुंजाई॥श्रेष्टअन्नऊंसेतीमाई॥स्कखीपलंगपरवेठेआ
ई॥१७॥पगचंपादिकसेवाकीना॥श्रमविनउधवभयेप्रवीना॥तवनंदजीपुछतहिंगआई॥हे

भा॰द॰पू॰ उधववस्तरस्तनममभाई ॥१८॥ कंसकष्टसेदुखदेजोउ ॥ वसुदेववडभागीसोउ ॥ निजसुतसकहदसेवि अ॰५६
॥१५५॥ हाई ॥ कुशलहेअबमथुरामांई ॥१९॥ पापिकंससेवकजतजेऊं ॥ निजपापेहनेनिकमइतेऊं ॥ ध
र्मिअरुसाधुजादवजोउ ॥ तिनकोनिसदिषिकंसमयोउ ॥२०॥ मोयुसंभारहिहमकबही ॥ इनकी
माताकुंकुंअबहीं ॥ इनकेसुहृदगोपकहांई ॥ तिनकुंसंभारतहेकिताइ ॥२१॥ व्रजकुंकेसोइनाथ
कहाइ ॥ सोव्रजकुंसंभारतभाइ ॥ वृंदावनअरुगोगिरीजेऊं ॥ कवुसंभारतहेहरीतेऊं ॥२२॥ सोर
ठा ॥ इनकेसुहृदजोउ ॥ हमकुंदेखनएकदिन ॥ आवेगेजबसोउ ॥ तबहमइनकुंदेखेगी ॥२३॥
चोपाई ॥ कंदरनाकहमनितजेऊं ॥ हरिमुखपंकजहेरेगेऊं ॥ दावानलवायुवर्षाता ॥ वृषभा
सुरअघासुरघाता ॥२४॥ औरमृत्युसेंहमारीजेहा ॥ किनेरक्षाहमनेतेहा ॥ योहहमकेचरित्रजो
उं ॥ लिलाकरताक्षणतहगासोउ ॥२५॥ हमनिबोलनिसंभारेजबहीं ॥ त्रिथलक्रियाहोनममतब
हीं ॥ हमचरणसेंशोभतगहा ॥ वनगिरिनदिरमणथलतेहा ॥२६॥ इतंनलखिमनहमारीजेऊ
हमरूपहोइरहतनेऊं ॥ सबदेवनमेंउत्तमदेवा ॥ कार्यकरनदेवनकोतेवा ॥२७॥ इनलियुभू ॥१५५॥

परतअपावा ॥ गर्गवचनमोयकहीसंनावा ॥ सोवचहमसंनेथेजेसें ॥ बलहहमकुंमानुंमेंतेसें ॥
२८ ॥ कंसचाणुरमुष्टिकजोउं ॥ गजकवलयापिडजोसोउं ॥ अयुतगजतुल्यबलियासबही ॥ रम
तहुहमनेहनेउतवही ॥२९॥ सिंहपशुकुंजसबमारी ॥ पुनिधनुषतोरेगिरिधारी ॥ तिनतालअतो
कवीरजैसें ॥ वहगाजलकरीतोरेतेसें ॥३०॥ दोहा ॥ सप्तदिविगिरिताककरधरी ॥ हनेप्रलंबवास्तर
धेनुकअरिष्टतृणावत ॥ बकअभादिपचुर ॥३१॥ चोपाई ॥ सुरअसुरनजितनजोई ॥ हरिहनेत
ताकुंव्रजमांई ॥ शुककही हरिमेंनंदकिजेऊ ॥ अतिहेतेजतबुधिहीनेऊ ॥३२॥ संभारिहमकुंवेरखे
रा ॥ गदगदकंचभयेउरेरा ॥ प्रेमवेगसेंविकलहोइ ॥ मुनिरोइरहेनंदसोइ ॥३३॥ नंदनेवुरनेनकी
नैनेहा ॥ सुतचरितसंनिजशोदातेहा ॥ स्नेहसेंस्तनस्रवतदोउ ॥ दृगसेंआंसुवरषनसोउ ॥३४
असविधनंदजशोदाकेरा ॥ स्नेहदेखिहमसेरेरा ॥ आनंदसहीतउधवजीहोई ॥ नंदनिपसेंबो
लतसोइ ॥३५॥ उधववकहेनंदभूपरजोउ ॥ देहधारिमेंतुमजोदोउ ॥ सबकुंस्तुतीकरनजोग्यतेऊं
जगगुरुनारायणमेंतेऊं ॥ याविधप्रीतिकिनतुमजोउं ॥ मानदेनहारानंदसोउ ॥३६॥ प्रधानपूरु

भा॰द॰पू॰ षरूपवलहरिहोउ ॥ जगकेकारणपुराणसोउ ॥ सबमेंअन्वयदोयकेरकुं ॥ ज्ञानअरुजीवकेप्रेरक अ॰ ४६
॥१४५॥ तेकुं ॥ ३७ ॥ प्राणवियोगकालजबआवे ॥ विशुधमनक्षणएकजरावे ॥ कृष्णकिमुरतिमेंजनतेकुं
कर्मवासनानास्तिकुं ॥ ३८ ॥ सोरठा ॥ सूर्यसमतेजवान ॥ तनुधरिब्रह्मस्वरूपहोई ॥ पावतपरमगतिजा
न ॥ उधवजीयुंकहीनंदकुं ॥ ३९ ॥ चोपाई ॥ सबकेकरताअंतरजामि ॥ धराभारउतारनस्वामी ॥ सा
धुरक्षाकरनेकाजा ॥ मनुष्यमुरतीधरिमाहाराजा ॥ ४० ॥ नारायणबडआत्माजोउं ॥ तिनकिभक्ती
करततुमदोउं ॥ तुमरेकभकछुकरनोनांइ ॥ करतार्थभयेयाजगमांई ॥ ४१ ॥ जादवपतिकृष्णतन
नाई ॥ आवेगेथोरेकालहीमांइ ॥ मातपिताजोतुमहोदोई ॥ विनितिउपजावेगेप्रभूसोइ ॥ ४२ ॥ सब
जादवन्नतुंकंसजेहा ॥ मल्लअखाडामेंहनिलेहा ॥ तुमदिगआईवचकिनेतोउं ॥ समकरेगिअब
आइतेकुं ॥ ४३ ॥ हेनंदजसोमतिबडभागी ॥ दुखतजोतुमरहोनुलगागी ॥ कृष्णकुंकुंदिगदेखोगेकुं
सबकेअंतरजामितेकुं ॥ ४४ ॥ सकलकाष्टमेंअगनिजेसे ॥ उरमेंरहहीतवसकलतेसे ॥ मानरहीत
सबमानेताइ ॥ अतिप्रियदुनकुंकोनांइ ॥ ४५ ॥ अप्रियउत्तममध्यमजोउ ॥ अधमअरुनिजतुल्य ॥१४५॥

हिकोउ ॥ माततातत्रियासुतभाई ॥ आपअोरकोइनकुंनांई ॥ मनुष्यजेसेदेहनताई ॥ दिव्यमुरती
परब्रह्मकहाई ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ नांहिकर्मयालोकमें ॥ कृष्णकुंतदपिराकुं ॥ क्रिडाकरनलियेप्रभु ॥
जन्मधरतहेतेकुं ॥ ४७ ॥ चोपाई ॥ साधुधर्मकिरक्षाकाजा ॥ सुरनरपशुरूपधरहिराजा ॥ निरगुण
श्रीकृष्णहेजेहा ॥ सत्वरजतमगुणधरहीतेहा ॥ ४८ ॥ गुणजोगक्रिडाकरतजेकुं ॥ पालेहनेउपजावतजी
तेकुं ॥ अजजन्माहेपुत्रतिहारा ॥ करतहेक्रिडारहतहिन्यारा ॥ ४९ ॥ जैसेअकरताजिवकहाइ ॥ चित
करतासेकहतहीताई ॥ फिरतपुरुषकेदगमेंजैसें ॥ भुतलफिरतोभासहीतेसे ॥ ५० ॥ हेनंदतुमदो
नुंकेजोउं ॥ सुतनहिश्रीकृष्णहीसोउं ॥ सबकेमाततातसुतराकुं ॥ आत्मानियंतास्वामीतेकुं ॥ ५१ ॥
स्थिरचरदेखेसुनेउजेता ॥ होगइहोसेअबहेतेता ॥ अल्पमहतवस्तुहेजेती ॥ अच्युतबिनसस
नहीहेतेती ॥ ५२ ॥ शुकक्हीनंदउधवकरीबाता ॥ रतियांबितगयेसाक्षाता ॥ च्यारघटीरजनीरहे
जबही ॥ गोपिकरिदिपउबरपुजितबही ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥ दधिमंथतजबदार ॥ दिपकुंसेंप्रकाश
उत ॥ कंचवारिपटधार ॥ जामेमणियुंरूचकतही ॥ ५४ ॥ चोपाई ॥ करसेंनेत्रांतांनतजबही ॥ कं

कणमालासोहेतवही॥ स्तननितंबगलामेंहारा॥ होवतचलायमानअपारा॥ ५५॥ कुंडलकांती
करेकपोला॥ मुखपरकुंकुमलालहिचोला॥ असत्रोभाऋतगोपितुंजेहा॥ गानतुंचेस्वरसहघमही
तेहा॥ ५६॥ दधीमंथनऋलत्राहूहितेकुं॥ स्वरगमेंस्पर्शकरतहिणकुं॥ गितधुनिसेंसबदिशमांइ
पापसकलजसोजातपलाइ॥ ५७॥ रविकोउदयभयेउतबही॥ व्रजवनिताव्रजद्वारपेंनबही॥ कंचु
नमयरथदेखीतेहा॥ बोलतकिनकोरथहेग्हा॥ ५८॥ अक्रुरजीआयेक्यासोउ॥ अर्थसाधककं
सकेतोउ॥ कंजलोचनहूघमकुंतेहा॥ मथुरामेंलेगयेउतेहा॥ ५९॥ मृतकंसकिपिंडक्रियाजेकुं॥
अपनेमांसकिकरेगितेकुं॥ युंव्रजनारिबोलतसबही॥ स्नानसंध्यादिक्रियातबही॥ करिकेउध
वजमुनांताई॥ चलिकेआयेउव्रजमांई॥ ६०॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेकुं
उधवगोकुलमेंगये॥ भूमानंदकहेकुं॥ ६१॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामीशिष्यभूमानंदकृतभाषा
यांषट्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४६॥ दोहा॥ हरिआगपासेउधव॥ गोपिकुंदइज्ञान॥ तत्वपाईपुर
आयेही॥ सइतालिसमेंतान॥ १॥ चोपाई॥ शुककहेलंबबाकुकंजनेना॥ पीतवसनकमलस्र

जचेनां॥ कंदरमुखकुंडलमणीभारी॥ हूघमसेवकउधवलखिनारी॥ २॥ विस्मेपाईकहेकुंनणकुं
कंदरहूघमतूल्यवेशलेकुं॥ किनकेसेवककहांसेंआई॥ युंबोलतसबिमांहेमांइ॥ ३॥ उछवसही
तगोपिकाजेहा॥ हूघमचरणसेवककुंतेहा॥ चकुंओरलेबतसबघेरी॥ हसतजोतलजाऋतदेरी
ध॥ निकेबचसेकिनेसतकारा॥ तबउधवआसनपरवारा॥ रमापतिसंदेशाहरजानि॥ नमिराकां
तेपुछतवानि॥ ५॥ गोपिकहेआयेतुमतोई॥ जदुपतिसेवकजानेतोई॥ निजमाबापकेप्रियकाजा
पठयेतोकुंइहांजदुराजा॥ ६॥ माबापविकअसगोकुलमांइ॥ इनकुंस्मरनजोगअओरनांई॥ निजसक
हृदमेंस्नेहजोउ॥ बडमुनिकुंडस्लजसोउ॥ ७॥ सोरठा॥ ओरमनुष्यकिमांई॥ मित्रपणुंहेहूघमकी
जो॥ कछुकार्येकिताई॥ सोअर्थसिधहोयजांलुं॥ ८॥ चोपाई॥ सोमित्रपरहेतदेखाई॥ अंतर
मेकछुइनेकुंनांई॥ जारपुरुषकिमेत्रीजैसे॥ विभिचारिणीनारिमेंतैसें॥ ९॥ मधुकरकिसुपुष्पके
मांई॥ सुहृदमकिओरजतनताई॥ धनहीनपुरुषकुंकुंजैसे॥ गणिकात्यागकरतसुंतैसें॥ १०॥ अ
समर्थराताकुंकुंजोउ॥ त्यागकरेनिजप्रजाहीसोउ॥ पदिविद्याविद्यार्थिजेकुं॥ गुरुकोत्यागकरेसुं

तेऊं ॥११॥ दक्षिणापाइ ज्युं यजमाना ॥ वरूणिके छिजतजेस्कजाना ॥ फलविन द्रुमतजी पंखिपलाई ॥
अतिथि तजे ग्रही के घरुपाई ॥१२॥ द्वजरे वनकुं ज्युं मृग तजही ॥ पिनिज्जत परनारिकुं भजही ॥ जार
पुरुष भोगिन तजेताई ॥ हमकुं हृदमनतजी असम्माई ॥१३॥ हृदमदूतन्त्रजन आयेजबही ॥ ननुमनवचर
खिहृदममें तबही ॥ लोककुं केव्यवहारहे जेता ॥ सागकरतगोपिसबतेता ॥१४॥ निजवृद्दुमकेचरी
त्रगाई ॥ वाल्मकिगोरवयमें किनताई ॥ फिरफेरसंभारिकेरकुं ॥ लाजतजीअतिरोवततेऊं ॥१५॥
॥दोहा॥ हृदमकोसंगमचिंतत ॥ कौकगोपितरमांई ॥ मधुकरकुं कुं देखके ॥ हृदमदूतजानिताई
१६ ॥चोपाई॥ मोकुंप्रसनकरनकेकाजा ॥ असदूतपगायेमाहाराजा ॥ युंमधुकरकुं कपिकेएहा
कहततताकुंगोपिकानेहा ॥१७॥ हेभमराकपटिकेमीता ॥ हमारपगमतछोनारीता ॥ हमारीशोकप
मथुरांकिनारी ॥ तिनकेकुचकुंकुमघसारी ॥१८॥ हृदमकीवनमालकेमांई ॥ लगिरहेकुचकुंकुम
ताई ॥ तवडादिमुछमिलगेसाई ॥ याकारनमतछोनामोई ॥१९॥ सोहरिमथुरांनारिकुंजोई ॥ प्रस
नकरोअबककुंमेंतोई ॥ हमारप्रसनतासेंनाई ॥ इनकुंकछुपयोजननांई ॥२०॥ हेमधुकरजदुस ॥१४१॥

भामिएहा ॥ वडहासिहीवतहेतेहा ॥ सोहृदमकेदूतत्मही होई ॥ लखिलोकुंजडहसनहिसोई ॥२१
पानकरनहाराकुंजेऊं ॥ मोहकअधराअमृततेऊं ॥ एकवेरहमकुंसोपाई ॥ पुनिहमकुंतजीगये
पलाई ॥२२॥ सोरठा ॥ स्याहीनत्मतूल्य ॥ हृदमहेहमजानेसो ॥ ज्युंतुमगंधलइफुल ॥ तैसेंतजी
गयेहमकुं ॥२३॥ चोपाई ॥ कस्याहृसकुंनजानेतेऊं ॥ श्रीक्युंसेवतपदद्वनकेऊं ॥ उत्तमकीरत्तीहृ
दमकेजोउं ॥ कपटेकूतबचनहेसोउं ॥२४॥ तासेंश्रीचितगयेंहराई ॥ याकारणभजेहरिकुंजाई ॥
हमनहीभोरिश्रीकिम्पाई ॥ कपटबचनसेंजोछेतराई ॥२५॥ बहुगुंजारकरतभृंगताई ॥ प्रसनकर
नहमहरिजसगाई ॥ युंमानिउधवकुंएहा ॥ स्कंनाइबोलतगोपीनेहा ॥२६॥ हेभमरघरभंगहमता
इ ॥ क्युंगावतहृदमकुंआई ॥ जादवकेपतिपुराणजेऊं ॥ बहुविधहमजानेहेतेऊं ॥२७॥ सखाअ
र्जुनकेहृदमताकी ॥ अबमथुरामहीसखिहेयाकी ॥ तिनकीआगेहृदमप्रसंगा ॥ गांनकरोतुमज
नगमंगा ॥२८॥ हृदमकुंवल्लभनारिजेहा ॥ मिलिकुचपिडामिटायेतेहा ॥ तुमकुंजोकछुचहीयेजे
ऊं ॥ सोदेवेगेत्रियातेऊं ॥२९॥ दोहा ॥ तुमकुंसंभारिविकूल ॥ होगयेहृदमजोई ॥ प्रसंनकरनअ

भा॰द॰पु॰ वत्समकुं॥ मोयपठायेसोई॥ ३०॥ चोपाई॥ युंकहोगेभमरात्समजबही॥ स्कंनुंउन्नरयाकोकडूंतव रा॰ ४१
हि॥ त्रिलोकिमेंनारिहैजेती॥ श्रीहरुहमकुंइछहीतेती॥ ३१॥ जिनकुंइछेहरुहमजोउ॥ दारापाप्तहोत
॥१४८॥ हैसोउ॥ कपटसेंसुंदरहसनिजाकी॥ तेहीउत्तभ्रकुटिविलासयाकी॥ ३२॥ जसपदरजश्रीसेवत
जबही॥ हमसबकोनलेखामेंतबही॥ उनमकिरनिवंतहरुहमतेंऊं॥ दिनजनकेबंधुहेतेऊ॥ ३३॥
पगाछोतभ्रमरदिगआई॥ अपापधक्षमाकरावनलाई॥ युंमांनिकेगोपीयुंएहा॥ ऊनतउधवसेंबोल
नतेहा॥ ३४॥ मधुकरतवशिरपगममजोई॥ त्यागकरिदेकडूंमेंतोई॥ हरिसेंशिखेवचतुमजेऊं॥
ऊनननहारिकुंवलभतेऊं॥ ३५॥ सोवचकीरचनाजामांइ॥ कृतकर्मप्रार्थनागाइ॥ तामेंचतुरहोतुम
जोउं॥ तवगाथाजानेहमसोउ॥ ३६॥ याकारणछहमकीमाई॥ विश्वासकरनजोग्पतुमनांइ॥ पती
स्रुतअसपरलोकहीजेऊं॥ छुडमलियेस्यागेहमतेऊं॥ ३७॥ परवंचाचितछहमहेजेहा॥ हमकुंत्या
गगयेउतेहा॥ इनकेविधेहमारेजोउं॥ मेलापकैसेंहोवेसोउ॥ ३८॥ सोरठा॥ पाराधितुम्पधर्म॥ रा
मचंद्ररुपछहमजो॥ पाराधिसमकर्म॥ करिकेवालीकुंमारे॥ ३९॥ चोपाई॥ सिताकुंआधिनहे ॥१४८॥

युंजानी॥ स्रूर्पणखाआईहोवनरानी॥ तिनकेनाककानकटलिना॥ उलटिकुरूपकरिजउदिना॥
४०॥ वामनरूपछहमकुंआई॥ बलिनेदिनेबलिदानपाई॥ तिनकुंभक्षणकरीकेताई॥ बांधतती
र्थकौवाकीमाइ॥ ४१॥ सखापणकालाकोजेऊं॥ पुरणभयेहमकरिकेतेऊं॥ काननाकनहीकाटे
जबलुं॥ बांधिनमारेनिकेउतबलुं॥ ४२॥ भमरायुंजानतहमसबही॥ इनकिकथातजातनतब
ही॥ अर्थधर्मरुकाममूलजोउं॥ तिनकुंछेदनहारिसोउं॥ ४३॥ छहमचरित्रलिपातेऊं॥ कर्णपीव
नजोगपरमअमृतरूऊं॥ राककणिकाएकवेरपाई॥ रागद्वेषतिनकेमिटजाइ॥ ४४॥ संसारमगकेरहे
नएडूं॥ प्रियव्रतआदिकयोगितेऊं॥ निजलियेदुखिकुटंबघरदोउ॥ ततकालतिनकुंतजीकेसोउं॥
४५॥ दिनहोइपंखिकिन्याई॥ घरघरजाचतभिक्षाजाई॥ कथासुनिसुंहोतदेजबही॥ कथातजीन
हिजावेतबही॥ ४६॥ दोहा॥ पाराधिकोगितसुनिके॥ कालियेमृगकिनार॥ अज्ञसमजुंमा
निके॥ सहतबाणप्रहार॥ ४७॥ चोपाई॥ कुटिलछहमवचससमजुंमानी॥ इनकेनखपरसेहमजा
नि॥ तिनसेंउपजेउतिव्रकामा॥ सोपीरतहमकुंआवुंजामा॥ याकारणतुमछहमकीसागी॥ दुसरी

बातकहीहमञ्जागी ॥ ४९ ॥ मधुकरदुरजाईपुनिआये ॥ कनतउधवजुं गोपिबोलाये ॥ कृष्णस
खातुमञ्जायेफेरी ॥ वचभक्तकृष्णमैंनपवायेटेरि ॥ ५० ॥ इततुमआनननजोगपहमारे ॥ क्याचेयेकहोदुः
छनहारे ॥ कृष्णकिवकूंलक्ष्मिहेजेहा ॥ हरिउरमेंनिमरहहीनेहा ॥ ५० ॥ इसमजनइनकिजोरिजोउं
हमकुंतुमकराञ्जोगेसोउं ॥ लक्ष्मिहरिढिगहोसेजबही ॥ हमारिइर्षाकरेगीनबही ॥ ५१ ॥ मधु
करवस्कदेवकेसुतजोउं ॥ गुरुगेहसैंपरिआयेसोउ ॥ अबमथुरामेंसुखीहेतेकूं ॥ निजनातगे
हसमरहीएकूं ॥ ५२ ॥ इनकेमीतगोपहेताई ॥ कृष्णकिहमदासीकहाई ॥ हमारिबानकरतहेक
बही ॥ अगरुसुगंधसमभुजजबही ॥ हमारशिरपरधरेगेअबही ॥ सोगाथाकहोहमकुंस
बही ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥ शुककहीहरिकेसोइ ॥ इरज्ञानकुंइछतगोपि ॥ तिनकुंउधवजोइ ॥ शांतक
रतसंदेशकही ॥ ५४ ॥ चोपाई ॥ उधवकहेञ्जाश्चर्यपाइ ॥ हेगोपितुमतुम्हकीउनाइ ॥ निश्चेपू
र्णञ्जर्थतीहारा ॥ भईसबजननपुजननजोगपदारा ॥ श्रीकृष्णमेंतुममनजेकूं ॥ असविधअर्पणकी
नेनेकूं ॥ ५५ ॥ जपतपदानहोमहेजोउं ॥ वेदपाठव्रतयमनिमसोउं ॥ इतनेसाधनकरिकेजोउं ॥ ब

हुविधञ्जोरसाधनजोतेकूं ॥ ५६ ॥ बडेबडेमुनिवरजोउं ॥ कृष्णमिभक्तिसिधकरेसोउं ॥ इतनेसाध
नकरितुमजेहा ॥ उतमभक्तिरतीकृष्णमेंतेहा ॥ ५७ ॥ श्रेष्टभक्तीतुमनेउकीना ॥ बडमुनिकुंदुर्लभ
प्रवीना ॥ पतिसुतदेहसबंधिगेहा ॥ सबकोत्यागकरीतुमजेहा ॥ वरेजोपरमपुरुषकुंजाई ॥ ब
डकल्याणतिहारकहाई ॥ ५८ ॥ गोपीबडभागीतुमजोउं ॥ विरहसेश्रीकृष्णमेसोउ ॥ एकांतिक
भक्तितुमपाई ॥ सोभक्तीहमकुंदेखाई ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ बडअनुग्रहमोपरकिये ॥ कल्यानरूप
तुमेकूं ॥ संदेशोकहुंकृष्णको ॥ सुनकुंगोपीनेकूं ॥ ६० ॥ सोसंदेशोतुमकुंकुं ॥ सुखदायकहेजा
न ॥ एकांतकार्यकरतहम ॥ स्वामिकोयेश्यान ॥ ६१ ॥ चोपाई ॥ कृष्णकहेगोपिकातोई ॥ मेरेवियो
गनहीहेसोई ॥ सबजनकोमेंअंतरजामी ॥ बुधिइंद्रिमनप्राणगुणधामी ॥ भूजलवायुअनल
नभजैसें ॥ सबजनदेहमेंरहहीतेसें ॥ ६२ ॥ ममममायाकोकार्यजेहा ॥ भुतइंद्रिगुणरूपहीतेहा ॥ ति
नसेममतनुविराटमाई ॥ हनुजनुपाखुजिवरूपताइ ॥ ६३ ॥ जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिजोउं ॥ माय्याकृत
मनकीवृतिहीसोउ ॥ तिनसेदरश्नातञ्जात्माएकूं ॥ ज्ञानरूपसुधगुणहिनजेकूं ॥ ६४ ॥ स्वप्नकूंसें

निकसेनरजैसें॥ पंचविषयस्वप्नकेतैसे॥ मनसेंचिंतनकरतजोउं॥ इंद्रिपातविषयकुंसोउं॥ सावधान

जनहोवेजबही॥ वशकरिमनकुंरखेतबही॥ ६५॥ वेदयोगअरुसांख्यविचारा॥ सागरुतपदमस
सहिसारा॥ बुधिवंतनरविचारता॥ मनवशहोवेतासुंतेता॥ जैसेसबनदियुंकोअंता॥ सागरकुं
कहहीबुधिवंता॥ ६६॥ गोपितुमकुंमेंवल्लभहोई॥ तबहमसेंदुरवरतेसोई॥ फिरफिरमोरेचिंतन
ताई॥ तबमनरहेममसुन्निमांई॥ ६७॥ अतिवल्लभपतिदुररहेजबही॥ त्रियमनप्रवेशाकरेसुतब
ही॥ समीपअंखिअगोपतिमांई॥ सुंमनप्रवेशाकरिरहेनांई॥ ६८॥ विषयमेंमनकिरतिसुंजेती
निकसिगयेतबमनसेंतेती॥ मोमेंप्रवेशाकराइमनसोउं॥ निसममचिंतनकरितुमजोउं॥ थोरका
लविते गेंजबही॥ पावेगेमोकुंतुमसबही॥ ६९॥ सोरठा॥ हेगोपिवनमांई॥ रमततुमसंघरतिया
मि॥ निजपतिरुंधेजाई॥ चिंतनकरिममपायेसुं॥ ६९॥ चोपाई॥ जैसेंतुमपावेगिमोई॥ उधवकी
नेवचहरिकेसोई॥ शुकजीकहेसंदेशोसंनि॥ अतिवल्लभश्रीकृष्णकोपुनि॥ ७०॥ पाइसमतिज्ञान
कुंतेहा॥ उधवजिसेंबोलतएहा॥ गोपिकहेसबजदुकोजोउ॥ दुखदायकनाशुकंससोउ॥ ७१॥ नी ॥१५०॥

जसेवककृतमसुंपावा॥ वकुआनंदअबउरबढावा॥ धनवंतहेतुजदुकुलजोउं॥ कुशलहेअ
बकृष्णहिसोउ॥ ७२॥ डुजिकहेगदकेछोटभाई॥ श्रीकृष्णहेमथुरामांई॥ लाजसहीतहसनि
कहाई॥ उदारलोचनसोविकसाई॥ ७३॥ इतनेसेमथुरांकिनारी॥ पुजतकृष्णकुंकुदिगवारी॥
कृष्णपरप्रितिकरनजोमपजेकुं॥ ताकेउपरकरतहेतेकुं॥ ७४॥ डुजिकहेपुरत्रियाकेजेता॥ संभोग
भेदहीजानितेता॥ ताकुंवल्लभश्रीकृष्णजेकुं॥ वचनविलासकरिवांधेगेकुं॥ ७५॥ डुजिकहेउध
वकृष्णजोउं॥ पुरत्रियाकीगोष्ठिमेंसोउ॥ गाथाकरतस्वतंत्रहोइ॥ तामेहमकुंसंभारहिसोई॥ ७६
डुजिकहेवृंदावनमांई॥ कुमुदमोगराचंदरुकहाई॥ तामेरासरमतहमजोउं॥ चरणेनुपुरबजाइ
सोउ॥ ७७॥ गानकियेजनाइनकेजबही॥ रमतरासमेंरतियांसबही॥ सोरतियांकुंकुंकबुएकुं
संभारतहेकेनहीतेकुं॥ ७८॥ डुजिकहेकृष्णलियेजोउ॥ शोककरिहमतपेउसोउं॥ निजतनुकेस
पर्ससेएकुं॥ हमकुंजिवावेगेउनेकुं॥ इंद्रसुंघनसेंजिवातजाई॥ सुप्रभुआवेगेकिनांइ॥ ७९॥
डुजिकहेरिपुहनिभयेराजा॥ परनिबकुंनृपकन्यासमाजा॥ प्रसनरहतसकरुदविहाइ॥ मथुरां

तजीनहीआवेआंई॥७९॥बडबुधिश्रीपतिपुर्णकामा॥बड्डाअंतःकरणहिगुणधामा॥इनकुं
क्याकरिदेवेसोउ॥बनचरिहमनृपकन्यासोउं॥८०॥दोहा॥परमसुखनिरआशाहे॥पिंगलापे
कारीकिन॥संनिआशाकियेहमपि॥अपनेसबमतिहिन॥८१॥चोपाई॥उत्तमजसश्रीवंतहु
हमकिजोउं॥एकांतगोष्टीतजेनकोउ॥लक्ष्मीकुंइछतनहीजेहा॥तदपिहमतनुमेंरहेतेहा॥
८२॥बलसुतहुहमरमेजामांई॥ऐसेबनगिरीनदितुंकहाइ॥गोअरुवंत्रीकेशब्दहिंजोउ॥
स्मारिदेतनंदसुतकुंसोउ॥८३॥श्रीनिकेतचरणसेंजेकु॥ओंकितगिरिनदिआदिकतेकुं॥
फिरफिरदेतसंभारीतबही॥हमकुंबिसरतनहीहरितबही॥८४॥संदरगतिहसनिदृगया
कि॥हरेमनबुधीकुंवाणीताकी॥सोहुहमकुंहमसबतेाउ॥कसविधविसारिसकेहमसोउ
८५॥करतविलापनंदेस्वरएहा॥नाथरमानाथकहीतेहा॥भक्तपीडाहरहेव्रजनाथा॥हे
गोविंदउधारव्रजसाथा॥दुखसागरमेंडुबेतजेकुं॥गोकुलकुंनिकासिलेकुं॥८६॥श्रुकजीक
हेहहमकेजेकुं॥संनिसंदेशागोपिनेकुं॥विरहतापरहीतसबेहोइ॥उधवजीकुंपुजतसोइ॥८७

सोरठा॥गोपियुंकेजोशोक॥मेटनकुंउधवजीजो॥बहुमासरहेगोक॥व्रजक्रिलिलाबरनतसो
८८॥चोपाई॥गोकुलकुंआनंदउपजाई॥उधवरहेजितनेदिनताई॥हुहमगाथसुनायेउतब
हि॥क्षणसमसबदिनहीवततबही॥८९॥हरिकेदासउधवजीतेकुं॥नदिवनगिरिगुफादे
खततेकुं॥फुलफलद्रुमलखिपुनिएहा॥तेहिथलहमलिलाकियेतेहा॥तेहिथलव्रजवासी
कुंकुंजोउं॥हहमसंभारीदेवतसोउं॥९०॥गोपीयुंरहेसदाहरिमांई॥मनकिविकलताकुंकुंपा
इ॥ताकुंदेखउधवजीजेकुं॥अतिप्रसनहोइनमेगीतेकुं॥९१॥उधवकहेसबअंतरजामी॥
श्रीहहमपुरुषोत्तमस्वामी॥तामेंअचलभावहेजाई॥ऐसिगोपकीत्रियाकहाई॥९२॥सुफ
लजन्मभुपरहेएती॥हरिमेंअचलभावऋततेती॥सोइभावकुंइछतजोउ॥मुक्तमुमुक्षमुनि
वरसोउ॥हमजेसेंहरिभक्तहेजेकुं॥इछतहेसोभावकुंतेकुं॥९३॥दोहा॥हुहमकथारसभो
गिकुं॥ब्राह्मणजन्महीजेकुं॥शौक्रसावित्रयाज्ञिक॥नहीइछेतोनतेकुं॥९४॥चोपाई॥व्यभी
चारकरिदुष्टव्रजनारी॥क्यासोचनमेरवनहारी॥इनकोपुरुषोत्तममेंजोउं॥अचलभावक्याब

भा॰द॰पू॰ रनुंसोउं ॥ ९५ ॥ पुगरनिजकुं भजेजनकोउं ॥ मुंइत्राहेसुंजानेनसोउ ॥ तदपिङ्ग्राकरकल्याणजैसें ॥ अ॰ ४७
॥१५२॥ अमृतपानकरऊंकुंतैसें ॥ ९६ ॥ रासउछवमें गोपीउंकेरा ॥ हृदमकंठपकरेरहीनेरा ॥ सकलमनोर
थपायेजेहा ॥ हृदमअनुग्रहभेयोउनेहा ॥ ९७ ॥ सोअनुग्रहलक्ष्मीपरनांइ ॥ संभोगकरिनितरही
उरमांई ॥ कंजसमगंधकांतिकलजेहा ॥ अप्सरअनुग्रहपातननेतेहा ॥ ९८ ॥ औरत्रियाङंकेपर
जोउं ॥ नहीहोवेकृपाकेनोसोउ ॥ याकारणआश्चर्यहीताहा ॥ गोपिचरणरजसेवतजेहा ॥ ९९ ॥ तृ
णवेलिऔषधियुंजेती ॥ वृंदावनमेंहेजोतेती ॥ तिनकेमध्येहमकछुहोइ ॥ गोपिकीपदरजसेवुं
सोइ ॥ १०० ॥ सोरठा ॥ निजसहृदअरुकुल ॥ दुस्तजतिनकोधर्मकही ॥ तिनकेउरवारिसूल ॥ हृ
दमकेमगकुंभजेऊं ॥ १०१ ॥ चोपाई ॥ श्रीहृदमकेमगकुंजोउं ॥ वेदकुंढुंढनलायकसोउं ॥ जोगोपी
युंरासकेमांई ॥ हृदमचरणपकरिकरताइ ॥ १०२ ॥ सोपदनिजकुचकेपरधारी ॥ विरहतापतजत
चजनारी ॥ श्रीब्रह्मादिवरदेवजोउं ॥ पुरणकामयोगेश्वरसोउं ॥ निजउरमेंधारिकेएऊं ॥ चरणक
मलपुजतसबतेऊं ॥ १०३ ॥ नंदव्रजकेनारिकिजेहा ॥ पगरजकिरकिरनमुंमेंतेहा ॥ हरिजनगाज ॥१५२॥

नगोपियुंकिगाथा ॥ त्रिलोकपवित्रकरेरकसाथा ॥ १०४ ॥ शुककहेपुनिउधवजीएऊं ॥ गोपिजन
ऊंमतिनंदढिगतेऊं ॥ औरगोपढिगआगपामागि ॥ चलनकुंरथवेवेबडभागी ॥ १०५ ॥ वकुवि
धभेटग्रहीकरमांइ ॥ गोपनंदादिआयेधाइ ॥ उधवसेंबोलतसबएऊं ॥ लोचनमेंआसुजतने
ऊं ॥ १०६ ॥ हमारेमनकिवृतियुंजेति ॥ हृदमचरनमिरहोसबतेती ॥ ममवाणीजनाइनकेगाउं ॥
नमस्कारमेंदेहरहाउ ॥ १०७ ॥ कर्मऊंसेंभ्रमतेहमजेऊं ॥ जहांतहांतनुधरतहीतेऊं ॥ इच्छाईछा
करिसुभममहोई ॥ दानकियोहोवेजोसोइ ॥ १०८ ॥ इतनेसेंश्रीहृदममांइ ॥ हमारेवृतिरहोसदा
ई ॥ युंकहीनंदादिगोपजेहा ॥ सन्मानकिनहरिभक्तिसंनेहा ॥ १०९ ॥ सोउधवजिआयेचलाई
हृदमपालितमथुरांमांइ ॥ नमिहृदमकुंउधवएऊं ॥ व्रजजनकीवकुभक्तीजोतेऊं ॥ वलहरिवसु
देवआगेंकिना ॥ भेवनउग्रसेननृपकुंदीना ॥ ११० ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ दशमस्कंध
मितेऊं ॥ ज्ञानदेउधवआयेही ॥ भूमानंदकहेऊं ॥ १११ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमा
नंदहृतभाषायांसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ रमायेकुब्राकुंप्रभू ॥ पुनिअक्रुरघरु

नाई॥ तिनकुं हस्तिनपुर पठे॥ अउ तालिनआअधाई॥२॥ चोपाई॥ शुकक हीसबके अंतरजामी
निजललितयु कामसें जनलती भामी॥ कुब्जा प्रियकरइछालाई॥ हमगये इनके घरूंधाई॥३॥ आप्
आपदारथ कृतघरणकूं॥ कामतपजावन लियेतेकूं॥ चित्रामनमैथुनकृततेकूं॥ मोतनमाला
ध्वजन्नूतगेकूं॥४॥ आसाआसनचंद्रुवाई॥ सुगंधिधुपदिपकुलमालाई॥ चंदनसें ज्योतितनी
जगेकूं॥ तामेंआयेहमहीतेकूं॥५॥ लखिकुब्जातमगनहूं तहांई॥ तूरतआसनसें उठी सोई॥
निजसखिकृतहमदिगआई॥ किनसनमाननिकआसनलाई॥५॥ पुनिकुब्जापुजेउधव
जेकूं॥ आसनसन्मानकिनेतेकूं॥ स्पर्शाकरिआसनकुंजोउं॥ भुपरबैठेउधवजासोउ॥६॥ म
नुष्य चरितकुरहहमजेकूं॥ अमूल्यशय्याकुब्जाकेकूं॥ तापरप्रभूनेप्रवेशकीना॥ अतितता
वलेहोई प्रविना॥७॥ सोरठा॥ स्नानचंदनहीजोउं॥ पटभूषनफूलमालाजो॥ पानविडि
अतरसोउं॥ अमृततुल्यमादकवस्तु॥८॥ चोपाई॥ इतनेसैंनिजतनुसंगारी॥ लज्जालिलामं
दहसतिप्यारी॥ कुलासजूतकुब्जापुनिजोउं॥ श्रीपति दिगगयेचलाइसोउं॥९॥ नयेसमाग ॥१५४॥

मकूं सेंगहा॥ लज्जाकरिसंकाकृततेहा॥ निजदाराकुब्जाकेहाथा॥ कंकणकृतपकरिकेनाथा
१०॥ निजशय्यापरल्लेकेताइ॥ रमततताकेसंगरतिदाइ॥ चंदनदियेथेप्रभुकुंतेहा॥ सोपुन्यको
फलपायेतेहा॥११॥ कामतपेनिजकुचहृगछाती॥ चरणधरिदुखतजेबहूभाती॥ चरणकम
लसुगंधिपुंनिएकूं॥ निजकुचकेबिचपायेतेकूं॥१२॥ आनंदमुरतिनिजपतिजानी॥ करतआ
लिंगनकरसेंतानी॥ अतीबहुतापतजिकेतेहा॥ केवल्यपतिकुंपरसिएहा॥१३॥ कष्टकूंसेन
हियमानजोउं॥ चंदनदइपाइहमकुंसोउ॥ आश्चर्यबडोअभागीएकूं॥ प्रभुदिगमागतकुब्जा
तेकूं॥१४॥ कमलनयनवल्लभहेस्वामी॥ बहूदिनममघरूंरहोसुखधामी॥ मोरसंगपेरमकृत
मनेकूं॥ मेंनहीतजूंतोरसंगतेकूं॥१५॥ दोहा॥ सबईशदातामानके॥ श्रीहमप्रभुनेकूं॥ का
मवरकुब्जाकुंदही॥ उधवकृतपुनिएकू॥१६॥ चोपाई॥ कुब्जानेपुजाकियेजबही॥ निजधाम
प्रतिगयेतुरतबही॥ सबवरदाताहेप्रभुएकूं॥ दुखसेंआराधनजोगपतेकूं॥१७॥ इनकुंआराधि
मनुष्यजोउं॥ मनसेंग्रहणजोग्यतच्छेयाइ॥ विषयसुखकुंमागतजेकूं॥ कुछीतबुधिवंतजनतेकूं॥१८॥

पुनि प्रभु अक्रूर के प्रियकारी ॥ हस्तीनपुर पठावन धारी ॥ ऊधव बलदेव जुत हरि जे हूं ॥ गये तअ
 क्रूर जी के गेहूं ॥ १९ ॥ निज बंधु सब जन के माई ॥ अति श्रेष्ठ श्री हम कहाई ॥ कुरस्ये देखि प्रसन होई
सनमुख जुवो मिलि जसोई ॥ २० ॥ पुनि अक्रूर कुं नमिस बराऊं ॥ आसन के पर बैठे ते हूं ॥ बल जुध
व हलधर हिग आई ॥ पुजन अक्रूर सब विधी लाई ॥ २१ ॥ पुनि प्रभू चरण पखालि राऊ ॥ सो जल
शिर पर धारत ते हूं ॥ अमूल्य पट चंदन फूलमाला ॥ दिव्य भूषण कर पुजा विशाला ॥ २२ ॥ सो
रठा ॥ हलधर चरन जुग ता जो उ ॥ ग्रहि गोद्द में चांपत सो ॥ नमि विनय जुत सो उ ॥ बोलत बल हलधदी
गसो ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ हे बल हलधर हने तुम जो उं ॥ पापि कंस सेवक जुत सो उ ॥ अति श्री वृष्णि तोर कु
ल पावा ॥ इनकों अति बल कष्ट मिटावा ॥ २४ ॥ प्रकृति पुरुष रूप तुम दोई ॥ जग कुं के कारण तु
म सोई ॥ कार्य कारण रूप जग कहाई ॥ प्रकृति पुरुष विन कछु नांई ॥ २५ ॥ महतत्वादिक जगत की
तिहारी ॥ तासें सृजी तुम विश्व ही सारी ॥ इन में अंतरजामी रूप होउ ॥ प्रवेश करि के रहे तुम सोउ
२६ ॥ प्रसक्ष ग्राह्य प्रमाणादी उ ॥ तासें ज्ञान पर तत्तुम सो उं ॥ भू जल तेज वायु नभ जे हूं ॥ निज कार्य

रूप करि के ते हूं ॥ २७ ॥ थावर जंगम तनुं रूप होई ॥ बहु प्रकार सें भासत सोई ॥ स्वतंत्र निरगुण तुम मी
तैसें ॥ अंतरजामि फल प्रद ऐसें ॥ २८ ॥ रज तम सत्व गुण रूप जे हा ॥ निज शक्ति सें प्रभू तुम ते हा ॥
जग करि पालि दे त संहारी ॥ गुण कर्म होत न बंधन कारी ॥ २९ ॥ ज्ञान रूप तव मुक्ति कहाई ॥ तुम में
तो प्रभु माया नांई ॥ जग ही तल लिये किन तुम जो उं ॥ सनातन वेद कों मग सो उं ॥ ३० ॥ असत नर पा
खंडि रु जब ही ॥ लोप करत निगम मग तब ही ॥ इन कुं थापन करने हारा ॥ धारत हो प्रभू तुम अव
तारा ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ हे प्रभो तुम यदुकुल को ॥ जग्रा वी स्तार न हार ॥ दैस अंश्रान्त पल्लक्ष हूं ही लि
शत ज्ञात के तुम मार ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ धराभार उतारन काजा ॥ निज अंश बल जुत महाराजा ॥ अ
व प्रगटे वसुदेव घर आई ॥ इं द्रि ज्ञान पो चत नहीं जाई ॥ ३३ ॥ निश्चे आज हमारा गेहूं ॥ अति पवी
त्र भये है ते हूं ॥ तामें प्रवेश जगत गुरु कीना ॥ देव पित्र नृप रूप प्रविना ॥ तोर चरण जल गंगा जो उं
पावन करें त्रिलोकि सो उं ॥ ३४ ॥ सस वच सुहृद भक्त प्रियाही ॥ कृतज्ञ तुम विन शरण नांही ॥ तु
म कुं भजे निज सुहृद जो उं ॥ पुरत मनोरथ तिन के सो उ ॥ ३५ ॥ तो प भजन हारे कुं स्वामी ॥ निज आ

॥१५५॥ त्मा है तुऽअंतरजामी ॥ तवऽआत्माके सोहे तेऊं ॥ कबहूंकु वदत धरत तन हि जेऊं ॥३६॥ बडे मुनि मिलत्ता
दिक देवा ॥ तव गति कुं न हि पावत तेवा ॥ सो तुम मोरे गेह किमांई ॥ प्रगट मुर्त्ति वैठे हो आई ॥३७॥
हम कुं बंधन करने हारा ॥ नाश करो हि माया तुमारी ॥ सुत धन सुहृद दार घर मांई ॥ देह दिगी मोह
हपर जुताई ॥३८॥ सोरठा ॥ शुक कहे हे अक्रुर कीन ॥ हृदय कि पुजा स्तुति पुनि ॥ जन दुख हर प्रवीन
हसि वोलत तऽअक्रुर कुं से ॥३९॥ चोपाई ॥ हृदय कहे हे अक्रुर तुम ततो उं ॥ मोर गुरु काका हो सोउ ॥ अ
ति वल्लभ सुहृद है मोरा ॥ रक्षा करन जोग सुत तोरा ॥ पोषण दया करन जोग पहू मही ॥ हे अक्रुर युं
जानो तुम ही ॥४०॥ पुन्यवड भागि तुम सम साधु ॥ कल्याण कर्त सेवे जग वाधुं ॥ स्वारथिया हि है देव
सवे हा ॥ परमारथि है साधु तेहा ॥ या कारण सब जन कुं तेऊं ॥ सेवन जोग्य साधु है तेऊं ॥४१॥ जल
रुपी तिरथ है जो जोउं ॥ मृत पथ्थर मय है देव है सोउ ॥ निज सेवन हारे कुं तेऊं ॥ पवित्र करे वहु काले तेऊं
साधु दर्शन पावे जवही ॥ तुरत पवित्र होइ रहे तवही ॥४२॥ हमारे सुहृद में तुम एका ॥ अक्रुर तुम
मही ज्ञान विवेका ॥ पांडव कुं सुख करने काजा ॥ देश काल जानन कुं राजा ॥४३॥ हस्तिनपुर कुं में तु ॥१५५॥

म जाई ॥ पांडु मर गये पिता हि ताई ॥ छोरे वाल मात सुत तेहा ॥ अति दुखिया हे पांडव तेहा ॥४४॥ धृ
तराष्ट्र निज पुर में लाये ॥ हमारे सुत नन में युं आये ॥ अंबिका सुत दिन वुधि एकुं ॥ दुष्ट निज सुत केव
श हि तेऊं ॥४५॥ अंध निज भात सुत मे जोउं ॥ निश्चे सम नही वरतत सोउ ॥ हस्तिनपुर कुं में तुम जा
ई ॥ पांडव को वृतांत है ताई ॥४६॥ निको वुरो होत है जे से ॥ जान लियो अक्रुर सव तेसे ॥ पुनि सुहृ
द कुं सुख जुं होई ॥ अक्रुर अपने करे गि सोई ॥४७॥ समर्थ निज जन पिडा हारी ॥ अक्रुर कुं अग्या
दिन धारि ॥ पुनि वलदेव उधव सुत हरि जेऊं ॥ निज भवन प्रति आये तेऊं ॥४८॥ दोहा ॥ इति श्री मत
भागवत ॥ दशम स्कंध मि जेऊं ॥ कुब्जा अक्रुर घर हरि गये ॥ भूमानंद कहे हेऊं ॥४९॥ इति श्री सहजानं
द स्वामि शिष्य भूमानंद कृत भाषायां अष्टचत्वारिंशो ऽध्यायः ॥४८॥ दोहा ॥ विसमपण भ्रात सुत
तमें ॥ धृतराष्ट्र को हि देख ॥ अक्रुर हस्तिनपुर गये ॥ उगनपचासें लेख ॥१॥ चोपाई ॥ शुक जी क
हे हस्तिनपुर जोउं ॥ कोरव जश ब्रासें अंकित सोउ ॥ अक्रुर जी सो पुर में जाई ॥ धृतराष्ट्र कुं देखे भाई ॥
२ ॥ भिष्म विदुर कुंताल खि एकुं ॥ वाह्लिक के सुत सोमदत्त तेऊं ॥ भारद्वाज कृप गोतम द्रोण ॥ अश्व

भा·द·पू· स्यामाकर्णनिपुणा ॥ ३ ॥ दुर्योधनयुधिष्ठिरकूंजोउ ॥ औरसकुरुकुंदेखतसोउ ॥ गांदिनिसुतमिल अ·४९
तमूदपाई ॥ कौरवसबकुं घटितमाइ ॥ ४ ॥ पुनिकौरवजादवकीजेहा ॥ बातपुछतअक्रूरकूंतेहा ॥ पु
॥१५६॥ निपुछतकुशलतानतेऊं ॥ कौरवकुंकीअक्रूरतेऊं ॥ ५ ॥ दुष्टपुत्रघोरधिरजजाके ॥ खलकुशाशनमीत्रहे
ताके ॥ धृतराष्ट्रकीचृतांतजेहा ॥ जानननकुंदीनरहेउतेहा ॥ ६ ॥ पांडवकोप्रतापहेजेतो ॥ शास्त्रकुंकोनि
पुणपणोतेतो ॥ सुरविरपणंविनयपुनितेऊं ॥ प्रजाकोहेतपांडवमेंतेऊं ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ इसादीगुण
जेऊं ॥ पांडवमेंदेखिकेसो ॥ दुर्योधनजोतेऊं ॥ सहीनशकेद्वेषकरे ॥ ८ ॥ चोपाई ॥ कुंताविदुरअक्रुर
दिगजाई ॥ धृतराष्ट्रसुतनहतदिनसुनाई ॥ झेरदियेपांडवकुंजोउ ॥ लाखागृहमेंजारेसोउ ॥ ९ ॥ निज
भाइअक्रुरआयेजबही ॥ दृगआंसुजूतकुंतातबही ॥ जन्मभूमिसंभारिकेऊं ॥ बोलतअक्रुरजि
सेंतेऊं ॥ १० ॥ माततातभगनिअरुभ्राता ॥ भ्राताकेसुतकुलत्रियाख्याता ॥ औरसखेसखिसुहेजे
हा ॥ हमकुंसंभारतकबुतेहा ॥ ११ ॥ औरभ्रातसुतहमहिजेऊं ॥ भक्तवसलअरुशरणपतेऊं ॥ कम
लनेनबलदेवजीजोउ ॥ फुइसुतकुंसंभारहीदोउ ॥ १२ ॥ नाहारकेबिचमृगलिजैसें ॥ रिपुबिचशोच ॥१५६॥

करतमेंतैसें ॥ मोकुंशांतिकरेगेआई ॥ हमनिजवचुसेंबोलाई ॥ तातरहीतममबालकहाई ॥ तिनकुं
शांतिकरेगेनाई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ हरमहमहायोगिहो ॥ अंतरयामिरयाल ॥ हेगोविंदगिरिवर
धर ॥ हेप्रभूविश्वपाल ॥ १४ ॥ चोपाई ॥ छोटबालजतशरणेआई ॥ रक्षाकरऊंकेशृमिराई ॥ काल
रूपजन्ममरणसेंडरही ॥ सोजनतोरेशरणउगरही ॥ १५ ॥ शरणागतजनऊंकुंजेऊं ॥ मोक्षहीदाय
कतवपदतेऊं ॥ योगेश्वरसुधपरब्रह्मआई ॥ नमनकरुंतवशरणेआई ॥ १६ ॥ श्रुकुहेतवतातके
ताता ॥ तिनकिजोकुंताजीमाता ॥ निजसुतरुदअरुहमकुंजेऊं ॥ संभारीदुखजूतरोवततेऊं ॥ १७ ॥
कुंतासमसुखदुखवंतदोउ ॥ अक्रुरविदुरजव्हावंतजोउ ॥ शांतकरतकुंताकुंएहा ॥ पुत्रकिउसतिक
हितेहा ॥ १८ ॥ अक्रुरमथुरांचलेगोजबही ॥ धृतराष्ट्रदिगजायकेतबही ॥ निजसुतमेंहेतवंतजेऊं
पांडवमेंविषममतातेऊं ॥ १९ ॥ बलहरिकिनसुरुदयचंजेता ॥ अक्रुरकहीसुनावततेता ॥ विचित्र
विर्यऊंकेजबाला ॥ कौरवकिरतीकरविशाला ॥ तवभाइपांडुमरेजबही ॥ नृपआसनअबआयेत
बही ॥ २० ॥ सोरठा ॥ धर्मसेंपालऊंभूम ॥ प्रजाकुंरजनीरखऊं ॥ निकआचरणकरितूम ॥ निजसुद

भा·द·पू· मेंसमवर्न्नो॥२२॥ चोपाई॥ तुम्हवर्नोतेकल्यानजोवं॥ पुनिसतकीरतिपाओगेदोउ॥ अधर्मविषम अ·४९
॥१५७॥ बुरतोगिनवही॥ लोकनिंदानरकपाइतवही॥२३॥ याकारनसमवर्तोभाई॥ तोरुअरुपांडुकेसुत
मांई॥ यासंसारमेंजीवहीजेता॥ कबुनिसमेलारहीनतेता॥२४॥ निजतनुंकोनिसमबंधनांई॥ सु
तदारामेंकैसेरहाई॥ जन्मेएकमरिएकजावे॥ निजकृतपुनपापफलपावे॥२५॥ अल्पबुधिमूढन
रहेजेता॥ अधर्मकरिधनसंचेतेता॥ तिनकोधनसुतादिकजेऊ॥ सुहृदमिससेंपावेतेऊ॥२६॥ म
छकुंजिवुनरूपजलजैसें॥ सोजलमछसुतहरेज्युंतैसें॥२६॥ मेरेहेयुंमानिकेजेऊ॥ अधर्मकरपो
षणकरेतेऊ॥ सोसुतदारधनप्राणकहाई॥ अहृतार्थकुंसागिपलाई॥२७॥ निजस्वारथनजाने
जोवं॥ निजधर्मसेंविमूखसोउं॥ सोईअपूर्णमनोरथहोई॥ सुतपोबलकोपापलेसोइ॥२८॥ सु
तआदिककुंतजीकेरऊ॥ जावेअंधतामिस्रतेऊ॥ याकारनअसलोकहीजोवं॥ मायास्वप्नमनो
रथसोवं॥२९॥ दोहा॥ तेहीतुम्हजगजानिके॥ बुधिसेंमनवशलाई॥ धृतराष्टतुमशांतहो॥ स
मर्थहोनाभाई॥३०॥ चोपाई॥ धृतराष्टुकहेअक्रुरतोरी॥ वानिहेमोरिजिवनदोरी॥ सुनतमोकुंत ॥१५७॥

प्तिनहोई॥ ज्युंअमृतपिमनुष्यकुंनोई॥३१॥ अतितिनिकीतोरबानिएकु॥ ममवरमेंनहीरेवेतेऊ॥ अ
स्थिरविषमवरमोरजोउं॥ सुतमेंहेनऊसेभयेसोउ॥३२॥ सुदामागिरिमेंविज्जरीजैसें॥ रिकेनलव
वृत्तियांज्युंतैसें॥ भूभारहरनजदुकुलमांई॥ प्रगटेहेपुरुषोत्तमआइ॥३३॥ इनुंनेकृतधार्योहेजोउ
मेरनसमर्थनहीहेकोउ॥ इनकिमायामगरहेजेहा॥ तर्ककुंमेंनहीआवततेहा॥३४॥ मायासेंजगस
रजीएऊ॥ अंतरजामिपेठकेतेऊ॥ कर्मरुकर्मकुंकेफलजेता॥ जिवकुंकुंबांहिदेततेता॥३५॥ दुखद
कुंमेंनहीजनानजेऊ॥ श्रीकृष्णकोविहारतेऊ॥ संसारचक्रफेरनहारा॥ तिनकुंकरुंमेंनमस्कारा॥३६
शुकजीकहेअक्रुरजीजोउं॥ जानिअभिप्रायअंधकोसोउं॥ पांडवआगपादिनेउजवही॥ मथुराआ
येअक्रुरतवही॥३७॥ धृतराष्टुकोचेष्टितजोई॥ किनसबबलकृष्णदिगसोई॥ पांडवकुंदुखदिनेवजे
हा॥ अक्रुरनेकहिसुनायेतेहा॥३८॥ दोहा॥ इतिश्रीमतभागवत॥ दशमस्कंधमिजेऊ॥ अक्रुरह
स्तिनपुरगये॥ भूमानंदकहेऊ॥३९॥ संवतअगारअवाणव॥ माघुदपंचमिदिन॥ श्रीनग्रनरनारा
यण॥ चरनदिगग्रंथकीन॥४०॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदकृतभाषायामेकोन

पंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ॥ ५८ ॥ ॥संपूर्णम्॥ ॥लि॰ रावलजेगमोरारजीसंवत् १९५१ नापोष शुदि २ द्वितीयानेदिवसेसमाप्तोयंमगामत्॥ ॥श्रीमैत्रायण्यामेसमाप्तम्॥ श्री ॥ श्री ॥